तिरुक्कुरळ
तिरुवळ्ळुवर

कुरेद कर परमाणु को, उसके अन्दर सात।
समुन्दरों को कर समा, रहा कुरळ विख्यात।।
— औवैयार

திருக்குறள்

तिरुक्कुरळ

संत तिरुवल्लुवर विरचित तमिल भाषा के
प्रसिद्ध ग्रंथ का दोहा छंद में अनुवाद
तमिल मूल तथा नागरी लिपि में
उसका लिप्यंतर सहित

अनुवादक तथा संपादक
मु. गो. वेंकटकृष्णन, एम.ए.,
अवकाश - प्राप्त हिन्दी प्राध्यापक
अलगप्पा कालेज, कारैक्कुडि, तमिल नाडु।

संशोधित एवं संवर्धित संस्करण
प्रकाशक
शक्ति फैनान्स लिमिटेड,
29/30, डाकटर राधाकृष्णन रोड,
मैलापुर,
मद्रास - 600 004.

संस्करण : प्रथम संस्करण, जुलाई, 1967.
संशोधित एवं संवर्धित संस्करण,
नवंबर, 1988.

विषय : सांसारिक तथा आध्यात्मिक जीवन के सभी पहलुओं पर विचार।

प्रतियाँ : 10,000 मूल्य : रु.75.

प्रतियाँ मिलने का पता : प्रकाशक तथा प्रमुख पुस्तक विक्रेताओं से।

Title : Tirukkural TOTAL PAGES: 80 + 434

Author : Tiruvalluvar

Hindi Translation by : M. G. Venkatakrishnan, M.A.

Subject : All aspects of worldly and spritual life.

Publisher : Sakthi Finance Ltd., ©
29/30, Dr. Radhakrishnan Road,
Mylapore,
Madras - 600 004.

Edition : First Edition, July 1967.
Revised and enlarged edition
November, 1988.

Printed by : ORRJAY PROCESS
43, LONGS GARDEN ROAD,
MADRAS - 600 002.

Copies : 10,000 Price : Rs.75.

Copies can be had from : Publisher and leading Book sellers.

PHOTOS: THAMBAIAH ● COVER DESIGN & LAYOUT: AMUDHONE (POET - ARTIST)

ॐ

श्री गुरुभ्यो नमः

वन्दे पूर्णकृपेश्वरीं भगवतीं श्रेयस्करीं श्रीकरीं।
श्रीकण्ठार्धशरीरिणीं शुभकरीं सर्वार्थसम्पत्करीं।
सर्वानुग्रहकारिणीं शिवमयीं श्रीराजराजेश्वरीं।
मुन्नीर्पल्लमधीश्वरीं स्तुतिमतीं वन्दे जगन्नायकीम्।।

राजपीठविराजिनीं मणिमालिनीं मदशालिनीं।
भक्तमानसहंसिनीं वरदानहस्त सुशोभिनीं।
सर्वलोकवशंकरीं शिवशंकरीमभयंकरीं।
शंभुमोहनसुन्दरीं प्रणमामि पूर्णकृपेश्वरीम्।।

वन्दे पूर्णकृपेश्वरं शशिधरं गंगाधरं शंकरं।
भक्ताभीष्टफलप्रदं स्वरमयं सामप्रियंचाव्ययं।
सर्वारिष्टनिवारकं गुणनिधिं कालान्तकं शाश्वतं।
मुन्नीर्पल्लमधीश्वरं पशुपतिं वन्दे जगन्नायकम्।।

रामनामसुबोधकं वरदायकं कुलरक्षकं।
ताम्रपर्णितटस्थितं नरदेवराज नमस्कृतं।
चारुचन्द्रकलाधरं मम शंकरं च मयस्करं।
भक्तवत्सलमीश्वरं प्रणमामि पूर्णकृपेश्वरम्।।

लक्ष्मीनारायणं वन्दे, मम ग्रामस्य रक्षकं।
बालकृष्णं जगन्नाथं, नवनीतप्रियं हरिम्।।

(मुन्नीर्पल्लम् – ताम्रपर्णि नदी के किनारे पर स्थित गाँव का नाम जहाँ अनुवादक का जन्म हुआ। अनुवादक का स्वरचित ध्यानश्लोक।)
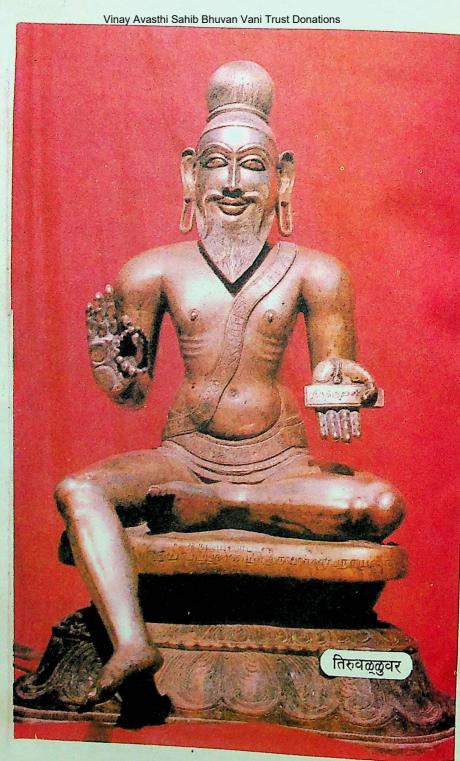
वासुकी देवी
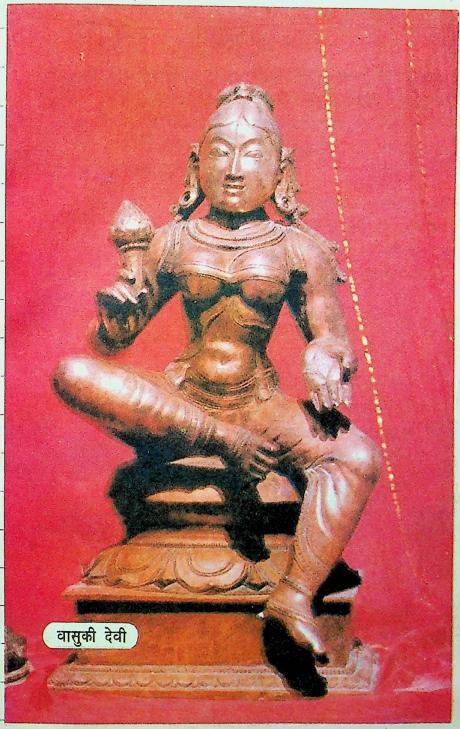
ईश-स्तुति

जगत सर्व को, साध्य नहीं सा, भावित वर्णन, जिसका है।
विधु राजित, गंगा-जल पूरित, जटाजूट वह, जिसका है।
ज्योति अपरिमित, वह तो करता, रंग-मंच पर, नर्त्तन है।
नूपुर-सज्जित, चरण कमल की, हम करते स्तुति, वंदन हैं।।

पेरिय पुराण-चेक्किषार (छंद-शोकहर)

वह कुंडलधर जो, वृषारूढ है, विमल धवल विधु, सीस धरे।
चित-चोर रहा मम, जो मसान की, धूल धूसरित देह धरे।
जब पूर्व एक दिन, कमलासन ने, किया स्तवन कर, नमन जहाँ।
उस ख्यात ब्रह्मपुर, में अनुग्राहक, है न यही तो देव महा।।

तिरुज्ञानसंबंधर (छंद-त्रिभंगी)

वह रहा दुर्ज्ञेय है, संत चित्त में वास है
सुवेद का सार वह, अणु सम चीज़ है।

तत्त्व क्या न जाने कोई, वह मधुर मधु दूध है
उज्ज्वलित तेज वह, चिदंबराधीश है।

देवराज इन्द्र तथा विष्णु चतुरानन में
अनल अनिल वैसे, जलधि पहाड़ में।

व्याप्त उस महान की, गुण चर्चा बिना किये
जो जो दिन बीत गये, सब गये भाड़ में।।

तिरुनावुक्करशर (छंद-कवित्त)

कलादेवी-वंदना

खेतों में जा प्रिय हल लिये जोतते श्री करो में।
औ' वाणी में सुकविजन की नीति से पूर्ण जो है।
ज्ञानी के भी करुण रस से पूर्ण नीके हिये में।
देवी तू है तव चरण हों दास मेरे शरण्य।।

कविमणि देशिक विनायकम पिल्लै (छंद-मंदाक्रान्ता)

प्रार्थना

जय जय साधु दयालु जन, जय सुरगण गो वृन्द ।
अमृत वर्ष हो काल में, राजा रहें समृद्ध ।
पातक का नाश हो दिक दिक में सब हर नाम ।
गूँज उठे, जिससे बने, दुःख रहित नर-धाम ।।

तिरुज्ञानसंबंधर

राष्ट्र की सेवा में

(बच्चों का संकल्प)

जन्म भूमि हमारी ! तुझको, हम करते यह प्रण हैं ।
प्रेम हमारा औ' परिश्रम, तब के सब अर्पण हैं ।
हो जायेंगे जब बड़े हम, भावी के वर्षों में ।
गिनती होगी औ' हमारी, कौमी स्त्री-पुरुषों में ।।

स्वर्ग के पिता ! तू कर रहा सबको यहाँ प्यार है ।
मदद तेरे बच्चों की कर, सुनता जब पुकार है ।
युग युग में वे तो बनावें, उन्हें यह निर्धार है ।
परंपरा पावन महा जो, रहित भ्रष्टाचार है ।।

तू हमें दे ऐसा बल भी, जिससे कभी दीन को ।
पीड़ा मन या कर्म से हम, नहीं दें बल-हीन को ।
तेरे आश्रय में हम रखें, बल जो है मर्दों में ।
जो मनुज को सुखी करेगा, उसके दुख-दर्दों में ।।

जन्म-भूमि ! तुझपर हमारा, भरोसा अभिमान है ।
तेरे हित बाप-दादों ने, दिये अपने प्राण हैं ।
मातृ-भूमि अरी ! तुझको फिर, हम करते यह प्रण हैं ।
बुद्धि, भाव, कर्म भावी के, वर्षों के अर्पण हैं ।।

रुडयार्ड किपलिंग (छंद-शुभगीता)

(भावानुवाद—मु. गो. वेंकटकृष्णन)
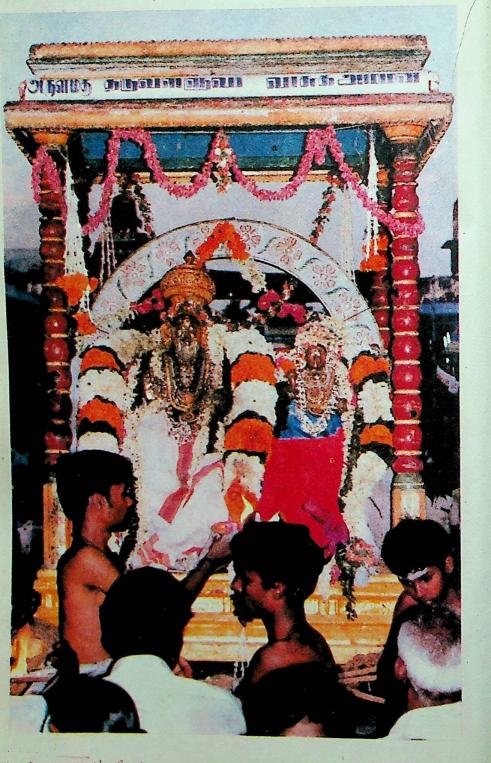
श्री कांची कामकोटि पीठाधिप का श्रीमुख

(तिरुच्चिरापल्ली के तिरुक्कुरळ प्रचार संघ के संस्थापक
श्री वन्मीकनाथजी के द्वारा सन् १९६४ अक्तूबर में तिरुक्कुरळ का
प्रथम कांड— धर्म-कांड— के प्रकाशित होने के अवसर पर अनुगृहीत।)

श्रीः

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्यवर्य
श्रीमच्छङ्कर भगवत्पादप्रतिष्ठित-
श्रीकांची कामकोटि पीठाधिप जगद्गुरु
श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती श्रीपादादेशानुसारेण
श्रीमज्जयेन्द्र सरस्वती श्रीपादैः
क्रियते नारायण स्मृतिः

वेदों धर्मशास्त्रों तथा इतिहास पुराणों में जिन धर्मों का प्रतिपादन हुआ है वे ही धर्म दिव्य कवि तिरुवळ्ळुवर के अमर ग्रंथ 'तिरुक्कुरळ' में भी पाये जाते हैं।

देवों के प्रति मनुष्यों का कर्तव्य, अतिथि-पूजन वगैरह, पुनर्जन्म, स्वर्ग-नरक, पतिव्रता धर्म, गो संरक्षण, इन सबों का कारणीभूत नीतिपूर्ण शासन युक्त क्षत्रिय धर्म, पक्षपातरहित वैश्यधर्म, मनुष्यमात्रको परमावश्यक प्रेमोत्कर्षस्वरूप भगवद्भक्ति तथा उसके फलस्वरूप भगवत्-प्राप्ति, भगवान के लोक में चिरकाल रहना, इन सबों का विवरण 'तिरुक्कुरळ' में अच्छी तरह किया गया है।

इतना ही नहीं, सब पदार्थों का तत्वस्वरूप परब्रह्म के तत्वज्ञान से अविद्या रूपी अन्धकार से निवृत्त हो कर शाश्वत श्रेष्ठ वस्तु मोक्ष स्थिति को प्राप्त करना आदि अनेक प्रकार के धर्म-तत्व ' तिरुक्कुरळ ' के पाठकों के हृदय में सरस तरु में गड़े हुए खूंटे के समान गहरे पैठते हुए हम देखते हैं।

इतनी कीर्ति संपन्न तमिष़ भाषा के असाधारण नीति ग्रंथ 'तिरुक्कुरळ' का प्रचार संसार भर में करने के उत्तम उद्देश्य से तिरुक्कुरळ प्रचार संघ, जिसके व्यवस्थापक श्री वन्मीकनाथन हैं, हिन्दी और संस्कृत के विद्वान तथा कवि एम. जी. वेंकटकृष्णन के द्वारा इस ग्रंथ का पद्यानुवाद दोहा छंद में कराके प्रकाशित करने को प्रस्तुत है यह जानकर हमें सन्तोष होता है।

हिन्दी जाननेवाले इस ग्रंथ की सहायता से तमिष़ भाषा के लोक-नीति-शास्त्र 'तिरुक्कुरळ' के तत्वों को समझ कर धर्म मार्ग पर चलते हुए अपनी अत्मा, परम्परा और देश के लिये महान श्रेष्ठता को खोज कर प्राप्त करें।

यात्रास्थान्
श्रीकांचीपुरम्
क्रोधि, भाद्रपद
शुद्ध सप्तमी

नारायणस्मृतिः

foreword

Universally acclaimed as the Tamil Veda, the Tirukkural is well-known for its perfection of form, profundity of thought, nobility of sentiment and earnestness of moral purpose.

This great work comprises 1330 aphorisms, grouped into 133 chapters of ten couplets each, arranged in three parts of which the first deals with Virtue, the second with Wealth and the third with Love.

The first part on Virtue which has thirty eight chapters, is the best. The second dealing with Wealth, in seventy chapters, on a variety of themes such as State, its polity, economy etc. is a practical guide for all professions. The third which covers the concept of Love, in twenty-five chapters, is the smallest of the three.

What is admirable about the Tirukkural is that it is the only book, next to the Bible, which has been translated into many languages - Indian and foreign. Right from Father Beschi, numerous foreign scholars rendered the Tirukkural into English and other languages either in prose or verse form.

The present translation of the Kural in Hindi by prof. M.G. Venkatakrishnan has a history of its own and is a pioneering effort. The first translation on Arathuppal alone was brought out in July 1964 under the inspiration of Shri G. Vanmikanathan; Founder, Tirukkural Prachara Sangham, Tiruchy, and the translation of the full work under the title of "Uttara Veda," another name of Tirukkural, was published by the Tirukkural Prachara Sangham in 1967; the third one which was brought out on 27.10.1982 under the title "Tirukkural Satsayee," consisted of 700 verses and was published by Indo-Swiss Synthetic Gem Manufacturing Company Limited.

The present one is published by Sakthi Finance Ltd. What is really important is the fact that it is a revised and enlarged edition consisting of original Tamil text, Hindi transliteration of the same, and Hindi translation of the verse with commentaries for important words.

Now a word about Mr. Venkatakrishnan, the author of the work. Born on 22nd June 1914, Mr. Munnirpallam Gopala Iyer Venkatakrishnan had his education upto SSLC in the Mantra Murthy High School, Tirunelveli. Later, on his own efforts he passed all the examinations conducted by the Hindi Prachara Sabha in the first rank and was awarded prizes for having come out with rank in Madhyama, Rastrabhasha and Visharad.

He passed his vidwan examination in 1944 and became a Master of Arts in Hindi of the Madras University in 1946.

Between 1935-46 he worked in various high schools of the Tirunelveli District Board and later joined the Union Christian College, Alwaye, in 1946 as Lecturer in Hindi.

The next year, he left Kerala State to become the Head of the Dept. of Hindi at the Alagappa Chettiar College, Karaikudi. One important factor about Mr. Venkatakrishnan is that he studied Hindi on his own efforts and came out creditably in all the examinations by sheer dint of merit.

Apart from Tirukkural in Hindi, he has to his credit two valuable publications; one is 'Noopura Gatha' which is the story contained in the Silappadikaram in Hindi, a Publication sponsored by the Bharati Tamil Sangham, Calcutta. His book "Commercial Correspondence in Hindi" was prescribed for the students of the B.Com Degree Course.

As early as the year 1969 Mr. Venkatakrishnan was awarded the Government of India Prize of Rs. 1000/-, at a function organised for the purpose and the award was presented by Dr. V.K.R.V. Rao the then Education Minister.

Right from the beginning Kanchi Paramacharyal has been the source of inspiration for all his literary activities and His Holiness has presented him with a Gold bracelet for his Hindi translation of the Kural even when he was camping at Rajahmundry.

When I examined the script of his latest work, I felt that an enormous work has gone into it and I am happy to be able to state that this book will, for many years, remain as a pioneering effort on the subject and will go a long way to propagate the thoughts contained in the Kural to the people all over India. It is our hope that this work will open the classics of the Tamil language to people of Hindi States.

20 · 10 · 88 Madras 600 032 N. Mahalingam

मु. गो. वेंकटकृष्णन
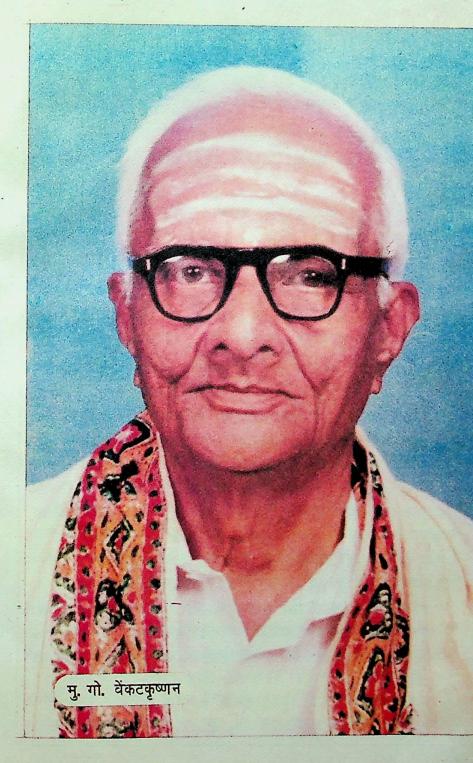
प्राक्कथन

तमिल वेद के नाम से सर्वमान्य तिरुक्कुरळ अपनी संपूर्ण संगठन, विचारों की गंभीरता, भावों की शालीनता और नैतिकता में श्रद्धा आदि के लिए विख्यात है।

इस महान ग्रंथ में तीन कांड हैं — धर्म, अर्थ और काम — जिनमें १३३० सूक्तियाँ हैं। ये सूक्तियाँ दस दस द्विपदी के (कुरळ) हिसाब से १३३ अध्यायों में विभाजित हैं।

पहला कांड धर्म-कांड जिसमें ३८ अध्याय हैं सर्वश्रेष्ठ है। दूसरा, अर्थ-कांड, जिसमें राज्य और राजनीति, अर्थव्यवस्था आदि विभिन्न विषयों का प्रतिपादन ७० अध्यायों में हुआ है सभी पेशेवालों को व्यावहारिक रूप में मार्गदर्शक है। तीसरे कांड में जो सबसे छोटा है २५ अध्यायों में प्रेम की चर्चा है।

तिरुक्कुरळ की प्रशंसनीयता इसमें है कि इंजील को (बैबिल) छोड़ कर यही एकमात्र ग्रंथ है जिसका अनुवाद कई भाषाओं में, भारतीय और विदेशी, हो चुका है। पादरी बेस्की से ले कर कई विदेशी विद्वानों ने तिरुक्कुरळ का अनुवाद अंग्रेज़ी और अन्य भाषाओं में, गद्य या पद्य में, किया है।

तिरुक्कुरळ का प्रस्तुत अनुवाद जिसका अपना इतिहास है और जो एक अभूतपूर्व प्रयत्न है प्रो. एम. जी. वेंकटकृष्णन ने किया है। तिरुच्चि के तिरुक्कुरळ प्रचार संघ के संस्थापक श्री वन्मीकनाथ की प्रेरणा से धर्म-कांड मात्र का अनुवाद जुलाई १९६४ में संपन्न हो कर उनके द्वारा प्रकाशित किया गया। फिर १९६७ में तिरुक्कुरळ प्रचार संघने 'उत्तर वेद' शीर्षक के साथ पूरे ग्रंथ का अनुवाद प्रकाशित किया। उसके बाद २७, अक्टूबर १९८२ में 'दि इंडो-स्विस सिन्तेटिक जेम मैन्युफ़ेकचरिंग कंपनी लिमिटेड' ने तिरुक्कुरळ सतसई को प्रकाशित किया जिसमें तिरुक्कुरळ के चुने हुए ७०० कुरळ पद्य हैं। यह उसका तीसरा प्रकाशन था।

शक्ति फ़ैनान्स लि. से प्रकाशित प्रस्तुत संस्करण की विशेषता यह है कि यह एक संशोधित और संवर्धित संस्करण है जिसमें तमिल में मूल कुरळ पद्यों के साथ उनका लिप्यंतर भी है और फिर उनके दोहानुवाद के साथ कठिन शब्दों का टीका भी है।

इस कृति के लेखक श्री वेंकटकृष्णन के सम्बन्ध में दो शब्द। मुन्नीर्पल्लम गोपाल अय्यर वेंकटकृष्णन का जन्म २२, जून, १९१४ में हुआ और उन्होंने

एस.एस.एल.सी. तक की शिक्षा तिरुनेलवेली के मंत्रमूर्ति हाई स्कूल में पायी। उसके बाद वे अपने ही प्रयत्नों से हिन्दी प्रचार सभा की परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए और मध्यमा, राष्ट्रभाषा तथा विशारद परीक्षाओं में सर्वप्रथम उत्तीर्ण होने के लिये पुरस्कार भी पाये।

सन् १९४४ में विद्वान परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद सन् १९४६ में उन्होंने मंदरास विश्वविद्यालय की एम.ए. की उपाधि प्राप्त की।

सन् १९३५ और १९४६ के बीच वे तिरुनेलवेली जिला बोर्ड के हाई स्कूलों में काम करते रहे। उसके बाद १९४६ में आलवाई के यूनियन क्रिस्टियन कालेज में वे हिन्दी प्राध्यापक, नियुक्त हुए। अगले वर्ष वे केरल राज्य को छोड़ आये और कारैक्कुडि में स्थापित अलगप्पा चेट्टियार कालेज के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष की पदवी स्वीकार की। श्री वेंकटकृष्णन की विशेष योग्यता यह है कि उन्होंने अपने ही प्रयत्नों से हिन्दी सीखी और सब परीक्षाओं में मान्यता के साथ उत्तीर्ण हुए।

हिन्दी में तिरुक्कुरळ के अतिरिक्त उनकी और दो मुख्य कृतियाँ हैं। एक 'नूपुर-गाथा' है जिसमें 'शिलप्पधिकारम' की कथा संक्षेप में है। उसको कलकत्ता के भारती तमिल संघ ने प्रकाशित किया था। दूसरा बी.काम. के विद्यार्थियों के लिये लिखा हुआ 'व्यापारी पत्र-व्यवहार' है।

सन् १९६९ में ही भारत सरकार ने उनको एक हज़ार रुपये के पुरस्कार से सम्मानित किया और उसके लिये आयोजित सभा में उस समय के शिक्षा मंत्री डाक्टर वी.के.आर.वी. राव ने पुरस्कार को प्रदान किया।

उनके साहित्यिक कार्यों में आरंभ से ही कांची के परमाचार्य का अनुग्रह उनको प्राप्त हुआ था। जब राजमहेन्द्री के मुक़ाम में थे तब परमाचार्य ने उनको तिरुक्कुरळ के अनुवाद के लिये स्वर्ण कड़ा प्रदान करके अनुगृहीत किया।

जब मैंने प्रस्तुत कृति को परखा तब मैंने यह अनुभव किया कि इसको संपन्न करने के लिये कितना अध्यवसाय करना पड़ा होगा और यह कहते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि कई वर्षों तक यह कृति इस विषय में एक अभूतपूर्व कृति रहेगी तथा सारे भारत में 'कुरळ' में प्रतिपादित विचारों का प्रचार करने के लिये बहुत हद तक उपादेय रहेगी। हमारा विश्वास है कि यह ग्रंथ हिन्दी राज्यों के निवासियों को तमिल भाषा के उत्तम ग्रंथों की झांकी देगी।

20 • 10 • 88

ना. महालिंगम
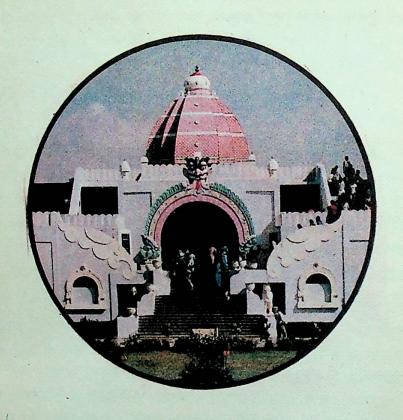
कृतज्ञता ज्ञापन

डाक्टर ना. महालिंगम जी जो कांची कामकोटि पीठाधिप श्री शंकराचार्य स्वामीजी से 'अरम् वळर्क्कुम् अण्णल्' (तमिल भाषा में) अर्थात् 'धर्म वर्धन श्रीमान' के विरुद से सम्मानित हुए हैं न केवल विख्यात उद्योगपति हैं परन्तु शिक्षा और संस्कृति से संबंधित तथा आध्यात्मिक विषयों में बड़ी अभिरुचि रखते हैं। स्वभाव से धार्मिक चित्तवृत्ति के होने के कारण किसी भी धार्मिक कार्य के लिये या धर्म, शिक्षा या संस्कृति से संबंधित उत्तम ग्रन्थों के प्रकाशन के लिये सहायता मांगने पर बड़ी उदारता से धन प्रदान करते हैं या स्वयं स्थापित

धार्मिक संस्थानों के द्वारा उन सत्कार्यों को संपन्न करते हैं। तैत्तिरीय उपनिषद में जो यह आदेश है— "श्रद्धया देयम्। अश्रद्धयाऽदेयम्। श्रिया देयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम्।" अर्थात् श्रद्धा से दिया जाना चाहिये, अश्रद्धा से नहीं, संपत्ति के अनुसार दिया जाना चाहिये, नम्रता और भय के साथ दिया जाना चाहिये, समझ-बूझ कर दिया जाना चाहिये— उसके अनुसार देने का उदाहरण डा. महालिंगमजी हैं, यह कहा जाय तो वह अत्युक्ति न होगी।

सर्व धनों में श्रेष्ठ है, दया रूप संपत्ति।
नीच जनों के पास भी, है भौतिक संपत्ति।। (दोहा २४१)

तिरुवल्लुवर का यह कथन है कि सांसारिक सुख-भोग देनेवाली भौतिक संपत्ति नीच लोगों के पास भी है परन्तु दयालुता रूपी संपत्ति केवल उत्तम लोगों के पास है। डा. महालिंगम जी 'अरुळ् शॅल्वर्' अर्थात् 'दयानिधि' के नाम से प्रेम और आदर के साथ संबोधित किये जाते हैं। वे इन दोनों संपत्तियों के साथ विद्या-संपत्ति भी प्राप्त श्रीमान हैं। उनसे स्थापित धार्मिक संस्थापनों के आश्रय में कई शिक्षणालय सुचारु रूप से चलाये जा रहे हैं।

पिछली शताब्दी में तमिल नाडु में एक महान संत श्री रामलिंग स्वामीजी रहते थे। उनसे चलाये हुए 'समरस शुद्ध सन्मार्ग संघ' के तत्वों का प्रचार करने के लिये डा. महालिंगमजी ने श्री रामलिंगर् सेवा संघ की स्थापना करके स्वामीजी से रचित स्तुतियों और दार्शनिक विचारों का प्रकाशन किया। उनका अंग्रेज़ी अनुवाद भी कराके उसको भी प्रकाशित किया। यही नहीं स्वामीजी की स्मृति में प्रतिवर्ष उत्सव मनाने का भी आयोजन किया है।

प्राचीन सभ्यता के शोध कार्य के लिये अखिल जगत का 'प्राचीन सभ्यता शोध संघ' स्थापित हुआ है। उस संघ की भारत में जो शाखा है उसके अध्यक्ष के पद में डा. महालिंगम जी हैं और पिछले दस वर्षों से उस संघ की उत्तम सेवा के द्वारा संघ की प्रशंसा का पात्र बन चुके हैं। संघ के शोध से संबंधित कई विचार गोष्ठियों का आयोजन तथा पुस्तकों का प्रकाशन भी उन्होंने किया है। यह ध्यान देने की बात है कि इन कार्यों के लिये जो व्यय हो रहा है वह सब उनसे स्थापित शक्ति धर्म-संस्थापन ही करता आ रहा है।

सन् १९६७ में तिरुक्कुरळ प्रचार संघ के संस्थापक श्री वन्मीकनाथ जी ने तिरुक्कुरळ के हिन्दी अनुवाद के प्रकाशन के लिये डा. महालिंगमजी से सहायता मांगी तो उन्होंने बड़ी उदारता से पुस्तक की १००० प्रतियाँ बिना मूल्य के वितरित करने के लिये धन दिया। यही नही पुस्तक के प्रमोचन के लिये स्वयं अयोजन किया। दिनांक 29-8-67 को मदरास के 'कलैवाणर्' मण्डप में बड़ी सभा हुई और भारत सरकार के शिक्षा मंत्री श्री शेरसिंह के द्वारा पुस्तक का प्रमोचन हुआ। उस अवसर पर डा. महालिंगम जी ने मुझे भी योग्य पुरस्कार के द्वारा सम्मानित किया।

'तिरुक्कुरळ सतसई' शीर्षक के साथ मैंने अनुवाद का एक संक्षिप्त संस्करण तैयार करके रखा था। पूरे ग्रन्थ में १३३० दोहे हैं। उनमें से चुने हुए ७०० दोहों के इस संस्करण को भी डा. महालिंगम जी ने प्रकाशित करने को सहमत हुए। १९८२ में उसका प्रकाशन हुआ। 'तिरुक्कुरळ सतसई' को पढ़कर जिन महाशयों ने तिरुक्कुरळ को महानता की प्रशंसा में तथा अनुवाद के संबंध में भी अपना विचार प्रकट करते हुए जो पत्र लिखे उनसे कुछ अंशों को और प्रथम संस्करण के संबंध में जिन महानुभावों की सम्मति मिली उसको भी इस पुस्तक में अन्यत्र दिया गया है। उन सभी महोदयों को मैं हृदय से धन्यवाद समर्पित करता हूँ।

सन् १९६७ में प्रथम संस्करण को प्रकाशित हुए बीस वर्षों से अधिक हो गये हैं। इस संशोधित और संवर्धित संस्करण को प्रकाशित करने के लिये जब मैंने डा. महालिंगम जी से अनुरोध किया तब उन्होंने बिना किसी हिचक के मेरी प्रार्थना स्वीकार की। मैं इसे अपना परम सौभाग्य मानता हूँ।

डा. महालिंगम जी व्यापार की दृष्टि और लाभ के विचार के बिना कई उत्तम ग्रंथों का प्रकाशन स्वयं स्थापित धार्मिक संस्थापनों के द्वारा करते आ रहे हैं। लेकिन इस ग्रंथ की एक मुख्य विशेषता है। वह यह है कि तिरुक्कुरल को तमिल नाडु के लोग 'तमिल वेद' मानते हैं। संसार की कई भाषाओं में यह अनुवादित होकर सारे संसार में इसकी प्रसिद्धि हो चुकी है। तमिल मूल के साथ नागरी लिपि में उसका लिप्यंतर तथा हिन्दी में दोहानुवाद इसमें दिये गये हैं। देश की एकता को सुदृढ बनाने की यह श्रेष्ठ सेवा है। तमिल नाडु में मैं लगभग ४० वर्ष हिन्दी अध्यापन का काम करता रहा। तिरुक्कुरल के अनुवाद का यह कार्य ही मुझे बड़ा संतोष दे रहा है। मेरे मन को यह संतुष्टि भी है कि मेरा हिन्दी सीखना व्यर्थ

नहीं गया। डा. महालिंगम जी ने बहुत बड़ा धन व्यय करके इस संस्करण को प्रकाशित किया है। इस महान उपकार के लिये उनको अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं। ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि वह उनको दृढगात्रता के साथ दीर्घायु प्रदान करे जिससे उनके उद्योगों की निरन्तर उन्नति होती रहे तथा उनके सब सत्कार्य सुचारु रूप से संपन्न होते रहें।

श्री भगीरथन जी तमिल भाषा के श्रेष्ठ विद्वान् तथा नामी पत्रकार हैं। पत्रिकाओं और पुस्तकों को आकर्षक ढंग से प्रकाशित करने में उनको बड़ा अनुभव है। डा. महालिंगम जी के सत्कार्यों में उनके सहायक रहते हुए विशेषतः श्री रामलिंगर सेवा संघ के मंत्री रह कर उत्तम सेवा कर रहे हैं। सन् १९८२ में 'तिरुक्कुरल सतसई' के प्रकाशन में मुझे उनका बड़ा सहयोग मिला और उसके फलस्वरूप उक्त पुस्तक का सुन्दर प्रकाशन सिद्ध हुआ। इस कृति को छाप कर पुस्तकाकार देने का कार्य डा. महालिंगम जी ने उन्हीं को सौंपा। श्री भगीरथन जी ने बड़ी श्रद्धा और लगन के साथ इसको सुन्दर रूप में प्रकाशित करने का सारा प्रबन्ध जो किया उसके लिये मैं उनका बड़ा आभार मानता हूँ।

इस ग्रंथ के प्रकाशक शक्ति फ़ैनान्स लिमिटेड के निर्वाहक अध्यक्ष श्री एस.एन. पाइ का बड़ा आभार मानता हूँ।

चित्रकला में निपुण तथा तमिल भाषा के कवि श्री अमुदोन ने इसके आवरण-पृष्ठों को सुन्दर चित्रों से सजा कर अन्दर के पृष्ठों की सनधज भी बड़ी कुशलता से की है। उनको मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ। फ़ोटो प्रिन्ट सर्विसेस, मदरास-93; और दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के आफ़सेट डिविशन के प्रबन्धकों ने बड़ी लगन और श्रद्धा के साथ छापने के पृष्ठों को तैयार किया उनको, तथा आर. जे. प्रोसेस के श्री जनार्दनन ने इसकी सुन्दर छपाई-सफ़ाई का सारा प्रबन्ध किया उनको भी मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

'कृष्ण निवास'
22, राघव नगर,
उल्लगरम,
मदरास-600 091.

मु. गो. वेंकटकृष्णन,
14-9-1988

समर्पण

श्रीयुत डाकटर ना. महालिंगम बी.एस.सी., एफ़.ऐ.इ.,

जो महान संत रामलिंगर, महात्मा गांधीजी जैसे महानुभावों से निर्दिष्ट धर्म-मार्ग पर चलना अपना जीवन-लक्ष्य मानते हैं

जो मदरास में स्थित रामलिंग मिषन तथा भारती संघ, वडलूर का शुद्ध सन्मार्ग निलय, वळ्ळलार गुरुकुल, अखिल जगत के प्राचीन संस्कृति के शोध-संघ की भारतीय शाखा आदि के अध्यक्ष हैं

जो नल्लमुत्तु गवुण्डर महालिंगम कालेज, नाच्चिमुत्तु पालिटेकनिक, शक्ति इन्स्टिटयूट आफ़ टेकनालजि, कुमरगुरु कालेज आफ़ टेकनालजि, पेरूर शांतलिंगर तमिल कालेज आदि शिक्षण संस्थाओं के स्थापक हैं

जो भारती विश्वविद्यालय तथा अण्णा विश्वविद्यालय के डाकटर विरुद से सम्मानित हैं

जो 'शक्ति' समूह की संस्थाओं के अध्यक्ष हैं

जो श्री कौमार मठ के सन्निधानम श्री सुन्दर स्वामीजी से "ज्ञान-दान वळ्ळल्" (अर्थात् ज्ञान-दान के दानी महान) के विरुद से तथा श्री कांची कामकोटि पीठ के परमाचार्य से "अरम् वळर्क्कुम् अण्णल्" (अर्थात् धर्मवर्धन श्रीमान) के विरुद से अनुगृहीत हैं और

जो मेरे परम आदरणीय हैं

उनको

तमिल-वेद के नाम से आराधित तिरुक्कुरळ को
हिन्दी में अनुवाद सहित
सादर समर्पण करता हूँ।

विनीत
मु. गो. वेंकटकृष्णन

ना. महालिंगम
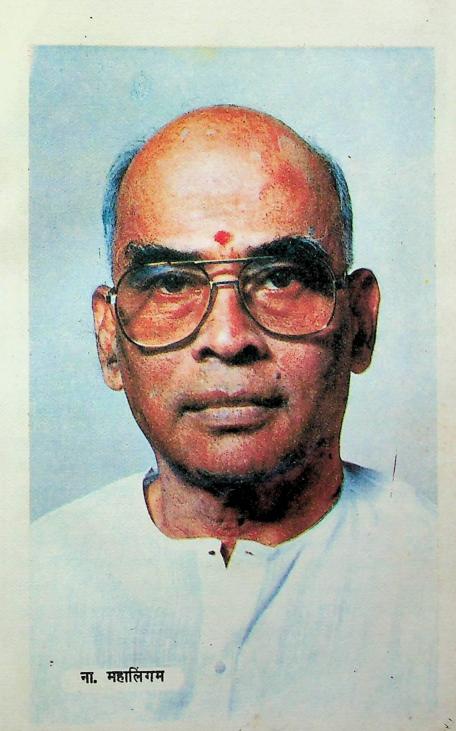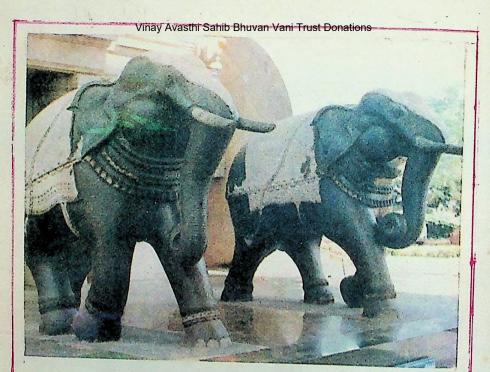
संशोधित और संवर्धित संस्करण की

भूमिका

तिरुक्कुरळ को हिन्दी में अनुवाद करने की योजना ही दैवी प्रेरणा से हुई। तिरुच्चिरापल्ली के निवासी श्री. गो. वन्मीकनाथ जी जिन्होंने तिरुक्कुरळ प्रचार संघ की स्थापना करके अपने अथक परिश्रम से इस महत्वपूर्ण कार्य को संपन्न किया, एक दिन पूजा-पाठ करके ध्यान में बैठे थे कि उस समय उनकी इष्ट देवता से प्रेरणा हुई कि उनको तिरुक्कुरळ का अनुवाद हिन्दी में मूल के अनुरूप पद्य में करने का प्रबन्ध करना चाहिये। उन दिनों श्री कांची कामकोटि पीठ के परमाचार्य विजय यात्रा में तिरुच्चिरापल्ली पधारे थे और उनके परम भक्त होने के नाते श्री वन्मीकनाथ जी इस सत्कार्य के आरंभ में आशीर्वाद पाने के लिये उनके दर्शनार्थ गये। परमाचार्य के दर्शन होते ही जो हुआ उसका वृत्तान्त श्री वन्मीकनाथ जी के शब्दों में-- "ईश्वर ने इस संघ के व्यवस्थापक याने आपके सेवक के (वन्मीकनाथ जी) मन में अक्तूबर पहली तारीख सन् १९६३ में इस संघ को स्थापित करने का विचार बो दिया। आपका सेवक उसी दिन श्री कांची कामकोटि पीटाधिप जगद्गुरु

चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती स्वामी जी महासन्निधान के दर्शन करने गया। श्री स्वामीजी ने आपके सेवक को इन शब्दों में आशीर्वाद दिया :— "सब ठीक चलेगा, जा!" यह संघ उसी आशीर्वाद रूप बीज का फलवृक्ष है। श्री वन्मीकनाथ जी आश्चर्य चकित हो गये कि उनसे कुछ पूछे बिना ही श्री परमाचार्य ताड़ गये कि वे क्या चाहते थे। परमाचार्य की स्वीकृति और आशीर्वाद के साथ यह पवित्र कार्य मुझे सौंपा गया और उनके अनुग्रह से वह संपन्न हो गया।

तिरुक्कुरळ का प्रथम कांड—धर्म-कांड—जिसमें ३८ अध्याय हैं (३८० दोहे) सन् १९६४ अक्तूबर में प्रकाशित किया गया। विजयदशमी के दिन पूज्यपाद परमाचार्य के करकमलों से उसका प्रमोचन हुआ। उस अवसर पर श्री कांची कामकोटि पीठाधिप श्री जयेन्द्रसरस्वती स्वामीजी ने परमाचार्य के अनुग्रह सहित शुभ संदेश भी प्रदान किया। फिर १९६७ अक्तूबर में संपूर्ण तिरुक्कुरळ का अनुवाद 'उत्तरवेद' शीर्षक के साथ जो तिरुक्कुरळ का अन्य नाम है, प्रकाशित किया गया। इस संस्करण की १२००० प्रतियाँ छपीं और प्राय: सभी प्रतियाँ हिन्दी भाषी राज्यों में स्थित हाई स्कूलों को दान में प्रदान की गयीं।

श्री वन्मीकनाथ जी भारत की केन्द्रीय सरकार के उच्च पदाधिकारी रहकर काम से निवृत्त होकर कई वर्षों के बाद जिस निष्ठा, लगन, श्रद्धा और उत्साह के साथ इस कार्य में प्रवृत्त हुए वह तिरुक्कुरळ के प्रति उनकी आस्था का द्योतक था और मुझे भी स्फूर्तिदायक था। उनकी प्रेरणा और प्रोत्साहन मुझे न मिलते तो इस महान ग्रंथ का पद्यानुवाद करने में मैं सफल न होता। इस संशोधित और संवर्धित संस्करण के प्रकाशित होने में भी उन्होंने मुझे पूरा समर्थन दिया और उनकी शुभकामनाओं के फलस्वरूप ही यह संस्करण सिद्ध हुआ है। मैं सदा उनका आभारी रहूँगा।

अनुवाद का कार्य जब हो रहा था तब पूज्यपाद श्री चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती तथा श्री जयेन्द्रसरस्वती दोनों आचार्य महोदय समय समय पर उसकी प्रगति पर पूछ-ताछ करते हुए मुझे प्रोत्साहन दे रहे थे। सन् १९६६ अक्तूबर में अनुवाद संपन्न हुआ। पूज्यपाद श्री परमाचार्य ने उसका प्रमोचन किया और स्वर्ण

कड़ा मुझे प्रदान करके मुझे अनुगृहीत किया। मेरा परम सौभाग्य है कि मेरे जीवन में मुझे ऐसा शुभ अवसर मिला। दोनों महानुभावों के चरणकमलों पर मैं सदा नतमस्तक रहूँगा।

सन् १९८२ अक्तूबर में तिरुक्कुरळ-सतसई का प्रकाशन हुआ। यह उक्त ग्रंथ का संक्षिप्त संस्करण है जिसमें तिरुक्कुरळ के १३३० दोहों में से ७०० दोहों का संकलन करके उनको सात शतकों में विभिजित सात शीर्षकों में प्रस्तुत किया गया है। यह एक नया प्रयास है। इसके पहले ऐसा संस्करण नहीं निकला था। दि इंडो-स्विस सिंतेटिक जेम मेन्युफ़ेक्चरिंग कं. लि., मेट्टुप्पालयम् के द्वारा, जिसके अध्यक्ष डाक्टर ना. महालिंगम जी हैं तिरुक्कुरल-सतसई को प्रकाशित किया गया।

संशोधित और संवर्धित संस्करण की ये विशेषताएँ हैं :—

1. तिरुक्कुरळ का मूल भी तमिल में और उसका लिप्यंतर नागरी लिपि में दिये गये हैं।
2. जहाँ आवश्यक मालूम पड़ा वहाँ दोहे के साथ ही कठिन-शब्दार्थ व टिप्पणी भी प्रस्तुत हैं।
3. प्रथम संस्करण का संशोधन करके कई स्थलों में अनुवाद में सुधार किया गया है।
4. 'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि', 'अनुवाद के संबंध में' ये दोनों अध्याय 'तिरुक्कुरळ सतसई' से उद्धृत हैं।
5. 'दोहा : छंद-लक्षण', 'तमिल भाषा और नागरी लिपि' ये दोनों लेख भी इस संस्करण के नये हैं।

मैं विश्वास करता हूँ कि ये विशेषताएँ सहृदय पाठकों को रोचक सिद्ध होंगी। मेरी यह भी आशा है कि इस विश्व-प्रसिद्ध ग्रंथ तिरुक्कुरळ का दोहानुवाद न केवल हिन्दी भाषी राज्यों में परंतु इतर राज्यों में भी जहाँ हिन्दी के ज्ञाता हैं लोकप्रिय सिद्ध होगा तथा ऐसे ही भारत की अन्य भाषाओं की उत्तम साहित्यिक कृतियों की जानकारी हिन्दी के द्वारा लोगों को दिलाने से भारत की राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ हो जायगी।

श्री गुरुभ्यो नमः

तिरुक्कुरल - माहात्म्य

(तिरुक्कुरल प्रचार संघ से प्रकाशित तिरुक्कुरल का
संपूर्ण अनुवाद 'उत्तरवेद' से उद्धृत)

श्री कांचीस्थित कामकोटि श्री शंकर भगवत्पाद
अखिल जगत के गुरु महान से प्रकार वरप्रसाद
'तमिष़ वेद' यों प्रथित ग्रंथ का दोहे में अनुवाद
प्रस्तुत है इसके प्रचार से जग का मिटे विषाद।

(छंद-सरसी)

चतुरानन ने तिरुवल्लुव का ले करके अवतार
तीन भाग में चतुर्वेद के ले तत्वों का सार
रचा ग्रंथ जो उसके गुण का वाक् करे जय-गान
मन चिंतन सिर वंदन उसका श्रवण करे नित कान।

(उग्रप्पेरुवषुतियार)

बुध-जन मानित बहुशास्त्रों में वेदों में अव्यर्थ
पोषित हो जो प्रतिपादित हैं सब कहने के अर्थ
तीन कांड में कविश्रेष्ठ ने सर्जन किया महान
कवि-समाज में तिरुवल्लुव के कोई है न समान।

(आशिरियर नल्लंदुवनार)

तमिल साहित्य के सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ तिरुक्कुरल के रचयिता तिरुवल्लुवर को सारे संसार की महान विभूति मानते हुए कविवर श्री सुब्रह्मण्य भारती ने गाया—

'वल्लुव को दे कर जगत को अमर कीर्ति पायी
तमिल नाडु ने महान कीर्ति पायी'।

यह सर्वथा सत्य है कि तमिल-नाडु की यह देन न केवल भारत को है परतु अखिल जगत को है। तिरुवल्लुवर किसी एक जाति, संप्रदाय, धर्म, देश या

काल के नहीं थे। वे इन सबके परे थे या यों कहिये कि वे सबके थे। उनकी अनुपम कृति तिरुक्कुरल में प्रतिपादित तथ्य सार्वदेशीय और सार्वकालीन हैं।

तिरुवल्लुवर के जन्मकाल, जन्मस्थान और जीवन के संबंध में निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता। यद्यपि उनकी जीवनी की कई रोचक कथाएँ प्रचलित हैं फिर भी उनको प्रमाणित करने का आधार न होने के कारण मैं इतना कहकर संतोष कर लेता हूँ कि तिरुवल्लुवर का जन्म लगभग दो हज़ार वर्षों के पहले यानी ईसा के पूर्व तमिल-नाडु में हुआ था। उनकी महत्ता इसमें है कि शैव, वैष्णव, जैन और बौद्ध उन्हें अपने अपने धर्मावलम्बी मानते हैं और उसपर गर्व करते हैं। तिरुक्कुरल के प्रथम अध्याय ईश्वर-स्तुति में इस प्रकार की स्तुति की गयी है कि भिन्न भिन्न धर्मावलम्बी उसे अपने ही ईश्वर की स्तुति मानते हैं। उसके आधार पर तिरुवल्लुवर की जाति या धर्म का निर्णय करना असंभव है। उसी प्रकार सारे धर्म-काँड में प्रतिपादित विषय—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, संयमशीलता, निर्लोभता, गार्हस्थ्य, प्रेमभावना, संन्यास, तप, नियति आदि सभी धर्मावलम्बियों को मान्य होने के ढंग से वर्णित हैं। इसलिये उनके आधार पर भी तिरुवल्लुवर को किसी मत, संप्रदाय, या जाति के संकुचित दायरे में लाना असंभव है। हाँ, इतना अवश्य कहा जा सकता है कि वे विश्वबंधुत्व के सिद्धान्त पर विश्वास करनेवाले महामानव थे।

उनकी महान कृति तिरुक्कुरल की महिमा इसी से सिद्ध होती है कि उसकी प्रशंसा में एक स्तोत्र-माला है जिसमें 53 पद्य-पुष्प हैं। पद्यों की रचना तिरुवल्लुवर के समकालीन और बाद के श्रेष्ठ कवियों से की गयी है। पांड्य राज्य के महाराज उग्रप्पेरुवषुदियार ने, जो तिरुवल्लुवर के समकालीन थे, तिरुक्कुरल का आदर करते हुए मुक्तकंठ से जो उसका गुण-गान किया उसका और 'कवि आशिरिय, नल्लंदुवनार' की प्रशंसा का पद्यानुवाद करके मैंने इसके आरंभ में दिया है। ऐसे ही सभी पद्य तिरुक्कुरल की प्रशंसा में एक से एक होड़ करनेवाले हैं। तमिल भाषा में 'कुरल' शब्दार्थ 'छोटा' है और वह छंद-विशेष का भी नाम है। 'तिरु' आदर सूचक शब्द है। 'कुरल' के जैसे अति छोटे छंद में महान विषयों को समा कर रखने की तिरुवल्लुवर की अद्भुत क्षमता की प्रशंसा कवि कपिल ने कलात्मक और स्वाभाविक ढंग से की है। उन्होंने कहा है— "जैसे एक छोटी-सी घास की नोक पर पड़ी तिन्नी से भी लघु ओस की बूँद ऊँचे ताड़ के पेड़ को प्रतिबिंबित करती है वैसे 'कुरल' महान विचारों को प्रकट करता है।"

इस ग्रंथ में मानव जीवन के सभी पहलुओं पर विचार किया गया है और विचारों की अभिव्यक्ति के लिये शब्दों के चयन में, अलंकार योजना में और समास शैली के प्रयोग में तिरुवल्लुवर की जो अलौकिक प्रतिभा प्रस्फुटित होती है उससे सहृदय पाठक मुग्ध हुए बिना न रह सकते।

तिरुक्कुरल के तीन भाग हैं—धर्म, अर्थ और काम। उनमें क्रमशः 38, 70 और 25 अध्याय हैं। हर एक अध्याय में 10 'कुरल' के हिसाब से समूचे ग्रंथ में 1330 'कुरल' हैं। यह मुक्तक काव्य होने पर भी विषयों के प्रतिपादन में एक क्रम-बद्धता है और विषयों की व्यापकता विषय-सूची को देखने से ही ज्ञात हो सकती है। जबकि धर्म-कांड में ईश्वर-स्तुति, गार्हस्थ्य, संन्यास, अध्यात्म, नियति का बल आदि व्यक्तिगत आचारों और व्यवहारों पर विचार किया है, अर्थ-कांड में राजनीति के अलावा, जिसके अंतर्गत शासकों का आदर्श, मंत्रियों का कर्तव्य, राज्य की अर्थ-व्यवस्था, सैन्य आदि आते हैं, सामाजिक जीवन की सारी बातों पर विचार किया गया है। दो हज़ार वर्षों के पहले तिरुवल्लुवर के हृदय सागर के मंथन के फलस्वरूप निकले हुए सुचिन्तित विचार रत्न इतने मूल्यवान हैं कि बीसवीं शताब्दी के इस अणु युग में भी इनका महत्व और उपयोगिता कम नहीं हुए हैं और इसमें संदेह नहीं है कि चिर काल तक ये बने रहेंगे। धर्म और अर्थ-कांड नीतिप्रधान होने पर भी उनमें कविता की सरसता और सौंदर्य हैं ही। फिर काम-कांड की तो क्या पूछना? संयोग और विप्रलंब शृंगार की ऐसी हृदयग्राही छटा अन्यत्र दुर्लभ है। मुक्तक काव्य की तरह जहाँ एक-एक 'कुरल' अपने में पूर्ण हैं वहाँ सारे कांड में एक सुंदर नाटक का सा भान होता है। इस नाटक में प्रधान पात्र नायक और नायिका हैं और उनकी सहायता के लिए एक सखी और एक सखा का भी आयोजन हुआ है। पूर्वराग, प्रथम मिलन, संयोगानन्द, विरह-दुःख फिर पुनर्मिलन के साथ यह सरस कांड समाप्त होता है। तिरुक्कुरल-माहात्म्य के इस संक्षिप्त वर्णन में एक 'केरल' का भी उद्धरण में न दे सका। कारण एक तो स्थानाभाव है। दूसरा उद्धरण के लिये किसको लूँ अथवा किसको छोड़ूँ? यही समस्या थी। विज्ञ पाठक के कर-कमलों में सब हैं ही। प्रार्थना है कि अध्ययन और मनन कर लें।

दोहा छंद में तिरुक्कुरल का अनुवाद करने का उद्देश्य यह है कि पद्यानुवाद से मूल 'कुरल' की तरह नीतियों को कंठस्थ करने में सुगमता होगी। दोहा छंद कुरल के समान छोटे होने और हिन्दी में नीति संबधी संत साहित्य अधिकतर उसी में रहने के कारण मैंने अनुवाद के लिये इसको उपयुक्त समझा। अनुवाद करते समय यथाक्रम इन बातों को ध्यान में रखा गया है :— 1. मूल का भाव ज्यों का त्यों रहे। 2. शब्द विन्यास जहाँ तक हो सके मूल के अनुरूप हो। 3. भाषा खड़ी बोली और प्रसाद गुण पूर्ण हो। 4. दूसरी भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने योग्य यह अधिकृत अनुवाद रहे।

भारतीय भाषाओं और विश्व की कई भाषाओं में तिरुक्कुरल का अनुवाद हो चुका है। विशेषतः कई अनुवाद हिन्दी में हो चुके हैं। फिर भी यह पहला अनुवाद है जो सीधे मूल ग्रंथ से दोहे में किया गया है। तिरुक्कुरल के प्रसिद्ध टीकाकार श्री परिमेलषगर की व्याख्या के आधार पर प्रायः भावों का प्रतिपादन हुआ है। पंद्रह बीस वर्षों से ऐसा अनुवाद करने का विचार मेरे मन में उठता था और बार बार कार्यारंभ करके छोड़ देता था। आखिर तिरुच्चिरापल्ली के तिरुक्कुरल प्रचार संघ के उत्साही व्यवस्थापक श्री गो. वन्मीकनाथजी से, संयोग से, मेरा परिचय हुआ। उन्होंने न केवल मुझे यह अनुवाद करने के लिये प्रेरित किया परंतु मूल तिरुक्कुरल के भावों को ठीक ठीक समझ कर अनुवाद करने में अपने बहुमूल्य सुझाओं से मेरा बड़ा उपकार किया। उनकी सतत प्रेरणा मुझे न मिलती तो मैं इस काम में प्रवृत्त न होता। एतदर्थ मैं उनका बड़ा आभार मानता हूँ।

अनुवाद का कार्य आरंभ होने के पहले ही श्री कांची कामकोटि पीठाधिपति जगद्गुरु श्री शंकराचार्य ने परम अनुग्रह करके आशीर्वाद दिया कि तिरुक्कुरल का अनुवाद पूर्ण होकर रहेगा। उनकी अमोघ वाणी के फलस्वरूप सन् 1964 अक्तूबर में धर्म-कांड का अनुवाद पूरा हुआ और विजयादशमी के दिन उसका प्रकाशन कांचीपुरम में पूज्यपाद आचार्यजी के करकमलों से हुआ। ठीक दो वर्षों के बाद सन् 1966 अक्तूबर में विजयादशमी के दिन सारे ग्रंथ का अनुवाद संपन्न हो गया। यदि मैं यह कहूँ कि यह अनुवाद श्री गुरुमहाराज का वरप्रसाद है तो उसमें किंचित् भी अत्युक्ति नहीं। उनके चरणारविन्दों पर कोटि कोटि प्रणाम करते हुए मैं आशा करता हूँ कि इस अनुवाद के द्वारा हिन्दी के ज्ञाताओं को तमिल साहित्य के सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ के उत्तम विचारों को हृदयंगम करने का अवसर मिलेगा और ऐसे ही ज्ञान के आदान-प्रदान से भारतीय भावनात्मक एकीकरण दृढ़ हो जायेगा।

कारैक्कुडि,
अक्तूबर सन् 1966

विनीत
एम. जी. वेंकटकृष्णन

(क्रमशः)

पिछले पृष्ठों में इसी शीर्षक के अध्याय में तिरुक्कुरळ के तीन कांडों की — धर्म, अर्थ और काम — विवेचना संक्षेप में की गई जिसका उद्धरण प्रथम संस्करण से हुआ है। इस नये संस्करण में इस अध्याय को जारी रखते हुए मैंने यह लिखना आवश्यक समझा कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, इन चार पुरुषार्थों के होते हुए तिरुक्कुरळ में मोक्ष-कांड का उल्लेख न होने पर भी मोक्ष संबंधी सभी बातें धर्म-कांड में ही प्रतिपादित हो चुकी हैं।

मनुष्य को अपना कर्म-फल भोगने के लिये बार बार जन्म लेना पड़ता है, इसको व्यक्त करते हुए यह दोहा है :—

निद्रा सम ही जानिये, होता है देहांत।
जगना सम है जनन फिर, निद्रा के उपरांत ।। ३३९ ।।

जन्म- मरण की इस शृंखला को तोड़ कर मुक्त होने का एक मात्र उपाय भगवद्-भक्ति है, यह घोषित करते हुए ग्रंथ के आरंभ में ही तिरुवळ्ळुवर ने कहा है :—

जो रहते हैं ईश के, सत्य भजन में लिप्त।
अज्ञानाश्रित कर्म दो, उनको करें न लिप्त ।। ५ ।।
धर्म-सिन्धु करुणेश के, शरणागत है धन्य।
उसे छोड़ दुख-सिन्धु को, पार न पाये अन्य ।। ८ ।।

पाप-पुण्य दो कर्म अज्ञानाश्रित हैं और यह दुख-सिन्धु जन्म-मरण का भव-सिन्धु है।

फिर गृहस्थ-जीवन की श्रेष्ठता पर प्रकाश डालते हुए यह कहा गया है कि गृहस्थ ही अपने धार्मिक कर्मों का खूब निर्वाह करते हुए समाज की अन्य स्थितियों में रहनेवाले सब का आश्रयदाता रहता है। यहाँ तक कि तपस्वी और साधकों का जीवन भी गृहस्थों पर ही आश्रित है। इसलिये गृहस्थ मोक्षका अधिकारी होने में कोई सन्देह नहीं।

भरण गृहस्थी धर्म का, जो भी करे गृहस्थ।
साधकगण के मध्य वह, होता है अग्रस्थ ।। ४७ ।।
इस जग में है जो गृही, धर्मनिष्ठ मतिमान।
देवगणों में स्वर्ग के, पावेगा सम्मान।। ५० ।।

धर्म-निष्ठ गृहस्थ के योग्य कर्म क्या हैं उनका सांगोपांग वर्णन गार्हस्थ्य प्रकरण में है।

धर्म-कांड के अंतिम भाग के अध्याय जैसे अनित्यता, संन्यास, तत्वज्ञान और तृष्णा का उन्मूलन; ज्ञान-प्राप्ति के द्वारा मोक्ष-मार्ग पर अग्रसर होने के निर्देशक हैं। उदाहरण के लिये मोक्षदायक उच्चतम दार्शनिक विचारों को प्रतिपादित करनेवाले ये दोहे देखिये :—

अहंकार ममकार को, जिसने किया समाप्त।
देवों को अप्राप्य श्री, लोक करेगा प्राप्त ।। ३४६ ।।
जिसने संशय-मुक्त हो, पाया ज्ञान-प्रदीप।
उसको पृथ्वी से अधिक, रहता मोक्ष समीप ।। ३५३ ।।
तृष्णा को त्यागो अगर, जिसकी कभी न तुष्टि।
वही दशा दे मुक्ति, जो रही सदा संतुष्टि ।। ३७० ।।

मोक्ष अनिर्वचनीय है जिसकी अनुभूति ही हो सकती है। मोक्ष-प्राप्ति का निर्देशन ही हो सकता है, उसका वर्णन नहीं। चाहे वह भक्ति-मार्ग से हो या कर्म या ज्ञान-मार्ग से, इन सब का प्रतिपादन तिरुक्कुरळ के धर्म-कांड में यथेष्ट मात्रा में हुआ है, यह निवेदन करना ही मेरे इस संक्षिप्त लेख का उद्देश्य है। चाहे वह क्रम-मुक्ति हो या इसी जीवन में, इसी लोक में सद्यो-मुक्ति या जीवन-मुक्ति, इनका प्रतिपादन तिरुक्कुरळ में है ही।

तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि

इस लेख में तिरुवल्लुवर और कुछ हिन्दी के कवियों के केवल भाव-साम्य पर प्रकाश डालने का मेरा विचार है न कि विस्तृत रूप से तुलनात्मक विवेचन करने का। यह देखा जाता है कि भिन्न भिन्न देशों में तथा भिन्न भिन्न कालों में रहनेवाले भिन्न भिन्न भाषा-भाषी महान व्यक्तियों के विचारों में भावैक्य होता है जो आश्चर्यजनक दिखने पर भी स्वाभाविक है। कारण यह है कि सृष्टि के आरंभ से लेकर आज तक मानव-समाज में होनेवाली मूलभूत समस्यायें समान रही हैं। इसलिये उनका सामना करते हुए उनका हल करने के लिए व्यक्त किये मनीषियों के विचारों में साम्यता होगी ही। 'महान लोगों का विचार समान होता है'—यह उक्ति तिरुवल्लुवर और कुछ हिन्दी के कवियों के संबंध में कहाँ तक सार्थक होता है इसकी एक झलक इस लेख में मिलेगी और मेरी आशा है कि सहृदय पाठकों को यह रोचक सिद्ध होगी।

कबीर :

हिन्दी कविता के सामान्य ज्ञाता तमिल भाषियों को तिरुवल्लुवर के साथ झट कबीर ही याद आते हैं। काल और देश की दृष्टि से यद्यपि दोनों बहुत दूर रहते हैं—तिरुवल्लुवर लगभग दो हजार वर्ष पूर्व के हैं और कबीर पांच सौ वर्ष पूर्व के; एक सुदूर दक्षिण भारत के हैं और दूसरे उत्तर के —फिर भी कई बातों में दोनों बहुत निकट आते हैं। दोनों की जीवनी के संबंध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। फिर भी इतना ज्ञात है कि दोनों जुलाहे थे और संत जीवन बितानेवाले थे। दोनों मानवता के प्रेमी थे और जातिगत, धर्मगत तथा वर्गगत भेद-भावों के विरुद्ध थे। दोनों अपने विचारों को निर्भीक प्रकट करते थे जिससे वे क्रांतिकारी कवियों की श्रेणी में आते हैं। दोनों ईश्वर-भक्त थे।

तिरुवल्लुवर और कबीर दोनों ने प्रेम पर अधिक जोर दिया हैं। मानव-जीवन प्रेम के आधार पर ही चलता है अतः प्रेम ही ईश्वर माना जाता है। तिरुवल्लुवर का कथन है कि जिस मनुष्य के हृदय में प्रेम नहीं है वह निर्जीव है।

प्रेम मार्ग पर जो चले, देह वही सप्राण।
चर्म लपेटी अस्थि है, प्रेमहीन की मान॥ 80

कबीर भी वही कहते हैं—

जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान ।
जैसे खाल लुहार की, साँस लेत बिनु प्रान ।।

प्रेम को छिपाना कठिन है चाहे वह लौकिक पक्ष में हो या पारलौकिक, याने माधुर्य भाव में, भक्त का भगवान के प्रति हो । जब हृदय प्रेम से अभिभूत होता है तब अश्रु-धारा अपने आप फूट पड़ती है । हृदय के अंतर्गत रहस्य को जबरदस्त प्रकट कर देने से तिरुवल्लुवर ने उसे तुच्छ कहा ।

अर्गल है क्या जो रखे, प्रेमी उर में प्यार ।
घोषण करती साफ़, ही तुच्छ नयन-जल-धार ।। 71

कबीर भी इसी भाव को यों व्यक्त करते हैं—

प्रेम छिपाया ना छिपै, जा घट परगट होय ।
जो पै मुख बोलत नहीं, नैन देत हैं रोय ।।

वियोगिनी नायिका किस तरह नायक का स्मरण सदा करती रहती है उसको सुंदर ढंग से दोनों कवियों ने यों व्यंजित किया है —

तेरे अंदर जब रहा, प्रियतम का आवास ।
रे दिल, उनका स्मरण कर, जावे किसके पास ।। 1249

प्रियतम को पतियाँ लिखूँ, जो कहुँ होय विदेस ।
तन में मन में, नैन में, ताको कहा संदेस ।। कबीर ।

* * *

आदमी जब प्रेम की मूर्ति बन जाता है तब वह क्षमाशील हो जाता है । तिरुवल्लुवर चाहते हैं कि उसे इतना क्षमाशील होना चाहिये कि बुराई करनेवालों की बदले में भलाई करनी चाहिये । यही नहीं, भलाई करते हुए यह भूल जाना चाहिये कि उसने बुरा किया और बदले में मैंने भला किया । भले मनुष्य के ऐसे व्यवहार से बुरा करनेवाला लज्जा से कुंठित हो जायगा और उसके हृदय में यह दारुण वेदना होगी कि हाय, मैंने क्या किया ? हृदय परिवर्तन करने का कितना अच्छा उपाय है !

बुरा किया तो कर भला, बुरा भला फिर भूल ।
पानी पानी हो रहा, बस उसको यह शूल ।। 314

अपकारी को भी अगर, किया नहीं उपकार ।
होता क्या उपयोग है, होकर गुण-आगार ।। 987

इनकी व्याख्या कबीर के इस दोहे से बढ़ कर क्या हो सकती है ?

जो तोको कांटा बुवै, ताहि बोइ तू फूल ।
तोको फूल ही फूल है, वाको है तिरसूल ।।

* * *

"पर उपदेश कुशल बहुतेरे' सुंदर उपदेश देलेवाले कितने होते हैं और उनकी सूक्तियाँ एक कान से सुनकर वाह वाह करके दूसरे कान से उड़ा देनेवाले कितने होते हैं ! संसार में अपने कथन के अनुसार करनेवाले बिरले ही होते हैं क्योंकि वह दुस्साध्य है । आचरण करनेवाले ही तो आचार्य हैं । इसके संबंध में तिरुवल्लुवर बताते हैं—

कहना तो सबके लिए, रहता है आसान ।
करना जो जैसा कहे, है दुस्साध्य निदान ।। 664

कबीर को क्रोध होता है कि ये लोग व्यर्थ दूसरों को क्यों उपदेश देते हैं जब कि स्वयं आचरण नहीं कर सकते । अरे, ये लोग कौन होते हैं, इनको जाने दो !

कहता तो बहता मिला, गहता मिला न कोइ ।
सो कहता बहि जान दे, जो नहिं गहता होइ ।। कबीर ।

तिरुवल्लुवर फिर भी इनके संबंध में यह चेतवानी देते हैं कि ऐसे लोगों की मित्रता प्राणघातक सिद्ध होगी । स्वप्न में भी इनकी मित्रता मत करो ।

कहना कुछ करना अलग, जिनकी है यह बान ।
उनकी मैत्री खायगी, सपने में भी जान ।। 819

* * *

साधु का वेष धारण करने से कोई साधु नहीं होता । चित्त शुद्ध होना चाहिये । जिसके मन में छल-कपट नहीं और जो पाप विचारों को स्थान नहीं देता

वही साधु महात्मा है। तिरुवल्लुवर और कबीर दोनों ने मिथ्याचारियों का खंडन किया है।

साधक ने यदि तज दिया, जग-निन्दित सब काम।
उसका मुंडा या जटिल, बनना है बेकाम।। 280

केसन कहा बिगाड़िया, जो मूँडौ सौ बार।
मनको क्यों नहिं मूँडिये, जामें विषय विकार।। कबीर।

नहा तीर्थ में ठाट से, रखते तापस वेष।
मिथ्याचारी हैं बहुत, हृदय शुद्ध नहिं लेश।। 278

न्हाये धोये क्या भया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहै, धोये बास न जाय।। कबीर।

साधुवेषधारी लोगों से समाज को भयंकर हानि होती है। इसलिये गीताचार्य श्रीकृष्ण और पूज्यपाद श्री आदि शंकराचार्य दोनों ने भी इनको मूढ कह कर इनकी कड़ी निन्दा की है। गीता का श्लोक है—

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान् विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।।

कर्मेन्द्रियों को वश में रखकर मन में इन्द्रियों से होनेवाले भोगों का विचार रखनेवाला मूढ मिथ्याचारी कहलाता है।

श्री शंकराचार्य ने कहा है कि जटाधारी होना, सिर का मुंडन करना या बाल उखाड़ देना, गेरुआ वस्त्र पहनना आदि कितने प्रकार के वेष ये मूढ़ पेट भरने के लिये धारण करते हैं और आँखें रखते हुए भी अंधे हैं।

जटिलो मुंडी लुंचित केशः काषायाम्बर बहुकृत वेषः।
पश्यन्नपि च न पश्यति मूढो ह्युदरनिमित्तं बहुकृत वेषः।।

* * *

साधारण मनुष्य सोचता है पूजा-पाठ, धर्म-कर्म, आत्मविचार आदि करना बूढ़ों का काम है। गृहस्थी की झंझटों से मुक्त होने के बाद भगवद्भजन,

तीर्थयात्रा आदि कर लेंगे। अभी जल्दी क्या है ? ऐसे लोगों को उद्बोधन करते हुए कबीर कहते हैं—

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करैगा कब्ब।।

प्रसिद्ध तमिल काव्य 'शिलप्पधिकारम' के अंत में उसके रचयिता संत इलंगो अडिकल उपदेश देते हैं—

टिक नहीं सकती जवानी स्थिर नहीं धन देह भी
प्राप्त जीवन के दिनों को काट कभी न व्यर्थ ही
धर्म जो कुछ कर सकें सब पूर्ण कर लें आज ही।

(लेखक का पद्यानुवाद। छंद-गीतिका)

जीवन इतना क्षणिक है कि कोई नहीं जानता कि वह अगले क्षण जीवित रहेगा या नहीं। इसी अनित्यता के भय से विवेकी पुरुष धर्म-कर्म को नहीं टाल देते। अपना जो कर्तव्य है उसे अविलंब करते हैं और उसपर आग्रह करते हैं। तिरुवल्लुवर कहते हैं—

अगले क्षण क्या जी रहें, इसका है नहिं बोध।
चिंतन कोटि न, अनगिनत, करते रहें अबोध।। 337

'बाद करें मरते समय', सोच न यों कर धर्म।
जान जाय जब छोड़ तन, चिर संगी है धर्म।। 36

* * *

वही जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है जो मधुर भाषण करता है। अन्य सब गुणों के रखते हुए भी यदि आदमी में मीठी बोली बोलने का स्वभाव नहीं है तो वह जीवन-संघर्ष में बुरी तरह हार जाता है। 'जिह्वा मे मधुमत्तमा', उपनिषद में यों प्रार्थना है कि मेरी वाणी अत्यंत मधुर हो। यजुर्वेद में यह है— 'मधु मनिष्ये, मधु जनिष्ये, मधु वक्ष्यामि, मधु वदिष्यामि'—याने मधुर विचार करूं, मधुर कर्म करूं, मधुर वचन बोलूं। इस प्रकार वेद-वेदान्त में मृदु-भाषी होने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। इस सरल उपाय को काम में न लाकर अपने

जीवन को दुःखमय बनानेवाले मूर्ख पर तरस खाकर तिरुवल्लुवर अपनी वेदना प्रकट करते हैं—

रहते सुमधुर वचन के, कटु कहने की बान।
यों ही पक्का छोड़ फल, कच्चा ग्रहण समान।। 100

मधुर वचन में इतनी शक्ति है कि वह न केवल दुखी को सुखी बनाता है परंतु बीमार की बीमारी को भी दूर कर देता है। उलटे कटु वचन तीर से भी भयंकर है। जबकि तीर सीधे शरीर के एक अंग मात्र को छेद कर जाता है कटुवचन तो कान के अंदर से टेढे टेढे चल कर शरीर के अंग अंग को चुभो देता है।

मधुर वचन है औषधी, कटुक वचन है तीर।
स्रवन द्वार ह्वै संचरै, सालै सकल सरीर।। कबीर।

* * *

सभी धर्मावलंबी यह मानते हैं कि तृष्णा, लोभ या सांसारिक सुख-भोग की इच्छा ही दुःख की जड़ है। चाह से मुक्त होने पर दुःख-निवृत्ति हो जाती है। वही मुक्ति या मोक्ष साम्राज्य है। तिरुवल्लुवर चाह से मुक्त होने के लिये सत्य याने भगवान पर आसक्त होने का उपाय बताते हैं। उसके फलस्वरूप अन्य सब आसक्तियाँ दूर हो जायेंगी।

चाह गई तो है वही, पवित्रता या मुक्ति।
करो सत्य की चाह तो, होगी चाह विमुक्ति।। 364

तिरुवल्लुवर के शब्दों में शब्द मिलाकर कबीर घोषित करते हैं—

चाह गई चिंता मिटी, मनुवा बेपरवाह।
जिनको कछू न चाहिये, वोही शाहंशाह।।

सोलहवीं शताब्दी में जब गोस्वामी तुलसीदास का जन्म हुआ तब मुगलों क साम्राज्य स्थापित हो चुका था और हिन्दू जाति निराशा के अंधकार में पड़ी हुई थी।

तुलसीदास : तुलसीदास ने राम-भक्ति के दिव्य आलोक से उस अंधकार को दूर करके हिन्दुओं को नवजीवन प्रदान किया। संस्कृत में प्रकांड विद्वान होने पर भी उन्होंने जनता की भाषा में रामचरितमानस की रचना की जिससे जनता उससे लाभ उठा सके। रामचरितमानस के प्रारंभ में

अपनी विनयशीलता प्रकट करते हुए वे सज्जनों से अपनी धृष्टता के लिये क्षमा-याचना करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि प्रौढ रचना न होने पर भी बालक का वचन मानकर उसे सुनें। क्या माता-पिता अपने बालक की तोतली बोली सुन कर मुदित नहीं होते ?

छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई।
सुनिहहिं बालवचन मन लाई।
जौं बालक कह तोतरि बाता।
सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता।।

संतान-प्रेम की उत्कृष्टता का वर्णन करते हुए तिरुवल्लुवर कहते हैं कि मुरली या वीणा का नाद सुनकर वे ही उसको मधुर कहेंगे जिन्होंने अपनी संतान की तोतली बोली न सुनी।

मुरली-नाद मधुर कहें, सुमधुर वीणा-गान।
तुतलाना संतान का, जो न सुना निज कान।। 66

* * *

रामचरितमानस के उपरोक्त प्रसंग में तुलसीदास दुर्जनों की चुटकी लेते हुए कहते हैं कि मैं सज्जन और दुर्जन दोनों को प्रणाम करता हूँ। दोनों दुख देनेवाले हैं लेकिन एक भेद अवश्य है। जबकि सज्जन से अलग होने पर दुख होता है, दुर्जन से मिलने पर दुख होता है।

बंदउँ संत असज्जन चरना।
दुखप्रद उभय बीच कछु बरना।
बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं।
मिलत एक दुख दारुन देहीं।।

इसी भाव को तिरुवल्लुवर दो कुरलों व्यक्त करते हैं—

हर्षप्रद होता मिलन, चिंताजनक वियोग।
विद्वज्जन का धर्म है, ऐसा गुण संयोग।। 394

पीड़ा तो देती नहीं, जब होती है भंग।
सो मूढों की मित्रता, है अति मधुर प्रसंग ।। 839

*　　　*　　　*

भारतीय समाज में साधारणतः स्त्रियों के लिये पतिव्रता होना जितना आवश्यक माना जाता है उतना पुरुषों के लिये पत्नीव्रत होना नहीं। इसी कारण से भारतीय साहित्य में भी पर-स्त्री के साथ अनुचित व्यवहार करनेवाले लंपट का खंडन करना तथा उसके कलंकित चरित्र पर नाक-भौंक सिकोड़ना तो दूर रहा परंतु खंडिता, परोढा, अन्यसंभोगदुःखिता आदि नायिकाओं का वर्णन करने की प्रथा चल पड़ी। आदिकवि श्री वाल्मीकि की अमर कृति का महत्व इसी में है कि 'सीतायाः चरितम् महत्' के साथ ही पत्नीव्रत रामचन्द्रजी का आदर्श चरित्र भी उसमें है। रावण का पतन उसके एक मात्र दोष पर-पत्नी-आसक्ति से हुआ, यह दिखा कर आदिकवि ने एक महान आदर्श को समाज के सामने रखा है। उसी भारतीय, ऋषि-परंपरा में आये हुए महानुभाव इस आदर्श को कभी न भूले।

पर-नारी नहिं ताकना, है धीरता महान।
धर्म मात्र नहिं संत का, सदाचरण भी जान ।। 148

यह तिरुवल्लुवर की सूक्ति है। पर-नारी की ओर न देखनेवाला महान धीर है। उसकी धीरता युद्ध-वीर दान-वीर और दया-वीर से भी बढ़कर है। इसलिये उसे 'महान' का विशेषण लगा दिया। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में राम के मुंह से इस सूक्ति की व्याख्या करा दी। वाटिका-प्रसंग में राम लक्ष्मण से कहते हैं—'भाई युद्धक्षेत्र में पीठ न दिखानेवाले, परस्त्री को मन या आंख से न देखनेवाले तथा याचक को 'नहीं' न कहनेवाले संसार में थोड़े ही मिलते हैं।'

जिन्हकै लहहिं न रिपु रन पीठी।
नहिं लावहिं परतिय मनु डीठी।
मंगन लहहिं जिन्हकै नाहीं।
ते नरवर थोरे जग माहीं ।।

*　　　*　　　*

लौकिक समस्याओं का सामना करते समय हमें क्या-क्या उपाय ग्रहण करना चाहिये, इसके संबंध में संत जनों के उपदेशों में कभी-कभी अतिशय समानता मिलती है। तिरुवल्लुवर और तुलसीदास के उपदेशों में से एक उदाहरण यह है—

प्रतिकूल अवस्था में सबल शत्रु का सामना करना पड़े तो शत्रु-भावना को प्रकट न करके शत्रु को सिर पर ढोना चाहिये। इस प्रकार संभालना कि उसे यह शंका न हो कि तुम उसको नष्ट करने पर तुले हो। जब शत्रु की बुरी अवस्था याने तुम्हारी अनुकूल अवस्था होती है तब झटपट उसे सिर के बल मार कर उसका अंत कर देना चाहिये। यह तिरुवल्लुवर का बताया हुआ है—

रिपु को असमय देख कर, सिर पर ढो संभाल।
सिर के बल गिर वह मिटे, आते अंतिम काल ।। 488

रिपु को सिर पर ढोना! क्या यह संभव है? हाँ, अक्षरशः संभव है। तुलसीदास एक सुंदर उपमा देकर इसके भाव को समझाते हैं।

पानी बड़ा चतुर है। वह नाव रूपी शत्रु को सिर पर ढोता रहता है। जब नाव की बुरी दशा होती है तथा वह डाँवाडोल होने लगती है तब पानी झटपट चारों दिशाओं से घेर कर उसे डुबो देता है।

सत्रु सयाने सलिल ज्यों, राख सीस रिपु नाव।
बूड़त लखि पग डगत लखि, चपरि चहूँ दिसि धाव ।।

रहीम : तुलसीदास के समकालीन ख़ानख़ाना अब्दुर्रहीम मुसलमान होने पर भी भारतीय संस्कृति में पगे हुए थे और उनके दोहे उनके उदार हृदय के परिचायक हैं। स्वभाव से वे बड़े दानी थे। याचकों की दुर्दशा देखकर उनका हृदय फट जाता था और लोभी को वे भिखमंगों से भी गया-बीता समझते थे। उसका कहना है—

रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ मांगन जाहिं।
उनसे पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं ।।

रहीम का जैसा विचार दो हज़ार वर्षों के पहले विरचित तिरुक्कुरल में उसी ढंग से व्यंजित देखकर हमें आश्चर्य होता है।

'नहीं' शब्द सुन जायगी, याचक जन की जान।
गोपन करते मनुज के, कहाँ छिपेंगे प्राण ।। 1070

* * *

मित्रों को परखने के संबंध में तिरुवल्लुवर और रहीम दोनों का विचार कितना मिलता है, यह एक दोहे से साफ़ प्रकट होता है। दोनों मानते हैं कि आपत्तियाँ मित्र की परीक्षा लेने के लिये अच्छे साधन हैं। मित्र रूपी खेत को मापने का वे अच्छा मान-दंड हैं इसलिये उनका स्वागत करना चाहिये। तिरुवल्लुवर का कथन है—

होने पर भी विपद के, बड़ा लाभ है एक।
मित्र-खेत सब मापता, मान-दंड वह एक ।। 796

इस विचार से सहमत होने पर भी रहीम ने उसको एक शर्त लगा दी। विपत्ति हो, लेकिन थोड़े दिनों के लिए हो। संकट काल में यह मालूम हो जायगा कि कौन हितैषी है और कौन नहीं। बस, उसके बाद संकट दूर हो जाय।

रहिमन विपदाहू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय ।।

* * *

प्रेम के प्रसंग में कबीर और तिरुवल्लुवर का भाव-साम्य जो देखा गया वह रहीम के एक दोहे में भी पाया जाता है।

अर्गल है क्या जो रखे, प्रेमी उर में प्यार।
घोषण करती साफ़ ही, तुच्छ नयन-जल-धार ।। 71

रहिमन अंसुवा नयन ढरि, जिय दुख प्रकट करेइ।
जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देइ ।।

वियोग अवस्था में हृदय के दुःख को आँसू प्रकट कर देते हैं। इसका उदाहरण जो रहीम ने दिया है वह हास्यजनक है। नौकर को घर से निकालने पर क्या वह घर के रहस्य को बता न देगा? प्रेम या प्रीति को छिपाना संभव नहीं। रहीम ने उसके साथ और चीज़ों को जोड़कर अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है।

खैर, खून, खाँसी, खुशी, वैर, प्रीति, मदपान।
रहिमन दाबे ना दबै, जानत सकल जहान ।।

* * *

एक साधारण सत्य की कल्पना के सहारे कैसी सुंदर अभिव्यंजना हुई है, इसका उदाहरण रहीम के इस दोहे में मिलता है—

अमिअ हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुकि झुकि परत, जिहि चितवत इक बार ।।

आँख के तीन रंग सफ़ेद, काला और लाल क्रमश: अमृत, विष और मदिरा के द्योतक हैं। वैसे तो ये सत्व, तम और रजोगुण के भी व्यंजक हैं। दृष्टिपात होने पर देखनेवाले व्यक्ति के गुण के अनुसार दृष्टि पड़ी हुई व्यक्ति पर प्रभाव हो जाता है।

तिरुवल्लुवर ने नायिका की दृष्टि की इस शक्ति का वर्णन नायक के द्वारा कराया है।

क्या यम है या आँख है, या है मृगी सुरंग।
इस मुग्धा की दृष्टि में, है तीनों का ढंग ।। 1085

यम काले रंग का, विष का द्योतक है। हिन्दी में आँख का अर्थ नेत्र के साथ साथ दयापूर्णता भी है। तमिल में भी ऐसा अर्थ है। सफ़ेद रंग इसका चिह्न है। मृगी चंचलता और लाल रंग व्यंजित करती है। प्रथम मिलन में नायिका पहले क्रुद्ध दृष्टि से देखती है, मानों यम है। फिर उसका दयार्द्र होना नायक को नवजीवन प्रदान करता है। उसके बाद उसकी प्रेम-भरी चंचल दृष्टि नायक को मस्त कर देती है। तिरुवल्लुवर के इस 'कुरल' की व्याख्या रहिम के दोहे से मिला कर करने पर भाव-गंभीरता कितनी स्पष्ट हो जाती है यह सहृदय पाठक जान सकेंगे।

बिहारी

सत्रहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध कवि बिहारी अपनी एक मात्र कृति 'बिहारी सतसई' से, जो एक मात्र छंद दोहे में है, हिन्दी साहित्य-जगत में अमर स्थान पा गये जैसे तिरुवल्लुवर तिरुक्कुरल से तमिल साहित्य-जगत में। दोनों की कृतियाँ मुक्तक काव्य हैं। फिर भी दोनों में भेद यह है कि 'बिहारी सतसई' श्रृंगार-प्रधान है यद्यपि उसमें यत्र तत्र नीति और भक्ति संबंधी कुछ दोहे मिलते हैं। तिरुक्कुरल में तो मानव-जीवन के सभी पहलुओं पर विचार किया गया है। दोनों कवियों के श्रृंगार के दोहों में से कुछ उदाहरण यहाँ दिये गये हैं जिनमें अतिशय भाव-साम्य है।

गुरुजनों के बीच नायक और नायिका का मिलन होता है। खुल कर बातें करना कुल-मर्यादा के विरुद्ध है। फिर भी दोनों बातें कर ही लेते हैं, मुँह से नहीं, आँखों से। तिरुवल्लुवर कहते हैं कि ऐसी हालत में जीभ का प्रयोजन नहीं।

नयन नयन मिल देखते, यदि होता है योग।
वचनों के मुँह से कहे, है नहिं कुछ उपयोग ।। 1100

इस प्रसंग में बिहारी नाटक का एक दृश्य उपस्थित करते हैं।

कहत नटत रीझत खिझत, मिलत खिलत लजियात।
भरे भवन में करत हैं, नैननु ही सब बात ।।

* * *

प्रियतम सामने न रहे तो उसको देखने की उत्कंठा रहती है। सामने आने पर लज्जा उसको देखने नहीं देती। प्रियतमा खीझ उठती है—

अरे सुदिल, तज काम को, या लज्जा को त्याग।
मैं तो सह सकती नहीं, इन दोनों की आग ।। 1247

ये बेचारे नेत्र अवसर आने पर नहीं देखते। फिर व्याकुल होते हैं।

इन दुखिया अँखियान कूँ, सुख सिरज्यौ ही नाहिं।
देखै बनै न देखतै, अनदेखै अकुलाहिं ।। बिहारी।

मानिनी नायिका यह संकल्प कर चुकी थी कि प्रियतम के आने पर वह रूठकर रह जायगी। लेकिन प्रियतम को देखते ही वह संकल्प काफूर हो जाता है।

चली गई मैं रूठने, किंतु हृदय को देख।
वह प्रवृत्त है मिलन हित, गले लगी हो एक ।। 1259
अग्निदत्त मज्जा यथा, जिनका दिल द्रवमान।
उनको प्रिय के पास रह, क्या संभव है मान ।। 1260

मान करने का गर्व क्षणिक रहा। व्रजराज को देखते ही वह छूट गया।

मोहि कौ छुटि मान गौ, देखत ही व्रजराज ।
रही घरिक लौं मान सी, मान करे की लाज ।। बिहारी ।

*   *   *

वियोगिनी नायिका को स्वप्न में संयोग का आनन्द होता है पर निगोड़ी नींद झट छूट जाती है ।

सोवत सपने स्याम घन, हिलिमिलि हरत वियोग ।
तब ही टरि कितहूँ गई, नींदौ नींदन जोग ।। बिहारी ।

तिरुक्कुरल में नायिका सोचती है—

यदि न रहे यह जागरण, तो मेरे प्रिय नाथ ।
जो आते हैं स्वप्न में, छोड़ न जावें साथ ।। 1216

जागने पर प्रियतम भाग तो गये पर और कहीं नहीं, प्रियतमा के हृदय के अंदर ! सपने में आँखों में रहनेवाले प्रियतम नींद के खुलने पर हृदय में वास करने लगते हैं । शृंगार की कैसी उदात्त भावना है !

गले लगाते नींद में, पर जब पड़ती जाग ।
तब दिल के अंदर सुजन, झट जाते हैं भाग ।। 1218

कविवर देव ने जो हिन्दी साहित्य में बिहारी की श्रेणी में आते हैं एक कवित्त में स्वप्न-सुख से वंचित नायिका की व्यथा का हृदयग्राही चित्रण किया है ।

देव — वर्षा काल के आरंभ में जब काले बादल गरजते हुए पानी की पतली बूंदें छिड़क रहे थे प्रियतम घनश्याम ने झूलने के लिए बुलाया । बड़े हर्ष के साथ नायिका उठना ही चाहती थी । पर —'चाहत उठ्योई उठ गई सो निगोड़ी नींद' ।

कवित्त की पिछली पंक्तियाँ पढ़ते समय ही ज्ञात होता है कि यह स्वप्न-मिलन का वर्णन है । पाठक रस-विभोर हो जाता है । "मैं उठना ही चाहती थी पर उसके पहले नींद उठ गई । मैं जग गई पर मेरा भाग्य सो गया । पानी की बूंदें बाहर न दिखाई पड़ीं पर मेरी आँखों में आँसू के रूप में छा गईं" ।

नायिका का यह विलाप किस सहृदय के हृदय को न हिला देगा ? विप्रलंभ श्रृंगार का पावन चित्र अंकित करनेवाला वह कवित्त यह है—

झहरि झहरि झीनी, बूँद हैं परति मानों,
घहरि घहरि घटा, घेरी है गगन में।
आनी कह्यो स्याम मोसों, 'चलो झूलिबे को आज'
फूली न समाई भई, ऐसी है मगन मैं।
चाहत उठ्योई उठ, गई सो निगोड़ी नींद,
सोइ गये भाग मेरे, जागि वा जगन में।
आँख खोलि देखौं तो न, घन है न घन स्याम
वेई छाई बूँदैं मेरे, आँसू ह्वै दृगन में।। देव।

वियोगिनी नायिका को स्वप्न में संयोग-सुख मिलता होगा। उसे भंग न होने देना चाहिये। इस विचार से महाकवि कालिदास 'मेघसंदेश' में उसके नायक के द्वारा मेघ को यह उपदेश दिलाते हैं—

तस्मिन्काले जलद यदि सा लब्धनिद्रासुखास्या—
-दन्वास्यैनां स्तनितविमुखो याममात्रं सहस्व।
मा भूदस्याः प्रणयिनि मयि स्वप्नलब्धे कथंचित्सद्यः
कण्ठच्युत भुजलताग्रन्थि गाढोपगूढम्।। कालिदास।

श्लोक का भावार्थ यह है कि अरे मेघ! जब तुम मेरी प्रियतमा के यहाँ पहुँचोगे तब तुम उसको सोती हुई पाओगे तो गरजना छोड़कर ज़रा ठहरो। किसी तरह मुझे स्वप्न में पाने के बाद मेरे आलिंगन में वह पड़ी होगी। उससे वह झट न छूट जाय।

इसीलिये तो 'कुरल' की नायिका ने सोचा—

यदि न रहे या जागरण, तो मेरे प्रिय नाथ।
जो आते हैं स्वप्न में, छोड़ न जावें साथ।। 1216

* * *

मादकता से आये तुम,
संज्ञा से चले गये थे।
हम व्याकुल पड़े विलखते,
थे उतरे हुए नशे से ।।

बाबू जयशंकर प्रसाद के सुंदर काव्य 'आँसू' से यह उद्धरण है। मूच्छित अवस्था में नायक के दर्शन हुए। होश आने पर चले गये तो नायिका का हृदय तड़प उठता है। वियोग की अवस्था में जागरण अभिशाप है। स्वप्न का सुख भी वह न होने देता। इसीलिये तो 'कुरल' की नायिका कह उठती है कि 'यदि न रहे यह जागरण तो मेरे प्रिय नाथ जो आते हैं स्वप्न में छोड़ न जावें साथ'।

प्रसाद

*　　*　　*

श्रृंगार में असंभव भी संभव हो जाता है। तिरुक्कुरल में नायक अपने सखा से एक आश्चर्य के संबंध में बात करता है। उसकी प्रियतमा के पास आग है। उसके पास जाने पर वह ठंडी लगती है! उससे हट जाने पर वह जलाती है!

हटनें पर देती जला, निकट गया तो शीत।
आग कहाँ से पा गई, बाला यह, विपरीत ।।　　1104

हाँ, प्रेम की आग का यह विपरीत गुण है। 'प्रसाद' के 'आँसू' में इस विरोधाभास की कितनी सुन्दर अभिव्यंजना हुई है—

शीतल ज्वाला जलती है,
ईंधन होता दृग जल का।
यह व्यर्थ साँस चल चलकर,
करती है काम अनिल का ।।

दांपत्य जीवन में प्रणय-कलह उतना आवश्यक है जितना भोजन में नमक है पर इसमें सावधान रहना चाहिए कि वह निर्धारित सीमा के अंदर रहे। जिस प्रकार नमक के बिना भोजन फ़ीका रहता है या नमक के आधिक्य से भोजन खाने योग्य नहीं रहता उसी प्रकार प्रणय-कलह के बिना दांपत्य-जीवन नीरस हो जाता है

मैथिलीशरण गुप्त

और उसकी सीमा का उल्लंघन करने से दांपत्य जीवन नष्ट हो जाता है। इसी आशय का एक 'कुरल' है—

ज्यों भोजन में नमक हो, प्रणय कलह त्यों जान।
ज़रा बढ़ाओ तो उसे, ज़्यादा नमक समान ।। 1302

संयोग श्रृंगार में अपनी काव्य-कुशलता दिखाने के लिये प्रणय-कलह कवियों का एक प्रधान अवलंबन रहा है। हिन्दी के श्रेष्ठ कवि मैथिलीशरण गुप्तजी अपनी उत्कृष्ट कृति साकेत में लक्ष्मण और उर्मिला के सरस संवाद में प्रणय-कलह का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। साधारण कलह और प्रणय-कलह दोनों में एक मुख्य भेद है। प्रणय कलह में जिसकी हार होती है उसीको अधिक हर्ष होता है, याने वास्तविक जीत उसीकी है। साधारण कलह में यह संभव नहीं। गुप्तजी का कथन है—

हार जाते पति कभी पत्नी कभी,
किंतु वे होते अधिक हर्षित तभी।
प्रेमियों का प्रेम गीतातीत है,
हार में जिसमें परस्पर जीत है ।। साकेत।

तिरुवल्लुवर भी वही कहते हैं—

प्रणय-कलह में जो विजित, उसे रहा जय योग।
वह तो जाना जायगा, जब होगा संयोग ।। 1327

संसार की अनित्यता पर तिरुवल्लुवर ने चेतावनी दी है। उस प्रसंग में एक 'कुरल' है—

कल जो था, बस, आज तो, प्राप्त किया पंचत्व।
पाया है संसार ने, ऐसा बड़ा महत्व ।। 336

किसी की मृत्यु अचानक हुई तो कोई बोल उठता है—'अरे, कल मैंने उसे देखा, अच्छा था। आज मर गया! तिरुवल्लुवर बताते हैं कि इसी अनित्यता में संसार का महत्व है। यह भी क्या महत्व है? साधारणतः इसका भाव यही समझा जाता है कि यह निन्दा-स्तुति है।

महादेवी वर्मा

कवयित्री महादेवी वर्मा के अनुसार यह निन्दा-स्तुति नहीं। परंतु वास्तविक स्तुति है। संसार की अनित्यता में ही उसका महत्व है। नव जीवन की उत्पत्ति तथा स्थिति, फिर उसका मिटना तथा फिर उत्पन्न होना, ऐसा क्रम जो चलता है इसीमें संसार का सार है। मरण नहीं तो जन्म कैसे? वेदना नहीं तो सुख क्या चीज़ है कौन जाने? जीवन परिवर्तनशील नहीं तो वह कितना भयंकर, निस्सार और भारस्वरूप हो जाएगा? कवयित्री महादेवी वर्मा प्रश्न करती है कि क्या अमर लोक का जीवन भी कोई जीवन है? उसे मर्त्यलोक ही चाहिये जिसमें मिटने का और फिर नव जीवन पाने का आनन्द है। इस आशय की उनकी कविता है—

ऐसा तेरा लोक, वेदना नहीं, नहीं जिसमें अवसाद,
जलना जाना नहीं, नहीं, जिसने जाना मिटने का स्वाद।
क्या अमरों का लोक मिलेगा, तेरी करुणा का उपहार?
रहने दे हे देव! अरे, यह मेरे मिटने का अधिकार!

—महादेवी वर्मा

तिरुवल्लुवर ने ठीक ही कहा—

'पाया है संसार ने, ऐसा बड़ा महत्व।' 336

मनुष्य उसके मित्र के द्वारा पहचाना जा सकता है। सत्संग से उसका जीवन निखर उठता है। उत्तम मित्र का जहाँ अभाव रहता है वहाँ सद्ग्रंथ उसकी पूर्ति करते हैं। सज्जनों की मैत्री सदा आनंददायक है। कभी उससे दिल ऊब नहीं उठता। उसी प्रकार सद्ग्रंथों का अध्ययन बार बार करो, फिर भी उससे नव नव उन्मेष ही होता है। इस आशय के 'कुरल' के भाव को गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' अपनी कविता में व्यक्त करते हैं।

गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' :

मैं जो नया ग्रंथ विलोकता हूँ,
भाता मुझे सो नव मित्र सा है।
देखूँ उसे मैं नित बार-बार,
मानो मिला मित्र मुझे पुराना॥ 'नवरत्न'।

इस आशय का 'कुरल' यह है—

करते करते अध्ययन, अधिक सुखद ज्यों ग्रंथ ।
परिचय बढ़ बढ़ सुजन की, मैत्री दे आनंद ।। 783

क्रांतिकारी कवि 'नवीन' का हृदय ग़रीब आदमी की बुरी दशा देखकर जल उठता है । उसको बड़ी वेदना होती है कि मानव जो ईश्वर की उत्तम सृष्टि माना जाता है भूख से पीड़ित होने पर अपना मान और गौरव पैरों तले कुचल देता है । पेट भरने के लिये वह भीख मांगता है । यही नहीं जूठा पत्तल तक उठाकर चाटता है । इस कार्य में कुत्तों से भी होड़ लगाने में उसको लज्जा नहीं आती । इस दशा को सुधारने में अपनी असमर्थता के कारण कवि सृष्टि-कर्ता पर आग-बबूला हो जाता है और गला दबा कर उसका अंत कर देने की सोचता है । सारी दुनिया को ही वह जला कर भस्म कर देना चाहता है ।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

लपक चाटते जूठे पत्ते जिस दिन मैंने देखा नर को
उस दिन सोचा क्यों न आग लगा दूँ दुनिया भर को
यह भी सोचा क्यो न टेंटुआ घोंटा जाय स्वयं
जगपति का । 'नवीन' ।

इस प्रसंग में तमिल भाषा के महाकवि सुब्रह्मण्य भारती की वाणी भी आग उगलती है—

खाना न मिले एक व्यक्ति को
तो मिटा दें हम जगत को । 'भारती' ।

आधुनिक काल में क्रांतिवादी कवियों के मुंह से ऐसे ज्वलंत विप्लव-गायन के स्वर फूट पड़ेंगे तो उसमें आश्चर्य करने की बात नहीं है । लेकिन दो हजार वर्ष पूर्व के संत कवि की यह घोषणा सुनकर हमें अवश्य आश्चर्य होता है—

यदि विधि की करतार नें, भीख मांग नर खाय ।
मारा मारा फिर वही, नष्ट-भ्रष्ट हो जाय ।। 1062

उस महात्मा के हृदय में दीन-दुखियों के प्रति इतनी सहानुभूति थी कि ईश्वर-निंदा करने तक को वे विवश हुए। जगपति का गला घोंट कर उसका अंत कर देने से उसके दुःख का भी अंत हो जायगा। यह दंड काफ़ी नहीं है। इसलिये तिरुवल्लुवर ने सोचा कि जगपति भी भूख मिटाने के लिये भीख मांगते मारा मारा फिरे जिससे भिखमंगों का कष्ट उसकी समझ में आए और फिर वह तिल तिल करके नष्ट हो जाय। कैसा नीतिपूर्ण दंड है! याचना करना किसी भी हालत में तिरुवल्लुवर को मान्य नहीं था। फिर भी वे स्वयं याचना करते हैं। वह भी याचकों से याचना करते हैं!

याचक सब से याचना, यही कि जो भर स्वाँग।
याचन करने पर न दें, उनसे कभी न मांग ।। 1067

एक मात्र इस 'कुरल' में तिरुवल्लुवर अपनी ओर से यह प्रार्थना करते हैं। अपने यहाँ धन रखते हुए उसे छिपा कर लोभी स्वयं संकटग्रस्त होने का वेष धारण करता है और याचक को खाली हाथ लौटा देता है। याचकों से तिरुवल्लुवर की प्रार्थना है कि ऐसे लोभियों के सामने हाथ न पसारना चाहिये। तिरुवल्लुवर की गरीबों के प्रति सहानुभूति तथा मानव-सम्मान पर आग्रह हृदयस्पर्शी हैं।

इस लेख में तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवियों की भाव-साम्यता का कुछ उदाहरण देना मेरा उद्देश्य था। फिर भी महाकवि कालिदास और उपनिषद से भी उदाहरण दे चुका हूँ। और कुछ उदाहरण संस्कृत से देकर मैं इस प्रकरण को समाप्त करना चाहता हूँ।

श्रीमद् वाल्मीकि रामायण

श्रीमद् वाल्मीकि रामायण में रामचन्द्रजी अपनी माता को पातिव्रत्य धर्म की महिमा बताते हैं। माता कौशल्या राम के साथ स्वयं वन जाने पर आग्रह करती हैं। तब राम माता को यों समझाते हैं—

भर्तु: शुश्रूषया नारी लभते स्वर्गमुत्तमम्।
अपि या निर्नमस्कारा निवृत्ता देव पूजनात्।।

'देवों की पूजा करके नमस्कार न करने पर भी पति की सेवा-शुश्रूषा करने से ही स्त्रियों को उत्तम स्वर्ग प्राप्त होगा'। इसका तात्पर्य यह नहीं है

कि देवों की पूजा न करनी चाहिये। तिरुक्कुरल में इस आशय का एक कुरल है।

पूजे सती न देव को, पूज जगे निज कंत।
उसके कहने पर 'बरस', बरसे मेघ तुरंत।। 55

पातिव्रत्य की महिमा स्पष्ट करने के लिये इस सूक्ति से बढ़ कर क्या हो सकता है? पतिव्रता नारी को जाग्रत अवस्था में सदा पति का ध्यान रहता है। सो जाने के बाद फिर जब वह जागती है, जागते जागते पति का पावन स्मरण ही पहले आता है। या यों कह सकते हैं कि सुप्त अवस्था समाप्त होने पर जाग्रत स्थिति का ज्ञान होने के पहले वह पति की मानसिक पूजा कर लेती है। थोड़े शब्दों में तिरुवल्लुवर कह गये 'पूज जगे निज कंत' याने पति की पूजा करके वह जागती है। अत्युक्ति होने पर भी कैसी पवित्र भावना है। ऐसी पतिव्रता की इतनी दैवी शक्ति है कि वह जो चाहे होगा ही? 'पूजे सती न देव को'— इसका विपरीत अर्थ लगानेवाले यों इसका अर्थ बताते हैं कि सती नारी देवों की पूजा न करेगी। ऐसा अर्थ लगाना संत-कवि पर अन्याय करना है। वाल्मीकि और तिरुवल्लुवर दोनों का भाव यही है कि पतिव्रता चाहे देव-पूजा करने से चूक जाय पर पति-पूजा करने से वह न चूकेगी।

* * *

तिरुवल्लुवर कृतघ्नता को महा पाप मानते हैं। जबकि और पापों का प्रायश्चित्त हो सकता है कृतघ्नता का प्रायश्चित्त ही नहीं।

जो भी पातक नर करे, संभव है उद्धार।
पर है नहीं कृतघ्न का, संभव ही निस्तार।। 110

वालि का वध होने के बाद सुग्रीव का राज्याभिषेक हो गया। फिर वह सुख-भोग में रम गया। सीता की खोज के प्रयत्न में उसकी असावधानी सी मालूम हुई। उस प्रसंग का यह श्लोक है—

ब्रह्मघ्ने च सुरापे च गोघ्ने भग्नव्रते तथा।
निष्कृतिः विहिता सद्भिः कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः।।

ब्रह्महत्या, मदिरापान, गोहत्या, व्रत-भंग करना, आदि पापों का प्रायश्चित्त बड़ों ने बताया है। लेकिन कृतघ्नता का प्रायश्चित्त ही नहीं है।

'स मेन्द्रो मेधया स्पृणोतु । ततो मे श्रियं आवह ।' यह उपनिषद वाक्य है । 'इन्द्र मुझे सद्बुद्धि दे । उसके बाद धनदे ।' यही प्रार्थना है । श्री शंकराचार्य ने इसका कारण कहा—'अमेधसो ही श्रीः अनर्थायेति ।' यानी मूर्ख के पास धन-संपत्ति हो तो वह अनर्थ की जड़ बन जायगी । समाज में आर्थिक विषमताओं का एक कारण मूर्ख लोगों के पास धन का जम जाना है । सद्बुद्धि रखनेवाले अपरिग्रह का तत्व जानते हैं । उनके यहाँ धन की वृद्धि हो तो उसका उचित अंश लोकोपकार के काम में व्यय करेंगे । इसके विपरीत मूर्ख धनी हो जायगा तो वह अपने धन का दुरुपयोग करके समाज में भ्रष्टाचार पनपने की सहायता करेगा । इसलिये उपनिषद में मेधा के बाद धन प्रदान करने की प्रार्थना की गई । इसी भाव को यह 'कुरल' व्यक्त करता है—

तैत्तिरीय उपनिषद ।

शिक्षित के दारिद्र्य से, करती अधिक विपत्ति ।
मूर्ख जनों के पास जो, जमी हुई संपत्ति ।। 408

श्रीमद्भगवद्गीता

श्रीकृष्ण गीता में अर्जुन को उपदेश देते हुए यह भी प्रकट कर देते हैं कि वे साधारण मनुष्य नहीं हैं ।

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम् ।
परं भावमजानन्तो मम भूत महेश्वरम् ।। गीता ।

'मनुष्य शरीर में मुझे देखकर मेरे परमात्म-भाव और ईश्वरीय गुणों को मूर्ख लोग नहीं जानते और वे मेरी अवहेलना करते हैं ।' फिर अपने विश्वरूप को दिखाने के बाद ज्ञान-विज्ञान की बहुत सी बातें श्रीकृष्ण ने कहीं । अंत में भगवान ने जो कहा वह हमें आश्चर्य में डालता है ।' 'अर्जुन, मुझे ईश्वर समझ कर मेरी बात मत मानो ।' लेकिन—

इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद् गुह्यतरं मया ।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ।। गीता ।

'इस प्रकार मैंने तुमको परम रहस्य की जो बातें सुनायीं उनका खूब पूरा पूरा विवेचन करो और जो चाहो करो।' व्यक्तिगत स्वातंत्र्य पर आखिर भगवान ने जो जोर दिया उसी की अभिव्यक्ति इस 'कुरल' में हम पाते हैं—

चाहे जिससे भी सुनें, कोई भी हो बात।
तत्त्व-बोध उस बात का, बुद्धियुक्तता ज्ञात ।। 423

इस संक्षिप्त लेख में तिरुक्कुरल और हिन्दी कविता में यत्र तत्र भाव-साम्य जो मेरे देखने में आया मैंने उसका परिचय दिया। अन्य भारतीय भाषा-भाषी विज्ञ पाठक अपनी भाषा की कृतियों में भी ऐसा भाव-साम्य पा सकते हैं और उसको प्रकाश में ला सकते हैं। इसका शुभ परिणाम यह होगा कि हम भारतीय यह पहचान सकेंगे कि भारत माता के अनेक वाणियाँ होने पर भी उसके एक हृदय है।

अनुवाद के संबन्ध में

मेरा विचार यह है कि अनुवाद करते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि अनुवाद में मूल का भाव ज्यों का त्यों रहे। मूल में जो है वह न छोड़ा जाय और जो नहीं है वह न जोड़ा जाय। अनुवाद की भाषा व शैली यों स्वाभाविक हों जिससे कोई उसे अनुवाद न कह सके। वैसे तो तिरुक्कुरल का अनुवाद गद्य में करना अधिक कठिन नहीं है। फिर वह उतना प्रभावित न कर सकेगा जितना पद्य। 'कुरल' से मिलता-जुलता छंद दोहा है और हिन्दी नीति-ग्रंथों में उसीका प्रयोग साधारणतः हुआ है। इस कारण से तिरुक्कुरल का दोहानुवाद उपयुक्त माना गया। 'खड़ी बोली खड़ी खड़ी रहती है, झुकती नहीं है इसलिए कविता के योग्य नहीं है'—यह विचार हिन्दी जगत में एक जमाने में था। पर आज दोहे में भी उसका प्रयोग करने की धृष्टता की जा रही है। तिरुक्कुरल के सारे ग्रंथ का अनुवाद 1330 दोहों में, वह भी खड़ी बोली में जो हो चुका है हिन्दी साहित्य में उसका प्रधान स्थान रहेगा ही।

मूल ग्रंथ में जो अर्थालंकार पाये जाते हैं उनको अनुवाद में उतारना साधारण बात है। परंतु अनुप्रास, श्लेष, वक्रोक्ति, यमक आदि शब्दालंकारों को भी इस अनुवाद में लाने का प्रयत्न किया गया है। इस प्रकरण में कुछ उदाहरण और आवश्यक स्थानों में मूल का लिप्यंतर दिये गये हैं।

मनुष्य को उद्यमी होना चाहिए और जो आलसी तथा निठल्ले बनकर गपशप करने में मज़ा उड़ाते हैं वे समाज के लिए अभिशाप हैं। तिरुवल्लुवर इन निकम्मे लोगों को मानव जाति का पोल कहकर समाज से उनको उड़ा देना चाहते हैं। उनका कहना है—'ऐसे लोगों को मानव मत कहो, मानव का पोल कहो।' स्वीकारात्मक 'कहो' और निषेधात्मक 'मत कहो' के लिए एक ही शब्द तमिल में प्रयुक्त हुआ है। 'महन एनल्, मक्कट् पदडि एनल्'। एनल् - मत कहो ; एनल् - कहो ('ए' सब ह्रस्व)। मैंने सोचा कि यह उक्तिवैचित्र्य हिन्दी में भी क्यों न हो? क्रिया पदों का विधि रूप मूल पद में तथा उसके साथ 'ना' जुड़कर भी आता है। जैसे, चुप बैठ। चुप बैठना। 'ना' का प्रयोग निषेधात्मक 'मत' के अर्थ में होता है। बैठ, ना बैठ। इसी ढंग से 'कह', 'ना कह' क्रमशः 'कहो', 'मत कहो' अर्थ में प्रयुक्त करके मूल के अनुरूप शब्द-प्रयोग अनुवाद में भी किया गया। पद्य में 'ना कह' को 'कह ना' करना स्वीकार्य है।

पयनिल चोल् पाराट्टुवानै (चो ह्रस्व)
महन् एनल् मक्कट् पदडि एनल् ।" (ए ह्रस्व) मूल-196

जिसको निष्फल शब्द में, रहती है आसक्ति ।
कह ना तू उसको मनुज, कहना थोथा व्यक्ति ।। 196

* * *

सांसारिक जीवन पानी के बिना चल ही नहीं सकता। शायद इसी वजह से तिरुक्कुरल में ईश्वर-वंदना के बाद तुरंत वर्षा की महिमा का वर्णन हुआ है। अगर पानी न बरसे तो समुद्र भी जो वर्षा का उद्गम-स्थान है अपना महत्व खो बैठेगा। इस आशय का 'कुरल' है—

घटा घटा कर जलधि को, यदि न करे फिर दान।
विस्तृत बड़े समुद्र का, पानी उतरा जान ।। 17

तमिल में 'पानी कम हो जायगा' व्यंजित करने के लिये 'नीरमै कुन्रुम्' शब्दों का प्रयोग हुआ है। इन शब्दों का अर्थ यह भी लगाया जा सकता है कि 'गौरव नष्ट हो जायगा।' बरसात का मीठा पानी न मिले तो मोती, मूँगे जैसे जीव नष्ट हो जाएँगे जो समुद्र के गौरव हैं। हिन्दी में भी गौरव के लिए 'पानी' शब्द प्रयुक्त होता है जैसे तमिल में है। उदाहरण:—पानी रखो, पानी गया या पानी उतरा। समुद्र का पानी कम होता है या गौरव नष्ट होता है दोनों अर्थों में अनुवाद में भी मूल के अनुसार श्लेष अर्थ में शब्दों के प्रयोग की संभावना से एक तरह की संतुष्टि होती है न?

"नेडुम् कडलुम् तन् नीरमै कुन्रुम्' -(मूल-ने ह्रस्व)
बड़े समुद्र का पानी उतरा - (अनुवाद)

घटा - बादल ; घटा कर - कम करके—यमक मूल में नहीं है। इस प्रसंग में 'रहीम' का दोहा याद आता है जिसमें 'पानी' का प्रयोग श्लेषालंकार में सुन्दर ढंग से हुआ है।

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरै, मोती, मानुस, चून ।। 'रहीम

* * *

बेवकूफ़ के बारे में एक 'कुरल' है जिसमें यह बताया गया है कि बेवकूफ़ आप ही आपको इतना नुक़सान पहुँचाता है जितना उसका दुश्मन भी उसे नहीं पहुँचा सकता। भाषा का प्रयोग उसमें इस प्रकार हुआ है कि 'कुरल' का यह भी अर्थ हो सकता है कि बेवकूफ़ आप ही आपको इतना नुक़सान पहुँचाता है जितना वह अपने दुश्मन को भी नहीं पहुँचाता। ऐसा विचित्र प्रयोग हिन्दी में भी है जिसे मैं उदाहरण देकर समझाना चाहता हूँ।

मान लीजिये कि राम कृष्ण को देना है। व्याकरण के अनुसार यह गलत है। देना है, जाना है आदि का प्रयोग होने पर कर्ता के साथ चतुर्थी विभक्ति जुड़ती है। व्याकरण सम्मत भाषा 'रामको देना है' ठीक, पर राम देना है, गलत है। तो पहला वाक्य व्याकरण के अनुसार ऐसा होना चाहिये—राम को कृष्ण को देना है। ऐसी हालत में अवश्य यह गड़बड़ी होगी कि देनेवाला कौन है और लेनेवाला कौन।

उक्त 'कुरल' का अनुवाद यों है—

जितनी पीड़ा मूढ नर, निज को देता आप।
रिपु को भी संभव नहीं, देना उतना ताप ।। 843

'रिपु को भी उतना ताप देना संभव नहीं', ऐसा कहने में मूढ़ नर के द्वारा रिपु को या रिपु के द्वारा मूढ़ नर को संभव नहीं, इस प्रकार दोनों अर्थ लगा सकते हैं।

* * *

सत्संतान मानव जाति को परंपरा को अक्षुण्ण बनाये रखता है। इस कारण से आज के युग में बच्चों का पालन-पोषण उचित रीति से करना केवल कुटुंब का भार न समझकर राष्ट्र का मुख्य कर्तव्य भी माना जाता है। तिरुवल्लुवर का विचार है कि किसी की योग्यता को परख संतान से हो सकती है। योग्य संतान योग्य पिता का लक्षण है। इस आशय के 'कुरल' में 'संतान' के लिए एक लाक्षणिक शब्द का प्रयोग हुआ है—'एच्चम्' (ए ह्रस्व)। ('एच्चम्' के माने हैं जो पीछे छोड़ा जाय')। जब कि तिरुक्कुरल के प्रसिद्ध टीकाकार परिमेलषकर ने 'एच्चम्' का लाक्षणिक अर्थ 'संतान' माना है कुछ अन्य टीकाकारों ने उसका अर्थ 'कीर्ति' लगा कर उसीको उपयुक्त बताया है। कारण यह है कि योग्य पुरुष अपने पीछे जो कीर्ति छोड़ जाता है उससे उसकी योग्यता पहचानी जा सकती है। कभी कभी योग्य व्यक्ति के अयोग्य संतान रह जाने से संतान के द्वारा योग्यता की पहचान नहीं हो सकती।

तिरुक्कुरल के प्रथम भाग का अनुवाद जिसके अंतर्गत यह 'कुरल' भी है जब प्रकाशित हुआ तब उसमें 'संतान' ही रहा।

कोई ईमानदार हैं, अथवा बेईमान।
उन उनकी संतान से, होती यह पहचान।। 114

जब पूरे अनुवाद का प्रकाशन होने का अवसर आया तब मुझे सूझा कि मैं व्यर्थ इस सोच-विचार में पड़ गया कि 'एच्चम' का माने 'संतान' लिया जाय या 'सत्कीर्ति'। मूल का शब्दानुवाद 'अवशेष' ही क्यों न हो? बस, वही हुआ।

कोई ईमानदार हैं, अथवा बेईमान।
उन उनके अवशेष से, होती यह पहचान।। 114

अनुवाद के प्रकाशन के कुछ महीनों के बाद मेरे मित्र श्री नागराज शर्मा ने जो संस्कृत के प्राध्यापक हैं मुझे बुलाकर यह बताया कि अवशेष या शेष (एच्चम्) का अर्थ संतान ही इस प्रसंग में होना चाहिये। इसका आधार यह देखिये। वे यास्क विरचित वैदिक निरुक्त के पन्ने उलट रहे थे और उसमें ऋग्वेद के एक मंत्र का टीका यों था—

'न शेषो अग्नें अन्य जातम् अस्ति'। शेषः इति अपत्य नाम। शेषः शिष्यते यतः। गच्छतः इतो लोकात् अमुं लोकं पितुः शिष्यते। इहैव लोके अवतिष्ठते।" याने शेष का अर्थ अपत्य अर्थात् संतान है। पिता के इह लोक से पर-लोक जाने के बाद वही यहाँ रह जाता है। तब यह मालूम हुआ कि प्रसिद्ध टीकाकार परिमेलषकर ने किस आधार पर 'एच्चम्' का अर्थ 'संतान' माना और उनकी विद्वत्ता कितनी थी। यह सुनने में आया कि जब एक महापुरुष का पुत्र अयोग्य रह गया तब उनसे उसका कारण यह बताया गया—'उसके जनन-काल में मुझमें तमोगुण का आधिक्य रहा होगा। इसलिये दोष तो मेरा ही है।' आखिर यह संतोष तो हुआ कि अनुवाद मूल के अनुरूप सिद्ध हुआ।

* * *

प्रणय-कलह का मधुर प्रसंग है। नायिका झूठ-मूठ रूठने का कोई न कोई कारण बड़ी कुशलता से ढूँढ लेती है, इसका वर्णन नायक सखा से करता है। उसका कथन है—मैंने कहा 'हम सबसे बढ़कर प्यार करते हैं।' ज्यों ही मैंने यह कहा

त्योंही वह मान करने लगी। वह पूछने लगी 'किस किससे मुझसे अधिक प्यार करते हैं ?'

'हम सबसे बढ़कर प्यार करते हैं' कहने में नायक का तात्पर्य यह था कि वे आदर्श दंपती हैं। उनके समान परस्पर प्रेम करनेवाला जोड़ा नहीं है।

नायिका ने 'हम' का बहुवचन न मान कर उसका एक वचन अर्थ लगाया जो बहुमान के लिये प्रयुक्त होता है। 'मैं सबसे बढ़कर प्यार करता हूँ' (तुमको) तो नायिका का यह प्रश्न था कि उसकी और प्रेमिकाएँ कौन कौन हैं ? किस किससे बढ़कर वह उसे प्यार करता है ? बेचारा क्या जवाब देगा ?

तमिल में उत्तम पुरुष बहुवचन का प्रयोग जो एक वचन में सम्मानार्थ होता है उसीपर इस 'कुरल' का रस अवलंबित है। वैसा ही प्रयोग हिन्दी में भी होने के कारण अनुवाद में भी उसको उतारने में कोई कष्ट न हुआ।

'सबसे बढ़' मैंने कहा, 'हम करते हैं प्यार'।
किस किससे कहती हुई, लगी रूठने यार ॥ 1314

* * *

केरल के एक कवि ने राजसभा में यों श्लोक सुनाया :—

दारिद्र्यस्य दयालुत्वं किं ब्रवीमि महीपते ।
आत्मनाशं अनादृत्य भवन्तं मां अदर्शयत् ॥

श्लोक सुनकर सहृदय राजा आनंद-विभोर हो गये और कवि का यथोचित सम्मान किया। सरल संस्कृत में सारगर्भित यह श्लोक किस सहृदय को प्रभावित न करेगा। उसका अर्थ यह है—

'महाराज,' दारिद्र्य के दयालुत्व का कहाँ तक मैं वर्णन करूँ ? अपने नाश की परवाह न करके उसने मुझे आपके दर्शन कराये।' इसका विश्लेषण करने पर ये भाव स्पष्ट होते हैं। राजा के दर्शन करने पर दरिद्रता मिट जायगी। तो राजा को उसे खाली हाथ नहीं लौटा देना चाहिये। यही नहीं, उदारता के साथ इतना देना चाहिये कि कवि को फिर दरिद्रता से पीड़ित होकर याचना न करना पड़े। दरिद्रता ने कवि का घनिष्ठ मित्र होने के कारण उसके उद्धार के लिये अपने नाश की परवाह न की। उत्तम मित्र का लक्षण है। कितना व्यंग्य है इस श्लोक में !

दान के प्रकरण में इसी भाव का एक 'कुरल' है। उसका शब्द-विन्यास इस प्रकार है जिससे एक से अधिक अर्थ निकलते हैं। दानी जो उत्तम कुल का है इस प्रकार दान करता है कि (1) याचक के मांगने के पहले ही उसके कष्ट का अनुमान करके दान करता है। (2) याचक को इतना देता है कि फिर किसी के पास जाकर दीनता-प्रदर्शन करने की जरूरत न पड़े। (3) दानी (यदि वह स्वयं दीन हो गया तो भी) अपनी हीनता—न प्रकट करके दे ही देता है। मूल के अनुसार अनुवाद को भी भावगर्भित करने में कितनी सफलता मिली है, इसका निर्णय विज्ञ पाठक करें।

'दीन-हीन हूँ' ना कहे, करता है यों दान।
केवल प्राप्य कुलीन में, ऐसी उत्तम बान ।। 223

* * *

संस्कृत के तत्सम या तद्भव शब्द तिरुक्कुरल में कहीं कहीं मिलते हैं तो उनका प्रयोग हिन्दी में भी स्वीकार्य होने के कारण यथासंभव अनुवाद में वैसा ही स्थान उन्हें देने का प्रयत्न किया गया है। ये कुछ उदाहरण हैं—

नीर बिना भूलोक का, ज्यों न चले व्यापार।
कभी किसी में नहिं टिके, वर्षा बिन आचार ।। 20

मधुर भाषिणी सुतनु का, सित रद निस्सृत नीर।
यों लगता है मधुर वह, ज्यों मधु-मिश्रित क्षीर ।। 518-1121

इन कुरलों में 'नीर' शब्द का जो प्रयोग हुआ है, मूल में भी वही है। दूसरा 'कुरल' शृंगार प्रकरण में है। नायक का कथन है कि नायिका के, जो मीठी बातें करती है, सफ़ेद दांतों से निकला हुआ पानी इतना मीठा लगता है मानों शहद मिला हुआ दूध हो। तमिल में समास शैली में 'वालेयिरूरिय नीर' (ले ह्रस्व) प्रयुक्त हुआ है जिसका अर्थ साधारण गद्य में 'सफ़ेद दांतों से निकला हुआ पानी' है। हिन्दी में भी पद्य के अनुरूप शैली में 'सित रद निस्सृत नीर' अनुवाद किया गया है। 'वालेयिरूरिय नीर'—'सित रद निस्सृत नीर', वह कैसा है? 'ज्यों मधु-मिश्रित क्षीर'। प्रभावात्मक ढंग से भाव को व्यंजित करने की क्षमता मूल के अनुरूप पद्यानुवाद में ही रहेगी, इसके समर्थन में यह एक नमूना है।

* * *

मोर-पंख से ही सही, छकड़ा लादा जाय।
यदि लादो वह अत्यधिक, अक्ष भग्न हो जाय ।। 475

छकड़ा भारी बोझ लादने की गाड़ी है। इसके लिए 'कुरल' में 'चाकाट्टु' शब्द है। धुरी के लिये 'अच्चु' है। 'शकट' और 'अक्ष' के तद्भव शब्द जो मूल में आये हैं अनुवाद में भी उसीके अनुरूप 'छकड़ा' और 'अक्ष' शब्द रखे गये हैं।

तिरस्कार करना नहीं, छोटा क़द अवलोक।
चलते भारी यान में, अक्ष-आणि ज्यों लोग ।। 667

'धुरी की कील' के लिये मूल में 'अच्चाणि' है जो अच्चु+आणि की संधि से होता है। संस्कृत आणि का प्रयोग तमिल और हिन्दी में होता है यद्यपि तमिल में व्यावहारिक है और हिन्दी में वैसा नहीं।

* * *

पालन करते जी रहें, जो निर्मल कुल-धर्म।
यों जो हैं वे ना करें, छल से अनुचित कर्म ।। 956

इसके मूल 'कुरल' में 'कपट' के लिये 'चल' प्रयुक्त है जो 'छल' का तत्सम है। उसी का प्रयोग अनुवाद में भी हुआ है।

* * *

अनुवाद के कतिपय दोहों में शब्द-विन्यास मूल का जैसा हुआ है। निम्न के कुछ नमूने हैं जो मूल के लिप्यंतर सहित दिये गये हैं।

1. पडै कुडि कूष् अमैच्चु नट्परण आरुम्
   उडैयान् अरशरुल् एरु। (मूल)

   सैन्य राष्ट्र धन मित्रगण, दुर्ग अमात्य षडंग।
   राजाओं में सिंह है, जिसके हों ये संग ।। 381

2. कुणनुम् कुडिमैयुम् कुट्रमुम् कुन्रा
   इननुम् अरिन्तियाक्क नट्पु। (मूल)

गुण को कुल को दोष को, जितने बंधु अनल्प ।
उन सबको भी परख कर, कर मैत्री का कल्प ।। 793

3. कुणम् नाडिक् कुट्रमुम् नाडि अवट्रुळ
मिकै नाडि मिक्क कोळल् । (मूल, को ह्रस्व)
परख गुणों को फिर परख, दोषों को भी छान ।
उनमें बहुतायत परख, उससे कर पहचान ।। 504

4. इन्ना चेयतार्कुम् इनियवे चेय्याक्काल् (चे ह्रस्व)
एन्न पयत्ततो शालपु । (मूल । ए ह्रस्व)
अपकारी को भी अगर, किया नहीं उपकार ।
होता क्या उपयोग है, होकर गुण-आगार ।। 987

5. पिरर्कु इन्ना मुर्पकल् चेय्यिन् तमक्कु इन्ना
पिर्पकल् तामे वरुम् । (मूल चे ह्रस्व)
दिया सबेरे अन्य को, यदि तुमने संताप ।
वही ताप फिर सांझ को, तुमपर आवे आप ।। 319

6. उडंपाडु इलातवर वाष्कै कुडंकरुळ्
पांपोडु उडनुरैन्दट्रु । (मूल)
जिनसे मन मिलता नहीं, जीवन उनके संग ।
एक झोंपडी में यथा, रहना सहित भुजंग ।। 890

7. ओ ओ इनिते एमक्किन् नोय् चेय्त कण्
ता अम् इतर्पट्टतु । (मूल । ए, चे ह्रस्व)
ओहो यह अति सुखद है, मुझको दुख में डाल ।
अब ये दृग सहते स्वयं, यह दुख, हो बेहाल ।। 1176

8. वाराक्काल् तुंजा वरिन् तुंजा आयिडै आरञर उट्रन कण् । (मूल)

ना आवें तो नींद नहिं, आवें नींद न आय ।
दोनों हालों में नयन, सहते हैं अति हाय ।। 1179

* * *

जहाँ अनुप्रास से 'कुरल' अलंकृत है वहाँ अनुवाद में भी वैसा करने का प्रयत्न हुआ है—

1. तुप्पार्कुत् तुप्पाय तुप्पाक्कित् तुप्पार्कुत् तुप्पायतू उम् मषै । (मूल)

आहारी को अति रुचिर, अन्नरूप आहार ।
वृष्टि सृष्टि कर फिर स्वयं, बनती है आहार ।। 12

2. चुडच्चुडरुम् पोन् पोल् ओळि विडुम् तुन्पम् चुडच्चुड नोर्किर्पवर्कु । (मूल । पोन्-पो ह्रस्व । ओ ह्रस्व)

तप तप कर ज्यों स्वर्ण की, होती निर्मल कांति ।
तपन ताप से ही तपी, चमक उठे उस भांति ।। 267

3. एण्णिय एण्णियांगु एय्तुप एण्णियार तिण्णियराकप् पेरिन् । (ए सब और पे ह्रस्व)

संकल्पित सब वस्तुएँ, यथा किया संकल्प ।
संकल्पक पा जायगा, यदि वह दृढ संकल्प ।। 666

4. वेण्डुंकाल् वेण्डुम् पिरवामै मट्रतु वेण्डामै वेण्ड वरुम् । (मूल)

जन्म-नाश की चाह हो, यदि होनी है चाह ।
चाह-नाश की चाह से, पूरी हो वह चाह ।। 362

तिरुक्कुरल 'अकर' से आरंभ होता है। 'अकर' 'अकार' का तमिल रूप है।

अकर मुतल एषुत्तेल्लाम् आदि
भगवन् मुतट्रे उलकु। (मूल। ए, ते-ह्रस्व)

अंतिम 'कुरल' का (1330 वाँ) अंतिम शब्द 'पेरिन्' है। तमिष् वर्णमाला का प्रारंभिक वर्ण 'अ' और अंतिम वर्ण 'न्' हैं। इसके संबंध में यह चाटु उक्ति है कि सारी कृति वर्णमाला के 'अ' से 'न्' तक व्याप्त है। 'अक्षराणाम् अकारोऽस्मि' गीता वाक्य है। इसलिये मूल में प्रथम शब्द 'अकर' मंगलवाचक है। अनुवाद में—

अक्षर सब के आदि में, है अकार का स्थान।
अखिल लोक का आदि तो, रहा आदि भगवान।।

अक्षर परब्रह्म का विशेषण वाचक है। 'अक्षरं ब्रह्म परमं'-गीता। काव्यारंभ में 'भ' गण ऽ।। भी मंगलवाची है। अंतिम 'कुरल' के अनुवाद में (1330-सतसई में 600) अंतिम शब्द 'उत्साह' है। नागरी वर्णमाला के अनुसार 'अ' से 'ह' तक, तमिल के अनुरूप अनुवाद, वह भी अक्षर———उत्साह के अन्तर्गत व्याप्त है।

अनुवाद से संबंधित इस लेख में मैंने कुछ उदाहरणों के द्वारा यह दिखाने का प्रयास किया कि पद्यानुवाद होने पर भी मूल-कृति के अनुरूप अनुवाद किया गया है। इसकी सार्थकता का निर्णय ठीक ठीक वे ही कर सकते हैं जो तमिल और हिन्दी के ज्ञाता हैं। पद्य-बद्ध कृति का पद्य-बद्ध अनुवाद साधारणतः असंभव माना जाता है। फिर भी भारतीय भाषाओं की गठन में ऐसी साम्यता है जो यह असंभव कार्य करने को भी प्रोत्साहित करती है। फलस्वरूप यह कार्य साधारणतः साध्य न होने पर भी दुस्साध्य तो बन जाता है, पर असाध्य नहीं रह जाता।

तमिल भाषा और नागरी लिपि।

तमिल वर्णमाला में 'ए' और 'ओ' के ह्रस्व होते हैं, जो नागरी लिपि में नहीं हैं। इस कमी की पूर्ति करने के लिये इन अक्षरों के ऊपर अर्द्धचन्द्र चिन्ह लगा कर यह सूचित किया गया है कि इनका उच्चारण ह्रस्व होना चाहिये। जैसे अंग्रेज़ी में ऍस्—हाँ; ऑण्—एक; पॅन्—कलम; पॉसिषन्—स्थान; शब्दों में ए, ओ, पे और पो अक्षरों का उच्चारण ह्रस्व है। इस पुस्तक में मूल तिरुक्कुरळ का जो लिप्यंतर हुआ है उसमें यह चिन्ह जिस अक्षर के ऊपर लगना चाहिये उसके बदले कुछ स्थलों में छपाई की कठिनाई के कारण अगले अक्षर में लग गया है। तो समझना चांहिये कि उस चिन्ह के कारण उस अक्षर के उच्चारण में कोई भेद नहीं है पर पिछला अक्षर ह्रस्व है।

तमिल में क, च, ट, त, प वर्ग के अन्य तीन अक्षर नहीं होते। फिर भी ये ही अक्षर, शब्दों में स्थान के अनुसार क—ह और ग जैसे; च—श और ज जैसे; ट—ड जैसे; त—द जैसे तथा प—ब जैसे उच्चरित होते हैं। इस कारण से लिप्यंतर में तमिल मूल का एक ही अक्षर उच्चारण के अनुसार भिन्न रूप में दिखाई पड़ेगा।

उदाहरण के लिये :—

मूल रूप	उच्चारण	शब्दार्थ
कल्	— क—वही	— पत्थर—क-क
पकल्	— पहल्	— दिन—क - ह
पोॅङ्कल्	— पोॅङ्गल्	— मिष्टान्न—क - ग
पच्चै	— चै - वही	— हरा—च - च
ओचै	— ओशै	— ध्वनि—च - श
पञ्चम्	— पञ्जम्	— अकाल—च - ज
पट्टम्	— ट - वही	— विरुद—ट - ट
पटम्	— पडम्	— चित्र—ट - ड
पण्टम्	— पण्डम्	— चीज़—ट - ड
तटि	— तडि - त वही	— लाठी—त - त
पतटि	— पदडि	— पोली वस्तु—त - द

पनुतु	— पनुदु	— गेंद—त - द
पल्	— प - वही	— दांत—प - प
चामूपल्	— शामूबल्	— राख—प - ब

क्, च्, ट्, त्, प् के साथ क्रमश : क, च, ट, त, प अक्षरों के उच्चरण में कोई भेद नहीं होता। साधारणतः ङ्, ञ्, ण्, न्, म् के साथ आने पर इनका उच्चारण ग, ज, ड, द और ब हो जाता है। शब्द के आरंभ में आने पर 'क', 'त' और 'प' अक्षरों के उच्चारण में भेद नहीं रहता। 'च' का उच्चारण प्रायः श हो जाता है। शब्दों के बीच में व्यंजन् के बिना आने पर क, च, ट, त का उच्चारण क्रमशः ह, श, ड, द हो जाता है। उदाहरण :—

मूल रूप	उच्चारण	शब्दार्थ
कळ्	— क—वही	— ताड़ी—क - क
मक्कळ्	— क - वही	— प्रजा—क - क
मकळ्	— महळ्	— बेटी—क - ह
मङ्कै	— मङ्गै	— महिला—क - ग
चुमै	— शुमै	— बोझ—च - श
पचु	— पशु	— गाय—च - श
अच्चु	— च - वही	— छाप—च - च
अञ्चु	— अञ्जु	— डरो—च - ज
आटु	— आडु	— बकरा—ट - ड
आट्टु	— ट - वही	— हिला—ट - ट
आण्टु	— आण्डु	— वर्ष—ट - ड
तान्	त - वही	स्वयं—त - त
अत्तान्	त - वही	फुफेरा भाई—त - त
वन्तान्	वन्दान्	— आया—त - द
कातल्	कादल्	—प्रेम— त - द
पाम्पु	— पाम्बु	— सांप—प - प, प-ब
काप्पु	— काप्पु	— रक्षा—प - प

इन उदाहरणों के द्वारा यह संकेत मात्र किया गया है कि क, च, ट, त और प इन अक्षरों की ध्वनि में भेद कब और कैसे होता है। पूर्णरूप से इसका विश्लेषण नहीं किया गया है।

यद्यपि अक्षर 'ळ' नागरी लिपि में है फिर भी हिन्दी में वह अधिक प्रचलित नहीं है। इसका उच्चारण 'ल' से मिलता-जुलता है फिर भी भेद अवश्य है जिसे इन अंग्रेज़ी शब्दों के द्वारा समझ सकते हैं।

'लिट्टिल्' — छोटा — इसमें ल का उच्चारण वही है।

'सिम्पिळ्' — सरल — इसमें अंग्रेज़ी 'ऍल्' ळ् होता है। 'तिरुक्कुरल' शब्द प्रचलित हो गया है फिर भी उसका सही रूप 'तिरुक्कुरळ' ही होना चाहिये।

तमिल में ऱ और ष़ दोनों विशेष अक्षर हैं जो नागरी लिपि में नहीं हैं। ऱ का उच्चारण 'र' से कठोर होता है जैसे अंग्रेज़ी में 'कऱॅक्ट्' — ठीक है। ऱ् के साथ संयुक्त अक्षर होने पर जैसे ऱ्ऱ उसका उच्चारण ट्र जैसा हो जाता है। 'ष़' का उच्चारण हिन्दी या अंग्रेज़ी शब्दों के द्वारा समझाना कठिन है। साधारणतः अंग्रेज़ी z और h अक्षरों को मिलाकर 'zh' से यह समझाया जाता है। भाषा का नाम 'तमिल' में ही यह अक्षर प्रयुक्त है। 'तमिष़' ही इसका वास्तविक उच्चारण है। इस विशेष अक्षर के लिये 'ळ' का विकृत रूप भी हो सकता है। पर इसका उच्चारण 'ष' से अधिक मिलने-जुलने के कारण उसका प्रयोग ही मैंने उचित समझा। मूल तमिल भाषा के शब्दों में 'ष' का साधारण उच्चारणयुक्त शब्द ही नहीं हैं। वह केवल तत्सम

संस्कृत शब्दों का प्रयोग जहाँ होता है वहीं है।
सारे तिरुक्कुरळ में ऐसा एक भी शब्द नहीं है।
तो 'ष़' के नीचे बिंदु हो या न हो उसका
उच्चारण विशेष 'ष' (zh) ही समझिये।

हिन्दी में स्थान के भेद के अनुसार शब्दों में 'अ' स्वर का लोप हो जाता है। जैसेः— राम—राम्; गरम—गरम्; महल—महल्; मलमल—मल्मल्; चहलपहल—चहल्पहल्। तमिल में ऐसा नहीं होता।

दोहाः छंद-लक्षण

साधारणतः हर एक पद्य में चार चरण होते हैं और उनमें वर्णों याने अक्षरों की संख्या का या उन अक्षरों की मात्राओं की संख्या का नियम होता है।

मात्रा :— दीर्घ अक्षर याने गुरु वर्ण की दो मात्राएँ गिनी जाती हैं और ह्रस्व या लघु वर्ण की एक मात्रा। संयुक्त अक्षर के पूर्व का अक्षर तथा अनुस्वार और विसर्गयुक्त अक्षर भी गुरु माने जाते हैं।

उदाहरण :— कल — २ मात्राएं; काल ३ मात्राएं; काला ४ मात्राएँ; कक्षा — ४ मात्राएं (संयुक्त क्ष के पूर्व 'क' गुरु है); कंधा — ४ मात्राएं ('कं' गुरु है) अतः — ३ मात्राएं (तः गुरु माना जाता है)।

दोहा छोटा होने के कारण इसका पहला और दूसरा चरण एक पंक्ति में तथा तीसरा और चौथा चरण दूसरी पंक्ति में लिखे या छापे जाते हैं। दोहे का लक्षण एक दोहे में ही यों देता हूँ :—

ग्यारह सम तेरह विषम, सम में गुरु लघु अंत।
लघु गुरु हों या तीन लघु, दोहे का विषमांत।।

ग्यारह सम अर्थात् दूसरे और चौथे चरणों में ग्यारह मात्राएँ;
तेरह विषम अर्थात् पहले और तीसरे चरणों में तेरह मात्राएँ;
होनी चाहिये। सम में अर्थात् दूसरे और चौथे चरणों के अंत में गुरु लघु अक्षर होना चाहिये। वैसे ही तुक भी मिलना चाहिये। विषमांत अर्थात् पहले और तीसरे चरणों के अंत में लघु गुरु या तीन लघु अक्षर होना चाहिये।

राम नाम मनि - दीप धरु, जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरो, जो चाहसि उजियार।।

पहला चरण—राम.... धरु। इसमें तेरह मात्राएँ हैं। पधरु लघु हैं। तीसरा चरण—तुलसी.... बाहिरो। तेरह मात्राएँ हैं। हि रो लघु गुरु हैं। दूसरा चरण— जीह.... द्वार। इसमें ग्यारह मात्राएं हैं। गुरु लघु अंत में। चौथा चरण— जो.... उजियार। इसमें ग्यारह मात्राएँ हैं। गुरु लघु अंत में। द्वार और उजियार में तुक मिलता है। याने अन्त्यानुप्रास है। अन्त्यानुप्रास के शब्द भिन्न भिन्न होने से दोहा खिल उठता है और ऐसा होना भी चाहिये। फिर भी एक ही शब्द होने से दोष नहीं है।

जैसे :— लाली मेरे लाल की, जित देखौं तित लाल।
लाली देखन में गई, मैं भी हो गई लाल।।

(कबीरदास)

व्याधा बधो पपीहरा, परो गंग-जल जाय।
चोंच मूँदि पीवै नहीं, जल पिये मो पन जाय।।

(तुलसीदास)

कविता में कभी कभी गुरु वर्ण को लघु या लघु वर्ण को गुरु करके पढ़ने की आवश्यकता पड़ती है जो शास्त्र-सम्मत है। यह प्रसिद्ध उक्ति है कि 'अपि माषं मषं कुर्यात्, छंदो भंगं न कारयेत्'। भले ही माषं (उड़द) को मषं करो पर छंद का नियम-भंग न किया जाय। उपरोक्त दोहों में 'मैं भी हो गई' में 'गई' को 'गइ' करके; 'जल पिये' में 'ये' को ह्रस्व करके 'पियेँ' पढ़ना चाहिये। प्राचीन कविता में 'ए' का ह्रस्व रूप है ही जैसे रामचरितमानस के आरंभ में 'जेहि सुमिरत सिधि होई' में 'जेँ' को ह्रस्व करके पढ़ना चाहिये। तिरुक्कुरळ के दोहों में जहाँ 'नहीं' शब्द में 'हीं' का उच्चारण ह्रस्व होना चाहिये वहाँ 'नहिं' का ही प्रयोग हुआ है।

इन नियमों के साथ साथ दोहा रचते समय यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि चरण के आरंभ में शब्द या शब्दांश तीन मात्राओंवाला हो तो उसके बाद वैसे ही तीन मात्राओं का (त्रिकल) तथा दो मात्राओंवाला हो (द्विकल) तो दो मात्राओं का शब्द या शब्दांश होना चाहिये। नहीं तो दोहा में गति न रहेगी।

उदाहरण :—

राम नाम नणि दीप धरु — राम-३ मात्राएं, नाम ३ मात्राएं।
जीह देह री द्वार — जीह ३ मात्राएं, देह ३ मात्राएं।
तुल सी भीतर बा हिरो — तुल सी आदि में २ मात्राएं।
जो चा हसि उजि यार.— जो चा आदि में २ मात्राएं।
सदाचारसंपन्नता, देती सबको श्रेय। (तिरुक्कुरळ १३१)
सदा - ३, चार - ३, सं पन नता २, २, ३.
दे ती सब को श्रेय — २ २ २ २ ३।

सम्मान व सम्मतियाँ

सन् १९६७ में प्रथम संस्करण को प्रकाशित करके श्री कांची कामकोटि पीठ के परमाचार्य श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती तथा श्री जयेन्द्र सरस्वती आचार्यों ने अनुवादक को स्वर्ण कड़ा प्रदान कर सम्मानित और अनुगृहीत किया।

सन् १९६९ में भारत सरकार ने हिन्दीतर-भाषी हिन्दी-साहित्यकारों की पुरस्कार-योजना की तृतीय प्रतियोगिता में अनुवादक को एक हज़ार रुपये का पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया।

(प्रथम संस्करण पर प्राप्त सम्मतियों से उद्धृत)

श्री नन्ददुलारे वाजपेयी,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सागर विश्वविद्यालय।

............प्राचीन ग्रंथों का हिन्दी में छन्दोबद्ध अनुवाद अत्यंत उपयोगी कार्य है। क्योंकि गद्य में किये गये अनुवादों के प्रति लोगों का विशेष आकर्षण नहीं होता। श्री वेंकटकृष्णन् का यह अनुवाद सरल और सुपाठ्य दोहा छंद में किया गया है जिससे भाव और अर्थ का अच्छा स्पष्टीकरण हो जाता है। मैं इस अनुवाद का स्वागत करता हूँ।............

राष्ट्रींय स्वयं सेवक संघ
सरसंघ चालक : मा. स. गोळवलकर
डा. हेडगेवार भवन

केन्द्र-नागपुर
२१-३-६८

............(अनुवाद) अतिमधुर उतरा है। यह अनुवाद है, यह बात किसी से नहीं कही तो इसको मूल ग्रंथ माना जा सकेगा इतना सहज, सरल, सुन्दर यह बना है।............आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हुआ अपने देश पर आपने किये महान उपकार के लिये आपको अन्तःकरण से शतशः धन्यवाद देता हूँ। इति शम्।

(तिरुक्कुरल का संक्षिप्त संस्करण 'तिरुक्कुरल - सतसई' पर (१९८२ में प्रकाशित) प्राप्त सम्मतियों से उद्धृत अगले पृष्ठों में है।)

डा. वी. पी. सिंह, एम.ए. (हिन्दी)
एम.ए. (संस्कृत), पी.एच.डी., डी.लिट्.
प्रोफ़ेसर व हिन्दी विभाग के अध्यक्ष

बनारस हिन्दु यूनिवर्सिटी
वाराणसी - ५
दिनांक ४-४-८४

.... 'तिरुक्कुरल - सतसई' का मैंने आद्योपान्त आलोचनात्मक दृष्टि से अध्ययन किया। प्रो. वेंकटकृष्णन की यह कृति उपादेय और शिक्षाप्रद है। तिरुक्कुरल का महत्व तो सर्वविदित है। उसका हिन्दी पद्यमय अनुवाद करके प्रो. कृष्णन ने हिन्दी जगत का उपकार किया है। इस सुन्दर उपादेय ग्रन्थ के लिये मैं प्रो. कृष्णन को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी वे हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि इसी प्रकार करते रहेंगे।.............

विजयपालसिंह।

डा. विजयेन्द्र स्नातक

दिल्ली
१६-३-८४

..........आपकी पुस्तक में सात सौ दोहों में श्री तिरुवल्लुवर की श्रेष्ठ सूक्तियों का सुन्दर अनुवाद पढ़कर चित्त प्रसन्न हो गया। आपने तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवियों के साथ जो भावात्मक एकता पर लिखा है वह भी पठनीय है। मैं समझता हूँ कि दो सहस्र से भी अधिक प्राचीन इस महर्षि की रचनाओं को आपके अनूदित दोहों के आधार पर पाठ्य पुस्तकों में स्थान मिलना चाहिये। ऐसे महामानव की रचनाएं केवल तमिल भाषियों के लिये ही नहीं वरन समस्त भारतियों के लिये ग्राहय हैं। आपने अनुवाद में सरल भाषा का प्रयोग किया है इसलिये भी यह गौरव ग्रन्थ सर्वसामान्य के लिये सुबोध हो गया है। मैं इस महत्वपूर्ण श्रेष्ठ साहित्य सेवा के लिये आपको बधाई देता हूँ।...............

विजयेन्द्र स्नातक

प्रो. कल्याणमल लोढा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय

कलकत्ता
दिनांक २० मार्च, १९८४

............आपका अनुवाद मैंने देखा। अच्छा और सुष्ठु लगा। मूल तो मैंने पढ़ा नहीं है पर सतसई आपकी काव्य-प्रतिभा का सहज प्रमाण है। आपने अनुवाद का धर्म, कर्म व मर्म समझा है, निभाया है। भाषा का सारल्य जहाँ एक ओर भाव-गांभीर्य को प्रकट करता है वहाँ दूसरी ओर अपनी सहजता से पाठक के हृदय पर अंकित हो जाता है।.............

डा. इन्द्रपालसिंह
ए-१४, यूनिवर्सिटि क्वार्टर्स

नागपुर १०,
२६-३-८४

............वस्तुतः आपका यह अनुवाद इतना सुन्दर है कि मूल का आनन्द प्राप्त होता है। भावों और विचारों की हिन्दी में यह अभिव्यक्ति भाषा की उत्कृष्टता तथा प्रवाह की दृष्टि से इतनी उत्तम बन पड़ी है कि यह अनुवाद नहीं प्रतीत होता। इसके लिये आप बधाई के पात्र हैं।

ग्रंथ के आरम्भ में सन्त तिरुवल्लुवर तथा हिन्दी और संस्कृत कवियों के तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करके आपने इसे न केवल अधिक उपयोगी बना दिया है, अपितु संत की महत्ता का भी प्रतिपादन किया है। शाश्वत भाव एवं विचार देश काल की सीमा से परे होते हैं, यह इस तुलनात्मक अध्ययन से प्रमाणित हो जाता है। कहाँ अत्यन्त प्राचीन कवि संत तिरुवल्लुवर और कहाँ हिन्दी के अर्वाचीन कवि प्रसाद, गुप्त तथा महादेवी जी, किन्तु भाव और विचारों की अद्‌भुत एकता न केवल आश्चर्यजनक है अपितु साहित्य के स्थायित्व को प्रमाणित करती है।..........

डा. आनन्दप्रकाश दीक्षित
आचार्य तथा अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

पुणे विद्यापीठ
१३-४-८४

............खड़ी बोली को दोहों में बांध कर उनमें लाघव से कवि-कथन को उतारना बड़ा कठिन कार्य है, जिसे आपने संपन्न किया है। भूमिका भाग में

आपने विस्तरशः इस रचना के महत्व पर प्रकाश ही नहीं डाला है, अनुवाद कार्य को आपने किस मार्मिकता से समझा है और किस निष्ठा से उसे संपन्न किया है, उससे यह भी स्पष्ट हो जाता है। मैं आपकी इस सजगता की प्रशंसा करता हूँ। अन्यान्य कवियों की उक्तियों से तुलना के प्रकाश में तिरुवल्लुवर की वाणी का महत्व खिल उठा है। आप इतनी दूर बैठे भारत की दो महान भाषाओं के बीच जो सेतु निर्मित कर रहे हैं उससे राष्ट्रीय एकता को बल मिलता है और आदान-प्रदान का मार्ग खुलता है। साहित्य और साहित्यकार किस तरह राष्ट्र के लिये उपयोगी हो सकते हैं, यह आपके इस कार्य से सहज सिद्ध है। मैं आपका सहज हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।............

शिवकुमार (शास्त्री) — नई दिल्ली
भूतपूर्व डिस्ट्रिक्ट एवं सेशंस जज — २२-५-८३

............सन्त तिरुवल्लुवर की अमर रचना तिरुक्कुरल मानव जाति की एक अमूल्य निधि है।.......... किसी भाषा के पद्य काव्य का अन्य भाषा में पद्यानुवाद करना एक कठिन कार्य है। विद्वान प्रो. वेंकटकृष्णन जी ने यह कार्य बड़ी खूबी से किया है जिसके लिये हिन्दी जगत उनका आभारी है।............

के. पी. मिश्र — शास्त्री भवन,
डेप्युटि डैरेक्टर (सौत) — मद्रास - ६
हिन्दी टीचिंग स्कीम — १४ मार्च, १९८४

............ग्रंथ का दोहानुवाद उतना अच्छा बन पड़ा है कि तिरुक्कुरल - सतसई पढ़ते समय कभी कभी ऐसा भी प्रतीत होने लगता है कि हम जैसे कोई मूल ग्रंथ पढ़ रहे हों, अनुवाद नहीं। इससे अनुवादक की योग्यता एवं क्षमता का मूल्यांकन सहज ही किया जा सकता है। अनुवादक का कार्य प्रशंसनीय एवं स्तुत्य है।

(Excerpts from some opinions on the first edition of Tirukkural Translation published in the year 1967)

Suniti Kumar Chatterjee
National Professor of India
in Humanities

Belvedere
Calcutta-27

.... This translation I would consider remarkable as it has been done straight from Tamil by a Tamil speaker into Hindi of which by his translation, he has shown himself to be an erudite scholar who can handle the language with perfect grace and vigour .... The verses run smooth, the vocabulary is chaste Hindi with some archaic words and forms which add a special flavour to poetry of a classical type such as we find in the Kural and it deserves to be popular among Hindi readers ....

K. Krishnan,
Deputy Secy. to M.P. Govt. (Retd.)

(A review in the Madhya Pradesh Chronicle,
Bhopal, January 6, 1968)

.... I can say without fear of contradiction that the dohas seem to have all the crispness, all the thrust and challenges and indeed all the snappy exclamations of the original. And in keeping measure with the original text they are as short as short can be ....

(A review of 'Tirukkural Satsayee' an abridged edition of Tirukkural Translation in 'The Hindu', July 12, 1983
by Prabhakar Machwe)

.... I have read several translations of the Kural in Hindi, English, Marathi and other languages. This work is the most satisfying amongst Hindi translations as it has been done with great care, devotion and meticulous attention to the nuances of the original meaning. The translator is a retired Hindi Professor and has a very good command over idiomatic and colloquial Hindi.............

The most interesting part of the book is the introduction wherein parallels between Kurals and the writing of Hindi Poets like Kabir, Rahim, Tulsidas, Bihari, Dev, Prasad, Maithilisaran Gupta, Mahadevi Varma, Balakrishna Sarma Naveen as well as the common passages in Valmiki Ramayana and Bhagavat Gita are illustrated. This is a remarkable piece of research. The author deserves all praise.

Prabhakar Machwe

अध्याय - सूची

क्रम-संख्या	शीर्षक	पृष्ठ-संख्या

प्रारब्ध-प्रकरण

अर्थ-कांड

शासन-प्रकरण

मंत्रिता-प्रकरण

दुर्ग-प्रकरण

वित्त-प्रकरण

அதிகாரங்கள் அட்டவணை

வரிசை எண்	தலைப்பு	பக்க எண்

அறத்துப்பால்

பாயிரம்

இல்லறவியல்

துறவறவியல்

ஊழியல்

பொருட்பால்

அரசியல்

அமைச்சியல்

அரணியல்

கூழியல்

படையியல்

நட்பியல்

குடியியல்

காமத்துப்பால்

களவியல்

கற்பியல்

तिरुवळ्ळुवर

அறத்துப்பால்

अऱत्तुप्पाल्

धर्म-कांड

மனத்துக்கண் மாசிலன் ஆதல் அனைத்து அறன்
ஆகுல நீர பிற.

मनत्तुक्कण् माशिलनादल् अनैत्तु अरन् 34
आहुल नीर पिर.

मन का होना मल रहित,
इतना ही है धर्म ।
बाक़ी सब केवल रहे,
ठाट-बाट के कर्म ।। ३४

கடவுள் வாழ்த்து ईश्वर–स्तुति कडवुळ् वाष़्त्तु

அகர முதல எழுத்தெல்லாம் ஆதி
பகவன் முதற்றே உலகு. 1

अहर मुदल ऍषुत्तॅल्लाम् आदि
भगवन् मुदट्रे उलहु.

अक्षर सबके आदि में, है अकार का स्थान।
अखिल लोक का आदि तो, रहा आदि भगवान।। १

सभी भाषाओं की वर्णमाला का आरंभ 'अ' से होता है। गीताचार्य का कथन है 'अक्षराणां अकारोऽस्मि'। अक्षरों में अकार हूँ। सृष्टि का मूल ईश्वर है। 'अहर' (अकर), अकार का तद्भव शब्द है।

கற்றதனா லாய பயனென்கொல் வாலறிவன்
நற்றாள் தொழாஅர் எனின். 2

कट्रदनालाय पयनॅन्कॊल् वालरिवन्
नट्राळ् तॊष़ा अर् ऍनिन्.

विद्योपार्जन भी भला, क्या आयेगा काम।
श्रीपद पर सत्याज्ञ के, यदि नहिं किया प्रणाम।। २

विद्योपार्जन – शास्त्रों का अध्ययन। सत्यज्ञ – शुद्ध ज्ञानस्वरूप।

மலர்மிசை ஏகினான் மாணடி சேர்ந்தார்
நிலமிசை நீடுவாழ் வார். 3

मलर्मिशै एहिनान् माणडि शेर्न्दार्
निलमिशै नीडु वाष़्वार्

हृदय-पद्म-गत ईश के, पाद-पद्म जो पाय।
श्रेयस्कर वरलोक में, चिरजीवी रह जाय।। ३

**வேண்டுதல் வேண்டாமை இலான்அடி சேர்ந்தார்க்கு
யாண்டும் இடும்பை இல.** 4

वेण्डुदल् वेण्डामै इलान् अडि शेरून्दारूक्कु
याण्डुम् इडुम्बै इल.

राग - द्वेष विहीन के, चरणाश्रित जो लोग।
दुःख न दे उनको कभी, भव - बाधा का रोग।। ४

भव – बाधा – सांसारिक दुःख

**இருள்சேர் இருவினையும் சேரா இறைவன்
பொருள் சேர் புகழ்புரிந்தார் மாட்டு.** 5

इरुळूशेरू इरुविनैयुम् शेरा इऱैवन्
पोॅरुळूशेरू पुहष्पुरिन्दारू माट्टु.

जो रहते हैं ईश के, सत्य भजन में लिप्त।
अज्ञानाश्रित कर्म दो, उनको करें न लिप्त।। ५

कर्म – दो – पाप – पुण्य कर्म। लिप्त करना – लगना।

**பொறிவாயில் ஐந்தவித்தான் பொய்தீர் ஒழுக்க
நெறிநின்றார் நீடுவாழ் வார்.** 6

पोॅऱिवायिल् ऐन्दवित्तान् पोॅयूतीरू ओॅष़ुक्क
नेॅऱिनिन्ड्रारू नीडु वाष़्वारू.

पंचेन्द्रिय - निग्रह किये, प्रभु का किया विधान।
धर्म - पंथ के पथिक जो, हों चिर आयुष्मान।। ६

**தனக்குவமை இல்லாதான் தாள்சேர்ந்தார்க் கல்லால்
மனக்கவலை மாற்றல் அரிது.** 7

तनक्कुवमै इल्लादान् ताळ् शेरून्दारुक्कल्लाल्
मनक्कवलै माट्रल् अरिदु.

ईश्वर उपमारहित का, नहीं पदाश्रय - युक्त।
तो निश्चय संभव नहीं, होना चिन्ता - मुक्त।। ७

**அறவாழி அந்தணன் தாள்சேர்ந்தார்க் கல்லால்
பிறவாழி நீந்தல் அரிது.** 8

अऱवाषि अन्दणन् ताळ् शेरून्दारुक्कल्लाल्
पिऱवाषि नीन्दल् अरिदु.

धर्म-सिन्धु करुणेश के, शरणागत है धन्य।
उसे छोड़ दुख-सिन्धु को, पार न पाये अन्य।। ८

सिन्धु — समुद्र, सागर।

**கோளில் பொறியின் குணமிலவே எண்குணத்தான்
தாளை வணங்காத் தலை.** 9

कोळिल् पॊऱियिन् गुणमिलवे ऍणगुणत्तान्
ताळै वणंगात्तलै.

निष्क्रिय इन्द्रिय सदृश ही, 'सिर' है केवल नाम।
अष्टगुणी के चरण पर, यदि नहिं किया प्रणाम।। ९

अष्ट गुण — स्वतन्त्रत्व, विशुद्ध देहत्व, अनादि बोध, सर्वज्ञत्व, निरामयत्व, अलुप्त शक्ति, अनन्त शक्ति और तृप्ति।

பிறவிப் பெருங்கடல் நீந்துவர் நீந்தார்
இறைவன் அடிசேரா தார். **10**

पिऱविप् पॆंरुंकडल् नीन्दुवर् नीन्दार्
इरैवन् अडि शेरादार्.

भव-सागर विस्तार से, पाते हैं निस्तार।
ईश-शरण बिन जीव तो, कर नहीं पाये पार।। १०।

पाते हैं निस्तार – पार करते हैं। (जिनको शरण मिली है वे) विस्तृत संसार सागर को पार करने के लिये ईश्वर की शरण लेना ही एक मात्र उपाय है।

அதிகாரம்-2 अध्याय–२ பாயிரம் उपोद्घात

வான் சிறப்பு वर्षा–महत्व वान् शिऱप्पु

வான்நின்று உலகம் வழங்கி வருதலால்
தான்அமிழ்தம் என்றுணரற் பாற்று. **11**

वान् निन्ड्रु उलहम् वऴंगि वरुदलाल्
तान् अमिऴ्दम् ऍन्ड्रुणरर् पाट्रु.

उचित समय की वृष्टि से, जीवित है संसार।
मानी जाती है तभी, वृष्टि अमृत की धार।। ११

वृष्टि – वर्षा, बरसात। धार – धारा।

துப்பார்க்குத் துப்பாய துப்பாக்கித் துப்பார்க்குத்
துப்பாய தூஉம் மழை. ***12***

तुप्पार्क्कुत् तुप्पाय तुप्पाक्कित्तुप्पार्क्कुत्
तुप्पाय तूउम् मष़ै.

आहारी को अति रुचिर, अन्नरूप आहार।
वृष्टि सृष्टि कर फिर स्वयं, बनती है आहार।। १२

आहारी – भोजन करनेवाला। अति रुचिर – बहुत स्वादिष्ट।

விண்இன்று பொய்ப்பின் விரிநீர் வியனுலகத்து
உள்நின்று உடற்றும் பசி. ***13***

विण् इन्ड्रु पॉय्प्पिन् विरिनीर् वियनुलहत्तु
उळ् निन्ड्रु उडट्रुम् पशि.

बादल-दल बरसे नहीं, यदि मौसम में चूक।
जलधि-घिरे भूलोक में, क्षुत से हो अति हूक।। १३

जलधि – समुद्र। क्षुत – भूख। हूक – वेदना।

ஏரின் உழாஅர் உழவர் புயலென்னும்
வாரி வளங்குன்றிக் கால். ***14***

एरिन् उष़ा अर् उषवर् पुयलेॅन्नुम्
वारि वळंगुन्ड्रिक्काल्.

कर्षक जन से खेत में, हल न चलाया जाय।
घन-वर्षा-संपत्ति की, कम होती यदि आय।। १४

कर्षक जन – किसान लोग। आय – आमदनी।

கெடுப்பதூஉங் கெட்டார்க்குச் சார்வாய்மற் றாங்கே
எடுப்பதூஉம் எல்லாம் மழை. **15**

कॅंडुप्पदूउङ् कॆंट्टार्क्कुच्चार्वाय् मट्रांगे
ऍडुप्पदूउम् ऍल्लाम् मष़ै.

वर्षा है ही अति प्रबल, सब को कर बरबाद।
फिर दुखियों का साथ दे, करे वही आबाद।। **१५**

விசும்பின் துளிவீழின் அல்லால்மற் றாங்கே
பசும்புல் தலைகாண்பு அரிது. **16**

विशुम्बिन् तुळि वीष़िन् अल्लाल् मट्रांगे
पशुम्पुल् तलै कांणबु अरिदु.

बिना हुए आकाश से, रिमझिम रिमझिम वृष्टि।
हरी भरी तृण नोक भी, आयेगी नहीं दृष्टि।। **१६**

तृण – घास। नोक – सूक्ष्म अग्र भाग। दृष्टि – देखने में।

நெடுங்கடலும் தன்நீர்மை குன்றும் தடிந்தெழிலி
தான்நல்கா தாகி விடின். **17**

नॆंडुंकडलुम् तन् नीरूमै कुन्रुम् तडिन्दॆंष़िलि
तान् नल्हादाहि विडिन्.

घटा घटा कर जलधि को, यदि न करे फिर दान।
विस्तृत बड़े समुद्र का, पानी उतरा जांन।। **१७**

घटा – बादल। घटा कर – कम करके। पानी उतरना – पानी कम होना, गौरव नष्ट होना।

சிறப்பொடு பூசனை செல்லாது வானம்
வறக்குமேல் வானோர்க்கும் ஈண்டு. 18

शिऱप्पोंडु पूशनै शॅल्लादु वानम्
वऱक्कुमेल् वानोर्क्कुम् ईण्डु.

देवाराधन नित्य का, उत्सव सहित अमंद।
वृष्टि न हो तो भूमि पर, हो जावेगा बंद।। १८

தானம் தவம்இரண்டும் தங்கா வியன்உலகம்
வானம் வழங்கா தெனின். 19

दानम् तवम् इरण्डुम् तंगा वियन् उलहम्
वानम् वऴ्ंगार्देनिन्.

इस विस्तृत संसार में, दान पुण्य तप कर्म।
यदि पानी बरसे नहीं, टिकें न दोनों कर्म।। १९

நீர்இன்று அமையாது உலகெனின் யார்யார்க்கும்
வான்இன்று அமையாது ஒழுக்கு. 20

नीर इन्ड्रु अमैयादु उलहेंनिन् यार्यार्क्कुम्
वान् इन्ड्रु अमैयादु ऒऴुक्कु.

नीर बिना भूलोक का, ज्यों न चले व्यापार।
कभी किसी में नहिं टिके, वर्षा बिन आचार।। २०

नीर – पानी। आचार – सदाचार।

நீத்தார் பெருமை सन्यासी – महिमा नीत्तार् पॆरुमै

ஒழுக்கத்து நீத்தார் பெருமை விழுப்பத்து
வேண்டும் பனுவல் துணிவு. **21**

ऒऴुक्कत्तु नीत्तार् पॆरुमै विऴुप्पत्तु
वेण्डुम् पनुवल् तुणिवु.

> सदाचार संपन्न जो, यदि यति हों वे श्रेष्ठ।
> धर्मशास्त्र सब मानते, उनकी महिमा श्रेष्ठ।। २१

यति – सन्यासी।

துறந்தார் பெருமை துணைக்கூறின் வையத்து
இறந்தாரை எண்ணிக்கொண் டற்று. **22**

तुऱन्दार् पॆरुमै तुणैक्कूऱिन् वैयत्तु
इऱन्दारै ऎण्णिक्कॊण्डट्रु.

> यति-महिमा को आंकने, यदि हो कोई यत्न।
> जग में मृत-जन-गणन सम, होता है वह यत्न।। २२

मृत–जन–गणन– मरे हुए लोगों की गिनती करना।

இருமை வகைதெரிந்து ஈண்டுஅறம் பூண்டார்
பெருமை பிறங்கிற்று உலகு. **23**

इरुमै वहै तॆरिन्दु ईण्डु अऱम् पूण्डार्
पॆरुमै पिरंगिट्रु उलहु.

> जन्म-मोक्ष के ज्ञान से, ग्रहण किया संन्यास।
> उनकी महिमा का बहुत, जग में रहा प्रकाश।। २३

*உரனென்னும் தோட்டியான் ஓரைந்துங் காப்பான்
வரனென்னும் வைப்பிற்கோர் வித்து.* **24**

उरनॆन्नुम् तोट्टियान् ओरैन्दुम् काप्पान्
वरनॆन्नुम् वैप्पुक्कोर् वित्तु.

**अंकुश से दृढ़ ज्ञान के, इन्द्रिय राखे आप।
ज्ञानी वह वर लोक का, बीज बनेगा आप।।** २४

इन्द्रिय राखे – इन्द्रियों को वश में रखेगा।

*ஐந்தவித்தான் ஆற்றல் அகல்விசும்பு ளார்கோமான்
இந்திரனே சாலுங் கரி.* **25**

ऐन्दवित्तान् आट्रल् अहल्विशुम्बुळार् कोमान्
इन्दिरने शालुङ् करि.

**जो है इन्द्रिय-निग्रही, उसकी शक्ति अथाह।
स्वर्गाधीश्वर इन्द्र ही, इसका रहा गवाह।।** २५

इन्द्रिय – निग्रही – इन्द्रियों को वश में रखनेवाला। अथाह – अपार। इन्द्र ...... गवाह – अहल्या की कहानी का संकेत किया है। गौतम महर्षि का शाप इन्द्र को भोगना पड़ा।

*செயற்கரிய செய்வார் பெரியர் சிறியர்
செயற்கரிய செய்கலா தார்.* **26**

शॆयर्करिय शॆय्वार् पॆरियर् शिरियर्
शॆयर्करिय शॆय्हलादार्

**करते दुष्कर कर्म हैं, जो हैं साधु महान।
दुष्कर जो नहिं कर सके, अधम लोग वे जान।।** २६

சுவையொளி ஊறுஓசை நாற்றமென்று ஐந்தின்
வகைதெரிவான் கட்டே உலகு. **27**

शुवै ऑॅळि ऊऱु ओशै नाट्रमॅंन्ऱु ऐन्दिन्
वहै तॅरिवान् कट्टे उलहु.

स्पर्श रूप रस गन्ध औ, शब्द मिला कर पंच।
समझे इनके तत्व जो, समझे वही प्रपंच।। २७

प्रपंच – संसार, सृष्टि। इनके तत्व – सृष्टि-तत्व। शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध पंच भूतों के आदि सूक्ष्म रूप हैं। आकाश, वायु, अग्नि, पानी और पृथ्वी क्रमश: इनके पाँच स्थूल भौतिक रूप हैं। फिर इनसे संबंधित पाँच ज्ञानेन्द्रिय क्रमश : यों हैं – श्रवणेन्द्रिय (कान), स्पर्शेन्द्रिय (चमड़ा), दर्शनेन्द्रिय (आँख), रसनेन्द्रिय (जीभ) और घ्राणेन्द्रिय (नाक)। वैसे ही हाथ, पैर, मुख, गुदा और उपस्थ पाँच कर्मेन्द्रिय हैं। इन सब का आदि मूलप्रकृति है जो सृष्टि का कारण है।

நிறைமொழி மாந்தர் பெருமை நிலத்து
மறைமொழி காட்டி விடும். **28**

निऱैमॉॅऴि मान्दर पॅंरुमै निलत्तु
मऱैमोऴि काट्टि विडुम् .

भाषी वचन अमोघ की, जो है महिमा सिद्ध।
गूढ मंत्र उनके कहे, जग में करें प्रसिद्ध।। २८

अमोघ– अचूक। अमोघ वचन भाषी– जिनका वचन कभी निष्फल नहीं होता।

குணமென்னும் குன்றேறி நின்றார் வெகுளி
கணமேயும் காத்தல் அரிது. **29**

गुणमॆंन्नुम् कुन्ड्रेरि निन्ड्रार् वॆंहुळि
कणमेयुम् कात्तल् अरिदु.

सद्गुण रूपी अचल पर, जो हैं चढ़े सुजान।
उनके क्षण का क्रोध भी, सहना दुष्कर जान।। २९

अचल – पहाड़। महात्मा लोग साधारणतः क्रुद्ध नहीं होते। परन्तु जब क्रुद्ध होते हैं वह क्रोध भयंकर होता है। शिवजी के नेत्र से उत्पन्न क्रोधाग्नि ने काम देव को एक क्षण में भस्म कर दिया।

அந்தணர் என்போர் அறவோர்மற் றெவ்வுயிர்க்கும்
செந்தண்மை பூண்டொழுக லான். **30**

अन्दणर् ऍन्बोर् अऱवोर् मट्रॆव्वुयिर्क्कुम्
शॆंन्दण्मै पूण्डॊंषुहलान्.

करते हैं सब जीव से, करुणामय व्यवहार।
कहलाते हैं तो तभी, साधु दया-आगार।। ३०

அறன் வலியுறுத்தல் धर्म पर आग्रह अरन् वलियुरुत्तल्

சிறப்புஈனும் செல்வமும் ஈனும் அறத்தினூஉங்கு
ஆக்கம் எவனோ உயிர்க்கு. **31**

शिरप्पु ईनुम् शॆंल्वमुम् ईनुम् अऱत्तिनू उङ्गु
आक्कम् ऍवनो उयिर्क्कु.

मोक्षप्रद तो धर्म है, धन दे वही अमेय।
उससे बढ़ कर जीव को, है क्या कोई श्रेय।। ३१

मोक्षप्रद – मुक्तिदेनेवाला। अमेय – असीम।

அறத்தினூஉங்கு ஆக்கமும் இல்லை அதனை
மறத்தலின் ஊங்கில்லை கேடு. 32

अ़रत्तिनू उङ्गु आक्कमुम् इल्लै अदनै
मऱत्तलिन् ऊङ्गिल्लै केडु.

बढ़ कर कहीं सुधर्म से, अन्य न कुछ भी श्रेय।
भूला तो उससे बड़ा, और न कुछ अश्रेय।। ३२

धर्म को भूलना बड़ा हानिकारक है।

ஒல்லும் வகையான் அறவினை ஓவாதே
செல்லும்வா யெல்லாஞ் செயல். 33

ओॅल्लुम् वहैयान् अ़रविनै ओवादे
शॅल्लुम् वायॅल्लाम् शॅयल्.

यथाशक्ति करना सदा, धर्मयुक्त ही कर्म।
तन से मन से वचन से, सर्व रीति से धर्म।। ३३

மனத்துக்கண் மாசிலன் ஆதல் அனைத்துஅறன்
ஆகுல நீர பிற. 34

मनत्तुक्कण् माशिलन् आदल् अनैत्तु अ़रन्
आहुल नीर पिऱ.

मन का होना मल रहित, इतना ही है धर्म।
बाकी सब केवल रहे, ठाट-बाट के कर्म।। ३४

அழுக்காறு அவாவெகுளி இன்னாச்சொல் நான்கும்
இழுக்கா இயன்றது அறம். 35

अषुक्काऱु अवावॅहुळि इन्नाच्चोॅल् नान्गुम्
इषुक्का इयन्ड्रदु अ़रम्.

क्रोध लोभ फिर कटुवचन, और जलन ये चार।
इनसे बच कर जो हुआ, वही धर्म का सार।। ३५

*அன்றறிவாம் என்னாது அறஞ்செய்க மற்றது
பொன்றுங்கால் பொன்றாத் துணை.* **36**

अन्ड्ररिवाम् ऍन्नादु अ़रञ्चेंयूह मट्रदु
पोंन्रुङ्गाल् पोंन्रात् तुणै.

'बाद करें मरते समय', सोच न यों, कर धर्म।
जान जाय जब छोड़ तन, चिर संगी है धर्म।। ३६

'तिरुक्कुरल और हिन्दी कवि' अध्याय में कबीरदास के दोहे से इसकी तुलना की गई है।

*அறத்தாறு இதுவென வேண்டா சிவிகை
பொறுத்தானோடு ஊர்ந்தான் இடை.* **37**

अ़रत्तारु इदुवेंन वेण्डा शिविहै
पोंरुत्तानोडु ऊरुन्दान् इडै

धर्म-कर्म के सुफल का, क्या चाहिये प्रमाण।
शिविकारूढ, कहार के, अंतर से तू जान।। ३७

शिविकारूढ – पालकी में सवार। कहार – ढोनेवाला। अंतर – भेद (भाग्य में)।

*வீழ்நாள் படாஅமை நன்றாற்றின் அஃதொருவன்
வாழ்நாள் வழியடைக்குங் கல்.* **38**

वाष़्नाळ् पडाअमै नन्ड्राट्रिन् अहृतोंरुवन्
वाष़्नाळ् वषि अडैक्कुङ् कल्.

बिना गँवाए व्यर्थ दिन, खूब करो यदि धर्म।
जन्म-मार्ग को रोकता, शिलारूप वह धर्म।। ३८

அறத்தான் வருவதே இன்பம்மற் றெல்லாம்
புறத்த புகழும் இல. **39**

अऱत्तान् वरुवदे इन्बम् मट्रॅल्लाम्
पुरत्त पुहषुम् इल.

धर्म-कर्म से जो हुआ, वही सही सुख-लाभ।
अन्य कर्म से सुख नहीं, न तो कीर्ति का लाभ।। ३९

செயற்பால தோரும் அறனே ஒருவற்கு
உயற்பால தோரும் பழி. **40**

शॅयऱ्पालदोरुम् अऱने ऑरुवक्कु
उयऱ्पालदोरुम् पषि.

करने योग्य मनुष्य के, धर्म-कर्म ही मान।
निन्दनीय जो कर्म हैं, वर्जनीय ही जान।। ४०

* * *

அதிகாரம்-5 अध्याय – ५ இல்லறவியல் गार्हस्थ्य – धर्म

இல்வாழ்க்கை गार्हस्थ्य इल्वाष्क्कै

இல்வாழ்வான் என்பான் இயல்புடைய மூவர்க்கும்
நல்லாற்றின் நின்ற துணை. **41**

इल्वाष्वान् ऍन्बान् इयल्पुडैय मूवर्क्कुम्
नल्लाट्रिन् निन्ड्र तुणै.

धर्मशील जो आश्रमी, गृही छोड़ कर तीन।
स्थिर आश्रयदाता रहा, उनको गृही अदीन।। ४१

गृही – गृहस्थाश्रमी।

துறந்தார்க்கும் துவ்வா தவர்க்கும் இறந்தார்க்கும்
இல்வாழ்வான் என்பான் துணை. 42

तुरन्दार्क्कुम् तुव्वादवर्क्कुम् इरन्दार्क्कुम्
इलवाष़्वान् ऍन्बान् तुणै.

उनका रक्षक है गृही, जो होते हैं दीन।
जो अनाथ हैं, और जो, मृतजन आश्रयहीन।। ४२

मृतजन – मरे हुए लोग। उनके लिये तर्पण आदि करने से गृहस्थ उनका रक्षक माना जाता है।

தென்புலத்தார் தெய்வம் விருந்தொக்கல் தானென்றாங்கு
ஐம்புலத்தாறு ஓம்பல் தலை. 43

तेंनूपुलत्तार् दॅय्वम् विरुन्दॉक्कल् तानॆंन्ड्राङ्गु
ऐंबुलत्तारु ओंबल् तलै.

पितर देव फिर अतिथि जन, बन्धु स्वयं मिल पाँच।
इनके प्रति कर्तव्य का, भरण धर्म है साँच।। ४३

सांच– सच्चा। भरण – निर्वाह करना।

பழியஞ்சிப் பாத்தூண் உடைத்தாயின் வாழ்க்கை
வழியெஞ்சல் எஞ்ஞான்றும் இல். 44

पष़िअञ्जिप्पात्तूण् उडैत्तायिन् वाष़्क्कै
वष़िऍञ्जल् ऍञ्ञान्रुम् इल्.

पापभीरु हो धन कमा, बाँट यथोचित अंश।
जो भोगे उस पुरुष का, नष्ट न होगा वंश।। ४४

बाँट यथोचित – इतर तीन आश्रमी तथा पितर लोगों को बाँट कर।

அன்பும் அறனும் உடைத்தாயின் இல்வாழ்க்கை
பண்பும் பயனும் அது. 45

अनॣबुम् अऱनुम् उडैत्तायिन् इलॣवाष़्क्कै
पणॣबुम् पयनुम् अदु.

प्रेम-युक्त गार्हस्थ्य हो, तथा धर्म से पूर्ण।
तो समझो वह धन्य है, तथा सुफल से पूर्ण।। ४५

அறத்தாற்றின் இல்வாழ்க்கை யாற்றின் புறத்தாற்றிற்
போஒய்ப் பெறுவது எவன். 46

अऱत्ताट्रिन् इलॣवाष़्क्कैयाट्रिन् पुऱत्ताट्रिऱ्
पोऑय्प्पॆऱुवदु ऍवन्.

धर्म मार्ग पर यदि गृही, चलायगा निज धर्म।
ग्रहण करे वह किसलिये, फिर अपराश्रम धर्म।। ४६

अपराश्रम – अन्य आश्रम।

இயல்பினான் இல்வாழ்க்கை வாழ்பவன் என்பான்
முயல்வாருள் எல்லாம் தலை. 47

इयलॣविनान् इलॣवाष़्क्कै वाष़्ववन् ऍन्बान्
मुयलॣवारुळ् ऍल्लाम् तलै.

भरण गृहस्थी धर्म का, जो भी करे गृहस्थ।
साधकगण के मध्य वह, होता है अग्रस्थ।। ४७

अग्रस्थ – प्रथम स्थान रखनेवाला।

***ஆற்றின் ஒழுக்கி அறனிழுக்கா இல்வாழ்க்கை
நோற்பாரின் நோன்மை உடைத்து.*** **48**

आट्रिऩ् ऑष़ुक्कि अऱनिष़ुक्का इल्वाष़्क्कै
नोऱ्पारिऩ् नोऩ्मै उडैत्तु.

**अच्युत रह निज धर्म पर, सबको चला सुराह।
क्षमाशील गार्हस्थ्य है, तापस्य से अचाह।।** ४८

अच्युत रहना — न चूकना। अचाह — निष्काम। तापस्य — तप करना। धार्मिक गृहस्थ सब का मार्गदर्शक और बड़ा सहनशील है। इसलिये तपस्वियों से श्रेष्ठ है।

***அறனெனப் பட்டதே இல்வாழ்க்கை அஃதும்
பிறன்பழிப்பது இல்லாயின் நன்று.*** **49**

अऱनॆंनप्पट्टदे इल्वाष़्क्कै अह्दुम्
पिऱऩ् पष़िप्पदु इल्लायिऩ् नऩ्ऱु.

**जीवन ही गार्हस्थ्य का, कहलाता है धर्म।
अच्छा हो यदि वह बना, जन-निन्दा बिन धर्म।।** ४९

जन—निन्दा बिन् — लोक—निन्दा से बच कर रहना।

***வையத்துள் வாழ்வாங்கு வாழ்பவன் வானுறையும்
தெய்வத்துள் வைக்கப் படும்.*** **50**

वैयत्तुळ् वाष़्वाङ्गु वाष़्बवऩ् वानुऱैयुम्
दैंय्वत्तुळ् वैक्कप्पडुम्.

**इस जग में है जो गृही, धर्मनिष्ठ मतिमान।
देवगणों में स्वर्ग के, पावेगा सम्मान।।** ५०

வாழ்க்கைத் துணைநலம் सहधर्मिणी-उत्कर्ष वाष़्क्कैत्तुणै नलम्

மனைத்தக்க மாண்புடையள் ஆகித்தற் கொண்டான்
வளத்தக்காள் வாழ்க்கைத் துணை. **51**

मनैत्तक्क माण्बुडैयळ् आहित्तर्कोण्डान्
वळत्तक्काळ् वाष़्क्कैत्तुणै.

गृहिणी-गुण-गण प्राप्त कर, पुरुष-आय अनुसार।
जो गृह-व्यय करती वही, सहधर्मिणी सुचार।। ५१

सुचार — सुन्दर।

மனைமாட்சி இல்லாள்கண் இல்லாயின் வாழ்க்கை
எனைமாட்சித் தாயினும் இல். **52**

मनैमाट्चि इल्लाळ् कण् इल्लायिन् वाष़्क्कै
ऍनै माट्चित्तायिनुम् इल्.

गुण-गण गृहिणी में न हो, गृह्य-कर्म के अर्थ।
सुसंपन्न तो क्यों न हो, गृह-जीवन है व्यर्थ।। ५२

गृहिणी — पत्नी। गृह्य-कर्म — गृहस्थ के योग्य कर्म।

இல்லதென் இல்லவள் மாண்பானல் உள்ளதென்
இல்லவள் மாணுக் கடை. **53**

इल्लदॆन् इल्लवळ् माण्बानाल् उळ्ळदॆन्
इल्लवळ् माणाक्कडै.

गृहिणी रही सुधर्मिणी, तो क्या रहा अभाव।
गृहिणी नहीं सुधर्मिणी, किसका नहीं अभाव।। ५३

பெண்ணிற் பெருந்தக்க யாவுள கற்பென்னும்
திண்மையுண் டாகப் பெறின். 54

पॆण्णिऱ् पॆरुन्दक्क यावुळ कऱ्पॆन्नुम्
तिण्मैयुण्डाहप्पॆऱिन्.

स्त्री से बढ़ कर श्रेष्ठ ही, क्या है पाने योग्य।
यदि हो पातिव्रत्य की, दृढ़ता उसमें योग्य।। ५४

தெய்வந் தொழாஅள் கொழுநன் தொழுதெழுவாள்
பெய்யெனப் பெய்யும் மழை. 55

दॆय्वन् तॊऴाअळ् कॊऴुनन् तॊऴुदॆऴुवाळ्
पॆय्यॆनप् पॆय्युम् मऴै.

पूजे सती न देव को, पूज जगे निज कंत।
उसके कहने पर 'बरस', बरसे मेघ तुरंत।। ५५

कंत – कांत, पति। 'तिरुक्कुरळ् और हिन्दी के कवि' अध्याय में इस दोहे का उल्लेख और व्याख्या की गई है।

தற்காத்துத் தற்கொண்டாற் பேணித் தகைசான்ற
சொற்காத்துச் சோர்விலாள் பெண். 56

तऱ्कात्तुत् तऱ्कॊण्डाऱ् पेणित् तहै शान्ऱ
शॊऱ्कात्तुच् चोर्विलाळ् पॆण्.

रक्षा करे सतीत्व की, पोषण करती कांत।
गृह का यश भी जो रखे, स्त्री है वह अश्रांत।। ५६

कांत– पति। यश – कीर्ति। अश्रांत – न थकनेवाली।

சிறைகாக்குங் காப்புஎவன் செய்யும் மகளிர்
நிறைகாக்குங் காப்பே தலை. 57

शिऱै काक्कुङ् कापूपु ऍवन् शॅय्युम् महळिर्
निऱै काक्कुङ् कापूपे तलै.

परकोटा पहरा दिया, इनसे क्या हो रक्ष ।
स्त्री हित पातिव्रत्य ही, होगा उत्तम रक्ष ।। ५७

பெற்றாற் பெறின்பெறுவர் பெண்டிர் பெருஞ்சிறப்புப்
புத்தேளிர் வாழும் உலகு. 58

पॅंट्रान् पॅरिन् पॅरुवर् पॅण्डिर् पॅरुञ्चिऱप्पु
पुत्तेळिर् वाषुम् उलहु.

यदि पाती हैं नारियाँ, पति पूजा कर शान ।
तो उनका सुरधाम में, होता है बहुमान ।। ५८

शान – गौरव। सुरधाम – देवलोक।

புகழ்புரிந்த இல்லிலோர்க்கு இல்லை இகழ்வார்முன்
ஏறுபோல் பீடு நடை. 59

पुहष् पुरिन्द इल्लिलोर्क्कु इल्लै इहष्वार्मुन्
एरु पोल् पीडु नडै.

जिसकी पत्नी को नहीं, घर के यश का मान ।
नहिं निन्दक के सामने, गति शार्दूल समान ।। ५९

शार्दूल – सिंह, बाघ। ऐसे पुरुष को सिंह के समान सिर उठा कर चलना संभव नहीं।

மங்கலம் என்ப மனைமாட்சி மற்றுஅதன்
நன்கலம் நன்மக்கட் பேறு. 60

मंगलम् ऍन्ब मनै माट्चि मट्रु अदन्
नन्कलम् नन् मक्कट् पेरु.

गृह का जयमंगल कहें, गृहिणी की गुण-खान ।
उनका सद्‌भूषण कहें, पाना सत्सन्तान ।। ६०

उनका – उन गुणों का। सद्‌भूषण – आभरण। सत्सन्तान – अच्छे बाल–बच्चे।

அதிகாரம்–7 अध्याय – ७ இல்லறவியல் गार्हस्थ्य – धर्म

மக்கட்பேறு संतान – लाभ मक्कट् पेरु

பெறுமவற்றுள் யாமறிவது இல்லை அறிவறிந்த
மக்கட்பேறு அல்ல பிற. 61

पॅरुमवट्रुळ् यामरिवदु इल्लै अरिवरिन्द
मक्कट् पेरु अल्ल पिर.

बुद्धिमान सन्तान से, बढ़ कर विभव सुयोग्य।
हम तो मानेंगे नहीं, हैं पाने के योग्य।। ६१

எழுபிறப்பும் தீயவை தீண்டா பழிபிறங்காப்
பண்புடை மக்கட் பெறின். 62

ऍषु पिरप्पुम् तीयवै तीण्डा पषिपिरङ्गाप्
पणपुडै मक्कट् पॅरिन्.

सात जन्म तक भी उसे, छू नहिं सकता ताप।
यदि पावे संतान जो, शीलवान निष्पाप।। ६२

ताप – दुःख। शीलवान – गुणवान।

தம்பொருள் என்பதம் மக்கள் அவர்பொருள்
தம்தம் வினையான் வரும். 63

तम्पोंरुळ् ऍन्ब तम् मक्कळ् अवर् पोंरुळ्
तम्तम् विनैयान् वरुम्.

निज संतान-सुकर्म से, स्वयं धन्य हों जान।
अपना अर्थ सुधी कहें, है अपनी संतान।। ६३

सुधी– बुद्धिमान।

அமிழ்தினும் ஆற்ற இனிதேதம் மக்கள்
சிறுகை அளாவிய கூழ். 64

अमिष़्दिनुम् आट्र इनिदे तम्मक्कळ्
शिऱु कै अळाविय कूष़्.

नन्हे निज संतान के, हाथ विलोड़ा भात।
देवों के भी अमृत का, स्वाद करेगा मात।। ६४

स्वाद करेगा मात – (भात की) रुचि बढ़ कर होगी।

மக்கள்மெய் தீண்டல் உடற்கின்பம் மற்றுஅவர்
சொற்கேட்டல் இன்பம் செவிக்கு. 65

मक्कळ् मैंय् तीण्डल् उडर्किन्बम् मट्रु अवर्
शोंर्केट्टल् इन्बम् शैंविक्कु.

निज शिशु अंग-स्पर्श से, तन को है सुख-लाभ।
टूटी-फूटी बात से, श्रुति को है सुख-लाभ।। ६५

श्रुति– कान। निज शिशु – अपना बच्चा।

குழல்இனிது யாழ்இனிது என்பதம் மக்கள்
மழலைச்சொல் கேளா தவர். 66

कुष़ल् इनि़दु याष़् इनिदु ऍन्ब तम् मक्कळ्
मष़लैच् चॊल् केळादवर्.

मुरली-नाद मधुर कहें, सुमधुर वीणा-गान।
तुतलाना संतान का, जो न सुना निज कान।। ६६

'तिरुक्कुरळ् और हिन्दी के कवि' अध्याय में तुलसीदास की कविता से इसकी तुलना की गई है।

தந்தை மகற்குஆற்றும் நன்றி அவையத்து
முந்தி யிருப்பச் செயல். 67

तन्दै महऱ्क्कु आट्रुम् नन्ड्रि अवैयत्तु
मुन्दियिरुप्पच् चॆयल्.

पिता करे उपकार यह, जिससे निज संतान।
पंडित-सभा-समाज में, पावे अग्रस्थान।। ६७

अग्रस्थान – प्रथम स्थान।

தம்மின்தம் மக்கள் அறிவுடைமை மாநிலத்து
மன்னுயிர்க் கெல்லாம் இனிது. 68

तम्मिन् तम्मक्कळ् अऱिवुडैमै मानिलत्तु
मन्नुयिर्क्कॆल्लाम् इनिदु.

विद्यार्जन संतान का, अपने को दे तोष।
उससे बढ़ सब जगत को, देगा वह संतोष।। ६८

विद्यार्जन – विद्वान होना। तोष – संतोष।

ஈன்ற பொழுதிற் பெரிதுவக்கும் தன்மகனைச்
சான்றோன் எனக்கேட்ட தாய். 69

ईन्ड्र् पोँषुदिर् पैँरिदुवक्कुम् तन् महनैच्
चान्ड्रोन् ऍनक्केट्ट ताय्.

पुत्र जनन पर जो हुआ, उससे बढ़ आनन्द।
माँ को हो जब वह सुने, महापुरुष निज नन्द।। ६९

निज नन्द – अपना पुत्र।

மகன்தந்தைக்கு ஆற்றும் உதவி இவன்தந்தை
என்னோற்றான் கொல்எனுஞ் சொல். 70

महन् तन्दैक्कु आट्रुम् उदवि इवन् तन्दै
ऍन्नोट्रान् कोँल् ऍनुञ्चोँल्.

पुत्र पिता का यह करें, बदले में उपकार।
'धन्य धन्य इसके पिता', यही कहे संसार।। ७०

'धन्य ... पिता' – इसके पिता ने कैसा पुण्य–कर्म किया जिसके फलस्वरूप उसे ऐसा पुत्र–भाग्य हुआ।

அதிகாரம்-8

अध्याय–८ இல்லறவியல் गार्हस्थ्य-धर्म

அன்புடைமை प्रेम – भाव अन्बुडैमै

அன்பிற்கும் உண்டோ அடைக்குந்தாழ் ஆர்வலர்
புன்கண்நீர் பூசல் தரும். 71

अन्बिर्क्कुम् उण्डो अडैक्कुन्ताष् आर्वलर्
पुन्कण् नीर् पूशल् तरुम्.

अर्गल है क्या जो रखे, प्रेमी उर में प्यार।
घोषण करती साफ़ ही, तुच्छ नयन-जल-धार। ७१

'तिरुवळ्ळुवर् और हिन्दी के कवि' अध्याय में 'रहीम' के दोहे से इसकी तुलना की गई है।

அன்பிலார் எல்லாந் தமக்குரியர் அன்புடையார்
என்பும் உரியர் பிறர்க்கு. 72

अनॣबिलारॣ ऍल्लान्दमक्कुरियरॣ अनॣबुडैयारॣ
ऍनॣबुमॣ उरियरॣ पिऱरॣक्कु.

प्रेम-शून्य जन स्वार्थरत, साधें सब निज काम।
प्रेमी अन्यों के लिये, त्यागें हड्डी-चाम।। ७२

साधें ... ... काम – केवल अपना ख्याल रखेंगे। चाम—चमड़ा।

அன்போடு இயைந்த வழக்கென்ப ஆருயிர்க்கு
என்போடு இயைந்த தொடர்பு. 73

अनॣबोडु इयैन्द वऴक्कॅनॣब आरुयिरॣक्कु
ऍनॣबोडु इयैन्द तॉडरॣबु.

सिद्ध हुआ प्रिय जीव का, जो तन से संयोग।
मिलन-यत्न-फल प्रेम से, कहते हैं बुध लोग।। ७३

इस दोहे का भाव यह है कि जीव जो सूक्ष्म है प्रेम को साकार बनाने के लिए मनुष्य शरीर में प्रविष्ट हुआ। मानव प्रेम स्वरूप है। ऐसा नहीं तो वह मनुष्य नहीं है। फिर क्या है, इसको ८० दोहे में व्यक्त किया है।

அன்புஈனும் ஆர்வம் உடைமை அதுஈனும்
நண்பென்னும் நாடாச் சிறப்பு. 74

अनॣबु ईनुमॣ आर्वमॣ उडैमै अदु ईनुमॣ
नणॣबॅन्नुमॣ नाडाचॣ चिऱॣप्पु.

मिलनसार के भाव को, जनन करेगा प्रेम।
वह मैत्री को जन्म दे, जो है उत्तम क्षेम।। ७४

मैत्री – मित्रता, दोस्ती।

அன்புற்று அமர்ந்த வழக்கென்ப வையகத்து
இன்புற்றார் எய்துஞ் சிறப்பு. 75

अन्बुट्रु अमरून्द वष़क्कॅन्ब वैयहत्तु
इन्बुट्रार् ऍय्दुम् चिरप्पु.

इहलौकिक सुख भोगते, निश्रेयस का योग।
प्रेमपूर्ण गार्हस्थ्य का, फल मानें बुध लोग।। ७५

निश्रेयस – मोक्ष, ब्रह्मानन्द। इहलौकिक – सांसारिक।

அறத்திற்கே அன்புசார் பென்ப அறியார்
மறத்திற்கும் அஃதே துணை. 76

अऱत्तिऱ्के अन्बु शार्बॅन्ब अरियार्
मऱत्तिऱ्कुम् अह्दे तुणै.

साथी केवल धर्म का, मानें प्रेम, अजान।
त्राण करे वह प्रेम ही, अधर्म से भी जान।। ७६

त्राण – रक्षा। अजान – अबोध, नासमझ।

என்பி லதனை வெயில்போலக் காயுமே
அன்பி லதனை அறம். 77

ऍन्बिलदनै वॅयिल् पोलक्कायुमे
अन्बिलदनै अऱम्.

कीड़े अस्थिविहीन को, झुलसेगा ज्यों घर्म।
प्राणी प्रेम विहीन को, भस्म करेगा धर्म।। ७७

अस्थिविहीन – जिसकी हड्डी नहीं। घर्म – धूप।

அன்பகத் தில்லா உயிர்வாழ்க்கை வன்பாற்கண்
வற்றல் மரந்தளிர்த் தற்று. **78**

अन्बहत्तिल्ला उयिर्वाष़्क्कै वन्बार्कण्
वट्रल् मरन्दळिर्त्तट्रु.

नीरस तरु मरु भूमि पर, क्या हो किसलय-युक्त।
गृही जीव वैसा समझ, प्रेम-रहित मन-युक्त।। ७८

नीरस तरु – सूखा पेड़। किसलय – पल्लव। गृही जीव – गृहस्थ जीवन। मरु भूमि – रेगिस्थान।

புறத்துறுப் பெல்லாம் எவன்செய்யும் யாக்கை
அகத்துறுப்பு அன்பி லவர்க்கு. **79**

पुरत्तुरुप्पॅल्लाम् ऍवन्शॅय्युम् याक्कै
अहत्तुरुप्पु अन्बिलवर्क्कु.

प्रेम देह में यदि नहीं, बन भातर का अंग।
क्या फल हो यदि पास हों, सब बाहर के अंग।। ७९

बाहर के अंग – धन, संपत्ति, नौकर – चाकर आदि।

அன்பின் வழியது உயிர்நிலை அஃதிலார்க்கு
என்புதோல் போர்த்த உடம்பு. **80**

अन्बिन् वष़ियदु उयिर्निलै अह्दिलार्क्कु
ऍन्बु तोल् पोर्त्त उडम्बु.

प्रेम-मार्ग पर जो चले, देह वही सप्राण।
चर्म-लपेटी अस्थि है, प्रेम-हीन की मान।। ८०

चर्म – चमड़ा। अस्थि – हड्डी। 'तिरुवळ्ळुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में कबीर के दोहे से इसकी तुलना की गई है।

விருந்தோம்பல் अतिथि—सत्कार विरुन्दोम्बल्

இருந்தோம்பி இல்வாழ்வ தெல்லாம் விருந்தோம்பி
வேளாண்மை செய்தற் பொருட்டு. **81**

इरुन्दोम्बि इलुवाष्वदेॅल्लाम् विरुन्दोम्बि
वेळाण्मै शेॅयूदर् पोॅरुट्टु.

योग-क्षेम निबाह कर, चला रहा घर-बार।
आदर करके अतिथि का, करने को उपकार।। ८१

निबाह — निर्वाह कर (गृहस्थ)।

விருந்து புறத்ததாத் தானுண்டல் சாவா
மருந்தெனினும் வேண்டற்பாற் றன்று. **82**

विरुन्दु पुरत्ततात् तानुण्डल् शावा
मरुन्देॅनिनुम् वेण्डर् पाट्रन्रु.

बाहर ठहरा अतिथि को, अन्दर बैठे आप।
देवामृत का क्यों न हो, भोजन करना पाप।। ८२

ठहरा — ठहरा कर।

வருவிருந்து வைகலும் ஓம்புவான் வாழ்க்கை
பருவந்து பாழ்படுதல் இன்று. **83**

वरुविरुन्दु वैहलुम् ओंबुवान् वाष्क्कै
परुवन्दु पाष्पड्डुदलिन्रु.

दिन दिन आये अतिथि का, करता जो सत्कार।
वह जीवन दारिद्रय का, बनता नहीं शिकार।। ८३

दारिद्रय — ग़रीबी।

அகனமர்ந்து செய்யாள் உறையும் முகனமர்ந்து
நல்விருந்து ஓம்புவான் இல். 84

अहनमर्न्दु शेय्याळ् उऱैयुम् मुहनमर्न्दु
नल्विरुन्दु ओंबुवान् इल्.

मुख प्रसन्न हो जो करे, योग्य अतिथि-सत्कार।
उसके घर में इन्दिरा, करती सदा बहार।। ८४

इन्दिरा — लक्ष्मी। बहार करना — आनन्द से रहना।

வித்தும் இடல்வேண்டும் கொல்லோ விருந்தோம்பி
மிச்சில் மிசைவான் புலம். 85

वित्तुम् इडल् वेण्डुम् कॉल्लो विरुन्दोम्बि
मिच्चिल् मिशैवान् पुलम्.

खिला पिला कर अतिथि को, अन्नशेष जो खाय।
ऐसों के भी खेत को, काहे बोया जाय।। ८५

अन्नशेष — भोजन जो बचा रहेगा। काहे ... ... बीज बोने की क्या आवश्यकता है? बिना बोये ही फ़सल होगी।

செல்விருந்து ஓம்பி வருவிருந்து பார்த்திருப்பான்
நல்விருந்து வானத் தவர்க்கு. 86

शॅल्विरुन्दु ओंबि वरुविरुन्दु पार्त्तिरुप्पान्
नल्विरुन्दु वानत्तवर्क्कु.

प्राप्त अतिथि को पूज कर, और अतिथि को देख।
जो रहता, वह स्वर्ग का, अतिथि बनेगा नेक।। ८६

இனைத்துணைத் தென்பதொன் றில்லை விருந்தின்
துணைத்துணை வேள்விப் பயன். 87

इनैत्तुणैत् तॅन्बदॉन्ड्रिल्लै विरुन्दिन्
तुणैत्तुणै वेळ्विप्पयन्.

अतिथि-यज्ञ के सुफल की, महिमा का नहिं मान।
जितना अतिथि महान है, उतना ही वह मान।। ८७

मान — नाप।

பரிந்தோம்பிப் பற்றற்றேம் என்பர் விருந்தோம்பி
வேள்வி தலைப்படா தார். 88

परिन्दोम्बिप् पट्ट्ट्रेम् ऍन्बर् विरुन्दोम्बि
वेळ्वि तलैप्पडादार्.

'कठिन यत्न से जो जुड़ा, सब धन हुआ समाप्त'।
यों रोवें, जिनको नहीं, अतिथि-यज्ञ-फल प्राप्त।। ८८

इसका भाव यह है कि जो अतिथि–सत्कार नहीं करता है उसको अपनी सारी संपत्ति खोने पर पश्चात्ताप करना पड़ता है। अतिथि–सत्कार यज्ञ माना जाता है। अतिथि देवो भव' उपनिषद वाक्य है।

உடைமையுள் இன்மை விருந்தோம்பல் ஓம்பா
மடமை மடவார்கண் உண்டு. 89

उडैमैयुळ् इन्मै विरुन्दोम्बल् ओंबा
मडमै मडवार् कण् उण्डु.

निर्धनता संपत्ति में, अतिथि-उपेक्षा जान।
मूर्ख जनों में मूर्ख यह, पायी जाती बान।। ८९

बान— आदत। निर्धनता ... ... धनी होने पर भी वह निर्धन और सब से बड़ा मूर्ख है जो अतिथि की उपेक्षा करता है।

மோப்பக் குழையும் அனிச்சம் முகந்திரிந்து
நோக்கக் குழையும் விருந்து. **90**

मोप्पक्कुऴैयुम् अनिच्चम् मुहन्तिरिन्दु
नोक्कक् कुऴैयुम् विरुन्दु.

सूंघा 'अनिच्च' पुष्प को, तो वह मुरझा जाय।
मुँह फुला कर ताकते, सूख अतिथि-मुख जाय।। ९०

'अनिच्च' एक अति मृदु फूल है जो सूंघने पर मुरझा जाता है। परन्तु अप्रसन्नता के भाव से देखने पर अतिथि उदास हो जाता है।

அதிகாரம்–10 अध्याय – १० இல்லறவியல் गार्हस्थ्य-धर्म

இனியவை கூறல் मधुर – भाषण इनियवै कूऱल्

இன்சொலால் ஈரம் அளைஇப் படிறுஇலவாஞ்
செம்பொருள் கண்டார்வாய்ச் சொல். **91**

इन्शॊलाल् ईरम् अळैइप्पडिऱु इलवाञ्
शॆम्बॊरुळ् कण्डार् वाय्च्चॊल्.

जो मुँह से तत्वज्ञ के, हो कर निर्गत शब्द।
प्रेम-सिक्त निष्कपट हैं, मधुर वचन वे शब्द।। ९१

அகனமர்ந்து ஈதலின் நன்றே முகனமர்ந்து
இன்சொல னாகப் பெறின். **92**

अहनमरन्दु ईदलिन् नन्ड्रे मुहनमरन्दु
इन्शॊलनाहप् पॆऱिन्.

मन प्रसन्न हो कर सही, करने से भी दान।
मुख प्रसन्न भाषी मधुर, होना उत्तम मान।। ९२

முகத்தான் அமர்ந்துஇனிது நோக்கி அகத்தானும்
இன்சொ லினதே அறம். **93**

मुहत्तान् अमर्न्दु इनिदु नोक्कि अहत्तानाम्
इन्शॊॆलिनदे अऱम्.

ले कर मुख में सौम्यता, देखा भर प्रिय भाव।
बोला हृद्गत मृदु वचन, यही धर्म का भाव।। ९३

துன்புறூஉந் துவ்வாமை இல்லாகும் யார்மாட்டும்
இன்புறூஉம் இன்சொ லவர்க்கு. **94**

तुन्बुरूउम् तुव्वामै इल्लाहुम् यार् माट्टुम्
इन्बुरूउम् इन्शॊॆलवक्कु.

दुख-वर्द्धक दारिद्र्य भी, छोड़ जायगा साथ।
सुख-वर्द्धक प्रिय वचन यदि, बोले सब के साथ।। ९४

பணிவுடையன் இன்சொலன் ஆதல் ஒருவற்கு
அணியல்ல மற்றுப் பிற. **95**

पणिवुडैयन् इन्शॊॆलन् आदल् ऒरुवर्कु
अणियल्ल मट्रुप् पिऱ.

मृदुभाषी होना तथा, नम्र-भाव से युक्त।
सच्चे भूषण मनुज के, अन्य नहीं है उक्त।। ९५

அல்லவை தேய அறம்பெருகும் நல்லவை
நாடி இனிய சொலின். **96**

अल्लवै तेय अऱम् पॆरुहुम् नल्लवै
नाडि इनिय शॊॆलिन्.

होगा ह्रास अधर्म का, सुधर्म का उत्थान।
चुन चुन कर यदि शुभ वचन, कहे मधुरता-सान।। ९६

ह्रास – क्षीणता, अवनति। उत्थान – उन्नति। मधुरता-सान – मिठास पूर्ण।

நயன்ஈன்று நன்றி பயக்கும் பயன்ஈன்று
பண்பின் தலைப்பிரியாச் சொல். 97

नयन् ईन्ड्रु नन्ड्रि पयक्कुम् पयन् ईन्ड्रु
पण्बिन् तलैप्पिरियाच् चॊल्.

मधुर शब्द संस्कारयुत, पर को कर वरदान।
वक्ता को नय-नीति दे, करता पुण्य प्रदान।। ९७

पर – अन्य। वक्ता – बोलनेवाला।

சிறுமையுள் நீங்கிய இன்சொல் மறுமையும்
இம்மையும் இன்பந் தரும். 98

शिऱुमैयुळ् नीङ्गिय इन्शॊल् मऱुमैयुम्
इम्मैयुम् इन्बन्दरुम्.

ओछापन से रहित जो, मीठा वचन प्रयोग।
लोक तथा परलोक में, देता है सुख-भोग।। ९८

இன்சொல் இனிதீன்றல் காண்பான் எவன்கொலோ
வன்சொல் வழங்கு வது. 99

इन्शॊल् इनिदीन्ड्रल् काण्बान् ऍवन्कॊलो
वन्शॊल् वषङ्गुवदु.

मधुर वचन का मधुर फल, जो भोगे खुद आप।
कटुक वचन फिर क्यों कहे, जो देता संताप।। ९९

कटुक – कड़ुआ। संताप – दुख।

இனிய உளவாக இன்னாத கூறல்
கனியிருப்பக் காய்கவர்ந் தற்று. **100**

इनिय उळवाह इन्नाद कूऱल्
कनियिरुप्पक् काय् कवर्न्दट्रु

रहते सुमधुर वचन के, कटु कहने की बान।
यों ही पक्का छोड़ फल, कच्चा ग्रहण समान।। १००

कटु – कटुक, कड़ुआ। बान – आदत। 'तिरुवळ्ळुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में इसकी तुलना कबीरदास के दोहे से की गई है। कच्चा ग्रहण – कच्चा फल लेना।

அதிகாரம்-11 अध्याय – ११ இல்லறவியல் गार्हस्थ्य – धर्म

செய்ந்நன்றி அறிதல் कृतज्ञता शॆय्न्नन्ड्रि अरिदल्

செய்யாமற் செய்த உதவிக்கு வையகமும்
வானகமும் ஆற்ற லரிது. **101**

शॆय्यामऱ् शॆय्द उदविक्कु वैयहमुम्
वानहमुम् आट्रलरिदु.

उपकृत हुए बिना करे, यदि कोई उपकार।
दे कर भू सुर-लोक भी, मुक्त न हो आभार।। १०१

भू–भूमि। सुर–लोक–स्वर्ग। मुक्त ... उऋण नहीं हो सकते।

காலத்தினாற் செய்த நன்றி சிறிதெனினும்
ஞாலத்தின் மாணப் பெரிது. **102**

कालत्तिनाऱ् शॆय्द नन्ड्रि शिऱिदॆनिनुम्
ञालत्तिन् माणप् पॆरिदु.

अति संकट के समय पर, किया गया उपकार।
भू से अधिक महान है, यद्यपि अल्पाकार।। १०२

अल्पाकार–बहुत छोटा।

பயன் தூக்கார் செய்த உதவி நயன் தூக்கின்
நன்மை கடலிற் பெரிது. **103**

पयन् तूक्कार् शॅय्द उदवि नयन् तूक्किन्
नन्मै कडलिर् पॅरिदु.

स्वार्थरहित कृत मदद का, यदि गुण आंका जाय।
उदधि-बड़ाई से बड़ा, वह गुण माना जाय।। १०३

उदधि—समुद्र। स्वार्थरहित—अपने लाभ का विचार किये बिना।

தினைத்துணை நன்றி செயினும் பனைத்துணையாக்
கொள்வர் பயன்தெரி வார். **104**

तिनैत्तुणै नन्ड्रि शॅयिनुम् पनैत्तुणैयाक्
कॉळ्वर् पयन् तॅरिवार्.

उपकृति तिल भर ही हुई, तो भी उसे सुजान।
मानें ऊँचे ताड़ सम, सुफल इसी में जान।। १०४

उपकृति—उपकार। सुफल...—कृतज्ञता का फल।

உதவி வரைத்தன்று உதவி உதவி
செயப்பட்டார் சால்பின் வரைத்து. **105**

उदवि वरैत्तन्ड्रु उदवि उदवि
शॅयप्पट्टार् शाल्पिन् वरैत्तु.

सीमित नहिं उपकार तक, प्रत्युपकार-प्रमाण।
जितनी उपकृत-योग्यता, उतना उसका मान।। १०५

जितनी ...—जिसका उपकार किया गया है वह अपनी योग्यता और सामर्थ्य के अनुसार प्रत्युपकार करेगा। उसने जो उपकार पाया है वह कितना बड़ा या छोटा है उससे कोई मतलब नहीं।

மறவற்க மாசற்றார் கேண்மை துறவற்க
துன்பத்துள் துப்பாயார் நட்பு. ***106***

मऱवऱ्क माशट्रार् केण्मै तुऱवऱ्क
तुन्बत्तुळ् तुप्पायार् नट्पु.

निर्दोषों की मित्रता, कभी न जाना भूल।
आपद-बंधु सनेह को, कभी न तजना भूल।। १०६

आपद–बन्धु–जो संकट के समय साथ देता है। कभी न तजना –भूल कर भी न छोड़ना।

எழுமை எழுபிறப்பும் உள்ளுவர் தங்கண்
விழுமந் துடைத்தவர் நட்பு. ***107***

ऍषुमै ऍषुपिऱप्पुम् उळ्ळुवर् तङ्गण्
विषुमन्दुडैत्तवर् नट्पु.

जिसने दुःख मिटा दिया, उसका स्नेह स्वभाव।
सात जन्म तक भी स्मरण, करते महानुभाव।। १०७

நன்றி மறப்பது நன்றன்று நன்றல்லது
அன்றே மறப்பது நன்று. ***108***

नन्ड्रि मऱप्पदु नन्ड्रन्ड्रु नन्ड्रल्लदु
अन्ड्रे मऱप्पदु नन्ड्रु.

भला नहीं है भूलना, जो भी हो उपकार।
भला यही झट भूलना, कोई भी अपकार।। १०८

கொன்றன்ன இன்னா செயினும் அவர்செய்த
ஒன்றுநன்று உள்ளக் கெடும். ***109***

कॊन्ड्रन्न इन्ना शॆयिनुम् अवर् शॆय्द
ऒन्ड्रु नन्ड्रु उळ्ळक् कॆडुम्.

हत्या सम कोई करे, अगर बड़ी कुछ हानि।
उसकी इक उपकार-स्मृति, करे हानि की हानि।। १०९

எந்நன்றி கொன்றார்க்கும் உய்வுண்டாம் உய்வில்லை
செய்ந்நன்றி கொன்ற மகற்கு. 110

ऍन्नन्ड्रि कॉन्ड्राक्कुम् उय्वुण्डाम् उय्विल्लै
शॆय्न्नन्ड्रि कॉन्ड्र महऱ्कु.

जो भी पातक नर करें, संभव है उद्धार।
पर है नहीं कृतघ्न का, संभव ही निस्तार।। ११०

' तिरुवळ्ळुवर और हिन्दी के कवि ' में इसकी व्याख्या हुई है।

நடுவுநிலைமை मध्यस्थता नडुवु निलैमै

தகுதி எனவொன்று நன்றே பகுதியால்
பாற்பட்டு ஒழுகப் பெறின். 111

तहुदि ऍनवॉन्ड्रु नन्ड्रे पहुदियाल्
पाऱ्पट्टु ऑऴुहप् पॆऱिन्.

मध्यस्थता यथेष्ट है, यदि हो यह संस्कार।
शत्रु मित्र औ' अन्य से, न्यायोचित व्यवहार।। १११

செப்பம் உடையவன் ஆக்கஞ் சிதைவின்றி
எச்சத்திற் கேமாப்பு உடைத்து. 112

शॆप्पम् उडैयवन् आक्कञ् चिदैविन्ड्रि
ऍच्चत्तिऱ् केमाप्पु उडैत्तु.

न्यायनिष्ठ की संपदा, बिना हुए क्षयशील।
वंश वंश का वह रहे, अवलंबन स्थितिशील।। ११२

நன்றே தரினும் நடுவிகந்தாம் ஆக்கத்தை
அன்றே ஒழிய விடல். 113

ननूड्रे तरिनुम् नडुविहनूदाम् आक्कत्तै
अनड्रे ओँषिय विडल्.

तजने से निष्पक्षता, जो धन मिले अनन्त।
भला, भले ही, वह करे तजना उसे तुरन्त।। ११३

निष्पक्षता—पक्षपात-रहित होना। तजना—त्याग कर देना।

தக்கார் தகவிலர் என்பது அவரவர்
எச்சத்தாற் காணப் படும். 114

तक्कार् तहविलर् ऍन्बदु अवरवर्
ऍच्चत्तार् काणप्पडुम्.

कोई ईमान्दार है, अथवा बेईमान।
उन उनके अवशेष से, होती यह पहचान।। ११४

अवशेष—जो बचा रहता है, पीछे छोड़ा जाता है। यहाँ इसका अर्थ सन्तान है। 'अनुवाद के सम्बन्ध में'—अध्याय में इस दोहे की व्याख्या की गई है।

கேடும் பெருக்கமும் இல்லல்ல நெஞ்சத்துக்
கோடாமை சான்றோர்க் கணி. 115

केडुम् पैंरुक्कमुम् इल्लल्ल नैंञ्जत्तुक्
कोडामै शानूड्रोर्क्कणि.

संपन्नता विपन्नता, इनका है न अभाव।
सज्जन का भूषण रहा, न्यायनिष्ठता भाव।। ११५

கெடுவல்யான் என்பது அறிகதன் நெஞ்சம்
நடுஒரீஇ அல்ல செயின். 116

कॆंडुवल् यान् ऍन्बदु अऱिह तन् नॆंञ्जम्
नडु ऒरीइ अल्ल शॆंयिन्.

सर्वनाश मेरा हुआ', यों जानो निर्धार।
चूक न्याय-पथ यदि हुआ, मन में बुरा विचार।। ११६

निर्धार—निश्चय। न्याय—पथ—न्याय का मार्ग।

கெடுவாக வையாது உலகம் நடுவாக
நன்றிக்கண் தங்கியான் தாழ்வு. 117

कॆंडुवाह वैयादु उलहम् नडुवाह
नन्ड्रिक्कण् तंगियान् ताऴ्वु.

न्यायवान धर्मिष्ठ की, निर्धनता अवलोक।
मानेगा नहिं हीनता, बुद्धिमान का लोक।। ११७

अवलोक—देख कर। हीनता—दरिद्रता, निर्धनता।

சமன்செய்து சீர்தூக்குங் கோல்போல் அமைந்தொருபால்
கோடாமை சான்றோர்க் கணி. 118

शमन् शॆंय्दु शीर्तूक्कुम् कोल्पोल् अमैन्दॊंरुपाल्
कोडामै शान्ड्रोर्क्कणि.

सम रेखा पर हो तुला, ज्यों तोले सामान।
भूषण महानुभाव का, पक्ष न लेना मान।। ११८

तुला—तराज़ू। भूषण—अलंकार, गहना।

சொற்கோட்டம் இல்லது செப்பம் ஒருதலையா
உட்கோட்டம் இன்மை பெறின். **119**

शोॅऱ्कोट्टम् इल्लदु शेॅप्पम् ओॅरु तलैया
उट्कोट्टम् इन्मै पॆ़रिऩ्.

कहना सीधा वचन है, मध्यस्थता ज़रूर।
दृढ़ता से यदि हो गयी, चित्त-वक्रता दूर।। ११९

चित्त–वक्रता–मन का टेढ़ापन।

வாணிகஞ் செய்வார்க்கு வாணிகம் பேணிப்
பிறவும் தமபோற் செயின். **120**

वाणिकञ् चेॅय्वार्क्कु वाणिकम् पेणिप्
पिऱवुम् तमपोऱ् चेॅयिऩ्.

यदि रखते पर-माल को, अपना माल समान।
वणिक करे वाणिज्य तो, वही सही तू जान।। १२०

पर–माल–दूसरों का माल। वणिक–व्यापारी। वाणिज्य–व्यापार।

அதிகாரம்–13 अध्याय–१३ இல்லறவியல் गार्हस्थ्य–धर्म

அடக்கமுடைமை संयमशीलता अडक्कमुडैमै

அடக்கம் அமரருள் உய்க்கும் அடங்காமை
ஆரிருள் உய்த்து விடும். **121**

अडक्कम् अमररुळ् उय्क्कुम् अडङ्गामै
आरिरुळ् उय्त्तु विडुम्.

संयम देता मनुज को, अमर लोक का वास।
झोंक असंयम नरक में, करता सत्यानास।। १२१

सत्यानास–सर्वनाश। मनुज–मनुष्य।

காக்க பொருளா அடக்கத்தை ஆக்கம்
அதனினூஉங் கில்லை உயிர்க்கு. 122

काक्क पोॅरुळा अडक्कत्तै आक्कम्
अदनिनू उङ्गिल्लै उयिर्क्कु.

संयम की रक्षा करो, निधि अनमोल समान।
श्रेय नहीं है जीव को, उससे अधिक महान।। १२२

செறிவறிந்து சீர்மை பயக்கும் அறிவறிந்து
ஆற்றின் அடங்கப் பெறின். 123

शॅरिवरिनदु शीर्मै पयक्कुम् अरिवरिनदु
आट्रिन् अडङ्गप् पॅरिन्.

कोई संयमशील हो, अगर जानकर तत्व।
संयम पा कर मान्यता, देगा उसे महत्व।। १२३

நிலையில் திரியாது அடங்கியான் தோற்றம்
மலையினும் மாணப் பெரிது. 124

निलैयिल् तिरियादु अडङ्गियान् तोट्रम्
मलैयिनुम् माणप्पॅरिदु.

बिना टले निज धर्म से, जो हो संयमशील।
पर्वत से भी उच्चतर, होगा उसका डील।। १२४

எல்லார்க்கும் நன்றாம் பணிதல் அவருள்ளும்
செல்வர்க்கே செல்வந் தகைத்து. 125

ऍल्लार्क्कुम् नन्ड्राम् पणिदल् अवरुळ्ळुम्
शॅल्वक्कें शॅल्वन् तहैत्तु.

संयम उत्तम वस्तु है, जन के लिये अशेष।
वह भी धनिकों में रहे, तो वह धन सुविशेष।। १२५

ஒருமையுள் ஆமைபோல் ஐந்தடக்கல் ஆற்றின்
எழுமையும் ஏமாப் புடைத்து. *126*

ओॅरुमैयुळ् आमैपोल् ऐन्दडक्कल् आट्रिन्
ऍषुमैयुम् एमापपुडैत्तु.

पंचेन्द्रिय-निग्रह किया, कछुआ सम इस जन्म।
तो उससे रक्षा सुदृढ़, होगी सातों जन्म।। १२६

யாகாவா ராயினும் நாகாக்க காவாக்கால்
சோகாப்பர் சொல்லிழுக்குப் பட்டு. *127*

याकावारायिनुम् नाकाक्क कावाक्काल्
शोकापपर् शॉल्लिष़ुक्कुपपट्टु.

चाहे औरोंको नहीं, रख लें वश में जीभ।
शब्द-दोष से हों दुखी, यदि न वशी हो जीभ।। १२७

शब्द—दोष से—दुर्वचनों के प्रयोग से।

ஒன்றானும் தீச்சொல் பொருட்பயன் உண்டாயின்
நன்றாகா தாகி விடும். *128*

ओॅन्ड्रानुम् तीच्चोॅल् पोॅरुट्पयन् उण्डायिन्
नन्ड्राहा दाहि विडुम्.

एक बार भी कटुवचन, पहुँचाये यदि कष्ट।
सत्कर्मों के सुफल सब, हो जायेंगे नष्ट।। १२८

தீயினாற் சுட்டபுண் உள்ளாறும் ஆறாதே
நாவினாற் சுட்ட வடு. *129*

तीयिनाऱ् चुट्ट पुण् उळ्ळाऱुम् आऱादे
नाविनाऱ् चुट्ट वडु.

घाव लगा जो आग से, संभव है भर जाय।
चोट लगी यदि जीभ की, कभी न मेटी जाय।। १२९

मेटना — मिटाना, चिन्ह दूर करना।

கதங்காத்துக் கற்றடங்கல் ஆற்றுவான் செவ்வி
அறம்பார்க்கும் ஆற்றின் நுழைந்து. 130

कदङ्कात्तुक् कट्रडङ्गल् आट्रुवान् चैंव्वि
अऱम् पार्क्कुम् आट्रिन् नुष़ैन्दु.

क्रोध दमन कर जो हुआ, पंडित यमी समर्थ।
धर्म-देव भी जोहता, बाट भेंट के अर्थ।। १३०

यमी — संयमी। बाट जोहना — राह देखना, प्रतीक्षा करना। भेंट के अर्थ — मिलने के लिये ।

अதிகாரம்-14 अध्याय — १४ இல்லறவியல் गार्हस्थ्य — धर्म

ஒழுக்கமுடைமை आचारशीलता ऑष़ुक्कमुडैमै

ஒழுக்கம் விழுப்பம் தரலான் ஒழுக்கம்
உயிரினும் ஓம்பப் படும். 131

ऑष़ुक्कम् विष़ुप्पम् तरलान् ऑष़ुक्कम्
उयिरिनुम् ओंबप्पडुम्.

सदाचार-संपन्नता, देती सब को श्रेय।
तब तो प्राणों से अधिक, रक्षणीय वह ज्ञेय।। १३१

பரிந்தோம்பிக் காக்க ஒழுக்கம் தெரிந்தோம்பித்
தேரினும் அஃதே துணை. 132

परिन्दोम्बिक् काक्क ऑष़ुक्कम् तैंरिन्दोम्बित्
तेरिनुम् अह्दे तुणै.

सदाचार को यत्न से, रखना सहित विवेक।
अनुशीलन से पायगा, वही सहायक एक।। १३२

ஒழுக்கம் உடைமை குடிமை இழுக்கம்
இழிந்த பிறப்பாய் விடும். 133

ओऴुक्कम् उडैमै कुडिमै इऴुक्कम्
इऴिन्द पिऱप्पाय् विडुम्.

सदाचार-संपन्नता, है कुलीनता जान।
चूके यदि आचार से, नीच जन्म है मान।। १३३

कुलीनता—उत्तम कुल में उत्पन्न होने का गुण।

மறப்பினும் ஓத்துக் கொளலாகும் பார்ப்பான்
பிறப்பொழுக்கங் குன்றக் கெடும். 134

मऱप्पिनुम् ओत्तुक्कॊळलाहुम् पार्प्पान्
पिऱप्पॊऴुक्कङ् कुन्ऱक् कॆडुम्.

संभव है फिर अध्ययन, भूल गया यदि वेद।
आचारच्युत विप्र के, होगा कुल का छेद।। १३४

आचारच्युत—जो सदाचार से चूक गया। विप्र—ब्राह्मण। छेद—भ्रष्ट, पतित।

அழுக்கா றுடையான்கண் ஆக்கம்போன்று இல்லை
ஒழுக்க மிலான்கண் உயர்வு. 135

अऴुक्कारुडैयान् कण् आक्कम्पोन्ऱु इल्लै
ओऴुक्कमिलान् कण् उयर्वु.

धन की ज्यों ईर्ष्यालु के, होती नहीं समृद्धि।
आचारहीन की नहीं, कुलीनता की वृद्धि।। १३५

ईर्ष्यालु—डाह करनेवाला, जलनेवाला।

ஒழுக்கத்தின் ஒல்கார் உரவோர் இழுக்கத்தின்
ஏதம் படுபாக் கறிந்து. **136**

ओऴुक्कत्तिन् ओल्हार् उरवोर् इऴुक्कत्तिन्
एदम् पडु पाक्करिन्दु.

सदाचार दुष्कर समझ, धीर न खींचे हाथ।
परिभव जो हो जान कर, उसकी च्युति के साथ।। १३६

न हाथ खींचे – न छोड़ देगा। परिभव – अपमान। च्युति – चूक।

ஒழுக்கத்தின் எய்துவர் மேன்மை இழுக்கத்தின்
எய்துவர் எய்தாப் பழி. **137**

ओऴुक्कत्तिन् ऍय्दुवर् मेन्मै इऴुक्कत्तिन्
ऍय्दुवर् ऍय्दाप् पऴि.

सदाचार से ही रही, महा कीर्ति की प्राप्ति।
उसकी च्युति से तो रही, अति निन्दा की प्राप्ति।। १३७

நன்றிக்கு வித்தாகும் நல்லொழுக்கம் தீயொழுக்கம்
என்றும் இடும்பை தரும். **138**

नन्ऱिक्कु वित्ताहुम् नल्लॊऴुक्कम् तीयॊऴुक्कम्
ऍन्ड्रुम् इडुम्बै तरुम्.

सदाचार के बीज से, होता सुख उत्पन्न।
कदाचार से ही सदा, होता मनुज विपन्न।। १३८

कदाचार – बुरा आचरण। सदा-हमेशा। विपन्न – दुःखी।

ஒழுக்க முடையவர்க்கு ஒல்லாவே தீய
வழுக்கியும் வாயாற் சொலல். **139**

ओऴुक्कमुडैयवर्क्कु ओल्लावे तीय
वऴुक्कियुम् वायाऱ् चॊल्लल्.

सदाचारयुत लोग तो, मुख से कर भी भूल।
कहने को असमर्थ हैं, बुरे वचन प्रतिकूल।। १३९

உலகத்தோடு ஒட்ட ஒழுகல் பலகற்றும்
கல்லார் அறிவிலா தார். **140**

उलहत्तोडु ऑट्ट ऑष़ुहल् पल कट्रुम्
कल्लार् अऱिविलादार्.

जिनको लोकाचार की, अनुगति का नहिं ज्ञान।
ज्ञाता हों सब शास्त्र के, जानो उन्हें अजान।। १४०

अनुगति — अनुसरण। ज्ञाता — जाननेवाला।

अதிகாரம்-15 अध्याय — १५ இல்லறவியல் गार्हस्थ्य — धर्म

பிறனில் விழையாமை परदार — विरति पिरनिल् विष़ैयामै

பிறன்பொருளாள் பெட்டொழுகும் பேதைமை ஞாலத்து
அறம்பொருள் கண்டார்கண் இல். **141**

पिरन् पॉरुळाळ् पॅट्टॉष़ुहुम् पेदैमै ज्ञालत्तु
अरम् पॉरुळ् कण्डार् कण् इल्.

परपत्नी-रति-मूढता, है नहिं उनमें जान।
धर्म-अर्थ के शास्त्र का, जिनको तत्वज्ञान।। १४१

पर — पत्नी — रति — अन्यों की स्त्री से आसक्त होना। मूढत्ता — मूर्खता आसक्त होने की)।

அறன்கடை நின்றாருள் எல்லாம் பிறன்கடை
நின்றாரின் பேதையார் இல். **142**

अऱन्कडै निन्ड्रारुळ् ऍल्लाम् पिऱन् कडै
निन्ड्रारिन् पेदैयार् इल्.

धर्म-भ्रष्टों में नही, ऐसा कोई मूढ।
जैसा अन्यद्वार पर, खड़ा रहा जो मूढ।। १४२

अन्यद्वार पर ....– पर–दार गमन की इच्छा से उसके घर जाना।

விளிந்தாரின் வேறல்லர் மன்ற தெளிந்தாரில்
தீமை புரிந்துஒழுகு வார். 143

विळिन्दारिन् वेरल्लर् मन्ड्र तेंळिन्दारिल्
तीमै पुरिन्दु ओषुहुवार्.

दृढ विश्वासी मित्र की, स्त्री से पापाचार।
जो करता वह मृतक से, भिन्न नहीं है, यार।। १४३

मृतक – मरा हुआ प्राणी, मुरदा।

எனைத்துணையர் ஆயினும் என்னாம் தினைத்துணையும்
தேரான் பிறனில் புகல். 144

ऍनैत्तुणैयर् आयिनुम् ऍन्नाम् तिनैत्तुणैयुम्
तेरान् पिऱनिल् पुहल्.

क्या होगा उसको अहो, रखते विभव अनेक।
यदि रति हो पर-दार में, तनिक न बुद्धि विवेक।। १४४

எளிதென இல்லிறப்பான் எய்துமெஞ் ஞான்றும்
விளியாது நிற்கும் பழி. 145

ऍळिदेँन इल्लिऱप्पान् ऍय्दुमेँञ् ञान्ड्रुम्
विळियादु निऱ्कुम् पषि.

पर-पत्नी-रत जो हुआ, सुलभ समझ निश्शंक।
लगे रहे चिर काल तक, उसपर अमिट कलंक।। १४५.

பகைபாவம் அச்சம் பழியென நான்கும்
இகவாவாம் இல்லிறப்பான் கண். 146

पावम् अच्चम् पषियेँन नान्गुम्
इहवावाम् इल्लिरप्पान् कण्.

पाप, शत्रुता, और भय, निन्दा मिल कर चार।
ये उसको छोड़ें नहीं, जो करता व्यभिचार।। १४६

அறனியலான் இல்வாழ்வான் என்பான் பிறனியலாள்
பெண்மை நயவா தவன். 147

अऱनियलान् इल्वाष्वान् ऍन्बान् पिऱनियलाळ्
पॆँण्मै नयवादवन्.

जो गृहस्थ पर-दार पर, होवे नहिं आसक्त।
माना जाता है वही, धर्म-कर्म अनुरक्त।। १४७

பிறன்மனை நோக்காத பேராண்மை சான்றோர்க்கு
அறனொன்றோ ஆன்ற ஒழுக்கு. 148

पिऱन् मनै नोक्काद पेराण्मै शान्ड्रोर्क्कु
अऱनोँन्ड्रो आन्ड्र ओँषुक्कु.

पर-नारी नहिं ताकना, है धीरता महान।
धर्म मात्र नहिं संत का, सदाचरण भी जान।। १४८

'तिरुवळ्ळुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में तुलसीदास की कविता से इसकी तुलना की गई है।

நலக்குரியார் யாரெனின் நாமநீர் வைப்பின்
பிறற்குரியாள் தோள்தோயா தார். 149

नलक्कुरियार् यारैंनिन् नाम नीर् वैप्पिन्
पिऱर्क्कुरियाळ् तोळ् तोयादार्.

सागर-बलयित भूमि पर, कौन भोग्य के योग्य।
आलिंगन पर-नारि को, जो न करे वह योग्य।। १४९

सागर—वलयित—समुद्र से घिरी हुई। भोग्य — इह—लौकिक और पारलौकिक सुख।

அறன்வரையான் அல்ல செயினும் பிறன்வரையான்
பெண்மை நயவாமை நன்று. 150

अऱन्वरैयान् अल्ल शॆंयिनुम् पिरन्वरैयान्
पॆंण्मै नयवामै नन्ड्रु.

पाप-कर्म चाहे करें, धर्म-मार्ग को छोड़।
पर-गृहिणी की विरति हो, तो वह गुण बेजोड़।। १५०

विरति—न चाहना। बेजोड़—अद्वितीय।

अதிகாரம்—16 अध्याय—१६ இல்லறவியல் गार्हस्थ्य—धर्म

பொறையுடைமை क्षमाशीलता पॉरैयुडैमै

அகழ்வாரைத் தாங்கும் நிலம்போலத் தம்மை
இகழ்வார்ப் பொறுத்தல் தலை. 151

अहऴ्वारैत्ताङ्गुम् निलम्पोलत् तम्मै
इहऴ्वार्प् पॉऱुत्तल् तलै.

क्षमा क्षमा कर ज्यों धरे, जो खोदेगा फोड़।
निन्दक को करना क्षमा, है सुधर्म बेजोड़।। १५१

क्षमा—धरती, भूमि। क्षमा करना—माफ़ करना।

பொறுத்தல் இறப்பினை என்றும் அதனை
மறத்தல் அதனினும் நன்று. 152

पॉंऱुत्तल् इरप्पिनै ऍन्ऱुम अदनै
मऱत्तल् अदनिनुम् नन्ऱु.

अच्छा है सब काल में, सहना अत्याचार।
फिर तो उसको भूलना, उससे श्रेष्ठ विचार।। १५२

இன்மையுள் இன்மை விருந்தொரால் வன்மையுள்
வன்மை மடவார்ப் பொறை. 153

इन्मैयुळ् इन्मै विरुन्दोराल् वन्मैयुळ्
वन्मै मडवार्प् पोॅऱै.

दारिद में दारिद्रय है, अतिथि-निवारण-बान।
सहन मूर्ख की मूर्खता, बल में भी बल जान।। १५३

दारिद—दारिद्रय, दरिद्रता, ग़रीबी। निवारण—छुटकारा पाना, बचना। सहन—सहना। दारिद में ... ... अत्यधिक दरिद्रता। बल में ... अत्यधिक बल।

நிறையுடைமை நீங்காமை வேண்டின் பொறையுடைமை
போற்றி ஒழுகப் படும். 154

निऱैयुडैमै नीङ्गामै वेण्डिन् पोॅऱैयुडैमै
पोट्रि ओॅऴुहप् पडुम्.

अगर सर्व-गुण-पूर्णता, तुमको छोड़ न जाय।
क्षमा-भाव का आचरण, किया लगन से जाय।। १५४

ஒறுத்தாரை ஒன்றாக வையாரே வைப்பர்
பொறுத்தாரைப் பொன்போற் பொதிந்து. 155

ओॅऱुत्तारै ओॅन्ऱाह वैयारे वैप्पर्
पोॅऱुत्तारैप् पोॅन्पोऱ् पोॅदिन्दु.

प्रतिकारी को जगत तो, माने नहीं पदार्थ।
क्षमशील को वह रखे, स्वर्ण समान पदार्थ।। १५५

प्रतिकारी—बदला लेनेवाला। माने नहीं पदार्थ—नाचीज़ रहेगा पदार्थ—चीज़, वस्तु।

ஒறுத்தார்க்கு ஒருநாளை இன்பம் பொறுத்தார்க்குப்
பொன்றுந் துணையும் புகழ். **156**

ओऱुत्ताक्कु ओरु नाळै इन्बम् पोऱुत्ताक्कुप्
पोन्ड्रुम तुणैयुम् पुहष्.

प्रतिकारी का हो मज़ा, एक दिवस में अन्त।
क्षमाशील को कीर्ति है, लोक-अंत पर्यन्त।। १५६

लोक — अन्त पर्यन्त — अन्त काल तक।

திறனல்ல தற்பிறர் செய்யினும் நோநொந்து
அறனல்ல செய்யாமை நன்று. **157**

तिऱनल्ल तऱ्पिऱर् शॅय्यिनुम् नोनॉन्दु
अऱनल्ल शॅय्यामै नन्ड्रु.

यद्यपि कोई आपसे, करता अनुचित कर्म।
अच्छा उस पर कर दया, करना नहीं अधर्म।। १५७

மிகுதியான் மிக்கவை செய்தாரைத் தாந்தம்
தகுதியான் வென்று விடல். **158**

मिहुदियान् मिक्कवै शॅय्दारैत् तान्तम्
तहुदियान् वॅन्ड्रु विडल्.

अहंकार से ज्यादती, यदि तेरे विपरीत।
करता कोई तो उसे, क्षमा-भाव से जीत।। १५८

துறந்தாரின் தூய்மை உடையர் இறந்தார்வாய்
இன்னாச்சொல் நோற்கிற் பவர். **159**

तुरन्दारिन् तूय्मै उडैयर् इऱन्दार्वाय्
इन्नाच् चॉल् नोऱ्किऱ्पवर्.

संन्यासी से अधिक हैं, ऐसे गृही पवित्र।
सहन करें जो नीच के, कटुक वचन अपवित्र।। १५९

गृही—गृहस्थ। कटुक वचन—दुर्वचन। पवित्र—पावन।

உண்ணாது நோற்பார் பெரியர் பிறர்சொல்லும்
இன்னாச்சொல் நோற்பாரின் பின். **160**

उण्णादु नोऱ्पार् पॆरियर् पिऱर् शॊल्लुम्
इन्नाच्चॊल् नोऱ्पारिन् पिन्.

अनशन हो जो तप करें, यद्यपि साधु महान।
पर-कटुवचन-सहिष्णु के, पीछे पावें स्थान।। १६०

अनशन—निराहार। सहिष्णु—सहन करनेवाला। पर—दूसरों के। क्षमाशील पुरुष तपस्वी से श्रेष्ठ हैं।

அதிகாரம்-17 अध्याय—१७ இல்லறவியல் गार्हस्थ्य—धर्म

அழுக்காறாமை अनसूयता अऴुक्काऱामै

ஒழுக்காறாக் கொள்க ஒருவன்தன் நெஞ்சத்து
அழுக்காறு இலாத இயல்பு. **161**

ओऴुक्काऱाक् कॊळ्ह ऒरुवन् तन् नॆञ्जत्तु
अऴुक्काऱु इलाद इयल्पु.

जलन-रहित निज मन रहे, ऐसी उत्तम बान।
अपनावें हर एक नर, धर्म आचरण मान।। १६१

जलन—ईर्ष्या, डाह, असूया। "अनसूयता"—अध्याय का जो शीर्षक है, माने डाह न करना।

விழுப்பேற்றின் அஃதொப்பது இல்லையார் மாட்டும்
அழுக்காற்றின் அன்மை பெறின் **162**

विऴुप्पेट्रिन् अह्दॊप्पदु इल्लै यार्माट्टुम्
अऴुक्काट्रिन् अन्मै पॆऱिन्.

सबसे ऐसा भाव हो, जो है ईर्ष्या-मुक्त।
तो उसके सम है नहीं, भाग्य श्रेष्ठता-युक्त।। १६२

அறன்ஆக்கம் வேண்டாதான் என்பான் பிறனாக்கம்
பேணாது அழுக்கறுப் பான். **163**

अऱन् आक्कम् वेण्डादान् ऍन्बान् पिऱनाक्कम्
पेणादु अषुक्करुप्पान्.

धर्म-अर्थ के लाभ की, जिसकी हैं नहीं चाह।
पर-समृद्धि से खुश न हो, करता है वह डाह।। १६३

அழுக்காற்றின் அல்லவை செய்யார் இழுக்காற்றின்
ஏதம் படுபாக்கு அறிந்து. **164**

अषुक्काट्रिन् अल्लवै शॅय्यार् इषुक्काट्रिन्
एदम् पडुपाक्कु अरिन्दु.

पाप-कर्म से हानियाँ, जो होती हैं जान।
ईर्ष्यावश करते नहीं, पाप-कर्म धीमान।। १६४

धीमान – बुद्धिमान। ईर्ष्यावश – जलन के कारण। जान – जान कर।

அழுக்காறு உடையார்க்கு அதுசாலும் ஒன்னார்
வழுக்கியும் கேடீன் பது. **165**

अषुक्काऱु उडैयार्क्कु अदु शालुम् ऑन्नार्
वषुक्कियुम् केडीन्बदु.

शत्रु न भी हो ईर्ष्यु का, करने को कुछ हानि।
जलन मात्र पर्याप्त है, करने को अति हानि।। १६५

ईर्ष्यु – जलनेवाला। पर्याप्त – काफ़ी।

கொடுப்பது அழுக்கறுப்பான் சுற்றம் உடுப்பதூஉம்
உண்பதூஉம் இன்றிக் கெடும். **166**

कॊडुप्पदु अषुक्करुप्पान् शुट्रम् उडुप्पदूउम्
उण्बदूउम् इन्ड्रिक् कॆंडुम्.

दान देख कर जो जले, उसे सहित परिवार।
रोटी कपड़े को तरस, मिटते लगे न बार।। १६६

तरस—न पा कर बेचैन हो कर। लगे न बार—देर न लगेगी।

அவ்வித்து அழுக்காறு உடையானைச் செய்யவள்
தவ்வையைக் காட்டி விடும். **167**

अव्वित्तु अषुक्कारु उडैयानैच् चॆय्यवळ्
तव्वैयैक् काट्टि विडुम्.

जलनेवाले से स्वयं, जल कर रमा अदीन।
अपनी ज्येष्ठा के उसे, करती वही अधीन।। १६७

रमा—लक्ष्मी। ज्येष्ठा—बड़ी बहन, अलक्ष्मी।

அழுக்காறு எனஒரு பாவி திருச்செற்றுத்
தீயுழி உய்த்து விடும். **168**

अषुक्कारु ऍन ऒरु पावि तिरुचचेट्रुत्
तीयुषि उय्त्तु विडुम्.

ईर्ष्या जो है पापिनी, करके श्री का नाश।
नरक-अग्नि में झोंक कर, करती सत्यानास।। १६८

அவ்விய நெஞ்சத்தான் ஆக்கமுஞ் செவ்வியான்
கேடும் நினைக்கப் படும். **169**

अव्विय नॆंञ्जत्तान् आक्कमुञ् चॆव्वियान्
केडुम् निनैक्कप्पडुम्.

जब होती ईर्ष्यालु की, धन की वृद्धि अपार।
तथा हानि भी साधु की, तो करना सुविचार।। १६९

सुविचार करना — प्रारब्ध का फल समझना चाहिए।

அழுக்கற்று அகன்றாரும் இல்லைஅஃது இல்லார்
பெருக்கத்தில் தீர்ந்தாரும் இல். 170

अषुकूकट्रु अहनूड्रारुम् इलूलै अहूदु इलूलार्
पॆरुकूकतूतिल् तीरून्दारुम् इल्.

सुख-समृद्धि उनकी नहीं, जो हों ईर्ष्यायुक्त।
सुख-समृद्धि की इति नहीं, जो हों ईर्ष्यामुक्त।। १७०

इति — अन्त।

अதிகாரம்-18 अध्याय — १८ இல்லறவியல் गार्हस्थ्य — धर्म

வெஃகாமை निर्लोभता वेंहूकामै

நடுவின்றி நன்பொருள் வெஃகின் குடிபொன்றிக்
குற்றமும் ஆங்கே தரும். 171

नडुविनूड्रि ननूपॊरुळ् वेंहूकिन् कुडिपॊनूड्रिक्
कुट्रमुम् आङ्गे तरुम्.

न्याय-बुद्धि को छोड़ कर, यदि हो पर-धन-लोभ।
हो कर नाश कुटुम्ब का, होगा दोषारोप।। १७१

படுபயன் வெஃகிப் பழிப்படுவ செய்யார்
நடுவன்மை நாணு பவர். 172

पडुपयन् वेंहूकिप् पषिपूपडुव शेय्यार्
नडुवनूमै नाणुबवर्.

न्याय-पक्ष के त्याग से, जिनको होती लाज।
लोभित पर-धन-लाभ से, करते नहीं अकाज।। १७२

लाज—लज्जा। अकाज—दुष्कर्म।

சிற்றின்பம் வெஃகி அறனல்ல செய்யாரே
மற்றின்பம் வேண்டு பவர். 173

शिट्रिन्बम् वॆह्कि अरनल्ल शॆय्यारे
मट्रिन्बम् वेण्डुबवर्.

नश्वर सुख के लोभ में, वे न करें दुष्कृत्य।
जिनको इच्छा हो रही, पाने को सुख नित्य।। १७३

இலமென்று வெஃகுதல் செய்யார் புலம்வென்ற
புன்மையில் காட்சி யவர். 174

इलमॆन्ड्रु वॆह्कुदल् शॆय्यार् पुलम् वॆन्ड्र
पुन्मैयिल् काट्चियवर्.

जो हैं इन्द्रियजित तथा, ज्ञानी भी अकलंक।
दारिदवश भी लालची, होते नहीं अशंक।। १७४

इन्द्रियजित—इन्द्रियों को वश में रखनेवाला। दारिदवश—दरिद्रता के कारण .

அஃகி அகன்ற அறிவென்னும் யார்மாட்டும்
வெஃகி வெறிய செயின். 175

अह्कि अहन्ड्र अऱिवॆन्नाम् यार् माट्टुम्
वॆह्कि वॆऱिय शॆयिन्.

तीखे विस्तृत ज्ञान से, क्या होगा उपकार।
लालचवश सबसे करें, यदि अनुचित व्यवहार।। १७५

அருள்வெஃகி ஆற்றின்கண் நின்றான் பொருள்வெஃகிப்
பொல்லாத சூழக் கெடும். 176

अरुळ् वॅह्कि आट्रिन्कण् निनृड़ान् पॉरुळ् वॅह्किप्
पॉल्लाद चूषक् कॅडुम्.

ईश-कृपा की चाह से, जो न धर्म से भ्रष्ट।
दुष्ट-कर्म धन-लोभ से, सोचे तो वह नष्ट।। १७६

वह नष्ट — उसका नाश हो जायगा।

வேண்டற்க வெஃகியாம் ஆக்கம் விளைவயின்
மாண்டற் கரிதாம் பயன். 177

वेण्डरक वॅह्कियाम् आककम् विळैवयिन्
माण्डरकरिदाम् पयन्.

चाहो मत संपत्ति को, लालच से उत्पन्न।
उसका फल होता नहीं, कभी सुगुण-संपन्न।। १७७

அஃகாமை செல்வத்திற்கு யாதெனின் வெஃகாமை
வேண்டும் பிறன்கைப் பொருள். 178

अह्कामै शॅल्वत्तिरकु यादॅनिन् वॅह्कामै
वेण्डुम् पिरन् कैपपॉरुळ्.

निज धन का क्षय हो नहीं, इसका क्या सदुपाय।
अन्यों की संपत्ति का, लोभ किया नहिं जाय।। १७८

அறனறிந்து வெஃகா அறிவுடையார்ச் சேரும்
திறன்அறிந் தாங்கே திரு. 179

अरनरिनुदु वॅह्का अरिवुडैयार्च्चेरुम्
तिरनरिन् दाङ्गे तिरु.

निर्लोभता ग्रहण करें, धर्म मान धीमान।
श्री पहुँचे उनके यहाँ, युक्त काल थल जान।। १७९

இறல்ஈனும் எண்ணாது வெஃகின் விறல்ஈனும்
வேண்டாமை என்னுஞ் செருக்கு. **180**

इऱल् ईनुम् ऍण्णादु वॆंह्किन् विऱल् ईनुम्
वेण्डामै ऍन्नुञ् चॆंरुक्कु.

अविचारी के लोभ से, होगा उसका अन्त।
लोभ-हीनता-विभव से, होगी विजय अनन्त।। १८०

अதிகாரம்-19 अध्याय—१९ இல்லறவியல் गार्हस्थ्य—धर्म

புறங்கூறாமை अपिशुनता पुऱङ्कूऱामै

அறங்கூறான் அல்ல செயினும் ஒருவன்
புறங்கூறான் என்றல் இனிது. **181**

अऱङ्कूऱान् अल्ल शॆंयिनुम् ऒंरुवन्
पुऱङ्कूऱान् ऍन्ऱल् इनिदु.

नाम न लेगा धर्म का, करे अधर्मिक काम।
फिर भी अच्छा यदि वही, पाये अपिशुन नाम।। १८१

पिशुन—चुगलखोर। अपिशुनता—चुगलखोरी न करना। अपिशुन—चुगलखोर न होना, पीठ पीछे शिकायत न करना।

அறனழீஇ அல்லவை செய்தலின் தீதே
புறனழீஇப் பொய்த்து நகை. **182**

अऱनऴीइ अल्लवै शॆंय्दलिन् तीदे
पुऱनऴीइप् पॊंय्त्तु नहै.

नास्तिवाद कर धर्म प्रति, करता पाप अखण्ड।
उससे बदतर पिशुनता, सम्मुख हँस पाखण्ड।। १८२

सम्मुख ... सामने रहते हुए झूठी हँसी, पीठ पीछे शिकायत।

புறங்கூறிப் பொய்த்துயிர் வாழ்தலின் சாதல்
அறங்கூறும் ஆக்கம் தரும். **183**

पुऱङ्कूऱिप् पॊय्त्तुयिर् वाऴ्दलिन् शादल्
अऱङ्कूऱुम् आक्कम् तरुम्.

चुगली खा कर क्या जिया, चापलूस हो साथ।
भला, मृत्यु हो, तो लगे, शास्त्र-उक्त फल हाथ।। १८३

चुगलखोर होकर जीने से मर जाना अच्छा है।

கண்நின்று கண்ணறச் சொல்லினும் சொல்லற்க
முன்இன்று பின்நோக்காச் சொல். **184**

कण् निन्ऱु कण्णऱच् चॊल्लिनुम् शॊल्लऱ्क
मुन् इन्ऱु पिन् नोक्काच् चॊल्.

कोई मुँह पर ही कहे, यद्यपि निर्दय बात।
क़हो पीठ पीछे नहीं, जो न सुचिंतित बात।। १८४

அறஞ்சொல்லும் நெஞ்சத்தான் அன்மை புறஞ்சொல்லும்
புன்மையாற் காணப் படும். **185**

अऱञ्चॊल्लुम् नॆञ्जत्तान् अन्मै पुऱञ्चॊल्लुम्
पुन्मैयाऱ् काणप्पडुम्.

प्रवचन-लीन सुधर्म के, हृदय धर्म से हीन।
भण्डा इसका फोड़ दे, पैशुन्य ही मलीन।। १८५

पैशुन्य — पिशुनता, चुगलखोरी।

பிறன்பழி கூறுவான் தன்பழி யுள்ளும்
திறன்தெரிந்து கூறப் படும். **186**

पिऱन् पऴि कूऱुवान् तन् पऴियुळ्ळुम्
तिऱन् तॆरिन्दु कूऱप्पडुम्.

परदूषक यदि तू बना, तुझमें हैं जो दोष।
उनमें चुन सबसे बुरे, वह करता है घोष।। १८६

परदूषक—दूसरों की निन्दा करनेवाला। वह करता है—जिसकी निन्दा की वह। घोष—घोषित।

பகச்சொல்லிக் கேளிர்ப் பிரிப்பர் நகச்சொல்லி
நட்பாடல் தேற்றா தவர். 187

पहचॊल्लिक् केळिर्प् पिरिप्पर् नहचॊल्लि
नट्पाडल् तेट्रादवर्.

जो करते नहिं मित्रता, मधुर वचन हँस बोल।
अलग करावें बन्धु को, परोक्ष में कटु बोल।। १८७

परोक्ष में .... अनुपस्थिति में निन्दा करके।

துன்னியார் குற்றமும் தூற்றும் மரபினார்
என்னைகொல் ஏதிலார் மாட்டு. 188

तुन्नियार् कुट्रमुम् तूट्रुम् मरपिनार्
ऍन्नै कॊल् एदिलार् माट्टु.

मित्रों के भी दोष का, घोषण जिनका धर्म।
जाने अन्यों के प्रति, क्या क्या करें कुकर्म।। १८८

அறன்நோக்கி ஆற்றுங்கொல் வையம் புறன்நோக்கிப்
புன்சொல் உரைப்பான் பொறை. 189

अऱन् नोक्कि आट्रुङ्कॊल् वैयम् पुऱन् नोक्किप्
पुन्शॊल् उरैप्पान् पॊऱै.

क्षमाशीलता धर्म है, यों करके सुविचार।
क्या ढोती है भूमि भी, चुगलखोर का भार।। १८९

ஏதிலார் குற்றம்போல் தங்குற்றங் காண்கிற்பின்
தீதுண்டோ மன்னும் உயிர்க்கு. **190**

एदिलार् कुट्रम्पोल् तङ्कुट्रङ् काण्किर्पिन्
तीदुण्डो मन्नुम् उयिर्क्कु.

परछिद्रानवेषण सदृश, यदि देखे निज दोष।
तो अविनाशी जीव का, क्यों हो दुख से शोष।। १९०

परछिद्रान्वेषण—दूसरों का दोष ढूँढना। शोष—क्षीण होना।

அதிகாரம்-20 अध्याय—२० இல்லறவியல் गार्हस्थ्य—धर्म

பயனில சொல்லாமை वृथालाप—निषेध पयनिल शॊल्लामै

பல்லார் முனியப் பயனில சொல்லுவான்
எல்லாரும் எள்ளப் படும். **191**

पल्लार् मुनियप् पयनिल शॊल्लुवान्
एल्लारुम् ऍळ्ळप् पडुम्.

बहु जन सुन करते घृणा, यों जो करे प्रलाप।
सर्व जनों का वह बने, उपहासास्पद आप।। १९१

प्रलाप—व्यर्थ की बकवाद। उपहासास्पद—हँसी उड़ाने के लायक।

பயனில பல்லார்முன் சொல்லல் நயனில
நட்டார்கண் செய்தலின் தீது. **192**

पयनिल पल्लार् मुन् शॊल्लल् नयनिल
नट्टार् कण् शॆय्दलिन् तीदु.

बुद्धिमान जनवृन्द के, सम्मुख किया प्रलाप।
अप्रिय करनी मित्र प्रति, करने से अति पाप।। १९२

நயனிலன் என்பது சொல்லும் பயனில
பாரித் துரைக்கும் உரை. **193**

नयनिलन् ऍन्बदु शॊल्लुम् पयनिल
पारित्तुरैक्कुम् उरै.

लम्बी-चौड़ी बात जो, होती अर्थ-विहीन।
घोषित करती है वही, वक्ता नीति-विहीन।। १९३

वक्ता—बोलनेवाला।

நயன்சாரா நன்மையின் நீக்கும் பயன்சாராப்
பண்பில்சொல் பல்லா ரகத்து. **194**

नयन्शारा नन्मैयिन् नीक्कुम् पयन्शाराप्
पण्बिल् चॊल् पललारहत्तु.

संस्कृत नहीं, निरर्थ हैं, सभा मध्य हैं उक्त।
करते ऐसे शब्द हैं, सुगुण व नीति-वियुक्त।। १९४

ऐसे शब्द—जो ऊपर कहे गये हैं।

சீர்மை சிறப்பொடு நீங்கும் பயனில
நீர்மை யுடையார் சொலின். **195**

शीर्मै शिरप्पॊडु नीङ्गुम् पयनिल
नीर्मै युडैयार् शॊलिन्.

निष्फल शब्द अगर कहे, कोई चरित्रवान।
हो जावे उससे अलग, कीर्ति तथा सम्मान।। १९५

பயனில்சொல் பாராட்டு வானை மகனெனல்
மக்கட் பதடி யெனல். **196**

पयनिल् शॊल् पाराट्टुवानै महन् ऍनल्
मक्कट् पदडि ऍनल्.

जिसको निष्फल शब्द में, रहती है आसक्ति।
कह ना तू उसको मनुज, कहना थोथा व्यक्ति।। १९६

तिरुक्कुरळ मूल में शब्द–प्रयोग की जो विशेषता है वह अनुवाद में भी है। 'अनुवाद के सम्बन्ध में' अध्याय में इसपर प्रकाश डाला गया है। कह ना–मत कहो। कहना–कहो।

நயனில சொல்லினுஞ் சொல்லுக சான்றோர்
பயனில சொல்லாமை நன்று. **197**

नयनिल शॉल्लिनुञ् शॉल्लुह शान्ड्रोर्
पयनिल शॉल्लामै नन्ड्रु

कहें भले ही साधुजन, कहीं अनय के शब्द।
मगर इसी में है भला, कहें न निष्फल शब्द।। १९७

அரும்பயன் ஆயும் அறிவினர் சொல்லார்
பெரும்பயன் இல்லாத சொல். **198**

अरुम्पयन् आयुम् अऱिविनार् शॉल्लार्
पॅरुम्पयन् इल्लाद शॉल्.

उत्तम फल की परख का, जिनमें होगा ज्ञान।
महा प्रयोजन रहित वच, बोलेंगे नहिं जान।। १९८

பொருள்தீர்ந்த பொச்சாந்துஞ் சொல்லார் மருள்தீர்ந்த
மாசறு காட்சி யவர். **199**

पॉरुळ् तीर्न्द पॉच्चान्दुञ् चॉल्लार् मरुळ् तीर्न्द
माशऱु काट्चियवर्.

तत्वज्ञानी पुरुष जो, माया-भ्रम से मुक्त।
विस्मृति से भी ना कहें, वच जो अर्थ-वियुक्त।। १९९

சொல்லுக சொல்லிற் பயனுடைய சொல்லற்க
சொல்லிற் பயனிலாச் சொல். 200

शॉल्लुह शॉल्लिर् पयनुडैय शॉल्लऱ्क
शॉल्लिर् पयनिलाच् चॉल्.

कहना ऐसा शब्द ही, जिससे होवे लाभ।
कहना मत ऐसा वचन, जिससे कुछ नहिं लाभ।। २००

அதிகாரம்-21 अध्याय—२१ இல்லறவியல் गार्हस्थ्य—धर्म

தீவினையச்சம் पाप—भीरुता तीविनैयच्चम्

தீவினையார் அஞ்சார் விழுமியார் அஞ்சுவர்
தீவினை என்னுஞ் செருக்கு. 201

तीविनैयार् अञ्जार् विऴुमियार् अञ्जुवर्
तीविनै ऍन्नुम् चॅरुक्कु.

पाप-कर्म के मोह से, डरें न पापी लोग।
उससे डरते हैं वही, पुण्य-पुरुष जो लोग।। २०१

தீயவை தீய பயத்தலால் தீயவை
தீயினும் அஞ்சப் படும். 202

तीयवै तीय पयत्तलाल् तीयवै
तीयिनुम् अञ्जप्पडुम्.

पाप-कर्म दुखजनक हैं, यह है उनकी रीत।
पावक से भीषण समझ, सो होना भयभीत।। २०२

रीत—रीति। पावक—आग। भीषण—भयंकर।

அறிவினுள் எல்லாந் தலையென்ப தீய
செறுவார்க்கும் செய்யா விடல். 203

अऱिविनुळ् ऍल्लान् तलैयॆन्ब तीय
शॆऱुवार्क्कुम् शॆय्या विडल्.

श्रेष्ठ बुद्धिमत्ता कहें, करके सुधी विचार।
अपने रिपु का भी कभी, नहिं करना अपकार।। २०३

सुधी – बुद्धिमान। रिपु – शत्रु।

மறந்தும் பிறன்கேடு சூழற்க சூழின்
அறஞ்சூழும் சூழ்ந்தவன் கேடு. 204

मऱन्दुम् पिऱन् केडु शूऴऱ्क शूऴिन्
अऱञ्चूऴुम् शूऴ्न्दवन् केडु.

विस्मृति से भी नर नहीं, सोचे पर की हानि।
यदि सोचे तो धर्म भी, सोचे उसकी हानि।। २०४

विस्मृति से भी – भूल कर भी। पर की – अन्यों की। धर्म – धर्म – देव।

இலன்என்று தீயவை செய்யற்க செய்யின்
இலனாகும் மற்றும் பெயர்த்து. 205

इलन् ऍन्ऱु तीयवै शॆय्यऱ्क शॆय्यिन्
इलनाहुम् मट्रुम् पॆयर्त्तु.

'निर्धन हूँ मैं', यों समझ, करे न कोई पाप।
अगर किया तो फिर मिले, निर्धनता-अभिशाप।। २०५

தீப்பால தான்பிறர்கண் செய்யற்க நோய்ப்பால
தன்னை அடல்வேண்டா தான். 206

तीप्पाल तान् पिऱर्कण् शॆय्यऱ्क नोय्प्पाल
तन्नै अडल् वेण्डादान्.

दुख से यदि दुष्कर्म के, बचने की है राय।
अन्यों के प्रति दुष्टता, कभी नहीं की जाय।। २०६

எனைப்பகை யுற்றாரும் உய்வர் வினைப்பகை
வீயாது பின்சென்று அடும். 207

ऍनैप्पहै युट्रारुम् उय्वर् विनैप्पहै
वीयादु पिन् शॅन्ड्रु अडुम्.

अति भयकारी शत्रु से, संभव है बच जाय।
पाप-कर्म की शत्रुता, पीछा किये सताय।। २०७

தீயவை செய்தார் கெடுதல் நிழல்தன்னை
வீயாது அடிஉறைந் தற்று. 208

तीयवै शॅय्दार् कॅडुदल् निष़ल् तन्नै
वीयादु अडि उऱैन्दट्रु.

दुष्ट-कर्म जो भी करे, यों पायेगा नाश।
छोड़े बिन पैरों तले, छाँह करे ज्यों वास।। २०८

छांह करे .... जैसे छाया से पीछा छूटना संभव नहीं वैसे पाप-कर्म साथ रहते हुए पापी का नाश करेगा ही।

தன்னைத்தான் காதல னாயின் எனைத்தொன்றும்
துன்னற்க தீவினைப் பால். 209

तन्नैत्तान् कादलनायिन् ऍनैत्तॉन्ड्रुम्
तुन्नरूक तीविनैप्पाल्.

कोई अपने आपको, यदि करता है प्यार।
करे नहीं अत्यल्प भी, अन्यों का अपचार।। २०९

अत्यल्प भी—अति छोटी मात्रा में भी।

அருங்கேடன் என்பது அறிக மருங்கோடித்
தீவினை செய்யான் எனின். 210

अरुङ्केडन् ऍन्बदु अरिह मरुङ्कोडित्
तीविनै शॅय्यान् ऍनिन्.

नाशरहित उसको समझ, जो तजकर सन्मार्ग।
पाप-कर्म को नहिं करे, पकड़े नहीं कुमार्ग।। २१०

அதிகாரம்-22 अध्याय – २२ இல்லறவியல் गार्हस्थ्य – धर्म

ஒப்புரவறிதல् लोकोपकारिता ऑप्पुरवरिदल्

கைம்மாறு வேண்டா கடப்பாடு மாரிமாட்டு
என்ஆற்றுங் கொல்லோ உலகு. 211

कैम्मारु वेण्डा कडप्पाडु मारिमाट्टु
ऍन् आट्रुङ् कॉल्लो उलहु.

उपकारी नहिं चाहते, पाना प्रत्युपकार।
बादल को बदला भला, क्या देता संसार।। २११

தாளாற்றித் தந்த பொருளெல்லாம் தக்கார்க்கு
வேளாண்மை செய்தற் பொருட்டு. 212

ताळाट्रित् तन्द पॉरुळॅल्लाम् तक्काक्कु
वेळाण्मै शॅय्दर् पॉरुट्टु.

बहु प्रयत्न से जो जुड़ा, योग्य व्यक्ति के पास।
लोगों के उपकार हित, है वह सब धन-रास।। २१२

उपकार हित – उपकार के लिए। धन - रास – धन - राशि, समूह।

புத்தே ளுலகத்தும் ஈண்டும் பெறலரிதே
ஒப்புரவின் நல்ல பிற. 213

पुत्तेलुलकत्तुम् ईण्डुम् पैऱलरिदे
ओप्पुरविन् नल्ल पिऱ.

किया भाव निष्काम से, जनोपकार समान।
स्वर्ग तथा भू लोक में, पाना दुष्कर जान।। २१३

ஒத்த தறிவான் உயிர்வாழ்வான் மற்றையான்
செத்தாருள் வைக்கப் படும். 214

ओत्तदरिवान् उयिर्वाऴ्वान् मट्रैयान्
शैत्तारुळ् वैक्कप्पडुम्.

ज्ञाता शिष्टाचार का, है मनुष्य सप्राण।
मृत लोगों में अन्य की, गिनती होती जान।। २१४

सप्राण—जिंदा। मृत—मरा हुआ।

ஊருணி நீர்நிறைந் தற்றே உலகவாம்
பேரறி வாளன் திரு. 215

ऊरुणि नीर् निऱैन्दट्रे उलहवाम्
पेररि वाळन् तिरु.

पानी भरा तड़ाग ज्यों, आवे जग का काम।
महा सुधी की संपदा, है जन-मन-सुख धाम।। २१५

तड़ाग—तालाब। महा सुधी—बड़ा बुद्धिमान।

பயன்மரம் உள்ளூர்ப் பழுத்தற்றால் செல்வம்
நயனுடை யான்கண் படின். 216

पयन्मरम् उळ्ळूर्प् पऴुत्तट्राल् शेल्वम्
नयनुडैयान् कण् पडिन्.

शिष्ट जनों के पास यदि, आश्रित हो संपत्ति।
ग्राम-मध्य ज्यों वृक्षवर, पावे फल-संपत्ति।। २१६

மருந்தாகித் தப்பா மரத்தற்றால் செல்வம்
பெருந்தகை யான்கண் படின். 217

मरुन्दाहित् तप्पा मरत्तट्राल् शॆल्वम्
पॆरुन्तहैयान् कण पडिन्.

चूके बिन ज्यों वृक्ष का, दवा बने हर अंग।
त्यों धन हो यदि वह रहे, उपकारी के संग।। २१७

இடனில் பருவத்தும் ஒப்புரவிற்கு ஒல்கார்
கடனறி காட்சி யவர். 218

इडनिल् परुवत्तुम् ऑप्पुरविऱ्कु ऑल्हार्
कडनऱि काट्चियवर्.

सामाजिक कर्तव्य का, जिन सज्जन को ज्ञान।
उपकृति से नहिं चूकते, दारिदवश भी जान।। २१८

उपकृति – उपकार करना। दारिदवश – ग़रीबी के कारण।

நயனுடையான் நல்கூர்ந்தா னாதல் செயும்நீர
செய்யாது அமைகலா வாறு. 219

नयनुडैयान् नल्कूर्न्दानादल् शॆयुम् नीर
शॆय्यादु अमैहलावारु.

उपकारी को है नहीं, दरिद्रता की सोच।
'मैं कृतकृत्य नहीं हुआ', उसे यही संकोच।। २१९

दरिद्रता ... स्वयं सुख–भोग करने के लिए धन नहीं है, इसका दुःख नहीं है। कृतकृत्य ... उपकार करने का जो कर्तव्य है उसे नहीं कर पाया, यही दुःख है।

ஒப்புரவி னல்வருங் கேடெனின் அஃதொருவன்
விற்றுக்கோள் தக்க துடைத்து. 220

ओँप्पुरविनाल् वरुम् केडॅनिन् अहदोंरुवन्
विट्रुक्कोळ् तक्कदुडैत्तु.

लोकोपकारिता किये, यदि होगा ही नाश।
अपने को भी बेच कर, क्रय-लायक वह नाश।। २२०

क्रय--लायक — खरीदने लायक । लोकोपकारिता — पूर्त धर्म, सामाजिक उपकार। इस धर्म के लिए अपने को मिटाना भी अच्छा है।

அதிகாரம்-23 अध्याय — २३ இல்லறவியல் गार्हस्थ्य — धर्म

ஈகை दान ईहै

வறியார்க்கொன்று ஈவதே ஈகைமற் றெல்லாம்
குறியெதிர்ப்பை நீர துடைத்து. 221

वऱियार्क्कोंन्ऱु ईवदे ईहै मट्रॅल्लाम्
कुऱियॅंदिर्प्पै नीरदुडैत्तु.

देना दान ग़रीब को, है यथार्थ में दान।
प्रत्याशा प्रतिदान की, है अन्य में निदान।। २२१

நல்லாறு எனினும் கொளல்தீது மேலுலகம்
இல்லெனினும் ஈதலே நன்று. 222

नल्लाऱु ऍनिनुम् कोंळल् तीदु मेलुलहम्
इल्लॅंनिनुम् ईदले नन्ड्रु.

मोक्ष-मार्ग ही क्यों न हो, दान-ग्रहण अश्रेय।
यद्यपि मोक्ष नहीं मिले, दान-धर्म ही श्रेय।। २२२

இலனென்னும் எவ்வம் உரையாமை ஈதல்
குலனுடையான் கண்ணே உள. **223**

इलनैंनुनुम् ऍव्वम् उरैयामै ईदल्
कुलनुडैयान् कण्णे उळ.

'दीन–हीन हूँ' ना कहे, करता है यों दान।
केवल प्राप्य कुलीन में, ऐसी उत्तम बान।। २२३

दीन–हीन–ग़रीब। कुलीन–उत्तम कुल में उत्पन्न। बान–स्वभाव। मूल पद्य में शब्द–प्रयोग की विशेषता इस प्रकार है कि इसके तीन प्रकार के अर्थ लगाये जा सकते हैं। अनुवाद में भी ऐसा ही हुआ है, इसका उल्लेख 'अनुवाद के सम्बन्ध में' अध्याय में हुआ है।

இன்னாது இரக்கப் படுதல் இரந்தவர்
இன்முகங் காணும் அளவு. **224**

इन्नादु इरक्कप्पडुदल् इरन्दवर्
इन्मुहङ् काणुम् अळवु.

याचित होने की दशा, तब तक रहे विषण्ण।
जब तक याचक का वदन, होगा नहीं प्रसन्न।। २२४

विषण्ण–दुःखी। याचित ... दानी को तब तक चिन्ता रहती है जब तक याचक यथेष्ट पा कर सन्तुष्ट न होता।

ஆற்றுவார் ஆற்றல்பசி ஆற்றல் அப்பசியை
மாற்றுவார் ஆற்றலின் பின். **225**

आट्रुवार् आट्रल् पशि आट्रल् अप्पशियै
माट्रुवार् आट्रलिन् पिन्.

क्षुधा-नियन्त्रण जो रहा, तपोनिष्ठ की शक्ति।
क्षुधा-निवारक शक्ति के, पीछे ही वह शक्ति।। २२५

क्षुधा–भूख। अनशन रहनेवाले तपस्वी से अन्न–दानी श्रेष्ठ हैं।

அற்ருர் அழிபசி தீர்த்தல் அஃதொருவன்
பெற்ருன் பொருள்வைப் புழி. 226

अट्रार् अऴिपशि तीरुत्तल् अह्दोरुवन्
पैट्रान् पोरुळ् वैप्पुऴि

नाशक-भूख दरिद्र की, कर मिटा कर दूर।
वह धनिकों को चयन हित, बनता कोष ज़रूर।। २२६

चयन हित ... धन संग्रह के लिए कोष के समान है।

பாத்தூண் மரீஇ யவனைப் பசியென்னும்
தீப்பிணி தீண்டல் அரிது. 227

पात्तूण् मरीइयवनैप् पशि ऍन्नुम्
तीप्पिणि तीण्डल् अरिदु.

भोजन को जो बाँट कर, किया करेगा भोग।
उसे नहीं पीड़ित करे, क्षुधा भयंकर रोग।। २२७

ஈத்துவக்கும் இன்பம் அறியார்கொல் தாமுடைமை
வைத்திழக்கும் வன்க ணவர். 228

ईत्तुवक्कुम् इन्बम् अऱियार् कोॅल् तामुडैमै
वैत्तिऴक्कुम् वन् कणवर्.

धन-संग्रह कर खो रहा, जो निर्दय धनवान।
दे कर होते हर्ष का, क्या उसको नहिं ज्ञान।। २२८

இரத்தலின் இன்ஞது மன்ற நிரப்பிய
தாமே தமியர் உணல். 229

इरत्तलिन् इन्नादु मन्ड्र निरप्पिय
तामे तमियर् उणल्.

स्वयं अकेले जीमना, अर्थ-पूर्ति के हेतु।
याचन करने से अधिक, निश्चय दुख का हेतु।। २२९

जीमना—भोजन करना। अर्थ—पूर्ति ... धन जमा करने के लिए।

சாதலின் இன்னாத தில்லை இனிததூஉம்
ஈதல் இயையாக் கடை. 230

शादलिन् इन्नाददिल्लै इनिददूउम्
ईदल इयैयाक् कडै.

मरने से बढ़ कर नहीं, दुख देने के अर्थ।
सुखद वही जब दान में, देने को असमर्थ।। २३०

அதிகாரம்-24 अध्याय—२४ இல்லறவியல் गार्हस्थ्य—धर्म

புகழ் कीर्ति पुहष्

ஈதல் இசைபட வாழ்தல் அதுவல்லது
ஊதியம் இல்லை உயிர்க்கு. 231

ईदल् इशैपड वाष़्दल् अदुवल्लदु
ऊदियम् इल्लै उयिर्क्कु.

देना दान ग़रीब को, जीना कर यश-लाभ।
इससे बढ़ कर जीव को, और नहीं है लाभ।। २३१

कर यश-लाभ—कीर्ति पा कर।

உரைப்பார் உரைப்பவை எல்லாம் இரப்பார்க்கொன்று
ஈவார்மேல் நிற்கும் புகழ். 232

उरैप्पार् उरैप्पवै ऍल्लाम् इरप्पार्क्कोन्ड्रु
ईवार्मेल् निऱ्कुम् पुहष्.

करता है संसार तो, उसका ही गुण-गान।
याचक को जो दान में, कुछ भी करें प्रदान।। २३२

ஒன்றா உலகத்து உயர்ந்த புகழல்லால்
பொன்றாது நிற்பதொன்று இல். 233

ऑन्ड्रा उलहत्तु उयर्न्द पुहष़ल्लाल्
पॉन्ड्रादु निऱ्पदॉन्ड्रु इल्.

टिकती है संसार में, अनुपम कीर्ति महान।
अविनाशी केवल वही, और न कोई जान।। २३३

நிலவரை நீள்புகழ் ஆற்றின் புலவரைப்
போற்றாது புத்தேள் உலகு. 234

निलवरै नीळ् पुहष़् आट्रिन् पुलवरैप्
पोट्रादु पुत्तेळ् उलहु.

यदि कोई भूलोक में, पाये कीर्ति महान।
देवलोक तो ना करें, ज्ञानी का गुण-गान।। २३४

देवलोक ... सांसारिक जीवन में सामाजिक कर्तव्यों का पालन करके जो महान कीर्ति पाता है वह केवल ज्ञान-मार्ग से मोक्ष-लोक पानेवाले से श्रेष्ठ है।

நத்தம்போல் கேடும் உளதாகும் சாக்காடும்
வித்தகர்க் கல்லால் அரிது. 235

नत्तम्पोल् केडुम् उळदाहुम् शाक्काडुम्
वित्तकहर्क् कल्लाल् अरिदु.

ह्रास बने यशवृद्धिकर, मृत्यु बने अमरत्व।
ज्ञानवान बिन और में, संभव न यह महत्व।। २३५

ह्रास — अवनति। ह्रास बने ... जो समर्थ और विद्वान हैं वे संकटों से नहीं घबड़ाते हैं परन्तु वे संकट उनकी कीर्ति को बढ़ाते हैं।आखिर उनकी मृत्यु होने पर वे अमर हो जाते हैं।

தோன்றின் புகழொடு தோன்றுக அஃதிலார்
தோன்றலின் தோன்றாமை நன்று. **236**

तोन्ड्रिन् पुहषोंडु तोन्ड्रुह अह्दिलार्
तोन्ड्रलिन् तोन्ड्रामै नन्ड्रु.

जन्मा तो यों जन्म हो, जिसमें होवे नाम।
जन्म न होना है भला, यदि न कमाया नाम।। २३६

புகழ்பட வாழாதார் தந்நோவார் தம்மை
இகழ்வாரை நோவது எவன். **237**

पुहष्पड वाषादार् तन्नोवार् तम्मै
इहष्वारै नोवदु ऍवन्.

कीर्तिमान बन ना जिया, कुढ़ता स्वयं न आप।
निन्दक पर कुढ़ते हुए, क्यों होता है ताप।। २३७

कुढ़ना — मन ही मन चिढ़ना।

வசையென்ப வையத்தார்க் கெல்லாம் இசையென்னும்
எச்சம் பெறாஅ விடின். **238**

वशैयॅन्ब वैयत्तार्क्कॅल्लाम् इशैयॅन्नुम्
ऍच्चम् पॅराअ विडिन्.

यदि नहिं मिली परंपरा, जिसका है यश नाम।
तो जग में सब के लिये, वही रहा अपनाम।। २३८

வசையிலா வண்பயன் குன்றும் இசையிலா
யாக்கை பொறுத்த நிலம். **239**

वशैइला वण्पयन् कुन्ड्रुम् इशैयिला
याक्कै पोँऱुत्त निलम्.

कीर्तिहीन की देह का, भू जब ढोती भार।
पावन प्रभूत उपज का, क्षय होता निर्धार।। २३९

प्रभूत – अत्यधिक। निर्धार – निश्चय।

வசையொழிய வாழ்வாரே வாழ்வார் இசையொழிய
வாழ்வாரே வாழா தவர். **240**

वशै ओँऴिय वाऴ्वारे वाऴ्वार् इशैयोऴिय
वाऴ्वारे वाऴादवर्

निन्दा बिन जो जी रहा, जीवित वही सुजान।
कीर्ति बिना जो जी रहा, उसे मरा ही जान।। २४०

அதிகாரம்-25

अध्याय – २५ துறவறவியல் सन्यास – धर्म

அருளுடைமை दयालुता अरुळुडैमै

அருட்செல்வம் செல்வத்துள் செல்வம் பொருட்செல்வம்
பூரியார் கண்ணும் உள. **241**

अरुट् शैंल्वम् शैंल्वत्तुळ् शैंल्वम् पोँरुट्शैंल्वम्
पूरियार् कण्णुम् उळ.

सर्व धनों में श्रेष्ठ है, दयारूप संपत्ति।
नीच जनों के पास भी, है भौतिक संपत्ति।। २४१

நல்லாற்ருல் நாடி அருளாள்க பல்லாற்ருல்
தேரினும் அஃதே துணை. 242

नलूलाट्राल् नाडि अरुळाळ्ह पलूलाट्राल्
तेरिनुम् अहूदे तुणै.

सत्-पथ पर चल परख कर, दयाव्रती बन जाय।
धर्म-विवेचन सकल कर, पाया वही सहाय।। २४२

அருள்சேர்ந்த நெஞ்சினார்க் கில்லை இருள்சேர்ந்த
இன்னா உலகம் புகல். 243

अरुळ् शेरून्द नॆंञ्जिनारूक्किलूलै इरुळ्शेरून्द
इनूना उलहम् पुहल्.

अन्धकारमय नरक है, जहाँ न सुख लवलेश।
दयापूर्ण का तो वहाँ, होता नहीं प्रवेश।। २४३

மன்னுயிர் ஓம்பி அருளாள்வாற்கு இல்லென்ப
தன்னுயிர் அஞ்சும் வினை. 244

मनूनुयिर् ओमूबि अरुळाळ्वारूकु इलूलॆंनूब
तनूनुयिर् अञ्जुम् विनै.

सब जीवों को पालते, दयाव्रती जो लोग।
प्राण-भयंकर पाप का, उन्हें न होगा योग।। २४४

அல்லல் அருளாள்வார்க்கு இல்லை வளிவழங்கும்
மல்லல்மா ஞாலம் கரி. 245

अलूलल् अरुळाळ्वारूक्कु इलूलै वळिवषङ्गुम्
मलूललूमा ञालम् करि.

दुःख-दर्द उनको नहीं, जो हैं दयानिधान।
पवन संचरित उर्वरा, महान भूमि प्रमाण।। २४५

पवन ... जिस भूमि में हवा चलती है और जो उपजाऊ है।
दयालुवों को इह लोक में दुःख भोगना नहीं पड़ता। पिछले दोहे में यह कहा गया कि परलोक में पाप का फल न भोगना पड़ेगा।

பொருள் நீங்கிப்பொச்சாந்தார் என்பர் அருள்நீங்கி
அல்லவை செய்தொழுகு வார். **246**

पोंरुळ् नीङ्गिप् पॉच्चानदार ऍन्बर् अरुळ् नीङ्गि
अलूलवै शेंय्दोंष़ुहुवार.

जो निर्दय हैं पापरत, यों कहते धीमान।
तज कर वे पुरुषार्थ को, भूले दुःख महान।। २४६

तज कर ... पूर्व जन्म में पुरुषार्थ को छोड़ कर इस जन्म में होनेवाले दुःख को भूले बैठे हैं।

அருளில்லார்க்கு அவ்வுலகம் இல்லை பொருளில்லார்க்கு
இவ்வுலகம் இல்லாகி யாங்கு. **247**

अरुळिलूलाक्कु अव्वुलहम् इलूलै पोंरुळिलूलाक्कु
इव्वुलहम् इलूलाहि याङ्गु.

प्राप्य नहीं धनरहित को, ज्यों इहलौकिक भोग।
प्राप्य नहीं परलोक का, दयारहित को योग।। २४७

பொருளற்றார் பூப்பர் ஒருகால் அருளற்றார்
அற்றார்மற் றாதல் அரிது. **248**

पोरुॅळट्रार् पूप्पर् ओंरुहाल् अरुळट्रार्
अट्रार् मट्रादल् अरिदु.

निर्धन भी फूले-फले, स्यात् धनी बन जाय।
निर्दय है निर्धन सदा, काया पलट न जाय।। २४८

स्यात्—शायद। काया ... जाय——रूपान्तर न होगा।

தெருளாதான் மெய்ப்பொருள் கண்டற்றால் தேரின்
அருளாதான் செய்யும் அறம். 249

तॅरुळादान् मॅय्प्पॉरुळ् कण्डट्राल् तेरिन्
अरुळादान् शॅय्युम् अऱम्.

निर्दय-जन -कृत सुकृत पर, अगर विचारा जाय।
तत्व-दर्श ज्यों अज्ञ का, वह तो जाना जाय।। २४९

तत्व — दर्श ... जाय। अज्ञानी को तत्व ज्ञान होने के समान है।

வலியார்முன் தன்னை நினைக்கதான் தன்னின்
மெலியார்மேல் செல்லும் இடத்து. 250

वलियार् मुन् तन्नै निनैक्क तान् तन्निन्
मॅलियार् मेल् शॅल्लुम् इडत्तु.

रोब जमाते निबल पर, निर्दय करे विचार।
अपने से भी प्रबल के, सम्मुख खुद लाचार।। २५०

निबल — निर्बल। रोब जमाना — आतंक उत्पन्न करना।

அதிகாரம்-26 अध्याय — २६ துறவறவியல் सन्यास — धर्म

புலால் மறுத்தல् मॉस — वर्जन पुलाल् मऱुत्तल्

தன்னூன் பெருக்கற்குத் தான்பிறிது ஊனுண்பான்
எங்ஙனம் ஆளும் அருள். 251

तन्नून् पॅरुक्कऱ्कुत्तान् पिऱिदु ऊनुण्बान्
ऍङ्ङनम् आळुम् अरुळ्.

मॉस-वृद्धि अपनी समझ, जो खाता पर-मॉस।
कैसे दयार्द्रता-सुगुण, रहता उसके पास।। २५१

पर — मॉस — अन्य प्राणियों का मॉस। दयार्द्रता — दया से पूर्ण।

பொருளாட்சி போற்றாதார்க்கு இல்லை அருளாட்சி
ஆங்கில்லை ஊன்தின் பவர்க்கு. **252**

पॊरुळाट्चि पोट्रादाक्कु इलूलै अरुळाट्चि
आङ्गिलूलै ऊनू तिनूबवक्कु.

धन का भोग उन्हें नहीं, जो न करेंगे क्षेम।।
माँसाहारी को नहीं, दयालुता का नेम।। २५२

क्षेम—प्राप्त वस्तु की रक्षा। नेम—नियम्।

படைகொண்டார் நெஞ்சம்போல் நன்றூக்காது ஒன்றன்
உடல்சுவை உண்டார் மனம். **253**

पडैकॊॅणूडारू नॆञ्ञ्जमूपोलू ननूडूरूक्कादु ऑनूड्रनू
उडलू शुवै उणूडारू मनमू.

ज्यों सशस्त्र का मन कभी, होता नहीं दयाल।
रुच रुच खावे माँस जो, उसके मन का हाल।। २५३

सशस्त्र—हथियारबंद। रुच रुच—बड़ी रुचि से। दयाल—दयालु।

அருளல்லது யாதெனில் கொல்லாமை கோறல்
பொருளல்லது அவ்வூன் தினல் **254**

अरुळलूलदु योदेनिलू कॊॅलूलामै कोऱलू
पॊॅरुळलूलदु अवूवूनू तिनलू.

निर्दयता है जीववध, दया अहिंसा धर्म।
करना माँसाहार है, धर्म हीन दुष्कर्म।। २५४

உண்ணாமை உள்ளது உயிர்நிலை ஊனுண்ண
அண்ணாத்தல் செய்யாது அளறு. **255**

उणूणामै उळूळदु उयिरूनिलै ऊनुणूण
अणूणातूतलू शैंयूयादु अळरु.

रक्षण है सब जीव का, वर्जन करना माँस।
बचे नरक से वह नहीं, जो खाता है माँस।। २५५

वर्जन करना—छोड़ देना।

தினற்பொருட்டால் கொல்லாது உலகெனின் யாரும்
விலைப் பொருட்டால் ஊன்தருவார் இல். 256

तिनऱ्पॊरुट्टाल् कॊल्लादु उलहॆनिन् यारुम्
विलैप्पॊरुट्टाल् ऊन् तरुवार् इल्.

वध न करेंगे लोग यदि, करने को आहार।
आमिष लावेगा नहीं, कोई विक्रयकार।। २५६

आमिष—माँस। विक्रयकार—बेचनेवाला।

உண்ணாமை வேண்டும் புலாஅல் பிறிதொன்றன்
புண்ணது உணர்வார்ப் பெறின். 257

उणाणमै वेण्डुम् पुला अल् पिऱिदॊन्ड्रन्
पुण्णदु उणर्वार्प् पॆरिन्.

आमिष तो इक जन्तु का, व्रण है यों सुविचार।
यदि होगा तो चाहिए, तजना माँसाहार।। २५७

जन्तु—प्राणी। व्रण—फोड़ा।

செயிரின் தலைப்பிரிந்த காட்சியார் உண்ணார்
உயிரின் தலைப்பிரிந்த ஊன். 258

शॆयिरिन् तलैप्पिरन्द काट्चियार् उणणार्
उयिरिन् तलैप्पिरिन्द ऊन्.

जीव-हनन से छिन्न जो, मृत शरीर है माँस।
दोषरहित तत्वज्ञ तो, खायेंगे नहिं माँस।। २५८

जीव—हनन—प्राणी की हत्या।

அவிசொரிந் தாயிரம் வேட்டலின் ஒன்றன்
உயிர்செகுத் துண்ணாமை நன்று. 259

अविशौँरिन्दायिरम् वेट्टलिन् ऑन्ड्रन्
उयिर् शैंहुत्तुण्णामै नन्ड्रु.

यज्ञ हज़रों क्या किया, दे दे हवन यथेष्ट।
किसी जीव को हनन कर, माँस न खाना श्रेष्ठ।। २५९

यज्ञ—याग। हवन—होम—द्रव्य, आहुति।

கொல்லான் புலாலை மறுத்தானைக் கைகூப்பி
எல்லா உயிரும் தொழும். 260

कौँल्लान् पुलालै मरुत्तानैक् कैकूप्पि
ऍल्ला उयिरुम् तौँषुम्.

जो न करेगा जीव-वध, और न माँसाहार।
हाथ जोड़ सारा जगत, करता उसे जुहार।। २६०

जुहार—प्रणाम।

அதிகாரம்-27

अध्याय—२७ துறவறவியல் सन्यास—धर्म

தவம் तप तवम्

உற்றநோய் நோன்றல் உயிர்க்குறுகண் செய்யாமை
அற்றே தவத்திற் குரு. 261

उट्रनोय् नोन्ड्रल् उयिरक्कुरुकण् शैंय्यामै
अट्रे तवत्तिर् कुरु.

तप नियमों को पालते, सहना कष्ट महान।
जीव-हानि-वर्जन तथा, तप का यही निशान।। २६१

தவமும் தவமுடையார்க்கு ஆகும் அவம் அதனை
அஃதிலார் மேற்கொள் வது. 262

तवमुम् तवमुडैयारूक्कु आहुम् अवम् अदनै
अह्दिलार् मेऱ्कोँळ्वदु.

तप भी बस उनका रहा, जिनको है वह प्राप्त।
यत्न वृथा उसके लिये, यदि हो वह अप्राप्त॥ २६२

जिनको ... प्रसिद्ध व्याख्याता परिमेलऴहर् के अनुसार पूर्व जन्म कृत तपस्या से ही इस जन्म में भी वह प्राप्त होगा।

துறந்தார்க்குத் துப்புரவு வேண்டி மறந்தார்கொல்
மற்றை யவர்கள் தவம். 263

तुऱनूदार्क्कुत् तुप्पुरवु वेण्डि मऱनूदारकोँल्
मट्रैयवरूहळ् तवम्.

भोजनादि उपचार से, तपसी सेवा-धर्म।
करने हित क्या अन्य सब, भूल गये तप-कर्म।। २६३

तपसी—तप करनेवालों का।

ஒன்னார்த் தெறலும் உவந்தாரை ஆக்கலும்
எண்ணின் தவத்தான் வரும். 264

ओँन्नारत् तेँऱलुम् उवनूदारै आक्कलुम्
ऍण्णिन् तवत्तान् वरुम्.

दुखदायी रिपु का दमन, प्रिय जन का उत्थान।
स्मरण मात्र से हो सके, तप के बल अम्लान।। २६४

रिपु—शत्रु। अम्लान—निर्मल।

வேண்டிய வேண்டியாங் கெய்தலால் செய்தவம்
ஈண்டு முயலப் படும். 265

वेणूडिय वेणूडियाङ्गॅयूदलालू शॅयूदवमू
ईणूडु मुयलप्पडुमू.

तप से सब कुछ प्राप्य हैं, जो चाहे जिस काल।
इससे तप-साधन यहाँ, करना है तत्काल।। २६५

தவஞ்செய்வார் தங்கருமஞ் செய்வார்மற் றல்லார்
அவஞ்செய்வார் ஆசையுட் பட்டு. 266

तवञ्शॅयूवारू तङ्करुमञ् शॅयूवारू मट्रल्लारू
अवञ्शॅयूवारू आशैयुट्पट्टु.

वही पुरुष कृतकृत्य है, जो करता तप-कर्म।
करें कामवश अन्य सब, स्वहानिकारक कर्म।। २६६

சுடச்சுடரும் பொன்போல் ஒளிவிடும் துன்பஞ்
சுடச்சுட நோற்கிற் பவர்க்கு. 267

चुडच्चुडरुमू पॉनूपोलू ऑळिविडुमू तुनूबञ्
चुडच्चुड नोऱ्किऱ्पवर्क्कु.

तप तप कर ज्यों स्वर्ण की, होती निर्मल कान्ति।
तपन ताप से ही तपी, चमक उठें उस भाँति।। २६७

तपी—तपस्वी। 'अनुवाद के संबन्ध में' अध्याय में इसका उल्लेख है।

தன்னுயிர் தான்அறப் பெற்றானை ஏனைய
மன்னுயி ரெல்லாம் தொழும். 268

तनूनुयिरू तानू अऱप्पॅट्रानै एनैय
मनूनुयिरॅल्लामू तॊऴुमू.

आत्म-बोध जिनको हुआ, करके वश निज जीव।
उनको करते वंदना, शेष जगत के जीव।। २६८

கூற்றம் குதித்தலுமம் கைகூடும் நோற்றலின்
ஆற்றல் தலைப்பட் டவர்க்கு. 269

कूट्रम् कुदित्तलुम् कैकूडुम् नोट्रलिन्
आट्रल् तलैप्पट्टवर्क्कु.

जिस तपसी को प्राप्त है, तप की शक्ति महान।
यम पर भी उसकी विजय, संभव है तू जान।। २६९

இலர்பல ராகிய காரணம் நோற்பார்
சிலர்பலர் நோலா தவர். 270

इलर् पलराहिय कारणम् नोऱ्पार्
शिलर् पलर् नोलादवर्.

निर्धन जन-गणना अधिक, इसका कौन निदान।
तप नहिं करते बहुत जन, कम हैं तपोनिधान।। २७०

निदान—कारण। तपोनिधान—तपस्वी।

अதிகாரம்-28 | अध्याय—२८ | सन्यास—धर्म

கூடா ஒழுக்கம் मिथ्याचार कूडाऒ़ुक्कम्

வஞ்ச மனத்தான் படிற்றொழுக்கம் பூதங்கள்
ஐந்தும் அகத்தே நகும். 271

वञ्ज मनत्तान् पडिट्रॊ़ुक्कम् पूदङ्गळ्
ऐन्दुम् अहत्ते नहुम्.

वंचक के आचार को, मिथ्यापूर्ण विलोक।
पाँचों भूत शरीरगत, हँस दें मन में रोक।। २७१

विलोक—देख कर। पाँचों ... शरीर में रहनेवाले पाँचों भूत मन ही मन हँसेंगे.

வானுயர் தோற்றம் எவன்செய்யும் தன்நெஞ்சம்
தான்அறி குற்றப் படின். 272

वानुयर् तोट्रम् ऍवन् शॅय्युम् तन् नॅञ्जम्
तान् अऱि कुट्रप्पडिन्.

उच्च गगन सम वेषं तो, क्या आवेगा काम।
समझ-बूझ यदि मन करे, जो है दूषित काम।। २७२

வலியில் நிலைமையான் வல்லுருவம் பெற்றம்
புலியின்தோல் போர்த்துமேய்ந் தற்று. 273

वलियिल् निलैमैयान् वल्लुरुवम् पॅट्रम्
पुलियिन् तोल् पोर्त्तु मेय्न् दट्रु.

महा साधु का वेष धर, दमन-शक्ति नहिं, हाय!
व्याघ्र-चर्म ओढे हुए, खेत चरे ज्यों गाय।। २७३

व्याघ्र—चर्म—बाघ का चमड़ा।

தவமறைந்து அல்லவை செய்தல் புதல்மறைந்து
வேட்டுவன் புள்சிமிழ்த் தற்று. 274

तवमऱैन्दु अल्लवै शॅय्दल् पुदल्मऱैन्दु
वेट्टुवन् पुळ् चिमिऴ्त् तट्रु.

रहते तापस भेस में, करना पापाचार।
झाड़-आड़ चिड़िहार ज्यों, पंछी पकड़े मार।। २७४

तापस भेस में——तपस्वी के वेष में। झाड़—आड़—झाड़ के पीछे छिप कर। मार—मार कर।

பற்றற்றேம் என்பார் படிற்றொழுக்கம் எற்றெற்றென்று
ஏதம் பலவுந் தரும். 275

पट्र्ट्रेम् ऍन्बार् पडिट्रॉष़ुक्कम् ऍट्रॅट्रॅन्रु
एदम् पलवुन् तरुम्.

'हूँ विरक्त' कह जो मनुज, करता मिथ्याचार।
कष्ट अनेकों हों उसे, स्वयं करे धिक्कार।। २७५

मिथ्याचार—साधु वेष धारण कर पापाचार करना।

நெஞ்சில் துறவார் துறந்தார்போல் வஞ்சித்து
வாழ்வாரின் வன்கணார் இல். 276

नॅञ्जिल् तुऱवार् तुऱन्दार् पोल् वञ्जितुतु
वाष़्वारिन् वन्कणार् इल्.

मोह-मुक्त मन तो नहीं, है निर्मम की बान।
मिथ्याचारी के सदृश, निष्ठुर नहीं महान।। २७६

புறங்குன்றி கண்டனைய ரேனும் அகங்குன்றி
மூக்கிற் கரியார் உடைத்து. 277

पुरङ्कुन्ड्रि कणॖडनैयरेनुम् अहङ्कुन्ड्रि
मूक्किऱ् करियार् उडैतुतु.

बाहर से है लालिमा, हैं घुंघची समान।
उसका काला अग्र सम, अन्दर है अज्ञान।। २७७

மனத்தது மாசாக மாண்டார்நீ ராடி
மறைந்தொழுகு மாந்தர் பலர். 278

मनतूतदु माशाह माणूडारू नीराडि
मरैंनूदोंषुहु मानूदरू पलरू.

नहा तीर्थ में ठाट से, रखते तापस भेस।
मिथ्याचारी हैं बहुत, हृदय शुद्ध नहिं लेश।। २७८

'तिरुक्कुरळू और हिन्दी के कवि' अध्याय में इस दोहे की तुलना कबीरदास के दोहे से की गई है।

கணைகொடிது யாழ்கோடு செவ்விதுஆங் கன்ன
வினைபடு பாலால் கொளல். 279

कणै कोंडिदु याषूकोडु शेंवूविदु आङ्गनून
विनैपडु पालालू कोंळलू.

टेढ़ी वीणा है मधुर, सीधा तीर कठोर।
वैसे ही कृति से परख, किसी साधु की कोर।। २७९

कृति—कार्य। परख—परीक्षा करना। कोर—श्रेणी।

மழித்தலும் நீட்டலும் வேண்டா உலகம்
பழித்தது ஒழித்து விடின். 280

मष़ितूतलुमू नीटूटलुमू वेणूडा उलहमू
पष़ितूतदु ओंष़ितूतु विडिनू.

साधक ने यदि तज दिया, जग-निन्दित सब काम।
उसको मुंडा या जटिल, बनना है बेकाम।। २८०

जटिल—जटाधारी। 'तिरुक्कुरळू और हिन्दी के कवि' अध्याय में इस दोहे की तुलना कबीरदास के दोहे से की गई है।

கள்ளாமை अस्तेय कळ्ळामै

எள்ளாமை வேண்டுவான் என்பான் எனைத்தொன்றும்
கள்ளாமை காக்கதன் நெஞ்சு. 281

ऍळ्ळामै वेण्डुवान् ऍन्बान् ऍनैत्तोंन्ड्रुम्
कळ्ळामै काक्क तन् नेंञ्जु.

निन्दित जीवन से अगर, इच्छा है बच जाय।
चोरी से पर-वस्तु की, हृदय बचाया जाय।। २८१

हृदय ... मन में चोरी करने का विचार ही न आने देना।

உள்ளத்தால் உள்ளலும் தீதே பிறன்பொருளைக்
கள்ளத்தால் கள்வேம் எனல். 282

उळ्ळत्ताल् उळ्ळलुम् तीदे पिऱन् पोंरुळैक्
कळ्ळत्ताल् कळ्वेम् ऍनल्.

चोरी से पर-संपदा, पाने का कुविचार।
लाना भी मन में बुरा, है यह पापाचार।। २८२

களவினால் ஆகிய ஆக்கம் அளவிறந்து
ஆவது போலக் கெடும். 283

कळविनाल् आहिय आक्कम् अळविऱन्दु
आवदु पोलक् कॅंडुम्.

चोरी-कृत धन में रहे, बढ़ने का आभास।
पर उसका सीमारहित, होता ही है नाश।। २८३

आभास—मिथ्या ज्ञान। देखने में ऐसा पर वास्तविक नहीं।
सीमारहित—बहुत अधिक, असीम।

**களவின்கண் கன்றிய காதல் விளைவின்கண்
வீயா விழுமம் தரும்.** **284**

कळविन्कण् कन्ड्रिय कादल् विळैविन्कण्
वीया विषुमम् तरुम्.

चोरी के प्रति लालसा, जो होती अत्यन्त।
फल पाने के समय पर, देती दुःख अनन्त।। २८४

**அருள்கருதி அன்புடைய ராதல் பொருள்கருதிப்
பொச்சாப்புப் பார்ப்பார்கண் இல்.** **285**

अरुळ् करुदि अन्बुडैयरादल् पॉरुळ् करुदिप्
पॉच्चाप्पुप् पार्प्पार् कण् इल्.

है गफ़लत की ताक में, पर-धन की है चाह।
दयाशीलता प्रेम की, लोभ न पकड़े राह।। २८५

गफ़लत—असावधानी। लोभ ... लोभी दयाशीलता और प्रेम के मार्ग पर न जायगा।

**அளவின்கண் நின்றொழுகல் ஆற்றார் களவின்கண்
கன்றிய காத லவர்.** **286**

अळविन्कण् निन्ड्रॊषुहल् आट्रार् कळविन्कण्
कन्ड्रिय कादलवर्.

चौर्य-कर्म प्रति है जिन्हें, रहती अति आसक्ति।
मर्यादा पर टिक उन्हें, चलने को नहिं शक्ति।। २८६

चौर्य—कर्म—चोरी करने का कार्य।

**களவென்னும் காரறி வாண்மை அளவென்னும்
ஆற்றல் புரிந்தார்கண் இல்.** **287**

कळवॆन्नुम् काररिवाण्मै अळवॆन्नुम्
आट्रल् पुरिन्दार्कण् इल्.

मर्यादा को पालते, जो रहते सज्ञान।
उनमें होता है नहीं, चोरी का अज्ञान।। २८७

அளவறிந்தார் நெஞ்சத் தறம்போல நிற்கும்
களவறிந்தார் நெஞ்சில் கரவு. 288

अळवरिऩ्दार् नॆञ्जत्तरम्पोल निऱ्कुम्
कळवरिऩ्दार् नॆञ्जिल् करवु.

ज्यों मर्यादा-पाल के, मन में स्थिर है धर्म।
त्यों प्रवंचना-पाल के, मन में वंचक कर्म।। २८८

पाल—पालन करनेवाला।

அளவல்ல செய்தாங்கே வீவர் களவல்ல
மற்றைய தேற்றா தவர். 289

अळवल्ल शॆय्दाङ्गे वीवर् कळवल्ल
मट्रैय तेट्रादवर्.

जिन्हें चौर्य को छोड़ कर, औ' न किसी का ज्ञान।
मर्यादा बिन कर्म कर, मिटते तभी अजान।। २८९

கள்வார்க்குத் தள்ளும் உயிர்நிலை கள்ளார்க்குத்
தள்ளாது புத்தே ளுலகு. 290

कळ्वार्क्कुत् तळ्ळुम् उयिर् निलै कळ्ळार्क्कुत्
तळ्ळादु पुत्तेळुलहु.

चोरों को निज देह भी, ढकेल कर दे छोड़।
पालक को अस्तेय व्रत, स्वर्ग न देगा छोड़।। २९०

வாய்மை सत्य **वाय्मै**

வாய்மை எனப்படுவது யாதெனின் யாதொன்றும்
தீமை இலாத சொலல். **291**

वाय्मै ऍनप्पडुवदु यादॅनिन् यादॉन्ड्रुम्
तीमै इलाद शॉलल्.

परिभाषा है सत्य की, वचन विनिर्गत हानि।
सत्य-कथन से अल्प भी, न हो किसी को ग्लानि।। २९१

பொய்ம்மையும் வாய்மை யிடத்த புரைதீர்ந்த
நன்மை பயக்கும் எனின். **292**

पॉय्म्मैयुम् वाय्मैयिडत्त पुरैतीर्न्द
नन्मै पयक्कुम् ऍनिन्.

मिथ्या-भाषण यदि करे, दोषरहित कल्याण।
तो यह मिथ्या-कथन भी, मानो सत्य समान।। २९२

मिथ्या—भाषण, कथन—झूठ बोलना।

தன்நெஞ் சறிவது பொய்யற்க பொய்த்தபின்
தன்நெஞ்சே தன்னைச் சுடும். **293**

तन्नॅञ्जरिवदु पॉय्यर्क पॉय्त्तपिन्
तन् नॅञ्जे तन्नैच् चुडुम्.

निज मन समझे जब स्वयं, झूठ न बोलें आप।
बोलें तो फिर आप को, निज मन दे संताप।। २९३

உள்ளத்தால் பொய்யா தொழுகின் உலகத்தார்
உள்ளத்து ளெல்லாம் உளன். **294**

उळ्ळत्ताल् पॉय्यादॉऴुहिन् उलहत्तार्
उळ्ळत्तुळॅल्लाम् उळन्.

मन से सत्याचरण का, जो करता अभ्यास।
जग के सब के हृदय में, करता है वह वास।। २९४

மனத்தொடு வாய்மை மொழியின் தவத்தொடு
தானஞ்செய் வாரின் தலை. **295**

मनत्तॊँडु वाय्मै मॊँषियिन् तवत्तॊँडु
तानञ् शॆँय्वारिन् तलै.

दान-पुण्य तप-कर्म भी, करते हैं जो लोग।
उनसे बढ़ हैं, हृदय से, सच बोलें जो लोग।। २९५

बढ़ हैं—बढ़ कर हैं, श्रेष्ठ हैं।

பொய்யாமை அன்ன புகழில்லை எய்யாமை
எல்லா அறமும் தரும். **296**

पॊँय्यामै अन्न पुहषिल्लै ऍय्यामै
ऍल्ला अऱमुम् तरुम्.

मिथ्या-भाषण त्याग सम, रहा न कीर्ति-विकास।
उससे सारा धर्म-फल, पाये बिना प्रयास।। २९६

பொய்யாமை பொய்யாமை ஆற்றின் அறம்பிற
செய்யாமை செய்யாமை நன்று. **297**

पॊँय्यामै पॊँय्यामै आट्रिन् अऱम्पिऱ
शॆँय्यामै शॆँय्यामै नन्ड्रु.

सत्य-धर्म का आचरण, सत्य-धर्म ही मान।
अन्य धर्म सब त्यागना, अच्छा ही है जान।। २९७

मान—मान कर। त्यागना—छोड़ देना।

புறந்தூய்மை நீரான் அமையும் அகந்தூய்மை
வாய்மையால் காணப்படும். **298**

पुरन्तूय्मै नीरान् अमैयुम् अहन्तूय्मै
वाय्मैयाल् काणप्पडुम्.

बाह्य-शुद्धता देह को, देता ही है तोय।
अन्तः करण-विशुद्धता, प्रकट सत्य से जोंय।। २९८

तोय—पानी। जोय—दिखाई पडे।

எல்லா விளக்கும் விளக்கல்ல சான்றோர்க்குப்
பொய்யா விளக்கே விளக்கு. **299**

ऍल्ला विळक्कुम् विळक्कल्ल शान्ड्रोर्क्कुप्
पोँय्या विळक्के विळक्कु.

दीपक सब दीपक नहीं, जिनसे हो तम-नाश।
सत्य-दीप ही दीप है, पावें साधु प्रकाश।। २९९

तम—नाश—अन्धकार दूर होना।

யாமெய்யாக் கண்டவற்றுள் இல்லை எனைத்தொன்றும்
வாய்மையின் நல்ல பிற. **300**

यामेँय्याक् कण्डवट्रुळ् इल्लै ऍनैत्तोँन्ड्रुम्
वाय्मैयिन् नल्ल पिऱ.

हमने अनुसन्धान से, जितने पाये तत्त्व।
उनमें कोई सत्य सम, पाता नहीं महत्व।। ३००

வெகுளாமை अक्रोध वेँहुळामै

செல்லிடத்துக் காப்பான் சினங்காப்பான் அல்லிடத்துக்
காக்கின்என் காவாக்கால் என். 301

शॆल्लिडत्तुक् काप्पान् शिनङ्काप्पान् अल्लिडत्तुक्
काक्किन् ऍन् कावाक्काल् ऍन्.

जहाँ चले वश क्रोध का, कर उसका अवरोध।
अवश क्रोध का क्या किया, क्या न किया उपरोध।। ३०१

अवश ... जिसका कुछ असर न पड़ेगा। वश चले—प्रभाव पड़ेगा। अवरोध, उपरोध—रोकना। क्रोध—गुस्सा।

செல்லா இடத்துச் சினந்தீது செல்லிடத்தும்
இல்அதனின் தீய பிற. 302

शॆल्ला इडत्तुच् चिनन्तीदु शॆल्लिडत्तुम्
इल् अदनिन् तीय पिऱ.

वश न चले जब क्रोध का, तब है क्रोध खराब।
अगर चले वश फिर वही, सबसे रहा खराब।। ३०२

மறத்தல் வெகுளியை யார்மாட்டும் தீய
பிறத்தல் அதனான் வரும். 303

मऱत्तल् वेँहुळियै यार् माट्टुम् तीय
पिऱत्तल् अदनान् वरुम्.

किसी व्यक्ति पर भी कभी, क्रोध न कर, जा भूल।
क्योंकि अनर्थों का वही, क्रोध बनेगा मूल।। ३०३

நகையும் உவகையும் கொல்லும் சினத்தின்
பகையும் உளவோ பிற. 304

नहैयुम् उवहैयुम् कॊल्लुम् शिनत्तिन्
पहैयुम् उळवो पिऱ.

हास और उल्लास को, हनन करेगा क्रोध।
उससे बढ़ कर कौन है, रिपु जो करे विरोध।। ३०४

हनन करेगा—मार डालेगा। रिपु—शत्रु।

**தன்னைத்தான் காக்கின் சினங்காக்க காவாக்கால்
தன்னையே கொல்லும் சினம். 305**

तन्नैत्तान् काक्किन् शिनङ्काक्क कावाक्काल्
तन्नैये कॊल्लुम् शिनम्.

रक्षा हित अपनी स्वयं, बचो क्रोध से साफ़।
यदि न बचो तो क्रोध ही, तुम्हें करेगा साफ़।। ३०५

करेगा साफ़—मिटा देगा।

**சினமென்னும் சேர்ந்தாரைக் கொல்லி இனமென்னும்
ஏமப் புணையைச் சுடும். 306**

शिनमॆन्नुम् शेर्न्दारैक् कॊल्लि इनमॆन्नुम्
एमप्पुणैयैच् चुडुम्.

आश्रित जन का नाश जो, करे क्रोध की आग।
इष्ट-बन्धु-जन-नाव को, जलायगी वह आग।। ३०६

नाव—दुःख सागर को पार करनेवाली नाव।

**சினத்தைப் பொருளென்று கொண்டவன் கேடு
நிலத்தறைந்தான் கைபிழையா தற்று. 307**

शिनत्तैप् पॊरुळॆन्ड्रु कॊण्डवन् केडु
निलत्तरैन्दान् कै पिऴैया दट्रु.

मान्य वस्तु सम क्रोध को, जो माने वह जाय।
हाथ मार ज्यों भूमि पर, चोट से न बच जाय।। ३०७

वह जाय—उसकी हानि होगी।

இணர்எரி தோய்வன்ன இன்னா செயினும்
புணரின் வெகுளாமை நன்று. 308

इणर् ऍरि तोय्वन्न इन्ना शॅयिनुम्
पुणरिन् वॅहुळामै नन्ड्रु.

अग्निज्वाला जलन ज्यों, किया अनिष्ट यथेष्ट।
फिर भी यदि संभव हुआ, क्रोध-दमन है श्रेष्ठ।। ३०८

किया अनिष्ट ... क्रुद्ध होने के लिए अत्यधिक बढ़ावा देने पर भी।

உள்ளிய தெல்லாம் உடனெய்தும் உள்ளத்தால்
உள்ளான் வெகுளி எனின். 309

उळ्ळियदॅल्लाम् उडनॅय्दुम् उळ्ळत्ताल्
उळ्ळान् वॅहुळि ऍनिन्.

जो मन में नहिं लायगा, कभी क्रोध का ख्याल।
मनचाही सब वस्तुएँ, उसे प्राप्य तत्काल।। ३०९

இறந்தார் இறந்தார் அனையர் சினத்தைத்
துறந்தார் துறந்தார் துணை. 310

इऱन्दार् इऱन्दार् अनैयर् शिनत्तैत्
तुऱन्दार् तुऱन्दार् तुणै.

जो होते अति क्रोधवश, हैं वे मृतक समान।
त्यागी हैं जो क्रोध के, त्यक्त-मृत्यु सम मान।। ३१०

त्यक्त-मृत्यु — मरण से मुक्त। क्रोधवश होनेवाले जीवनमृत हैं। क्रोध-त्यागी जीवनमुक्त हैं।

இன்னா செய்யாமை अहिंसा इनूना शैंयूयामै

சிறப்பு ஈனும் செல்வம் பெறினும் பிறர்க்குஇன்னா
செய்யாமை மாசற்றார் கோள். **311**

शिऱप्पु ईनुम् शैंल्वम् पैंऱिनुम् पिऱर्क्कु इनूना
शैंयूयामै माशट्रार् कोळ्.

तप-प्राप्त धन भी मिले, फिर भी साधु-सुजान।
हानि न करना अन्य की, मानें लक्ष्य महान।। ३११

धन—अणिमादि सिद्धि। हानि—बुराई।

கறுத்துஇன்னா செய்தவக் கண்ணும் மறுத்துஇன்னா
செய்யாமை மாசற்றார் கோள். **312**

करुत्तु इनूना शैंयूदवक्कणूणुम् मरुत्तु इनूना
शैंयूयामै माशट्रार् कोळ्.

बुरा किया यदि क्रोध से, फिर भी साधु-सुजान।
ना करना प्रतिकार ही, मानें लक्ष्य महान।। ३१२

प्रतिकार करना—बदला लेना।

செய்யாமல் செற்றார்க்கும் இன்னாத செய்தபின்
உய்யா விழுமம் தரும். **313**

शैंयूयामल् शैंट्राक्कुम् इनूनाद शैंयूदपिन्
उयूया विषुमम् तरुम्.

'बुरा किया कारण बिना', करके यही विचार।
किया अगर प्रतिकार तो, होगा दुःख अपार।। ३१३

இன்னாசெய் தாரை ஒறுத்தல் அவர்நாண
நன்னயம் செய்து விடல். **314**

इनूना शैंयूदारै ऒऱुत्तल् अवर् नाण
ननूनयम् शैंयूदुविडल्.

बुरा किया तो कर भला, बुरा भला फिर भूल।
पानी पानी हो रहा, बस उसको यह शूल।। ३१४

पानी पानी होना—लज्जित होना। शूल—पीडा, दर्द। बुरा भला ... उसने बुरा किया, फिर भी मैंने भला ही किया ऐसा भाव भी न रखना। 'तिरुवळ्ळुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में कबीरदास के दोहे से इसकी तुलना की गई है।

அறிவினான் ஆகுவ துண்டோ பிறிதின்நோய்
தந்நோய்போல் போற்றாக் கடை. 315

अऱिविनान् आहुवदुण्डो पिऱिदिन् नोय्
तन्नोय्पोल् पोट्राक्कडै.

माने महिं पर-दुःख को, यदि निज दुःख समान।
तो होता क्या लाभ है, रखते तत्वज्ञान।। ३१५

இன்னா எனத்தான் உணர்ந்தவை துன்னாமை
வேண்டும் பிறன்கண் செயல். 316

इन्ना ऍनतूतान् उणरून्दवै तुन्नामै
वेण्डुम् पिऱन्कण् शॅयल्.

कोई समझे जब स्वयं, बुरा फलाना कर्म।
अंन्यों पर उस कर्म को, नहीं करे, यह धर्म।। ३१६

எனைத்தானும் எஞ்ஞான்றும் யார்க்கும் மனத்தானாம்
மாணாசெய் யாமை தலை. 317

ऍनैतूतानुम् ऍञ्ञान्ड्रुम् यारुक्कुम् मनतूतानाम्
माणा शॅय्यामै तलै.

किसी व्यक्ति को अल्प भी, जो भी समय अनिष्ट।
मनपूर्वक करना नहीं, सबसे यही वरिष्ठ।। ३१७

अल्प—थोड़ा। अनिष्ट—बुराई, हानि। वरिष्ठ—श्रेष्ठ।

தன்னுயிர்க்கு இன்னாமை தானறிவான் என்கொலோ
மன்னுயிர்க்கு இன்னா செயல். 318

तन्नुयिर्क्कु इन्नामै तानरिवान् ऍन्कोंलो
मन्नुयिर्क्कु इन्ना शॅयल्.

जिससे अपना अहित हो, उसका है दृढ़ ज्ञान।
फिर अन्यों का अहित क्यों, करता है नादान।। ३१८

பிறர்க்குஇன்னா முற்பகல் செய்யின் தமக்குஇன்னா
பிற்பகல் தாமே வரும். 319

पिरर्क्कु इन्ना मुऱ्पहल् शॅय्यिन् तमक्कु इन्ना
पिऱ्पहल् तामे वरुम्.

दिया सबेरे अन्य को, यदि तुमने संताप।
वही ताप फिर साँझ को, तुमपर आवे आप।। ३१९

साँझ को— शाम को।

நோய்எல்லாம் நோய்செய்தார் மேலவாம் நோய்செய்யார்
நோயின்மை வேண்டு பவர். 320

नोय् ऍल्लाम् नोय्शॅय्दार् मेलवाम् नोय् शॅय्यार्
नोयिन्मै वेण्डुबवर्.

जो दुख देगा अन्य को, स्वयं करे दुख-भोग।
दुख-वर्जन की चाह से, दुःख न दें बुध लोग।। ३२०

दुख- वर्जन—दुःख से बचना।

கொல்லாமை वध—निषेध कॊॅलूलामै

அறவினை யாதெனில் கொல்லாமை கோறல்
பிறவினை எல்லாந் தரும். 321

अऱविनै यादेॅनिल् कॊॅल्लामै कोऱल्
पिऱविनै ऍल्लान् तरुम्.

धर्म-कृत्य का अर्थ है, प्राणी-वध का त्याग।
प्राणी-हनन दिलायगा, सर्व-पाप-फल-भाग।। ३२१

பகுத்துண்டு பல்லுயிர் ஓம்புதல் நூலோர்
தொகுத்தவற்றுள் எல்லாந் தலை. 322

पहुत्तुण्डु पल्लुयिर् ओम्बुदल् नूलोर्
तोहुत्तवट्रुळ् ऍल्लान् तलै.

खाना बाँट क्षुधार्त्त को, पालन कर सब जीव।
शास्त्रकार मत में यही, उत्तम नीति अतीव।। ३२२

क्षुधार्त्त—भूख से पीडित। बाँट—(भोजन को) बाँट कर।

ஒன்றாக நல்லது கொல்லாமை மற்றுஅதன்
பின்சாரப் பொய்யாமை நன்று. 323

ऑन्ड्राह नल्लदु कॊॅल्लामै मट्रु अदन्
पिन्शारप् पॊॅय्यामै नन्ड्रु.

प्राणी-हनन निषेध का, अद्वितीय है स्थान।
तदनन्तर ही श्रेष्ठ है, मिथ्या-वर्जन मान।। ३२३

तदनन्तर—उसके बाद। मिथ्या—वर्जन—झूठ न बोलना।

நல்லாறு எனப்படுவது யாதெனின் யாதொன்றும்
கொல்லாமை சூழும் நெறி. 324

नल्लाऱु ऍनप्पडुवदु यादेॅनिन् यादोॅन्ड्रुम्
कॊॅल्लामै शूऴुम् नॆॅऱि.

लक्षण क्या उस पंथ का, जिसको कहें सुपंथ।
जीव-हनन वर्जन करे, जो पथ वही सुपंथ।। ३२४

நிலைஅஞ்சி நீத்தாருள் எல்லாம் கொலைஅஞ்சிக்
கொல்லாமை சூழ்வான் தலை. 325

निलै अञ्जि नीत्तारुळ् ऍल्लाम् कॉलै अञ्जिक्
कॉल्लामै शूऴ्वान् तलै.

जीवन से भयभीत हो, जो होते हैं संत।
वध-भय से-वध त्याग दे, उनमें वही महंत।। ३२५

महंत—साधुओं में प्रधान।

கொல்லாமை மேற்கொண் டொழுகுவான் வாழ்நாள்மேல்
செல்லாது உயிருண்ணுங் கூற்று. 326

कॉल्लामै मेऱ्कॉण्डॉऴुहुवान् वाऴ्नाळ् मेल्
शॅल्लादु उयिरुण्णुङ् कूट्ऱु.

हाथ उठावेगा नहीं, जीवन-भक्षक काल।
उस जीवन पर, जो रहें, वध-निषेध-व्रत-पाल॥ ३२६

हाथ ... काल—यम उसको मारने नहीं आयेगा। वध ... पाल—जो जीव—वध न करने के व्रत का पालक है।

தன்னுயிர் நீப்பினும் செய்யற்க தான்பிறிது
இன்னுயிர் நீக்கும் வினை. 327

तन्नुयिर् नीप्पिनुम् शॅय्यऱ्क तान् पिऱिदु
इन्नुयिर् नीक्कुम् विनै.

प्राण-हानि अपनी हुई, तो भी हो निज धर्म।
अन्यों के प्रिय प्राण का, करें न नाशक कर्म।। ३२७

நன்றாகும் ஆக்கம் பெரிதெனினும் சான்றோர்க்குக்
கொன்றாகும் ஆக்கம் கடை. 328

ननूड्राहुम् आक्कम् पॅरिदॅनिनुम् शानूड्रोर्क्कुक्
कॉनूराहुम् आक्कम् कडै.

वध-मूलक धन प्राप्ति से, यद्यपि हो अति प्रेय।
संत महात्मा को वही, धन निकृष्ट है ज्ञेय।। ३२८

प्रेय — सांसारिक सुख — भोग। निकृष्ट — अधम, नीच।

கொலைவினைய ராகிய மாக்கள் புலைவினையர்
புன்மை தெரிவா ரகத்து. 329

कॉलै विनैयराहिय माक्कळ् पुलैविनैयर्
पुन्मै तॅरिवारहत्तु.

प्राणी-हत्या की जिन्हें, निकृष्टता का भान।
उनके मत में वधिक जन, हैं चण्डाल मलान।। ३२९

भान — ज्ञान। मलान — मैला।

உயிர்உடம்பின் நீக்கியார் என்ப செயிர்உடம்பின்
செல்லாத்தீ வாழ்க்கை யவர். 330

उयिर् उडॅम्बिन् नीक्कियार् ऍन्ब शॅयिर् उडम्बिन्
शॅल्लात्ती वाष्क्कै यवर्.

जीवन नीच दरिद्र हो, जिसका रुग्ण शरीर।
कहते बुध, उसने किया, प्राण-वियुक्त शरीर।। ३३०

रुग्ण — बीमार। बुध — बुद्धिमान। प्राण ... जीव वध। उसने किया — पूर्व जन्म में जो जीव — वध किया उसका फल बीमारी और दरिद्रता।

நிலையாமை अनित्यता निलैयामै

நில்லாத வற்றை நிலையின என்றுணரும்
புல்லறி வாண்மை கடை. 331

निलूलाद वट्रै निलैयिन ऍन्ड्रुणरुम्
पुलूलरिवाण्मै कडै.

जो हैं अनित्य वस्तुएँ, नित्य वस्तु सम भाव।
अल्पबुद्धिवश जो रहा, है यह नीच स्वभाव।। ३३१

கூத்தாட்டு அவைக்குழாத் தற்றே பெருஞ்செல்வம்
போக்கும் அதுவிளிந் தற்று. 332

कूतूताट्टु अवैक्कुषातूतट्रे पॅरुञ्चॅल्वम्
पोक्कुम् अदु विळिन्दट्रु.

रंग-भूमि में ज्यो जमे, दर्शक गण की भीड़।
जुड़े प्रचुर संपत्ति त्यों, छँटे यथा वह भीड़।। ३३२

तमाशा देखने के लिये धीरे धीरे लोग रंग भूमि में इकट्ठे हो जाते हैं। पर तमाशा समाप्त होने पर एकदम लोग चले जाते हैं। धन की भी यही हालत है। यही इस उपमा की विशेषता है।

அற்கா இயல்பிற்றுச் செல்வம் அதுபெற்றால்
அற்குப ஆங்கே செயல். 333

अरूका इयलूपिट्रुच् चॅलूवम् अदु पॅट्राल्
अरूकुप आङ्गे शॅयल्.

धन की प्रकृति अनित्य है, यदि पावे ऐश्वर्य।
तो करना तत्काल ही, नित्य धर्म सब वर्य।। ३३३

तत्काल – तुरन्त। वर्य – श्रेष्ठ।

நாளென ஒன்றுபோல் காட்டி உயிர்ஈரும்
வாளது உணர்வார்ப் பெறின். 334

नाळॅन ऑन्ड्रु पोल काट्टि उयिर् ईरुम्
वाळदु उणर्वार्प् पॅरिन्.

काल-मान सम भासता, दिन है आरी-दांत।
सोचो तो वह आयु को, चीर रहा दुर्दान्त।। ३३४

आरि—लकड़ी चीरने का बढ़ई का औज़ार। दुर्दान्त—अदमनीय।

நாச்செற்று விக்குள்மேல் வாராமுன் நல்வினை
மேற்சென்று செய்யப் படும். 335

नाच्चॅट्रु विक्कुळ् मेल् वारा मुन् नल् विनै
मेऱ् चॅन्ड्रु शॅय्यप्पडुम्.

जीभ बंद हो, हिचकियाँ लगने से ही पूर्व।
चटपट करना चाहिये, जो है कर्म अपूर्व।। ३३५

நெருநல் உளனொருவன் இன்றில்லை என்னும்
பெருமை உடைத்துஇவ் வுலகு. 336

नॅरुनल् उळनॊरुवन् इन्ड्रिल्लै ऍन्नुम्
पॅरुमै उडैत्तु इव्वुलहु.

कल जो था, बस, आज तो, प्राप्त किया पंचत्व।
पाया है संसार ने, ऐसा बड़ा महत्व।। ३३६

पंचत्व—मरण। 'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में महादेवी वर्मा की कविता से इसकी तुलना की गई है।

ஒருபொழுதும் வாழ்வது அறியார் கருதுப
கோடியும் அல்ல பல. 337

ऑरु पॊऴुदुम् वाऴ्वदु अरियार् करुदुप
कोडियुम् अल्ल पल.

अगले क्षण क्या जी रहें, इसक़ा है नहिं बोध।
चिंतन कोटिन, अनगिनत, करते रहें अबोध।। ३३७

குடம்பை தனித்துஒழியப் புள்பறந் தற்றே
உடம்போடு உயிரிடை நட்பு. 338

कुडंबै तनित्तु ऑ़ष़ियप् पुळ् पऱन्दट्ऱे.
उडम्बोडु उयिरिडै नट्पु.

अंडा फूट हुआ अलग, तो पंछी उड़ जाय।
वैसा देही-देह का, नाता जाना जाय।। ३३८

देही — देह का — आत्मा और शरीर का।

உறங்கு வதுபோலும் சாக்காடு உறங்கி
விழிப்பது போலும் பிறப்பு. 339

उऱङ्गुवदु पोलुम् शाक्काडु उऱङ्गि
विष़िप्पदु पोलुम् पिऱप्पु.

निद्रा सम ही जानिये, होता है देहान्त।
जगना सम है जनन फिर, निद्रा के उपरान्त।। ३३९

निद्रा — नींद। देहान्त — मरण। उपरान्त — बाद।

புக்கில் அமைந்தின்று கொல்லோ உடம்பினுள்
துச்சில் இருந்த உயிர்க்கு. 340

पुक्किल् अमैन्तिन्ड्रु कॉल्लो उडंबिनुळ्
तुच्चिल् इरुन्द उयिर्क्कु.

आत्मा का क्या है नहीं, कोई स्थायी धाम।
सो तो रहती देह में, भाड़े का सा धाम।। ३४०

துறவு संन्यास् तुरवु

யாதனின் யாதனின் நீங்கியான் நோதல்
அதனின் அதனின் இலன். **341**

यादनिन् यादनिन् नीङ्गियान् नोदल्
अदनिन् अदनिन् इलन्.

ज्यों ज्यों मिटती जायगी, जिस जिसमें आसक्ति
त्यों त्यों तद्गत दुःख से, मुक्त हो रहा व्यक्ति।। ३४१

तद्गत—उससे होनेवाले।

வேண்டின்உண் டாகத் துறக்க துறந்தபின்
ஈண்டுஇயற் பால பல. **342**

वेण्डिन् उण्डाहत्तुरक्क तुरन्दपिन्
ईण्डु इयरुपाल पल.

संन्यासी यदि बन गया, यहीं कई आनन्द।
संन्यासी बन समय पर, यदि होना आनन्द।। ३४२

यहीं—इस जन्म में ही। बन—तू बन।

அடல்வேண்டும் ஐந்தன் புலத்தை விடல்வேண்டும்
வேண்டிய எல்லாம் ஒருங்கு. **343**

अडल्वेण्डुम् ऐन्दन् पुलत्तै विडल् वेण्डुम्
वेण्डिय ऍल्लाम् ऒरुङ्गु.

दृढ़ता से करना दमन, पंचेद्रियगत राग।
उनके प्रेरक वस्तु सब, करो एकदम त्याग।। ३४४

இயல்பாகும் நோன்பிற்கொன்று இன்மை உடைமை
மயலாகும் மற்றும் பெயர்த்து. **344**

इयल्पाहुम नेन्बिरुकॊन्ड्रु इन्मै उडैमै
मयलाहुम् मट्रुम् पॆयरुत्तु.

सर्वसंग का त्याग ही, तप का है गुण-मूल।
बन्धन फिर तप भंग कर, बने अविद्या-मूल।। ३४४

மற்றும் தொடர்ப்பாடு எவன் கொல் பிறப்பறுக்கல்
உற்றார்க்கு உடம்பும் மிகை. **345**

मट्रुम् तॉॅडरप्पाडु ऍवन्कॉल् पिऱप्पऱुक्कल्
उट्राक्कु उडंबुम् मिहै.

भव-बन्धन को काटते, बोझा ही है देह।
फिर औरों से तो कहो, क्यों संबन्ध-सनेह।। ३४५

யான்எனது என்னும் செருக்கு அறுப்பான் வானோர்க்கு
உயர்ந்த உலகம் புகும். **346**

यान् ऍनदु ऍन्नुम् शॅरुक्कु अऱुप्पान् वानोर्क्कु
उयर्न्द उलहम् पुहुम्.

अहंकार ममकार को, जिसने किया समाप्त।
देवों को अप्राप्य भी, लोक करेगा प्राप्त।। ३४६

लोक—मोक्ष लोक।

பற்றி விடாஅ இடும்பைகள் பற்றினைப்
பற்றி விடாஅ தவர்க்கு. **347**

पट्रि विडा अ इडुम्बैहळ् पट्रिनैप्
पट्रि विडाअ दवर्क्कु.

अनासक्त जो ना हुए, पर हैं अति आसक्त।
उनको लिपटें दुःख सब, और करें नहिं त्यक्त।। ३४७

தலைப்பட்டார் தீரத் துறந்தார் மயங்கி
வலைப்பட்டார் மற்றை யவர். **348**

तलैप्पट्टार् तीरत्तुरन्दार् मयङ्गि
वलैप्पट्टार् मट्रैयवर्.

पूर्ण त्याग से पा चुके, मोक्ष-धाम वे धन्य।
भव-बाधा के जाल में, फँसें मोह-वश अन्य।। ३४८

பற்றற்ற கண்ணே பிறப்பறுக்கும் மற்று
நிலையாமை காணப் படும். 349

पट्रट्र कणूणे पिऱप्पऱुक्कुम् मट्रु
निलैयामै काणप्पडुम्.

मिटते ही आसक्ति के, होगी भव से मुक्ति।
बनी रहेगी अन्यथा, अनित्यता की भुक्ति।। ३४९

பற்றுக பற்றற்றான் பற்றினை அப்பற்றைப்
பற்றுக பற்று விடற்கு. 350

पट्रुह पट्ट्रान् पट्रिनै अप्पट्रैप्
पट्रुह पट्रु विडऱ्कु.

वीतराग के राग में, हो तेरा अनुराग।
सुदृढ उसी में रागना, जिससे पाय विराग।। ३५०

रागना – अनुरक्त होना।

அதிகாரம் - 36 अध्याय – ३६ துறவறவியல் सन्यास – धर्म

மெய்யுணர்தல् तत्वज्ञान मॆय्युणर्दल्

பொருளல்ல வற்றைப் பொருளென்று உணரும்
மருளானும் மாணாப் பிறப்பு. 351

पॊरुळल्ल वट्रैप् पॊरुळॆन्ड्रु उणरुम्
मरुळानाम् माणाप पिऱप्पु.

मिथ्या में जब सत्य का, होता भ्रम से भान।
देता है भव-दुःख को, भ्रममूलक वह ज्ञान।। ३५१

இருள் நீங்கி இன்பம் பயக்கும் மருள் நீங்கி
மாசறு காட்சி யவர்க்கு. **352**

इरुळ् नीङ्गि इन्बम् पयक्कुम् मरुळ् नीङ्गि
माशऱु काट्चियवर्क्कु.

मोह-मुक्त हो पा गये, निर्मल तत्वज्ञान।
भव-तम को वह दूर कर, दे आनन्द महान।। ३५२

हो — हो कर। भव — तम — सांसारिक जीवन का अन्धकार।

ஐயத்தின் நீங்கித் தெளிந்தார்க்கு வையத்தின்
வானம் நணிய துடைத்து. **353**

ऐयत्तिन् नीङ्गित् तॅंळिन्दार्क्कु वैयत्तिन्
वानम् नणियदुडैत्तु.

जिसने संशय-मुक्त हो, पाया ज्ञान-प्रदीप।
उसको पृथ्वी से अधिक, रहता मोक्ष समीप।। ३५३

संशय — मुक्त — संदेह दूर होना। ऐसा संदेह कि ईश्वर है या नहीं, पाप — पुण्य कर्मों का फल होगा या नहीं, आदि।

ஐயுணர்வு எய்தியக் கண்ணும் பயமின்றே
மெய்யுணர்வு இல்லா தவர்க்கு. **354**

ऐयुणर्वु ऍय्दियक्कण्णुम् पयमिन्ड्रे
मॅंय्युणर्वु इल्लादवर्क्कु

वशीभूत मन हो गया, हुई धारणा सिद्ध।
फिर भी तत्वज्ञान बिन, फल होगा नहिं सिद्ध।। ३५४

எப்பொருள் எத்தன்மைத் தாயினும் அப்பொருள்
மெய்ப்பொருள் காண்பது அறிவு. **355**

ऍप्पोरुळ् ऍत्तन्मैत्तायिनुम् अप्पोरुळ्
मॅंय्प्पोरुळ् काण्पदु अऱिवु.

किसी तरह भी क्यों नहीं, भासे अमुक पदार्थ।
तथ्य-बोध उस वस्तु का, जानो ज्ञान यथार्थ।। ३५५

तथ्य – यथार्थता। सचाई।

கற்றீண்டு மெய்ப்பொருள் கண்டார் தலைப்படுவர்
மற்றீண்டு வாரா நெறி. **356**

कट्रीण्डु मॆय्प्पॊरुळ् कण्डार् तलैप्पडुवर्
मट्रीण्डु वारा नॆऱि.

जिसने पाया श्रवण से, यहीं तत्व का ज्ञान।
मोक्ष-मार्ग में अग्रसर, होता वह धीमान।। ३५६

श्रवण से – गुरुजनों का उपदेश सुन कर। धीमान – बुद्धिमान।

ஓர்த்துள்ளம் உள்ளது உணரின் ஒருதலையாப்
பேர்த்துள்ள வேண்டா பிறப்பு. **357**

ओर्त्तुळ्ळम् उळ्ळदु उणरिन् ऒरु तलैयाप्
पेर्त्तुळ्ळ वेण्डा पिऱप्पु.

उपदेशों को मनन कर, सत्य-बोध हो जाय।
पुनर्जन्म की तो उन्हें, चिन्ता नहिं रह जाय।। ३५७

பிறப்பென்னும் பேதைமை நீங்கச் சிறப்பென்னும்
செம்பொருள் காண்பது அறிவு. **358**

पिऱप्पॆन्नुम् पेदैमै नीङ्गच् चिऱप्पॆन्नुम्
शॆम्पॊरुळ् काण्पदु अऱिवु.

जन्म-मूल अज्ञान है, उसके निवारणार्थ।।
मोक्ष-मूल परमार्थ का, दर्शन ज्ञान यथार्थ।। ३५८

சார்புணர்ந்து சார்பு கெடஒழுகின் மற்றழித்துச்
சார்தரா சார்தரு நோய். **359**

शारुपुणर्न्दु शारुपु कॆंड ओऴुहिन् मट्रऴितुतुच्
चारदरा शारुतरु नोय्.

जगदाश्रय को समझ यदि, बनो स्वयं निर्लिप्त।
नाशक भावी दुःख सब, करें कभी नहिं लिप्त।। ३५९

निर्लिप्त—किसी विषय में आसक्त न होना। नहिं लिप्त—लीन नहीं होना पड़ेगा (दुःख में)।

காமம் வெகுளி மயக்கம் இவைமூன்றன்
நாமம் கெடக்கெடும் நோய். **360**

कामम् वॆंहुळि मयक्कम् इवै मूनूड्रनू
नामम् कॆंडक् कॆंडुम् नोय्.

काम क्रोध औ' मोह का न हो नाम का योग।
तीनों के मिटते, मिटे, कर्म-फलों का रोग।। ३६०

न हो नाम का योग—नाम मात्र भी न हो।

அதிகாரம்-37 अध्याय—३७ துறவறவியல் सन्यास—धर्म

அவா அறுத்தல் तृष्णा का उन्मूलन अवा अरुतुतल्

அவாஎன்ப எல்லா உயிர்க்குமெஞ் ஞான்றும்
தவாஅப் பிறப்பீனும் வித்து. **361**

अवा ऍन्ब ऍल्ला उयिर्क्कुम् ऍञ्ञान्ड्रुम्
तवा अपुपिरपुपीनुम् वितुतु.

सर्व जीव को सर्वदा, तृष्णा-बीज अचूक।
पैदा करता है वही, जन्म-मरण की हूक।। ३६१

सर्वदा—हमेशा। तृष्णा—लोभ। हूक—पीड़ा, दुःख।

வேண்டுங்கால் வேண்டும் பிறவாமை மற்றது
வேண்டாமை வேண்ட வரும். 362

वेण्डुङ्गाल् वेण्डुम् पिऱवामै मट्रदु
वेण्डामै वेण्ड वरुम्.

जन्म-नाश की चाह हो, यदि होनी है चाह।
चाह-नाश की चाह से, पूरी हो वह चाह।। ३६२

अनुवाद के संबंध में ' अध्याय में इसका उल्लेख हुआ है।

வேண்டாமை அன்ன விழுச்செல்வம் ஈண்டில்லை
யாண்டும் அஃதொப்பது இல். 363

वेण्डामै अन्न विऴुच्चॆल्वम् ईण्डिल्लै
याण्डुम् अह्दॊप्पदु इल्.

तृष्णा-त्याग सदृश नहीं, यहाँ श्रेष्ठ धन-धाम।
स्वर्ग-धाम में भी नहीं, उसके सम धन-धाम।। ३६३

தூஉய்மை என்பது அவாவின்மை மற்றது
வாஅய்மை வேண்ட வரும். 364

तू उय्मै ऍन्बदु अवाविन्मै मट्रदु
वा अय्मै वेण्ड वरुम्.

चाह गई तो है वही, पवित्रता या मुक्ति।
करो सत्य की चाह तो, होगी चाह-विमुक्ति।। ३६४

सत्य — परब्रह्म। “ तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि ' अध्याय में कबीरदास के दोहे से इसकी तुलना की गई है।

அற்றவர் என்பார் அவாஅற்றார் மற்றையார்
அற்றாக அற்றது இலர். **365**

अट्रवर् एन्बार् अवा अट्रार् मट्रैयार
अट्राह अट्रदु इलर्.

कहलाते वे मुक्त हैं, जो हैं तृष्णा-मुक्त।
सब प्रकार से, अन्य सब, उतने नहीं विमुक्त।।। ३६५

அஞ்சுவ தோரும் அறனே ஒருவனை
வஞ்சிப்ப தோரும் அவா. **366**

अंजुवदोरुम् अऱने ओँरुवनै
वंजिप्पदोरुम् अवा.

तृष्णा से डरते बचे, है यह धर्म महान।
न तो फँसाये जाल में, पा कर असावधान।। ३६६

அவாவினை ஆற்ற அறுப்பின் தவாவினை
தான்வேண்டு மாற்றான் வரும். **367**

अवाविनै आट्र अरुप्पिन् तवा विनै
तान् वेण्डुमाट्रान् वरुम्.

तृष्णा को यदि कर दिया, पूरा नष्ट समूल।
धर्म-कर्म सब आ मिले, इच्छा के अनुकूल।। ३६७

அவா இல்லார்க் கில்லாகுந் துன்பம்அஃ துண்டேல்
தவாஅது மேன்மேல் வரும். **368**

अवा इल्लारूक्किल्लाहुन् तुन्बम् अह्दुण्डेल्
तवा अदु मेन्मेल् वरुम्.

तृष्णा-त्यागी को कभी, होगा ही नहिं दुःख।
तृष्णा के वश यदि पड़े, होगा दुःख पर दुःख।। ३६८

இன்பம் இடையறா தீண்டும் அவாவென்னும்
துன்பத்துள் துன்பங் கெடின். **369**

इन्बम् इडैयरादीण्डुम् अवावेँन्नुम्
तुन्बत्तुळ् तुन्बङ् कैँडिन्.

तृष्णा का यदि नाश हो, जो है दुःख कराल।
इस जीवन में भी मनुज, पावे सुख चिरकाल।। ३६९

कराल—भयानक।

ஆரா இயற்கை அவாநீப்பின் அந்நிலையே
பேரா இயற்கை தரும். **370**

आरा इयऱ्कै अवा नीप्पिन् अन्निलैये
पेरा इयऱ्कै तरुम्.

तृष्णा को त्यागो अगर, जिसकी कभी न तुष्टि।
वही दशा दे मुक्ति जो, रही सदा सन्तुष्टि।। ३७०

तुष्टि, सन्तुष्टि—तृप्ति।

प्रारब्ध – नियति, भाग्य। आगाम्य और संचित कर्मों के फल तपस्या के बल और ज्ञान – प्राप्ति से टाले जा सकते हैं। परन्तु प्रारब्ध कर्मों का फल अवश्य भोगना ही पड़ता है। मूल ग्रन्थ में इसी आशय का विशेष शब्द ' ऊष़ ' अध्याय के शीर्षक में प्रयुक्त हुआ है।

ஆகூழால் தோன்றும் அசைவின்மை கைப்பொருள்
போகூழால் தோன்றும் மடி. **371**

आकूष़ाल् तोन्ड्रुम् अशैविन्मै कैप्पोरुळ्
पोकूषाल् तोन्ड्रुम् मडि.

अर्थ-वृद्धि के भाग्य से, हो आलस्य-अभाव।
अर्थ-नाश के भाग्य से, हो आलस्य स्वभाव।। ३७१

பேதைப் படுக்கும் இழவூழ் அறிவகற்றும்
ஆகலூழ் உற்றக் கடை. **372**

पेदैप्पडुक्कुम् इष़वूष़ अऱिवहट्रुम्
आहलूष़् उट्रक्कडै.

अर्थ-क्षयकर भाग्य तो, करे बुद्धि को मन्द।
अर्थ-वृद्धिकर भाग्य तो, करे विशाल अमन्द।। ३७२

நுண்ணிய நூல்பல கற்பினும் மற்றுந்தன்
உண்மை அறிவே மிகும். **373**

नुण्णिय नूल्पल कऱ्पिनुम् मट्रुन् तन्
उण्मै अऱिवे मिहुम्.

गूढ शास्त्र सीखें बहुत, फिर भी अपना भाग्य।
मन्द बुद्धि का हो अगर, हावी मांद्य अभाग्य।। ३७३

मांद्य — मन्द होने का भाव। हावी — विजयी होगा।

இருவேறு உலகத்து இயற்கை திருவேறு
தெள்ளிய ராதலும் வேறு. 374

इरुवेरु उलहत्तु इयर्कै तिरुवेरु
तॅळ्ळियरादलुम् वेरु.

जगत-प्रकृति है नियतिवश, दो प्रकार से भिन्न।
श्रीयुत होना एक है, ज्ञान-प्राप्ति है भिन्न।। ३७४

नियतिवश — भाग्य के कारण। श्रीयुत — धनवान।

நல்லவை எல்லாஅந் தீயவாம் தீயவும்
நல்லவாம் செல்வம் செயற்கு. 375

नल्लवै ऍल्लाअन् तीयवाम् तीयवुम्
नल्लवाम् शॅल्वम् शॅयऱ्कु.

धन अर्जन करत समय, विधिवश यह हो जाय।
बुरा बनेगा सब भला, बुरा भला बन जाय।। ३७५

अर्जन करना — कमाना।

பரியினும் ஆகாவாம் பாலல்ல உய்த்துச்
சொரியினும் போகா தம. 376

परियिनुम् आहावाम् पालल्ल उय्त्तुच्
चॊरियिनुम् पोहा तम.

कठिन यत्न भी ना रखे, जो न रहा निज भाग।
निकाले नहीं निकलता, जो है अपने भाग।। ३७६

भाग — भाग्य। ना रखे — सुरक्षित न कर सके। निकाले नहीं निकलता — न चाहने पर भी न छोड़ता।

வகுத்தான் வகுத்த வகையல்லால் கோடி
தொகுத்தார்க்கும் துய்த்தல் அரிது. 377

वहुत्तान् वहुत्त वहैयल्लाल् कोडि
तोँहुत्तार्क्कुम् तुय्त्तल् अरिदु.

भाग्य-विधायक के किये, बिना भाग्य का योग।
कोटि चयन के बाद भी, दुर्लभ है सुख-भोग।। ३७७

चयन — संग्रह, इकट्ठा करना।

துறப்பார்மன் துப்புர வில்லார் உறற்பால
ஊட்டா கழியும் எனின் 378

तुऱप्पार्मन् तुप्पुरविल्लार् उऱऱ्पाल
ऊट्टा कऴियुम् ऍनिन्.

दुःख बदे जो हैं उन्हें, यदि न दिलावें दैव।
सुख से वंचित दीन सब, बनें विरक्त तदैव।। ३७८

सुख से ... तदैव — ऐसे लोग विरक्त हो जायेंगे। परन्तु ऐसा नहीं होता। क्योंकि विधि के कारण अब भी उनमें आशा है। न दिलावे — आशा न दिलावे।

நன்றாங்கால் நல்லவாக் காண்பவர் அன்றாங்கால்
அல்லற் படுவ தெவன். 379

नन्ड्राङ्गाल् नल्लवाक् काणूबवर् अन्ड्राङ्गाल्
अल्लर् पडुवदॆवन्.

रमता है सुख-भोग में, फल दे जब सत्कर्म।
गड़बड़ करना किसलिये, फल दे जब दुष्कर्म।। ३७९

ஊழிற் பெருவலி யாவுள மற்றொன்று
சூழினுந் தான்முந் துறும். 380

ऊषिर् पॅरुवलि यावुळ मट्रॊन्ड्रु
शूषिनुन् तान् मुन्दुरुम्.

बढ़ कर भी प्रारब्ध से, क्या है शक्ति महान।
जयी वही उसपर अगर, चाल चलावे आन।। ३८०

आन – अन्य।

धर्म – कांड समाप्त।

பொருட்பால்

पॊरुट्पाल्

अर्थ-कांड

கற்க கசடறக் கற்பவை கற்றபின்
நிற்க அதற்குத் தக.

करृक कशडृरक् करृपवै कट्रपिन् 391
निरृक अदरृकुत् तह.

सीख सीखने योग्य सब, ३९१
भ्रम संशय बिन सीख ।
कर उसके अनुसार फिर,
योग्य आचरण ठीक ॥

இறைமாட்சி महीश — महिमा इऱैमाट्चि

படைகுடி கூழ்அமைச்சு நட்பரண் ஆறும்
உடையான் அரசருள் ஏறு. 381

पडै कुडि कूष् अमैच्चु नट्परण् आऱुम्
उडैयान् अरशरुळ् एऱु.

सैन्य राष्ट्र धन मित्रगण, दुर्ग अमात्य षडंग।
राजाओं में सिंह है, जिसके हों ये संग।। ३८१

षडंग — छे अंग। 'अनुवाद के संबंध में' अध्याय में इसका उल्लेख है।

அஞ்சாமை ஈகை அறிவூக்கம் இந்நான்கும்
எஞ்சாமை வேந்தர்க் கியல்பு 382

अञ्जामै ईहै अऱिवूक्कम् इन्नान्गुम्
ऍञ्जामै वेन्दर्क्कियल्पु.

दानशीलता निडरपन, बुद्धि तथा उत्साह।
इन चारों से पूर्ण हो, स्वभाव से नरनाह।। ३८२

नरनाह — नरनाथ, राजा।

தூங்காமை கல்வி துணிவுடைமை இம்மூன்றும்
நீங்கா நிலனாள் பவர்க்கு. 383

तूङ्गामै कल्वि तुणिवुडैमै इम्मून्ड्रुम्
नीङ्गा निलनाळ्पवर्क्कु.

धैर्य तथा अविलंबना, विद्या भी हो साथ।
ये तीनों भू पाल को, कभी न छोड़ें साथ।। ३८३

அறனிழுக்கா தல்லவை நீக்கி மறனிழுக்கா
மானம் உடைய தரசு 384

अऱनिषुक्का दल्लवै नीक्कि मऱनिषुक्का
मानम् उडैयदरशु.

राजधर्म से च्युत न हो, दूर अधर्म निकाल।
वीरधर्म से च्युत न हो, मानी वही नृपाल।। ३८४

नृपाल — राजा। च्युत न हो — न हट कर।

இயற்றலும் ஈட்டலும் காத்தலும் காத்த
வகுத்தலும் வல்ல தரசு. **385**

इयट्र्लुम् ईट्टलुम् कात्तलुम् कात्त
वहुत्तलुम् वल्लदरशु.

कर उपाय धन-वृद्धि का, अर्जन भी कर खूब।
रक्षण, फिर विनियोग में, सक्षम जो वह भूप।। ३८५

காட்சிக் கெளியன் கடுஞ்சொல்லன் அல்லனேல்
மீக்கூறும் மன்னன் நிலம். **386**

काट्चिक् कॆॅळियन् कडुञ्चॊॅल्लन् अल्लनेल्
मीक्कूरुम् मन्नन् निलम्.

दर्शन जिसके सुलभ हैं, और न वचन कठोर।
ऐसे नृप के राज्य की, शंसा हो बरजोर।। ३८६

शंसा — प्रशंसा। बरजोर — प्रबल।

இன்சொலால் ஈத்தளிக்க வல்லார்க்குத் தன்சொலால்
தான்கண் டனைத்திவ் வுலகு. **387**

इन्शॊॅलाल् ईत्तळिक्क वल्लार्क्कुत्तन् शॊॅलाल्
तान् कण्डनैत् तिव् वुलहु.

जो प्रिय वचयुत दान कर, ढोता रक्षण-भार।
बनता उसके यश सहित, मनचाहा संसार।। ३८७

प्रिय वचयुत — मीठी बातें करते हुए।

முறைசெய்து காப்பாற்றும் மன்னவன் மக்கட்கு
இறையென்று வைக்கப் படும். 388

मुरै शॅयुदु काप्पाट्रुम् मन्नवन् मक्कट्कु
इरैयॅन्ड्रु वैक्कप्पडुम्.

नीति बरत कर भूप जो, करता है जन-रक्ष।
प्रजा मानती है उसे, ईश-तुल्य प्रत्यक्ष।। ३८८

नीति बरत कर — नीति पूर्ण व्यवहार कर।

செவிகைப்பச் சொற்பொறுக்கும் பண்புடை வேந்தன்
கவிகைக்கீழ்த் தங்கும் உலகு. 389

शॅवि कैप्पच् चॉर्पॉरुक्कुम् पण्पुडै वेन्दन्
कविकैक् कीष़त्तङ्गुम् उलहु.

जिस नृप में वच कर्ण कटु, सहने का संस्कार।
उसकी छत्रच्छाँह में, टिकता है संसार।। ३८९

वच कर्ण कटु — सुनने में जो बातें कड़वी होती हैं।

கொடையளி செங்கோல் குடியோம்பல் நான்கும்
உடையானாம் வேந்தர்க் கொளி. 390

कॉडैयळि शॅङ्कोल् कुडियोम्बल् नान्गुम्
उडैयानाम् वेन्दर्क्कॉळि.

प्रजा-सुरक्षण प्रिय वचन, तथा सुशासन दान।
इन चारों से पूर्ण नृप, महीप-दीप समान।। ३९०

महीप — दीप — राजाओं के लिये दीपक।

கல்வி शिक्षा कल्वि

கற்க கசடறக் கற்பவை கற்றபின்
நிற்க அதற்குத் தக. **391**

करूक कशडरक् करूपवै कट्रपिन्
निरूक अदरुकुत् तह.

सीख सीखने योग्य सब, भ्रम संशय बिन सीख।
कर उसके अनुसार फिर, योग्य आचरण ठीक।। ३९१

' अनुवाद के संबंध में ' अध्याय में इस दोहे का उल्लेख है।

எண்ணென்ப ஏனை எழுத்தென்ப இவ்விரண்டும்
கண்ணென்ப வாழும் உயிர்க்கு. **392**

ऍण्णॆन्ब एनै ऍष़ुत्तॆन्ब इव्विरण्डुम्
कण्णॆन्ब वाष़ुम् उयिर्क्कु.

अक्षर कहते हैं जिसे, जिसको कहते आँक।
दोनों जीवित मनुज के, कहलाते हैं आँख।। ३९२

आंक— अंक, संख्या का चिन्ह।

கண்ணுடையர் என்பவர் கற்றோர் முகத்திரண்டு
புண்ணுடையர் கல்லா தவர். **393**

कणूणुडैयर् ऍन्बवर् कट्रोर् मुहत्तिरण्डु
पुणूणुडैयर् कल्लादवर्.

कहलाते हैं नेत्रयुत, जो हैं विद्यावान।
मुख पर रखते घाव दो, जो हैं अपढ अजान।। ३९३

உவப்பத் தலைக்கூடி உள்ளப் பிரிதல்
அனைத்தே புலவர் தொழில். **394**

उवप्पत् तलैक्कूडि उळ्ळप्पिरिदल्
अनैत्ते पुलवर् तॊष़िल्.

हर्षप्रद होता मिलन, चिन्ताजनक वियोग।
विद्वज्जन का धर्म है, ऐसा गुण-संयोग।। ३९४

'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में तुलसीदास की कविता से इसकी तुलना हुई है।

உடையார்முன் இல்லார்போல் ஏக்கற்றுங் கற்றார்
கடையரே கல்லா தவர். 395

उडैयार् मुन् इल्लार्पोल् एक्कट्रुङ् कट्रार्
कडैयरे कल्लादवर्.

धनी समक्ष दरिद्र सम, झुक झुक हो कर दीन।
शिक्षित बनना श्रेष्ठ है, निकृष्ट विद्याहीन।। ३९५

दीन—गुरु के सामने दीन हो कर।

தொட்டனைத் தூறும் மணற்கேணி மாந்தர்க்குக்
கற்றனைத் தூறும் அறிவு. 396

तॊट्टनैत्तूरुम् मणरूकेणि मान्दर्क्कुक्
कट्रनैत्तूरुम् अरिवु.

जितना खोदो पुलिन में, उतना नीर-निकास।
जितना शिक्षित नर बने, उतना बुद्धि-विकास।। ३९६

पुलिन—नदी में पानी के सूखने पर निकला हुआ रेतिला भाग। निकास—निकासी, उद्‌गम। नीर—निकास—पानी का निकलना।

யாதானும் நாடாமால் ஊராமால் என்னொருவன்
சாந்துணையுங் கல்லாத வாறு. 397

यादानुम् नाडामाल् ऊरामाल् एन्नॊरुवन्
शान्तुणैयुम् कल्लाद वारु.

अपना है विद्वान का, कोई पुर या राज।
फिर क्यों रहता मृत्यु तक, कोई अपढ़ अकाज।। ३९७

ஒருமைக்கண் தான்கற்ற கல்வி ஒருவற்கு
எழுமையும் ஏமாப் புடைத்து.　　398

ओॅरुमैक्कण् तान् कट्र् कल्वि ओॅरुवर्कु
ऍषुमैयुम् एमापपुडैत्तु.

जो विद्या इक जन्म में, नर से पायी जाय।
सात जन्म तक भी उसे, करती वही सहाय।।　　३९८

தாமின் புறுவது உலகின் புறக்கண்டு
காமுறுவர் கற்றறிந் தார்.　　399

तामिन्बुरुवदु उलहिन्बुरक्कण्डु
कामुरुवर् कट्रिन्दार्.

हर्ष हेतु अपने लिये, वैसे जग हित जान।
उस विद्या में और रत, होते हैं विद्वान।।　　३९९

जान — जान कर। रत होना — आसक्त होना।

கேடில் விழுச்செல்வம் கல்வி ஒருவற்கு
மாடல்ல மற்றை யவை.　　400

केडिल् विषुच्चॅल्वम् कल्वि ओॅरुवर्कु
माडल्ल मट्रैयवै.

शिक्षा-धन है मनुज हित, अक्षय और यथेष्ट।
अन्य सभी संपत्तियाँ, होती हैं नहिं श्रेष्ठ।।　　४००

मनुज हित — आदमी के लिये। अक्षय — जो नष्ट नहीं होता।

கல்லாமை अशिक्षा कल्लामै

அரங்கின்றி வட்டாடி யற்றே நிரம்பிய
நூலின்றிக் கோட்டி கொளல். 401

अरङ्गिन्ड्रि वट्टाडियट्रे निरम्बिय
नूलिन्ड्रिक् कोट्टि कॉळल्.

सभा-मध्य यों बोलना, बिना पढे सदग्रन्थ।
है पासे का खेल ज्यों, बिन चौसर का बंध।। ४०१

கல்லாதான் சொற்கா முறுதல் முலையிரண்டும்
இல்லாதாள் பெண்காமுற் றற்று. 402

कल्लादान् शॉर्‌् कामुरुदल् मुलैयिरण्डुम्
इल्लादाळ् पॅण् कामुट्रट्रु.

यों है अपढ़ मनुष्य की, भाषण-पटुता-चाह।
ज्यों दोनों कुचरहित की, स्त्रीत्व-भोग की चाह।। ४०२

भाषण ... बोलने में समर्थ होने की चाह। कुच — स्तन।

கல்லா தவரும் நனிநல்லர் கற்றார்முன்
சொல்லா திருக்கப் பெறின். 403

कल्लादवरुम् ननि नल्लर् कट्रार् मुन्
शॉल्लादिरुक्कप् पॅरिन्.

अपढ़ लोग भी मानिये, उत्तम गुण का भौन।
विद्वानों के सामने, यदि साधेंगे मौन।। ४०३

भौन — भवन, घर। साधेंगे मौन — चुप रहेंगे।

கல்லாதான் ஒட்பம் கழியநன் றாயினும்
கொள்ளார் அறிவுடை யார். 404

कल्लादान् ऑट्पम् कषिय नन्ड्रायिनुम्
कॉळ्ळार् अरिवुडैयार्.

बहुत श्रेष्ठ ही क्यों न हो, कभी मूर्ख का ज्ञान।
विद्वज्जन का तो उसे, नहीं मिलेगा मान।। ४०४

मान—स्वीकृति, सम्मति।

கல்லா ஒருவன் தகைமை தலைப்பெய்து
சொல்லாடச் சோர்வு படும். 405

कल्ला ओंरुवन् तहैमै तलैप्पॆय्दु
शोॅल्लाडच् चोर्वु पडुम्.

माने यदि कोई अपढ़, बुद्धिमान ही आप।
मिटे भाव वह जब करें, बुध से वार्त्तालाप।। ४०५

बुध ... बुद्धिमान से बातचीत।

உளரென்னும் மாத்திரையர் அல்லால் பயவாக்
களரனையர் கல்லா தவர். 406

उळरॆन्नुम् मात्तिरैयर् अल्लाल् पयवाक्
कळरनैयर् कल्लादवर्.

जीवित मात्र रहा अपढ़, और न कुछ वह, जान।
उत्पादक जो ना रही, ऊसर भूमि समान।। ४०६

जान—तू जान।

நுண்மாண் நுழைபுலம் இல்லான் எழில்நலம்
மண்மாண் புனைபாவை யற்று. 407

नुण्माण् नुऴैपुलम् इल्लान् ऍऴिल् नलम्
मण्माण् पुनै पावैयट्रु.

सूक्ष्म बुद्धि जिसकी नहीं, प्रतिभा नहीं अनूप।
मिट्टी की सुठि मूर्ति सम, उसका खिलता रूप।। ४०७

प्रतिभा—असाधारण बुद्धि—बल। अनूप—अनुपम। सुठि—सुन्दर।

நல்லார்கண் பட்ட வறுமையின் இன்னாதே
கல்லார்கண் பட்ட திரு. 408

नल्लार् कण् पट्ट वरुमैयिन् इन्नादे
कल्लार् कण् पट्ट तिरु.

शिक्षित के दारिद्रय से, करती अधिक विपत्ति।
मूर्ख जनों के पास जो, जमी हुई संपत्ति।। ४०८

'तिरुक्कुरल और हिन्दी के कवि' अध्याय में इसका उल्लेख है।

மேற்பிறந்தா ராயினும் கல்லாதார் கீழ்ப்பிறந்தும்
கற்றார் அனைத்திலர் பாடு. 409

मेऱ्पिऱन्दारायिनुम् कल्लादार् कीऴ्प्पिऱन्दुम्
कट्रार् अनैत्तिलर् पाडु.

उच्च जाति का क्यों न हो, तो भी अपढ़ अजान।
नीच किन्तु शिक्षित सदृश, पाता नहिं सम्मान।। ४०९

नीच – नीच जाति का। सदृश – तरह।

விலங்கொடு மக்கள் அனையர் இலங்குநூல்
கற்றாரோடு ஏனை யவர். 410

विलङ्गोॅडु मक्कळ् अनैयर् इलङ्गु नूल्
कट्रारोडु एनैयवर्.

नर से पशु की जो रहा, तुलना में अति भेद।
अध्येता सद्ग्रन्थ के, तथा अपढ़ में भेद।। ४१०

अध्येता ... उत्तम ग्रन्थ पढ़नेवालों और अपढ में वही भेद है जो मनुष्य और जानवरों में है।

கேள்வி श्रवण केळ्वि

செல்வத்துள் செல்வஞ் செவிச்செல்வம் அச்செல்வம்
செல்வத்து ளெல்லாந் தலை. 411

शॆल्वत्तुळ् शॆल्वञ् चॆविच्चॆल्वम् अच्चॆल्वम्
शॆल्वत्तुळॆल्लाम् तलै.

धन धन में तो श्रवण-धन, रहता अधिक प्रधान।
सभी धनों में धन वही, पाता शीर्षस्थान।। ४११

श्रवण—शास्त्रों में लिखी हुई बातें सुनना। 'अनुवाद के संबंध में' अध्याय में इस दोहे का उल्लेख है। शीर्षस्थान—सबसे ऊँचा स्थान।

செவிக்குண வில்லாத போழ்து சிறிது
வயிற்றுக்கும் ஈயப் படும். 412

शॆविक्कुणविल्लाद पोऴ्दु शिरिदु
वयिट्रुक्कुम् ईयप्पडुम्.

कानों को जब ना मिले, श्रवण रूप रस पान।
दिया जाय तब पेट को, कुछ भोजन का दान।। ४१२

செவியுணவிற் கேள்வி யுடையார் அவியுணவின்
ஆன்றாரோ டொப்பர் நிலத்து. 413

शॆवियुणविऱ् केळ्वियुडैयार् अवियुणविन्
आन्ड्रारोडॊप्पर् निलत्तु.

जिनके कानों को मिला, श्रवण रूप में भोग।
हवि के भोजी देव सम, भुवि में हैं वे लोग।। ४१३

हवि—याग की आग में दी जानेवाली वस्तु। भोजी—खानेवाला। भुवि—भूमि।

கற்றில னாயினும் கேட்க அஃதொருவற்கு
ஒற்கத்தின் ஊற்றாந் துணை. **414**

कट्रिलनायिनुम् केट्क अहृदोंरुवरृकु
ओंरृकत्तिन् ऊट्रान् तुणै.

यद्यपि शिक्षित है नहीं, करे श्रवण सविवेक।
क्लांत दशा में वह उसे, देगा सहाय टेक।। ४१४

क्लांत – श्रांत, थका हुआ (मन में)

இழுக்கல் உடையுழி ஊற்றுக்கோல் அற்றே
ஒழுக்க முடையார்வாய்ச் சொல். **415**

इऴुक्कल् उडैयुऴि ऊट्रुक्कोल् अट्रे
ओंऴुक्कमुडैयार् वायृच्चोंल्.

फिसलन पर चलते हुए, ज्यों लाठी की टेक।
त्यों हैं चरित्रवान के, मुँह के वच सविवेक।। ४१५

वच – वचन।

எனைத்தானும் நல்லவை கேட்க அனைத்தானும்
ஆன்ற பெருமை தரும். **416**

ऍनैत्तानुम् नल्लवै केट्क अनैत्तानुम्
आन्ड्र पेंरुमै तरुम्.

श्रवण करो सद्विषय का, जितना ही हो अल्प।
अल्प श्रवण भी तो तुम्हें, देगा मान अनल्प।। ४१६

अल्प – बहुत कम। मान – प्रतिष्ठा, सम्मान। अनल्प – अधिक।

பிழைத்துணர்ந்தும் பேதைமை சொல்லார் இழைத்துணர்ந்
தீண்டிய கேள்வி யவர். **417**

पिऴैत्तुणर्न्दुम् पेदैमै शोंल्लार् इऴैत्तुणर्न्
दीण्डिय केळ्वियवर्.

जो जन अनुसंधान कर, रहें बहु-श्रुत साथ।
यद्यपि भूलें मोहवश, करें न जड़ की बात।। ४१७

अनुसंधान — चिंतन मनन। बहुश्रुत — अनेक विषयों का जानकार।

கேட்பினுங் கேளாத் தகையவே கேள்வியால்
தோட்கப் படாத செவி. **418**

केट्पिनुम् केळात्तहैयवे केळ्वियाल्
तोट्कप्पडाद शैंवि.

श्रवण श्रवण करके भला, छिद न गये जो कान।
श्रवण-शक्ति रखते हुए, बहरे कान समान।। ४१८

श्रवण श्रवण करके — सद्विषयों को सुन सुन कर।

நுணங்கிய கேள்விய ரல்லார் வணங்கிய
வாயின ராதல் அரிது. **419**

नुणङ्गिय केळ्वियरल्लार् वणङ्गिय
वायिनरादल् अरिदु.

जिन लोगों को है नहीं, सूक्ष्म श्रवण का ज्ञान।
नम्र वचन भी बोलना, उनको दुष्कर जान।। ४१९

दुष्कर — कठिन।

செவியிற் சுவையுணரா வாயுணர்வின் மாக்கள்
அவியினும் வாழினும் என். **420**

शैंवियिऱ् शुवैयुणरा वायुणर्विन् माक्कळ्
अवियिनुम् वाऴिनुम् ऍन्.

जो जाने बिन श्रवण रस, रखता जिह्वा-स्वाद।
चाहे जीये या मरे, उससे सुख न विषाद। ४२०

जिह्वा — स्वाद — जीभ की रुचि। विषाद — दुःख।

அறிவுடைமை बुद्धिमत्ता अऱिवुडैमै

அறிவற்றங் காக்குங் கருவி செறுவார்க்கும்
உள்ளழிக்க லாகா அரண். 421

अऱिवट्रङ् काक्कुङ् करुवि शॅऱुवार्क्कुम्
उळ्ळऴिक्कलाहा अरण्.

रक्षा हित है नाश से, बुद्धिरूप औजार।
है भी रिपुओं के लिये, दुर्गम दुर्ग आपार।। ४२१

சென்ற இடத்தால் செலவிடா தீதொரீஇ
நன்றின்பால் உய்ப்ப தறிவு. 422

शॅन्ड्र इडत्ताल् शॅलविडा तीतॉरीइ
नन्ड्रिन् पाल् उय्प्पदऱिवु.

मनमाना जाने न दे, पाप-मार्ग से थाम।
मन को लाना सुपथ पर, रहा बुद्धि का काम।। ४२२

थाम – रोक कर।

எப்பொருள் யார்யார்வாய்க் கேட்பினும் அப்பொருள்
மெய்ப்பொருள் காண்ப தறிவு. 423

ऍप्पॉरुळ् यार् यार् वाय्क्केट्पिनुम् अप्पॉरुळ्
मॅय्प्पॉरुळ् काण्बदऱिवु.

चाहे जिससे भी सुनें, कोई भी हो बात।
तत्व-बोध उस बात का, बुद्धि युक्तता ज्ञात।। ४२३

तत्व – बोध – वास्तविक ज्ञान। बुद्धियुक्तता – बुद्धिमानी।
'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय के अन्त में इसका उल्लेख है।

எண்பொருள வாகச் செலச்சொல்லித் தான்பிறர்வாய்
நுண்பொருள் காண்ப தறிவு. 424

ऍण्पोॅरुळवाहच् चॅलच्चोॅल्लित् तान् पिर्रवाय्
नुण्पोॅरुळ् काण्बदरिवु.

कह प्रभावकर ढंग से, सुगम बना स्वविचार।
सुधी समझता अ़न्य के, सूक्ष्म कथन का सार।। ४२४

कह — कह कर। बना — बनाकर। सुधी — बुद्धिमान।

உலகம் தழீஇய தொட்பம் மலர்தலும்
கூம்பலும் இல்ல தறிவு. 425

उलहम् तष़ीइय तोॅट्पम् मलर्दलुम्
कूम्बलुम् इल्लदरिवु.

मैत्री उत्तम जगत की, करते हैं धीमान।
खिल कर सकुचाती नहीं, सुधी--मित्रता बान।। ४२५

सुधी — मित्रता — बान — बुद्धिमान की मित्रता का स्वभाव।

எவ்வ துறைவது உலகம் உலகத்தோடு
அவ்வ துறைவது அறிவு. 426

ऍव्वदुऱैवदु उलहम् उलहत्तोडु
अव्वदुऱैवदु अरिवु.

जैसा लोकाचार है, उसके ही उपयुक्त।
जो करना है आचरण, वही सुधी के युक्त।। ४२६

அறிவுடையார் ஆவ தறிவார் அறிவிலார்
அஃதறி கல்லா தவர். 427

अरिवुडैयार् आवदरिवार् अरिविलार्
अहदरि कल्लादवर्.

बुद्धिमान वे हैं जिन्हें, है भविष्य का ज्ञान।
बुद्धिहीन वे हैं जिन्हें, प्राप्त नहीं वह ज्ञान।। ४२७

அஞ்சுவ தஞ்சாமை பேதைமை அஞ்சுவது
அஞ்சல் அறிவார் தொழில். 428

अञ्जुव दञ्ज़ामै पेदैमै अञ्जुवदु
अञ्ज़ल् अरिवार् तॊषिल्.

निर्भयता भेतव्य से, है जड़ता का नाम।
भय रखना भेतव्य से, रहा सुधी का काम।। ४२८

भेतव्य—जिससे डरना चाहिये (उससे)। निर्भयता—न डरना।

எதிரதாக் காக்கும் அறிவினார்க் கில்லை
அதிர வருவதோர் நோய். 429

ऍदिरदाक् काक्कुम् अरिविनार्क् किल्लै
अदिर वरुवदोर् नोय्.

जो भावी को जान कर, रक्षा करता आप।
दुःख न दे उस प्राज्ञ को, भयकारी संताप।। ४२९

प्राज्ञ—बुद्धिमान।

அறிவுடையார் எல்லாம் உடையார் அறிவிலார்
என்னுடைய ரேனும் இலர். 430

अरिवुडैयार् ऍल्लाम् उडैयार् अरिविलार्
ऍन्नुडैयरेनुम् इलर्.

सब धन से संपन्न हैं, जो होते मतिमान।
चाहे सब कुछ क्यों न हो, मूर्ख दरिद्र समान।। ४३०

குற்றங்கடிதல் दोष — निवारण कुट्रङ्कडिदल्

செருக்குஞ் சினமும் சிறுமையும் இல்லார்
பெருக்கம் பெருமித நீர்த்து. 431

शॅरुक्कुञ् चिनमुम् शिरुमैयुम् इल्लार्
पॅरुक्कम् पॅरुमिद नीर्त्तु.

काम क्रोध मद दोष से, जो होते हैं मुक्त।
उनकी जो बढ़ती हुई, होती महिमा-युक्त।। ४३१

இவறலும் மாண்பிறந்த மானமும் மாணா
உவகையும் ஏதம் இறைக்கு. 432

इवरलुम् माण्पिरन्द मानमुम् माणा
उवहैयुम् एदम् इरैक्कु.

हाथ खींचना दान से, रखना मिथ्या मान।
नृप का अति दाक्षिण्य भी, मानो दोष अमान।। ४३२

दाक्षिण्य — उदारता, प्रसन्नता। अमान — बहुत। मिथ्या — झूठा।

தினைத்துணையாங் குற்றம் வரினும் பனைத்துணையாக்
கொள்வர் பழிநாணு வார். 433

तिनैत्तुणैयाङ् कुट्रम् वरिनुम् पनैत्तुणैयाक्
कॉळ्वर् पऴि नाणुवार्.

निन्दा का डर है जिन्हें, तिलभर निज अपराध।
होता तो बस ताड़ सम, मानें उसे अगाध।। ४३३

ताड़ सम — ताड़ के पेड़ के समान। अगाध — बहुत बड़ा।

குற்றமே காக்க பொருளாகக் குற்றமே
அற்றம் தரூஉம் பகை. 434

कुट्रमे काक्क पॉरुळाहक् कुट्रमे
अट्रम् तरूउम् पहै.

बचकर रहना दोष से, लक्ष्य मान अत्यंत।
परम शत्रु है दोष ही, जो कर देगा अंत।। ४३४

வருமுன்னர்க் காவாதான் வாழ்க்கை எரிமுன்னர்
வைத்தூறு போலக் கெடும். 435

वरुमुन्नरक् कावादान् वाष़्क्कै ऍरिमुन्नर्
वैत्तूरु पोलक् कॆंडुम्.

दोष उपस्थिति पूर्व ही, किया न जीवन रक्ष।
तो वह मिटता है यथा, भूसा अग्नि समक्ष।। ४३५

उपस्थिति पूर्व—लगने के पहले ही। समक्ष—सामने।

தன்குற்றம் நீக்கிப் பிறர்குற்றம் காண்கிற்பின்
என்குற்ற மாகும் இறைக்கு. 436

तन् कुट्रम् नीक्किप् पिऱर् कुट्रम् काण्गिऱ्पिन्
ऍन् कुट्रमाहुम् इऱैक्कु.

दोष-मुक्त कर आपको, बाद पराया दाष।
जो देखे उस भूप में, हो सकता क्या दोष।। ४३६

आपको—अपने आपको। भूप—राजा।

செயற்பால செய்யா திவறியான் செல்வம்
உயற்பால தன்றிக் கெடும். 437

शॆयऱ्पाल शॆय्यादिवऱियान् शॆल्वम्
उयऱ्पाल तन्ड्रिक् कॆंडुम्.

जो धन में आसक्त है, बिना किये कर्तव्य।
जमता उसके पास जो, व्यर्थ जाय वह द्रव्य।। ४३७

द्रव्य—धन।

பற்றுள்ளம் என்னும் இவறன்மை எற்றுள்ளும்
எண்ணப் படுவதொன் றன்று. **438**

पट्रुळ्ळम् ऍन्नुम् इवऱन्मै ऍट्रुळ्ळुम्
ऍण्णप् पडुवदॊन्ड्रन्ड्रु.

धनासक्ति जो लोभ है, वह है दोष विशेष।
अन्तर्गत उनके नहीं, जितने दोष अशेष।। ४३८

अन्तर्गत ... अशेष। साधारण दोषों में उसकी गिनती नहीं हो सकती।

வியவற்க எஞ்ஞான்றும் தன்னை நயவற்க
நன்றி பயவா வினை. **439**

वियवर्क ऍञ्ञान्ड्रुम् तन्नै नयवर्क
नन्ड्रि पयवा विनै.

श्रेष्ठ समझ कर आपको, कभी न कर अभिमान।
चाह न हो उस कर्म की, जो न करे कल्याण।। ४३९

आप को — अपने आप को।

காதல காதல் அறியாமை உய்க்கிற்பின்
ஏதில ஏதிலார் நூல். **440**

कादल कादल् अऱियामै उय्क्किऱ्पिन्
एदिल एदिलार् नूल्.

भोगेगा यदि गुप्त रख, मनचाहा सब काम।
रिपुओं का षड्यंत्र तब, हो जावे बेकाम।। ४४०

काम — इच्छा, मनोरथ। रिपु — शत्रु। भोगेगा — राजा अपनी इच्छा के अनुसार भोग करेगा।

பெரியாரைத் துணைக்கோடல் सत्संग—लाभ पैंरियारैत् तुणैक्कोडल्

அறனறிந்து மூத்த அறிவுடையார் கேண்மை
திறனறிந்து தேர்ந்து கொளல். **441**

अऱनऱिन्दु मूत्त अऱिवुडैयार् केण्मै
तिऱनऱिन्दु तेर्न्दु कॉळल्.

ज्ञानवृद्ध जो बन गये, धर्म-सूक्ष्म को जान।
मैत्री उनकी, ढंग से, पा लो महत्व जान।। ४४१

உற்றநோய் நீக்கி உறாஅமை முற்காக்கும்
பெற்றியார்ப் பேணிக் கொளல். **442**

उट्र् नोय् नीक्कि उरा अमै मुऱ् काक्कुम्
पॅट्रियारप् पेणिक्कॉळल्.

आगत दुःख निवार कर, भावी दुःख से त्राण।
करते जो, अपना उन्हें, करके आदर-मान।। ४४२

त्राण—रक्षा। अपना—(तुम) अपनाओ।

அரியவற்று ளெல்லாம் அரிதே பெரியாரைப்
பேணித் தமராக் கொளல். **443**

अरिय वट्रुळॅल्लाम् अरिदे पॅरियारैप्
पेणित् तमराक् कॉळल्.

दुर्लभ सब में है यही, दुर्लभ भाग्य महान।
स्वजन बनाना मान से, जो हैं पुरुष महान।। ४४३

தம்மிற் பெரியார் தமரா ஒழுகுதல்
வன்மைய ளெல்லாந் தலை. **444**

तम्मिऱ् पॅरियार् तमरा ऑऴुगुदल्
वन्मैयुळॅल्लान् तलै.

करना ऐसा आचरण, जिससे पुरुष महान।
बन जावें आत्मीय जन, उत्तम बल यह जान।। ४४४

आत्मीय—निज का।

சூழ்வார்கண் ணாக ஒழுகலான் மன்னவன்
சூழ்வாரைச் சூழ்ந்து கொளல். 445

शूष़वार् कण्णाह ऒऴुहलान् मन्नवन्
शूष़्वारैच् चूष़्न्दु कॊळ्ळल्.

आँख बना कर सचिव को, ढोता शासन-भार।
सो नृप चुन ले सचिव को, करके सोच-विचार।। ४४५

सो—इसलिये। सचिव—मंत्री।

தக்கார் இனத்தனாய்த் தானொழுக வல்லானைச்
செற்றார் செயக்கிடந்த தில். 446

तक्का रिनत्तनाय्त् तानॊऴुह वल्लानैच्
शॆट्रार् शॆयक्किडन्ददिल्.

योग्य जनों का बन्धु बन, करता जो व्यवहार।
उसका कर सकते नहीं, शत्रु लोग अपकार। ४४६

இடிக்குந் துணையாரை ஆள்வாரை யாரே
கெடுக்குந் தகைமை யவர். 447

इडिक्कुन् तुणैयारै आळ्वारै यारे
कॆडुक्कुन् तहैमै यवर्.

दोष देख कर डाँटने जब हैं मित्र सुयोग्य।
तब नृप का करने अहित, कौन शत्रु है योग्य।। ४४७

नृप—राजा। अहित—बुराई।

இடிப்பாரை இல்லாத ஏமரா மன்னன்
கெடுப்பா ரிலானுங் கெடும். 448

इडिप्पारै इल्लाद एमरा मन्नन्
कॅंडुप्पा रिलानुङ् कॅडुम्.

डांट-डपटते मित्र की, रक्षा बिन नरकंत।
शत्रु बिना भी हानिकर, पा जाता है अंत।। ४४८

नरकंत – राजा। हानिकर – बुराई करनेवाला।

முதலிலார்க்கு ஊதியம் இல்லை மதலையாஞ்
சார்பிலார்க்கு இல்லை நிலை. 449

मुदलिलाक्र्कु ऊदियम् इल्लै मदलैयाञ्
चार्पिलाक्र्कु इल्लै निलै.

बिना मूलधन वणिक जन, पावेंगे नहिं लाभ।
सहचर-आश्रय रहित नृप, करें न स्थिरता लाभ।। ४४९

सहचर ... लाभ – सुयोग्य साथियों की सहायता के बिना राजा स्थायी रूप से शासन नहीं कर सकता।

பல்லார் பகைகொளலிற் பத்தடுத்த தீமைத்தே
நல்லார் தொடர்கை விடல். 450

पल्लार् पहै कॉॅळलिऱ् पत्तडुत्त तीमैत्ते
नल्लार् तॉॅडर् कैविडल्.

बहुत जनों की शत्रुता, करने में जो हानि।
उससे बढ़ सत्संग को, तजने में है हानि।। ४५०

शत्रुता – दुश्मनी। तजने में – छोड़ने में।

சிற்றினம் சேராமை कुसंग—वर्जन शिट्रिनम् शेरामै

சிற்றினம் அஞ்சும் பெருமை சிறுமைதான்
சுற்றமாச் சூழ்ந்து விடும். **451**

शिट्रिनम् अञ्जुम् पॅरुमै शिऱुमैतान्
शुट्रमा शूष़्न्दु विडुम्.

ओछों से डरना रहा, उत्तम जन की बान।
गले लगाना बन्धु सम, है ओछों की बान।। ४५१

ओछों से—तुच्छ लोगों से। गले लगाना—ओछों को गले लगाना। बान—स्वभाव।

நிலத்தியல்பால் நீர்திரிந் தற்றாகும் மாந்தர்க்கு
இனத்தியல்ப தாகும் அறிவு. **452**

निलत्तियल्पाल् नीर् तिरिन्दट्राहुम् मान्दर्क्कु
इनत्तियल्पदाहुम् अऱिवु.

मिट्टी गुणानुसार ज्यों, बदले वारि-स्वभाव।
संगति से त्यों मनुज का, बदले बुद्धि-स्वभाव।। ४५२

वारि—स्वभाव—पानी की रुचि। मनुज—आदमी।

மனத்தானாம் மாந்தர்க் குணர்ச்சி இனத்தானாம்
இன்னான் எனப்படுஞ் சொல். **453**

मनत्तानाम् मान्दर्क्कुणर्च्चि इनत्तानाम्
इन्नान् ऍनप्पडुञ्चॉल्.

मनोजन्य है मनुज का, प्राकृत इन्द्रियज्ञान।
'ऐसा यह' यों नाम तो, संग-जन्य है जान।। ४५३

'ऐसा यह ... जान—आदमी की प्रकृति उसके मन के अनुसार भले ही क्यों न हो, उसका अच्छा या बुरा होने का नाम उसके संग से ही होता है।

மனத்து ளதுபோலக் காட்டி ஒருவற்கு
இனத்துள தாகும் அறிவு. **454**

मनत्तुळदु पोलक् काट्टि ऑरुवऱ्कु
इनत्तुळदाहुम् अऱिवु.

मनोजन्य सा दीखता, भले बुरे का ज्ञान।
संग-जन्य रहता मगर, नर का ऐसा ज्ञान।। ४५४

दीखता — दिखाई पड़ता है परन्तु वास्तविक नहीं है।

மனந்தூய்மை செய்வினை தூய்மை இரண்டும்
இனந்தூய்மை தூவா வரும். **455**

मनन्तूय्मै शॅय्विनैत् तूय्मै इरण्डुम्
इनन्तूय्मै त्वा वरुम्.

मन की होना शुद्धता, तथा कर्म की शुद्धि।
दोनों का अवलंब है, संगति की परिशुद्धि।। ४५५

மனந்தூயார்க் கெச்சம்நன் றாகும் இனந்தூயார்க்கு
இல்லைநன் றாகா வினை. **456**

मनन् तूयार्क्कॅच्चम् नन्ड्राहुम् इनन्तूयाक्र्कु
इल्लै नन्ड्राहा विनै.

पातें सत्सन्तान हैं, जिनका है मन शुद्ध।
विफल कर्म होता नहीं, जिनका संग विशुद्ध।। ४५६

மனநலம் மன்னுயிர்க் காக்கம் இனநலம்
எல்லாப் புகழும் தரும். **457**

मन नलम् मन्नुयिर्क्काक्कुम् इन नलम्
ऍल्लाप्पुहऴुम् तरुम्.

मन की शुद्धि मनुष्य को, देती है ऐश्वर्य।
सत्संगति तो फिर उसे, देती सब यश वर्य।। ४५७

वर्य—श्रेष्ठ।

மனநலம் நன்குடைய ராயினும் சான்றோர்க்கு
இனநலம் ஏமாப் புடைத்து. 458

मननलम् नन्गुडैयरायिनुम् शान्ड्रोर्क्कु
इननलम् एमाप्पुडैत्तु.

शुद्ध चित्तवाले स्वतः, रहते साधु महान।
सत्संगति फिर भी उन्हें, करती शक्ति प्रदान।। ४५८

மனநலத்தின் ஆகும் மறுமைமற் றஃதும்
இனநலத்தின் ஏமாப் புடைத்து. 459

मन नलत्तिन् आहुम् मरुमै मट्रह्दुम्
इन नलत्तिन् एमाप्पुडैत्तु.

चित्त-शुद्धि परलोक का, देती है आनन्द।
वही शुद्धि सत्संग से होती और बुलन्द।। ४५९

बुलंद—बहुत ऊँचा।

நல்லினத்தி னூங்குந் துணையில்லை தீயினத்தின்
அல்லற் படுப்பதூஉம் இல். 460

नल्लिनत्तिनूनूङ्गुन् तुणैयिल्लै तीयिनत्तिन्
अल्लर्- पडुप्पदूउम् इल्.

साथी कोई है नहीं, साधु-संग से उच्च।
बढ़ कर कुसंग से नहीं, शत्रु हानिकर तुच्छ।। ४६०

தெரிந்து செயல்வகை सुविचारित कार्य—कुशलता तेॅरिन्दु शेॅयलूवहै

அழிவதூஉம் ஆவதூஉம் ஆகி வழிபயக்கும்
ஊதியமும் சூழ்ந்து செயல். **461**

अऴिवदूउम् आवदूउम् आहि वऴि पयक्कुम्
ऊदियमुम् शूऴ्न्दु शेॅयल्.

कर विचार व्यय-आय का, करना लाभ-विचार।
फिर हो प्रवृत्त कार्य में, करके सोच-विचार।। ४६१

(तू) हो प्रवृत्त—प्रवृत्त हो जा। लग जाओ।

தெரிந்த இனத்தொடு தேர்ந்தெண்ணிச் செய்வார்க்கு
அரும்பொருள் யாதொன்றும் இல். **462**

तेॅरिन्द इनत्तोॅडु तेर्न्देॅण्णिच् चेॅय्वार्क्कु
अरुम् पोॅरुळ् यादोॅन्ड्रुम् इल्.

आप्तों से कर मंत्रणा, करता स्वयं विचार।
उस कर्मी को है नहीं, कुछ भी असाध्य कार।। ४६२

आप्त—विषय को ठीक तौर से जाननेवाला। मंत्रणा—परामर्श। कर्मी—कार्य करनेवाला। कार—कार्य।

ஆக்கம் கருதி முதலிழக்கும் செய்வினை
ஊக்கார் அறிவுடை யார். **463**

आक्कम् करुदि मुदलिऴक्कुम् शेॅय्विनै
ऊक्कार् अऱिवुडैयार्.

कितना भावी लाभ हो, इसपर दे कर ध्यान।
पूँजी-नाशक कर्म तो, करते नहिं मतिमान।। ४६३

தெளிவி லதனைத் தொடங்கார் இளிவென்னும்
ஏதப்பாடு அஞ்சு பவர். **464**

तॆंळिविलदनैत् तॊंडङ्गार् इळिवॆंन्नुम्
एदप्पाडु अञ्जुपवर्.

अपयश के आरोप से, जो होते हैं भीत।
शुरू न करते कर्म वे, स्पष्ट न जिसकी रीत।। ४६४

भीत – डरे हुए। रीत – रीति।

வகையறச் சூழா தெழுதல் பகைவரைப்
பாத்திப் படுப்பதோ ராறு. **465**

व्हैयऱच् चूषादॆंषुदल् पहैवरैप्
पात्तिप् पडुप्पदोराऱु.

टूट पड़े जो शत्रु पर, बिन सोचे सब मर्म।
शत्रु-गुल्म हित तो बने, क्यारी ज्यों वह कर्म।। ४६५

मर्म – रहस्य, भेद। गुल्म – ईख जैसे पौधे।

செய்தக்க அல்ல செயக்கெடும் செய்தக்க
செய்யாமை யானும் கெடும். **466**

शॆंय्तक्क अल्ल शॆंयक्कॆंडुम् शॆंय्तक्क
शॆंय्यामै यानुम् कॆंडुम्.

करता अनुचित कर्म तो, होता है नर नष्ट।
उचित कर्म को छोड़ता, तो भी होता नष्ट।। ४६६

எண்ணித் துணிக கருமம் துணிந்தபின்
எண்ணுவம் என்பது இழுக்கு. **467**

ऍण्णित् तुणिह करुमम् तुणिन्दपिन्
ऍण्णुवम् ऍन्बदु इषुक्कु.

होना प्रवृत्त कर्म में, करके सोच-विचार।
'हो कर प्रवृत्त सोच लें', है यह गलत विचार।। ४६७

ஆற்றின் வருந்தா வருத்தம் பலர்நின்று
போற்றினும் பொத்துப் படும். 468

आट्रिन् वरुन्दा वरुत्तम् पलर् निन्ड्रु
पोट्रिनुम् पोॅत्तुप्पडुम्.

जो भी साध्य उपाय बिन, किया जायगा यत्न।
कई समर्थक क्यों न हों, खाली हो वह यत्न।। ४६८

நன்றாற்ற லுள்ளுந் தவறுண்டு அவரவர்
பண்பறிந் தாற்றாக் கடை. 469

नन्ड्राट्रलुळ्ळुन् तवरुण्डु अवरवर्
पण्परिन्दाट्राक्कडै.

बिन जाने गुण शत्रु का, यदि उसके अनुकूल।
किया गया सदुपाय तो, उससे भी हो भूल।। ४६९

बिन जाने – जाने बिना। गुण – अच्छा है या बुरा।

எள்ளாத எண்ணிச் செயல்வேண்டும் தம்மொடு
கொள்ளாத கொள்ளாது உலகு. 470

ऍळ्ळाद ऍण्णिच् चॅयल् वेण्डुम् तम्मोॅडु
कोॅळ्ळाद कोॅळ्ळादु उलहु.

अनुपयुक्त जो है तुम्हें, जग न करे स्वीकार।
करना अनिंद्य कार्य ही, करके सोच-विचार।। ४७०

अनुपयुक्त – जो शासक के योग्य नहीं ऐसा कार्य करना। अनिंद्य – जिसकी निंदा न होगी।

வலியறிதல் शक्ति का बोध वलियरिदल्

வினைவலியும் தன் வலியும் மாற்றான் வலியும்
துணைவலியும் தூக்கிச் செயல். 471

विनै वलियुम् तन् वलियुम् माट्रान् वलियुम्
तुणै वलियुम् तूक्किच् चॆयल्.

निज बल रिपु-बल कार्य-बल, साथी-बल भी जान।
सोच-समझ कर चाहिये, करना कार्य निदान।। ४७१

ஒல்வ தறிவது அறிந்ததன் கண்தங்கிச்
செல்வார்க்குச் செல்லாதது இல். 472

ऒल्लवदरिवदु अरिन्ददन्कण् तङ्गिच्
शॆल्वार्क्कुच् चॆल्लाददु इल्.

साध्य कार्य को समझ कर, समझ कार्य हित ज्ञेय।
जम कर धावा जो करे, उसको कुछ न अजेय।। ४७२

धावा—आक्रमण; हमला। उसको—उस राजा को।

உடைத்தம் வலியறியார் ஊக்கத்தின் ஊக்கி
இடைக்கண் முரிந்தார் பலர். 473

उडैत्तम् वलियरियार् ऊक्कत्तिन् ऊक्कि
इडैक्कण् मुरिन्दार् पलर्.

बोध नहीं निज शक्ति का, वश हो कर उत्साह।
कार्य शुरू कर, बीच में, मिटे कई नरनाह।। ४७३

नरनाह—राजा।

அமைந்தாங் கொழுகான் அளவறியான் தன்னை
வியந்தான் விரைந்து கெடும். 474

अमैन्दाङ्गॊऴुहान् अळवरियान् तन्नै
वियन्दान् विरैन्दु कॆडुम्.

शान्ति-युक्त बरताव बिन, निज बल मान न जान।
अहमूमन्य भी जो रहे, शीघ्र मिटेगा जान।। ४७४

निजबल ... अपने बल का परिमाण न जान कर। अहमूमन्य—अपने को बड़ा माननेवाला। जान—जानो।

பீலிபெய் சாகாடும் அச்சிறும் அப்பண்டஞ்
சால மிகுத்துப் பெயின். **475**

पीलि पॅयू शाकाडुमू अचूचिरुमू अपूपण्डञ्
चाल मिहुतूतुप् पॅयिनू.

मोर-पंख से ही सही, छकड़ा लादा जाय।
यदि लादो वह अत्यधिक, अक्ष भग्न हो जाय।। ४७५

छकड़ा—बोझ लादने की बैलगाडी। अक्ष—धुरी। 'अनुवाद के संबंध में' अध्याय में इस दोहे का उल्लेख है।

நுனிக்கொம்பர் ஏறினார் அஃதிறந் தூக்கின்
உயிர்க்கிறுதி யாகி விடும். **476**

नुनिकूकोॅमूबरू एरिनारू अहूदिरन्दूकूकिनू
उयिरूकूकिरुदि याहि विडुमू.

चढ़ा उच्चतम डाल पर, फिर भी जोश अनंत।
करके यदि आगे बढ़ें, होगा जीवन-अंत।। ४७६

ஆற்றின் அளவறிந்து ஈக அதுபொருள்
போற்றி வழங்கும் நெறி. **477**

आट्रिनू अळवरिन्दु ईह अदु पोॅरुळू
पोट्रि वष़ङ्गुमू नॅंरि.

निज धन की मात्रा समझ, करो रीति से दान।
जीने को है क्षेम से, उचित मार्ग यह जान।। ४७७

ஆகாறு அளவிட்டி தாயினுங் கேடில்லை
போகாறு அகலாக் கடை. **478**

आहारु अळविट्टिदायिनुङ् केडिल्लै
पोहारु अहलाक् कडै.

तंग रहा तो कुछ नहीं, धन आने का मार्ग।
यदि विस्तृत भी ना रहा, धन जाने का मार्ग।। ४७८

அளவறிந்து வாழாதான் வாழ்க்கை உளபோல
இல்லாகித் தோன்றாக் கெடும். **479**

अळवरिन्दु वाषादान् वाष्क्कै उळपोल
इल्लाहित् तोन्ड्राक् कॅडुम्.

निज धन की सीमा समझ, यदि न किया निर्वाह।
जीवन समृद्ध भासता, हो जायगा तबाह।। ४७९

भासता — दिखाई पड़ता हुआ। तबाह — बरबाद, नष्ट।

உளவரை தூக்காத ஒப்புர வாண்மை
வளவரை வல்லைக் கெடும். **480**

उळवरै तूक्काद ओॅप्पुरवाण्मै
वळवरै वल्लैक् कॅडुम्.

लोकोपकारिता हुई, धन-सीमा नहिं जान।
तो सीमा संपत्ति की, शीघ्र मिटेगी जान।। ४८०

नहिं जान — नहीं जान कर। सीमा... जान — लोकोपकार करना भी अपनी सामर्थ्य के अनुसार होना चाहिये। नहीं तो अपनी सारी संपत्ति नष्ट हो जायगी।

காலம் அறிதல் समय का बोध कालम् अऱिदल्

பகல்வெல்லும் கூகையைக் காக்கை இகல்வெல்லும்
வேந்தர்க்கு வேண்டும் பொழுது. **481**

पहल् वॆ॑ल्लुम् कूहैयैक् काक्कै इहल् वॆ॑ल्लुम्
वेन्दर्क्कु वेण्डुम् पॊ॑ष़ुदु.

दिन में उल्लू पर विजय, पा लेता है काक।
नृप जिगीषु को चाहिये, उचित समय की ताक।। ४८१

नृप जिगीषु—राजा जो जय पाना चाहता है।

பருவத்தோடு ஒட்ட ஒழுகல் திருவினைத்
தீராமை ஆர்க்குங் கயிறு. **482**

परुवत्तोडु ऑ॑ट्ट ऑ॑ष़ुहल् तिरुविनैत्
तीरामै आर्क्कुम् कयिऱु.

लगना जो है कार्य में, अवसर को पहचान।
श्री को जाने से जकड़, रखती रस्सी जान।। ४८२

श्री को ... जान—जानो कि धन—संपत्ति को नष्ट होने से रक्षा करता है।

அருவினை என்ப உளவோ கருவியான்
காலம் அறிந்து செயின். **483**

अरुविनै ऍ॑न्ब उळवो करुवियान्
कालम् अऱिन्दु शॆ॑यिन्.

है क्या कार्य असाध्य भी, यदि अवसर को जान।
समुचित साधन के सहित, करता कार्य सुजान।। ४८३

ஞாலம் கருதினுங் கைகூடும் காலம்
கருதி இடத்தாற் செயின். **484**

ञालम् करुदिनुङ् कै कूडुम् कालम्
करुदि इडत्ताऱ् शॆ॑यिन्.

चाहे तो भूलोक भी, आ जायेगा हाथ।
समय समझ कर यदि करे, युक्त स्थान के साथ।। ४८४

यदि करें ... जो कार्य करना है उसको।

காலம் கருதி இருப்பர் கலங்காது
ஞாலம் கருது பவர். 485

कालम् करुदि इरुप्पर् कलङ्गादु
ञालम् करुदुपवर्.

जिनको निश्चित रूप से, विश्व-विजय की चाह।
उचित समय की ताक में, वें हैं बेपरवाह।। ४८५

ஊக்க முடையான் ஒடுக்கம் பொருதகர்
தாக்கற்குப் பேருந் தகைத்து. 486

ऊक्कमुडैयान् ओॅडुक्कम् पोॅरुतहर्
ताक्करकुप् पेरुन् तहैत्तु.

रहता है यों सिकुड़ नृप, रखते हुए बिसात।
ज्यों मेढ़ा पीछे हटे, करने को आघात।। ४८६

बिसात – सामर्थ्य। मेढ़ा – भेड़ा। नृप – राजा।

பொள்ளென ஆங்கே புறம்வேரார் காலம்பார்த்து
உள்வேர்ப்பர் ஒள்ளி யவர். 487

पोॅळ्ळॅनै आङ्गे पुरम् वेरार् कालम् पार्त्तु
उळ्वेर्प्पर् ओॅळ्ळियवर्.

रूठते न झट प्रगट कर, रिपु-अति से नरनाह।
पर कुढ़ते हैं वे सुधी, देख समय की राह।। ४८७

प्रगट कर – बाहर दिखा कर। रिपु – अति – शत्रु की ज्यादती। नरनाह – राजा। कुढ़ना – मन ही मन खीझना।

செறுநரைக் காணின் சுமக்க இறுவரை
காணின் கிழக்காம் தலை. 488

शॆऱुनरैक् काणिन् शुमक्क इऱुवरै
काणिन् किऴक्काम् तलै.

रिपु को असमय देख कर, सिर पर ढो संभाल।
सिर के बल गिर वह मिटे, आते अन्तिम काल।। ४८८

'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में तुलसीदास की कविता से इस दोहे की तुलना की गई है।

எய்தற் கரியது இயைந்தக்கால் அந்நிலையே
செய்தற் கரிய செயல். 489

ऍय्दऱ् करियदु इयैन्दक्काल् अन्निलैये
शॆय्दऱ् करिय शॆयल्.

दुर्लभ अवसर यदि मिले, उसको खोने पूर्व।
करना कार्य उसी समय, जो दुष्कर था पूर्व।। ४८९

கொக்கொக்க கூம்பும் பருவத்து மற்றதன்
குத்தொக்க சீர்த்த இடத்து. 490

कॊक्कॊक्क कूम्बुम् परुवत्तु मट्रदन्
कुत्तॊक्क शीर्त्त इडत्तु.

बक सम रहना सिकुड़ कर, जब करना नहिं वार।
चोंच-मार उसकी यथा, पा कर समय, प्रहार।। ४९०

प्रहार — मारना।

இடன் அறிதல் स्थान का बोध इडन् अरिदल्

தொடங்கற்க எவ்வினையும் எள்ளற்க முற்றும்
இடங்கண்ட பின்அல் லது. **491**

तॊडङ्कऱ्क ऍव्विनैयुम् ऍळ्ळऱ्क मुट्रुम्
इडङ् कण्ड पिन् अल्लदु.

कोई काम न कर शुरू, तथा न कर उपहास।
जब तक रिपु को घेरने, स्थल की है नहिं आस।। ४९१

उपहास—हँसी, दिल्लगी। आस—आशा। रिपु—शत्रु।

முரண்சேர்ந்த மொய்ம்பி னவர்க்கும் அரண்சேர்ந்தாம்
ஆக்கம் பலவுந் தரும். **492**

मुरण् शेर्न्द मॊय्म्बिनवर्क्कुम् अरण् शेर्न्दाम्
आक्कम् पलवुन् तरुम्.

शत्रु-भाव से पुष्ट औ', जो हों अति बलवान।
उनको भी गढ़-रक्ष तो, बहु फल करे प्रदान।। ४९२

ஆற்றாரும் ஆற்றி அடுப இடனறிந்து
போற்றார்கண் போற்றிச் செயின். **493**

आट्रारुम् आट्रि अडुप इडनऱिन्दु
पोट्रार्कण् पोट्रिच् चॆयिन्.

निर्बल भी बन कर सबल, पावें जय-सम्मान।
यदि रिपु पर धावा करें, ख़ोज सुरक्षित स्थान।। ४९३

எண்ணியார் எண்ணம் இழப்பர் இடனறிந்து
துன்னியார் துன்னிச் செயின். **494**

ऍण्णियार् ऍण्णम् इऴप्पर् इडनऱिन्दु
तुन्नियार् तुन्निच् चॆयिन्.

रिपु निज विजय विचार से, धो बैठेंगे हाथ।
स्थान समझ यदि कार्य में, जुड़ते दृढ नरनाथ।। ४९४

स्थान समझ — (उचित) स्थान को समझ कर। नरनाथ — राजा।

**நெடும்புனலுள் வெல்லும் முதலை அடும்புனலின்
நீங்கின் அதனைப் பிற. 495**

नॆडुम् पुनलुळ् वॆल्लुम् मुदलै अडुम् पुनलिन्
नीङ्गिन् अदनैप् पिऱ.

गहरे जल में मगर की, अन्यों पर हो जीत।
जल से बाहर अन्य सब, पावें जय विपरीत।। ४९५

**கடலோடா கால்வல் நெடுந்தேர் கடலோடும்
நாவாயும் ஓடா நிலத்து. 496**

कडलोडा काल्वल् नॆडुन् तेर् कडलोडुम्
नावायुम् ओडा निलत्तु.

भारी रथ दृढ चक्रयुत, चले न सागर पार।
सागरगामी नाव भी, चले न भू पर तार।। ४९६

**அஞ்சாமை அல்லால் துணைவேண்டா எஞ்சாமை
எண்ணி இடத்தாற் செயின். 497**

अञ्जामै अल्लाल् तुणै वेण्डा ऍञ्जामै
ऍण्णि इडत्ताल् शॆयिन्.

निर्भय के अतिरिक्त तो, चाहिये न सहकार।
उचित जगह पर यदि करें, खूब सोच कर कार।। ४९७

अतिरिक्त — छोड़ कर। कार् — कार्य.

சிறுபடையான் செல்லிடம் சேரின் உறுபடையான்
ஊக்கம் அழிந்து விடும். **498**

शिरु पडैयान् शॆल्लिडम् शेरिन् उरुपडैयान्

ऊक्कम् अषिन्दु विडुम्.

यदि पाता लघु-सैन्य-युत, आश्रय स्थल अनुकूल।
उसपर चढ़ बहु-सैन्य-युत, होगा नष्ट समूल।। ४९८

சிறைநலனும் சீரும் இலரெனினும் மாந்தர்
உறைநிலத்தோடு ஒட்டல் அரிது. **499**

शिरै नलनुम् शीरुम् इलरॆनिनुम् मान्दर्
उरै निलत्तोडु ऑट्टल् अरिदु.

सुदृढ़ दुर्ग साधन बड़ा, है नहिं रिपु के पास।
फिर भी उसके क्षेत्र में, भिड़ना व्यर्थ प्रयास।। ४९९

रिपु—दुश्मन, शत्रु।

காலாழ் களரில் நரியடும் கண்ணஞ்சா
வேலாள் முகத்த களிறு. **500**

कालाष़ कळरिल् नरियडुम् कण्णञ्जा
वेलाळ् मुहत्त कळिरु.

जिस निर्भय गजराज के, दन्तलग्न बरछैत।
गीदड़ भी मारे उसे, जब दलदल में क़ैद।। ५००

दन्तलग्न—दांतों से छिद कर उसमें लटकनेवाला। बरछैत—भाला फेंकनेवाला। दलदल में क़ैद—कीचड़ में पांव धंसने से न हिल-डुल सके। इसका भाव यह है कि प्रतिकूल प्रदेश में अति प्रबल सेना भी अति छोटी सेना से हारी जायगी। दोहा ४९८ का समर्थन है।

தெரிந்து தெளிதல் परख कर विश्वास करना तैंरिन्दु तेंळिदल्

அறம்பொருள் இன்பம் உயிரச்சம் நான்கின்
திறந்தெரிந்து தேறப் படும். **501**

अ़रम् पोॅरुळ् इन्बम् उयिरच्चम् नान्गिन्
तिऱन् तैंरिन्दु तेऱप्पडुम्.

धर्म अर्थ औ' काम से, मिला प्राण-भय चार।
इन उपधाओं से परख, विश्वस्त है विचार।। ५०१

उपधा—छल से युक्त शोध। ये शोध चार प्रकार के होते हैं—धर्मोपधा, अर्थोपधा, कामोपधा तथा भयोपधा। विश्वस्त—विश्वास के योग्य। विचार—विचार करना, मानना। राजा को चाहिये कि मंत्री तथा अन्य कर्मचारियों की खूब परीक्षा करके नियुक्त करना चाहिये।

குடிப்பிறந்து குற்றத்தின் நீங்கி வடுப்பரியும்
நாணுடையான் கட்டே தெளிவு. **502**

कुडिप्पिऱन्दु कुट्रत्तिन् नीङ्गि वडुप्परियुम्
नाणुडैयान् कट्टे तैंळिवु.

जो कुलीन निर्दोष हो, निन्दा से भयभीत।
तथा लजीला हो वही, विश्वस्त है पुनीत।। ५०२

लजीला—लज्जाशील (दुष्कर्म करने में)।

அரியகற்று ஆசற்றார் கண்ணும் தெரியுங்கால்
இன்மை அரிதே வெளிறு. **503**

अरियकट्रु आशट्रार् कण्णुम् तैंरियुङ्काल्
इन्मै अरिदे वैंळिऱु.

ज्ञाता विशिष्ट शास्त्र के, औ' निर्दोष स्वभाव।
फिर भी परखो तो उन्हें, नहिं अज्ञता-अभाव।। ५०३

नहिं... अभाव—कुछ दोष रहेगा। परखो—परीक्षा करो।

குணம்நாடிக் குற்றமும் நாடி அவற்றுள்
மிகைநாடி மிக்க கொளல். **504**

गुणम् नाडिक् कुट्रमुम् नाडि अवट्रुळ्
मिहै नाडि मिक्क कोॅळल्.

परख गुणों को फिर परख, दोषों को भी छान।
उनमें बहुतायत परख, उससे कर पहचान।। ५०४

छान—जाँचना। बहुतायत—अधिकता (गुण—दोषों में)। 'अनुवाद के संबंध में' अध्याय में इस दोहे का उल्लेख है।

பெருமைக்கும் ஏனைச் சிறுமைக்கும் தத்தம்
கருமமே கட்டளைக் கல். **505**

पेॅरुमैक्कुम् एनैच्चिरुमैक्कुम् तत्तम्
करुममे कट्टलैक्कल्.

महिमा या लघिमा सही, इनकी करने जाँच।
नर के निज निज कर्म ही, बनें कसौटी साँच।। ५०५

साँच—सच्ची।

அற்றாரைத் தேறுதல் ஓம்புக மற்றவர்
பற்றிலர் நாணார் பழி. **506**

अट्रारैत् तेरुदल् ओम्बुह मट्रवर्
पट्रिलर् नाणार् पषि.

विश्वसनीय न मानिये, बन्धुहीन जो लोग।
निन्दा से लज्जित न हैं, स्नेह-शून्य वे लोग।। ५०६

காதன்மை கந்தா அறிவறியார்த் தேறுதல்
பேதைமை யெல்லாம் தரும். 507

कादन्मै कन्दा अऱिवऱियारूत् तेऱुदल्
पेंदैमै यॅल्लाम् तरुम्.

मूर्ख जनों पर प्रेमवश, जो करता विश्वास।
सभी तरह से वह बने, जड़ता का आवास।। ५०७

தேரான் பிறனைத் தெளிந்தான் வழிமுறை
தீரா இடும்பை தரும். 508

तेरान् पिऱनैत् तॆंळिन्दान् वऴिमुऱै
तीरा इडुम्बै तरुम्.

परखे बिन अज्ञात पर, किया अगर विश्वास।
संतति को चिरकाल तक, लेनी पड़े उसाँस।। ५०८

लेनी पडे उसाँस — दुःख का अनुभव करना पडेगा।

தேறற்க யாரையும் தேராது தேர்ந்தபின்
தேறுக தேறும் பொருள். 509

तेऱ्ऱक यारैयुम् तेरादु तेर्न्दपिन्
तेऱुह तेऱुम् पॊरुळ्.

किसी व्यक्ति पर मत करो, परखे बिन विश्वास।
बेशक सौंपो योग्य पद, करने पर विश्वास।। ५०९

தேரான் தெளிவும் தெளிந்தான்கண் ஐயுறவும்
தீரா இடும்பை தரும். 510

तेरान् तॆंळिवुम् तॆंळिन्दान् कण् ऐयुरवुम्
तीरा इडुम्बै तरुम्.

परखे बिन विश्वास भी, औ' करके विश्वास।
फिर करना सन्देह भी, देते हैं चिर नाश।। ५१०

தெரிந்து விணையாடல् परख कर कार्य सौंपना तॆरिन्दु विनैयाडल्

நன்மையும் தீமையும் நாடி நலம்புரிந்த
தன்மையான் ஆளப் படும். **511**

ननमैयुम् तीमैयुम् नाडि नलम्पुरिन्द
तन्मैयान् आळप्पडुम्.

भले-बुरे को परख जो, करता भला पसंद।
उसके योग्य नियुक्ति को, करना सही प्रबन्ध।। ५११

வாரி பெருக்கி வளம்படுத்து உற்றவை
ஆராய்வான் செய்க விணை. **512**

वारि पॆरुक्कि वळम् पडुत्तु उट्रवै
आराय्वान् शॆय्ह विनै.

आय-वृद्धि-साधन बढ़ा, धन-वर्द्धक कर कार्य।
विघ्न परख जो टालता, वही करे नृप-कार्य।। ५१२

அன்பறிவு தேற்றம் அவாவின்மை இந்நான்கும்
நன்குடையான் கட்டே தெளிவு. **513**

अन्बऱिवु तेट्रम् अवाविन्मै इन्नान्गुम्
नन्गुडैयान् कट्टे तॆळिवु.

प्रेम, बुद्धि, दृढ़-चित्तता, निर्लोभता-सुनीति।
चारों जिसमें पूर्ण हों, उसपर करो प्रतीति।। ५१३

எனைவகையான் தேறியக் கண்ணும் விணைவகையான்
வேறாகும் மாந்தர் பலர். **514**

ऍनै वहैयान् तेऱियक्कण्णुम् विनैवहैयान्
वेऱाहुम् मान्दर् पलर्.

सभी तरह की परख से, योग्य दिखें जो लोग।
उनमें कार्य निबाहते, विकृत बने बहु लोग।। ५१४

निबाहते—निर्वाह करते हुए। विकृत बने—बिगड़ गये।

அறிந்தாற்றிச் செய்கிற்பாற்கு அல்லால் வினைதான்
சிறந்தானென்று ஏவற்பாற் றன்று. **515**

अरिन्दाट्रिच् चेय्हिरपारकु अल्लाल् विनैतान्
शिरन्दानॅन्ड्रु एवरपाट्रन्ड्रु.

जो करता है धैर्य से, खूब समझ सदुपाय।
उसे छोड़ प्रिय बन्धु को, कार्य न सौंपा जाय।। ५१५

செய்வானை நாடி வினைநாடிக் காலத்தோடு
எய்த உணர்ந்து செயல். **516**

शॅय्वानै नाडि विनै नाडिक् कालत्तोडु
ऍय्द उणर्न्दु शॅयल्.

कर्ता का लक्षण परख, परख कर्म की रीति।
संयोजित कर काल से, सौंपो सहित प्रतीति।। ५१६

परख—परीक्षा करो। संयोजित ... से—उचित समय देख कर।

இதனை இதனால் இவன்முடிக்கும் என்றாய்ந்து
அதனை அவன்கண் விடல். **517**

इदनै इदनाल् इवन् मुडिक्कुम् ऍन्ड्रायन्दु
अदनै अवन् कण् विडल्.

इस साधन से व्यक्ति यह, कर सकता यह कार्य।
परिशीलन कर इस तरह, सौंप उसे वह कार्य।। ५१७

வினைக்குரிமை நாடிய பின்றை அவனை
அதற்குரிய னாகச் செயல். 518

विनैक्कुरिमै नाडिय पिन्ड्रै अवनै
अदर्कुरियनाहच् चॅयल्.

यदि पाया इक व्यक्ति को, परख कार्य के योग्य।
तो फिर उसे नियुक्त कर, पदवी देना योग्य।। ५१८

परख – परीक्षा करके।

வினைக்கண் வினையுடையான் கேண்மைவே றாக
நினைப்பானை நீங்கும் திரு. 519

विनैक्कण् विनैयुडैयान् केण्मै वेऱाह
निनैप्पानै नीङ्गुम् तिरु.

तत्परता-वश कार्य में, हुआ मित्र-व्यवहार।
उसको समझे अन्यथा, तो श्री जावे पार।। ५१९

पार – दूर। मित्र – व्यवहार – मित्र की तरह बर्ताव करना। ऐसे उत्साही कार्य – कर्ता को उस व्यवहार के कारण राजा ने बुरा माना तो राजा का अनर्थ हो जायगा।

நாடோறும் நாடுக மன்னன் வினைசெய்வான்
கோடாமை கோடா துலகு. 520

नाडोऱुम् नाडुह मन्नन् विनै शॅय्वान्
कोडामै कोडादुलहु.

राज-भृत्य यदि विकृत नहिं, विकृत न होग़ा राज।
रोज़ परखना चाहिये, नृप को उसका काज।। ५२०

राज – भृत्य – राज का कर्मचारी। विकृत – बिगड़ा हुआ। नृप – राजा।

சுற்றந் தழால் बन्धुओं को अपनाना शुट्रन् तऴाल्

பற்றற்ற கண்ணும் பழைமைபா ராட்டுதல்
சுற்றத்தார் கண்ணே யுள. **521**

पट्रट्र कणॣणुम् पऴैमै पाराट्टुदल्
शुट्रत्तार् कणॣणेयुळ.

यद्यपि निर्धन हो गये, पहले कृत उपकार।
कहते रहे बखान कर, केवल नातेदार।। ५२१

बखान कर—सराह कर।

விருப்பறாச் சுற்றம் இயையின் அருப்பறா
ஆக்கம் பலவுந் தரும். **522**

विरुप्पराच् चुट्रम् इयैयिन् अरुप्परा
आक्कम् पलवुन् तरुम्.

बन्धु-वर्ग ऐसा मिले, जिसका प्रेम अटूट।
तो वह दे संपत्ति सब, जिसकी वृद्धि अटूट।। ५२२

அளவளா வில்லாதான் வாழ்க்கை குளவளாக்
கோடின்றி நீர்நிறைந் தற்று. **523**

अळवळा विल्लादान् वाऴ्क्कै कुळवळाक्
कोडिन्ड्रि नीर् निऱैन्दट्रु.

मिलनसार जो है नहीं, जीवन उसका व्यर्थ।
तट बिन विस्तृत ताल ज्यों, भरता जल से व्यर्थ।। ५२३

तट—कूल, किनारा। ताल—तलाब।

சுற்றத்தால் சுற்றப் படஒழுகல் செல்வந்தான்
பெற்றத்தால் பெற்ற பயன். **524**

शुट्रत्ताल् शुट्रप्पड ओऴुहल् शॅल्वन्दान्
पॅट्रत्ताल् पॅट्र पयन्.

अपने को पाया धनी, तो फल हो यह प्राप्त।
बन्धु-मंडली घिर रहे, यों रहना बन आप्त।। ५२४

आप्त रहना — कुशल रहना।

கொடுத்தலும் இன்சொலும் ஆற்றின் அடுக்கிய
சுற்றத்தால் சுற்றப் படும். **525**

कॉडुत्तलुम् इन्शॉलुम् आट्रिन् अडुक्किय
शुट्रत्ताल् शुट्रप्पडुम्.

मधुर वचन जो बोलता, करता भी है दान।
बन्धुवर्ग के वर्ग से, घिरा रहेगा जान।। ५२५

பெருங்கொடையான் பேணான் வெகுளி அவனின்
மருங்குடையார் மாநிலத்து இல். **526**

पॅरुङ्कॉडैयान् पेणान् वॅहुळि अवनिन्
मरुङ्गुडैयार् मा निलत्तु इल्.

महादान करते हुए, जो है क्रोध-विमुक्त।
उसके सम भू में नहीं, बन्धुवर्ग से युक्त।। ५२६

காக்கை கரவா கரைந்துண்ணும் ஆக்கமும்
அன்னநீ ரார்க்கே உள. **527**

काक्कै करवा करैन्दुण्णुम् आक्कमुम्
अन्न नीरार्क्के उळ.

बिना छिपाये काँव कर, कौआ खाता भोज्य।
जो हैं उसी स्वभाव के, पाते हैं सब भोग्य।। ५२७

काँव कर—काँव काँव (कौवे का शब्द)। भोज्य—खाने की चीज़।

பொதுநோக்கான் வேந்தன் வரிசையா நோக்கின்
அதுநோக்கி வாழ்வார் பலர். 528

पॊँदु नोक्कान् वेन्दन् वरिशैया नोक्किन्
अदु नोक्कि वाष़्वार् पलर्.

सब को सम देखे नहीं, देखे क्षमता एक।
इस गुण से स्थायी रहें, नृप के बन्धु अनेक।। ५२८

देखे क्षमता एक—योग्यता का ही विचार करेगा। योग्य और अयोग्य लोगों को बन्धु होने के नाते समान रूप से न देखेगा।

தமராகித் தற்றுறந்தார் சுற்றம் அமராமைக்
காரணம் இன்றி வரும். 529

तमराहित् तट्रुरन्दार् शुट्रम् अमरामैक्
कारणम् इन्ड्रि वरुम्.

बन्धु बने जो जन रहे, तोड़े यदि बन्धुत्व।
अनबन का कारण मिटे, तो बनता बन्धुत्व।। ५२९

உழைப்பிரிந்து காரணத்தின் வந்தானை வேந்தன்
இழைத்திருந்து எண்ணிக் கொளல். 530

उष़ैप्पिरिन्दु कारणत्तिन् वन्दानै वेन्दन्
इष़ैत्तिरुन्दु ऍण्णिक्कॊॅळल्.

कारण बिन जो बिछुड़ कर, लौटे कारण साथ।
साध-पूर्ति कर नृप उसे, परख, मिला ले साथ।। ५३०

साध — पूर्ति — जो बिछुड़ गये उसकी इच्छा की पूर्ति। परख — परीक्षा करके। उसको संतुष्ट करने के बाद फिर उसकी परीक्षा करके। (अपने साथ मिला लेना)।

அதிகாரம்-54 अध्याय — ५४ அரசியல் शासन — प्रकरण

பொச்சாவாமை अविस्मृति पोँचूचावामै

இறந்த வெகுளியின் தீதே சிறந்த
உவகை மகிழ்ச்சியிற் சோர்வு. **531**

इरुन्द वेँहुळियिन् तीते शिऱन्द
उवहै महिष्च्चियिर् शोर्वु.

अमित हर्ष से मस्त हो, रहना असावधान।
अमित क्रोध से भी अधिक, हानि करेगा जान।। ५३१

मस्त हो — मस्त हो कर। असावधान — सजग नहीं।

பொச்சாப்புக் கொல்லும் புகழை அறிவினை
நிச்ச நிரப்புக்கொன் றாங்கு. **532**

पोँचूचाप्पुक् कोँल्लुम् पुहऴै अऱिविनै
निच्च निरप्पुक् कोँन्ड्राङ्गु.

ज्यों है नित्यदरिद्रता, करती बुद्धि-विनाश।
त्यों है असावधानता, करती कीर्ति-विनाश।। ५३२

பொச்சாப்பார்க்கு இல்லை புகழ்மை அதுவுலகத்து
எப்பால்நூ லோர்க்கும் துணிவு. **533**

पोँचूचाप्पार्क्कु इल्लै पुहऴ्मै अदुवुलहत्तु
ऍप्पाल् नूलोर्क्कुम् तुणिवु.

जो विस्मृत हैं वे नहीं, यश पाने के योग।
जग में यों हैं एकमत, शास्त्रकार सब लोग।। ५३३

विस्मृत – भूला हुआ। योग – योग्य।

அச்ச முடையார்க்கு அரணில்லை ஆங்கில்லை
பொச்சாப் புடையார்க்கு நன்கு. 534

अच्चमुडैयार्क्कु अरणिल्लै आङ्गिल्लै
पोच्चापपुडैयार्क्कु नन्गु.

लाभ नहीं है दुर्ग से, उनको जो भयशील।
वैसे उनको ना भला, जो हैं विस्मृतिशील।। ५३४

முன்னுறக் காவாது இழுக்கியான் தன்பிழை
பின்னூறு இரங்கி விடும். 535

मुन्नुरक् कावादु इषुक्कियान् तन् पिषै
पिन्नूरु इरङ्गिविडुम्.

पहले से रक्षा न की, रह कर असावधान।
विपदा आने पर रहा, पछताता अज्ञान।। ५३५

இழுக்காமை யார்மாட்டும் என்றும் வழுக்காமை
வாயின் அதுவொப்பது இல். 536

इषुक्कामै यार्माट्टुम् ऍन्ड्रुम वषुक्कामै
वायिन् अदुवोप्पदु इल्.

सब जन से सब काल में, अविस्मरण की बान।
बरती जाय अचूक तो, उसके है न समान।। ५३६

अविस्मरण की बान – भूला हुआ न रहने का स्वभाव।

அரியஎன்று ஆகாத இல்லைபொச் சாவாக்
கருவியால் போற்றிச் செயின். 537

अरिय ऍन्ड्रु आहाद इल्लै पोँच्चावाक्
करुवियाल् पोट्रिच्चेँयिन्.

रह कर विस्मृति के बिना, सोच-समझ कर कार्य।
यदि करता है तो उसे, कुछ नहिं असाध्य कार्य।। ५३७

புகழ்ந்தவை போற்றிச் செயல்வேண்டும் செய்யாது
இகழ்ந்தார்க்கு எழுமையும் இல். 538

पुहष़्न्दवै पोट्रिच् चेयॅल्वेण्डुम् शेयॅयादु
इहष़्न्दार्क्कु ऍषुमैयुम् इल्.

करना श्रद्धा-भाव से, शास्त्रकार-स्तुत काम।
रहा उपेक्षक, यदि न कर, सात जन्म बेकाम।। ५३८

இகழ்ச்சியின் கெட்டாரை உள்ளுக தாந்தம்
மகிழ்ச்சியின் மைந்துறும் போழ்து. 539

इहष़्च्चियिन् कॅट्टारै उळ्ळुह तान्तम्
महिष़्च्चियिन् मैन्दुरुम् पोष़्दु.

जब अपने संतोष में, मस्त बनेंगे आप।
ग़फ़लत से जो हैं मिटे, उन्हें विचारो आप। ५३९

ग़फ़लत से — असावधानी से।

உள்ளியது எய்தல் எளிதுமன் மற்றுந்தான்
உள்ளியது உள்ளப் பெறின். 540

उळ्ळियदु ऍय्दल् ऍळिदुमन् मट्रुन्तान्
उळ्ळियदु उळ्ळप् पॅरिन्.

बना रहेगा यदि सदा, लक्ष्य मात्र का ध्यान।
अपने इच्छित लक्ष्य को, पाना है आसान।। ५४०

செங்கோன்மை सुशासन शेॅङ्गोन्मै

ஓர்ந்துகண் ணோடாது இறைபுரிந்து யார்மாட்டும்
தேர்ந்துசெய் வஃதே முறை. 541

ओरॗन्दु कणॄणोडादु इरॆपुरिन्दु यारॗमाट्टुम्
तेरॗन्दु शेॅय्ॗवहॗदे मुरॆ.

सबसे निर्दाक्षिण्य हो, सोच दोष की रीति।
उचित दण्ड निष्पक्ष रह, देना ही है नीति।। ५४१

निर्दाक्षिण्य हो — प्रसन्न करने का भाव छोड़ कर। निष्पक्ष रह — बिना तरफ़दारी किये।

வானோக்கி வாழும் உலகெல்லாம் மன்னவன்
கோல்நோக்கி வாழும் குடி. 542

वानोक्कि वाॗुम् उलहेॅल्लाम् मन्ॗनवन्
कोल् नोक्कि वाॗुम् कुडि.

जीवित हैं ज्यों जीव सब, ताक मेघ की ओर।
प्रजा ताक कर जी रही, राजदण्ड की ओर।। ५४२

ताकना — दृष्टि रखना। राजदण्ड — राजा का सुशासन।

அந்தணர் நூற்கும் அறத்திற்கும் ஆதியாய்
நின்றது மன்னவன் கோல். 543

अन्दणर् नूऱ्कुम् अऱत्तिऱ्कुम् आदियाय्
निन्ड्रदु मन्ॗनवन् कोल्.

ब्राह्मण-पोषित वेद औ', उसमें प्रस्तुत धर्म।
इनका स्थिर आधार है, राजदण्ड का धर्म।। ५४३

குடிதழீஇக் கோலோச்சும் மாநில மன்னன்
அடிதழீஇ நிற்கும் உலகு. **544**

कुडि तषीइक् कोलोच्चुम् मानिल मन्नन्
अडि तषीइ निऱ्कुम् उलहु.

प्रजा-पाल जो हो रहा, ढोता शासन-भार।
पाँव पकड़ उस भूप के, टिकता है संसार।। ५४४

இயல்புளிக் கோலோச்சும் மன்னவன் நாட்ட
பெயலும் விளையுளும் தொக்கு. **545**

इयल्पुळिक् कोलोच्चुम् मन्नवन् नाट्ट
पॅयलुम् विळैयुळुम् तॉक्कु.

है जिस नृप के देश में, शासन सुनीतिपूर्ण।
साथ मौसिमी वृष्टि के, रहे उपज भी पूर्ण।। ५४५

मौसिमी — उपयुक्त काल में। वृष्टि — बरसात।

வேலன்று வென்றி தருவது மன்னவன்
கோலதூஉம் கோடா தெனின். **546**

वेलन्ड्रु वॅन्ड्रि तरुवदु मन्नवन्
कोलदूउम् कोडादॅनिन्.

राजा को भाला नहीं, जो देता है जीत।
राजदण्ड ही दे विजय, यदि उसमें है सीध।। ५४६

भाला — बरछा, (याने सैनिक बल)। सीध — निष्पक्षता।

இறைகாக்கும் வையக மெல்லாம் அவனை
முறைகாக்கும் முட்டாச் செயின். **547**

इऱै काक्कुम् वैयहमॅल्लाम् अवनै
मुऱै काक्कुम् मुट्टाच् चॅयिन्.

रक्षा सारे जगत की, करता है नरनाथ।
उसका रक्षक नीति है, यदि वह चले अबाध।। ५४७

नरनाथ — राजा। उसका — राजा का। अबाध — बेरोक-टोक।

எண்பதத்தான் ஓரா முறைசெய்யா மன்னவன்
தண்பதத்தான் தானே கெடும். 548

ऍण्पदत्तान् ओरा मुऱै शॆय्या मन्नवन्
तण्पदत्तान् ताने कॆडुम्.

न्याय करे नहिं सोच कर, तथा भेंट भी कष्ट।
ऐसा नृप हो कर पतित, होता खुद ही नष्ट।। ५४८

குடிபுறங் காத்தோம்பிக் குற்றம் கடிதல்
வடுவன்று வேந்தன் தொழில். 549

कुडि पुरङ् कात्तोम्बिक् कुट्रम् कडिदल्
वडुवन्ड्रु वेन्दन् तॊऴिल्.

जन-रक्षण कर शत्रु से, करता पालन-कर्म।
दोषी को दे दण्ड तो, दोष न, पर नृप-धर्म।। ५४९

दोषी — अपराधी। नृप — धर्म — राजा का कर्तव्य।

கொலையிற் கொடியாரை வேந்தொறுத்தல் பைங்கூழ்
களைகட் டதனோடு நேர். 550

कॊलैयिऱ् कॊडियारै वेन्दॊऱुत्तल् पैङ्कूऴ्
कळै कट्टदनोडु नेर्.

यथा निराता खेत को, रखने फ़सल किसान।
मृत्यु-दण्ड नृप का उन्हें, जो हैं दुष्ट महान।। ५५०

निराना — फ़सल के पौधों के आस-पास की घास उखाड़ना। रखने — रक्षा करने के लिये।

கொடுங்கோன்மை क्रूर – शासन कॊॅडुङ्गोन्मै

கொலைமேற்கொண் டாரிற் கொடிதே அலைமேற்கொண்டு
அல்லவை செய்தொழுகும் வேந்து. 551

कॊॅलै मेऱ्कॊॅण्डारिऱ् कॊॅडिदे अलैमेऱ्कॊॅण्डु
अल्लवै शॆय्दॊॅऴुहुम् वेन्दु.

हत्यारे से भी अधिक, वह राजा है क्रूर।
जो जन को हैरान कर, करे पाप भरपूर।। ५५१

हैरान कर – परेशान कर, सता कर।

வேலொடு நின்றான் இடுஎன் றதுபோலும்
கோலொடு நின்றான் இரவு. 552

वेलॊॅडु निन्ड्रान् इडु ऍन्ड्रदुपोलुम्
कोलॊॅडु निन्ड्रान् इरवु.

भाला ले कर हो खड़े, डाकू की ज्यों माँग।
राजदण्डयुत की रही, त्यों भिक्षा की माँग।। ५५२

राजदण्डयुत – शासन करनेवाला। माँग – याचन करना।

நாடொறும் நாடி முறைசெய்யா மன்னவன்
நாடொறும் நாடு கெடும். 553

नाडोॅऱुम् नाडि मुऱै शॆय्या मन्नवन्
नाडोॅऱुम् नाडु कॆॅडुम्.

दिन दिन नीति विचार कर, नृप न करे यदि राज।
ह्रासोन्मुख होता रहे, दिन दिन उसका राज।। ५५३

ह्रासोन्मुख होना – अवनति की ओर बढ़ना।

கூழும் குடியும் ஒருங்கிழக்கும் கோல்கோடிச்
சூழாது செய்யும் அரசு. **554**

कूषुम् कुडियुम् ओरुंङ्गिषक्कुम् कोल् कोडिच्
चूषादु शेंय्युम् अरशु.

नीतिहीन शासन करे, बिन सोचे नरनाथ।
तो वह प्रजा व वित्त को, खो बैठे इक साथ।। ५५४

नरनाथ—राजा। वित्त—धन—संपत्ति। व—और.

அல்லற்பட்டு ஆற்றாது அழுதகண் ணீரன்றே
செல்வத்தைத் தேய்க்கும் படை. **555**

अल्लरुपट्टु आट्रादु अषुद कण्णीरन्ड्रे
शेंल्वत्तैत् तेय्क्कुम् पडै.

उतपीड़ित जन रो पड़े, जब वेदना अपार।
श्री का नाशक शस्त्र है, क्या न नेत्र-जल-धार।। ५५५

மன்னர்க்கு மன்னுதல் செங்கோன்மை அஃதின்றேல்
மன்னாவாம் மன்னர்க் கொளி. **556**

मन्नरक्कु मन्नुदल् शेंङ्कोन्मै अहृदिन्ड्रेल्
मन्नावाम् मन्नरक्कोंळि.

नीतिपूर्ण शासन रखे, नृप का यश चिरकाल।
नीति न हो तो, भूप का, यश न रहे सब काल।। ५५६

रखे—स्थायी रखे। भूप—राजा।

துளியின்மை ஞாலத்திற்கு எற்றற்றே வேந்தன்
அளியின்மை வாழும் உயிர்க்கு. **557**

तुळियिन्मै ञालत्तिरक्कु ऍट्रट्रे वेन्दन्
अळियिन्मै वाषुम् उयिरक्कु.

अनावृष्टि से दुःख जो, पाती भूमि अतीव।
दयावृष्टि बिन भूप की, पाते हैं सब जीव।। ५५७

अनावृष्टि — पानी न बरसना। अतीव — अत्यंत, बहुत अधिक। दयावृष्टि — करुणा की वर्षा।

இன்மையின் இன்னாது உடைமை முறைசெய்யா
மன்னவன் கோற்கீழ்ப்படின். 558

इऩ्मैयिऩ् इऩ्ऩादु उडैमै मुऱैशॆय्या
मऩ्ऩवऩ् कोऱ् कीऴ्प्पडिऩ्.

अति दुःखद है सधनता, रहने से धनहीन।
यदि अन्यायी राज के, रहना पड़े अधीन।। ५५८

सधनता — धनवान होना।

முறைகோடி மன்னவன் செய்யின் உறைகோடி
ஒல்லாது வானம் பெயல். 559

मुऱैकोडि मऩ्ऩवऩ् शॆय्यिऩ् उऱैकोडि
ऑल्लादु वानम् पॆयल्.

यदि राजा शासन करे, राजधर्म से चूक।
पानी बरसेगा नहीं, ऋतु में बादल चूक।। ५५९

ऋतु में — मौसिम में, (वर्षा काल में)।

ஆபயன் குன்றும் அறுதொழிலோர் நூல்மறப்பர்
காவலன் காவான் எனின். 560

आपयऩ् कुऩ्ऱुम् अऱुतॊऴिलोर् नूल् मऱप्पर्
कावलऩ् कावाऩ् ऍऩिऩ्.

षटकर्मी को स्मृति नहीं, दूध न देगी गाय।
यदि जन-रक्षक भूप से, रक्षा की नहिं जाय।। ५६०

षटकर्मी—छः प्रकार के कर्म करनेवाला; ब्राह्मण। ये कर्म हैं — यजन अर्थात् याग करना, याजन याने याग कराना, अध्ययन, अध्यापन, दान देना, दान लेना। स्मृति नहीं—शास्त्रों को भूल जायगा।

அதிகாரம்-57 अध्याय — ५७ அரசியல் शासन—प्रकरण

வெருவந்த செய்யாமை — भयकारी कर्म न करना — वेॅरुवन्द शेॅय्यामै

தக்காங்கு நாடித் தலைச்செல்லா வண்ணத்தால்
ஒத்தாங்கு ஒறுப்பது வேந்து. 561

तक्काङ्गु नाडित् तलैच्चेॅल्ला वण्णत्ताल्
ऒत्ताङ्गु ऒऱुप्पदु वेन्दु.

भूप वही जो दोष का, करके उचित विचार।
योग्य दण्ड दे इस तरह, फिर नहिं हो वह कार।। ५६१

भूप—राजा। कार—कार्य।

கடிதோச்சி மெல்ல எறிக நெடிதாக்கம்
நீங்காமை வேண்டு பவர். 562

कडिदोच्चि मॆल्ल ऍऱिह नॆंडिदाक्कम्
नीङ्गामै वेण्डुपवर्.

राजश्री चिरकाल यदि, रखना चाहें साथ।
दिखा दण्ड की उग्रता, करना मृदु आघात।। ५६२

வெருவந்த செய்தொழுகும் வெங்கோல னாயின்
ஒருவந்தம் ஒல்லைக் கெடும். 563

वॆरुवन्द शॆय्‌दोषुहुम् वॆङ्‌कोलनायिन्
ऒरुवन्दम् ऒल्लैक् कॆडुम्.

यदि भयकारी कर्म कर, करे प्रजा को त्रस्त।
निश्चय जल्दी क्रूर वह, हो जावेगा अस्त।। ५६३

त्रस्त — भयभीत। अस्त होना — नष्ट होना, मिट जाना।

இறைகடியன் என்றுரைக்கும் இன்னாச்சொல் வேந்தன்
உறைகடுகி ஒல்லைக் கெடும். 564

इऱैकडियन् ऍन्ड्रुरैक्कुम् इन्नाच्चॊल् वेन्दन्
उऱै कडुहि ऒल्लैक् कॆडुम्.

जिस नृप की दुष्कीर्ति हो, 'राजा है अति क्रूर'।
अल्प आयु हो जल्द वह, होगा नष्ट ज़रूर।। ५६४

दुष्कीर्ति — बदनामी। अल्प — बहुत कम। आयु — उम्र।

அருஞ்செவ்வி இன்னா முகத்தான் பெருஞ்செல்வம்
பேஎய்கண் டன்னது உடைத்து. 565

अरुञ् चॆव्वि इन्ना मुहत्तान् पॆरुञ्चॆल्वम्
पेऍय् कण्डन्नदु उडैत्तु.

अप्रसन्न जिसका वदन, भेंट नहीं आसान।
ज्यों अपार धन भूत-वश, उसका धन भी जान।। ५६५

वदन — चेहरा। भूत — वश — पिशाच के वश में।

கடுஞ்சொல்லன் கண்ணில னாயின் நெடுஞ்செல்வம்
நீடின்றி ஆங்கே கெடும். 566

कडुञ् चॊल्लन् कण्णिलनायिन् नॆडुञ्चॆल्वम्
नीडिन्ड्रि आङ्‌गे कॆडुम्.

कटु भाषी यदि हो तथा, दया-दृष्टि से हीन।
विपुल विभव नृप का मिटे, तत्क्षण हो स्थितिहीन।। ५६६

कटु भाषी—कड़ुवी बातें करनेवाला। विपुल विभव—भारी धन। तत्क्षण—तुरंत। स्थितिहीन—स्थायी रहे बिना।

கடுமொழியும் கையிகந்த தண்டமும் வேந்தன்
அடுமுரண் தேய்க்கும் அரம். 567

कड़ुमॊऴियुम् कैयिहन्द दण्डमुम् वेन्दन्
अड़ुमुरण तेय्क्कुम् अरम्.

कटु भाषण नृप का तथा, देना दण्ड अमान।
शत्रु-दमन की शक्ति को, घिसती रेती जान।। ५६७

अमान—अपरिमित, बेहद। घिसती रेती— रगड़ रगड़ कर जो वस्तु को कम कर देगी।

இனத்தாற்றி எண்ணாத வேந்தன் சினத்தாற்றிச்
சீறின் சிறுகும் திரு. 568

इनत्ताट्रि ऍण्णाद वेन्दन् शिनत्ताट्रिच्
चीऱिन् शिऱुहुम् तिरु.

सचिवों की न सलाह ले, फिर होने पर कष्ट।
आग-बबूला नृप हुआ, तो श्री होगी नष्ट।। ५६८

सचिव—मंत्री। नृप—राजा। श्री—लक्ष्मी, धन।

செருவந்த போழ்திற் சிறைசெய்யா வேந்தன்
வெருவந்து வெய்து கெடும். 569

शॆऱुवन्द पोऴ्दिऱ् चिऱै शॆय्या वेन्दन्
वॆऱुवन्दु वॆय्दु कॆड़ुम्.

दुर्ग बनाया यदि नहीं, रक्षा के अनुरूप।
युद्ध छिड़ा तो हकबका, शीघ्र मिटे वह भूप।। ५६९

हकबका — हक्का बक्का हो कर, बहुत घबरा कर।

கல்லார்ப் பிணிக்கும் கடுங்கோல் அதுவல்லது
இல்லை நிலக்குப் பொறை. 570

कल्लारूप् पिणिक्कुम् कडुङ्गोल् अदुवल्लदु
इल्लै निलक्कुप् पॉरै.

मूर्खों को मंत्री रखे, यदि शासक बहु क्रूर।
उनसे औ' नहिं भूमि को, भार रूप भरपूर।। ५७०

அதிகாரம்-58   अध्याय — ५८   அரசியல் शासन -- प्रकरण

கண்ணோட்டம्   दया — दृष्टि   कण्णोट्टम्

கண்ணோட்டம் என்னும் கழிபெருங் காரிகை
உண்மையான் உண்டிவ் வுலகு. 571

कण्णोट्टम् ऍन्नुम् कऴि पॅरुङ् कारिहै
उण्मैयान् उण्डिव्वुलहु.

करुणा रूपी सोहती, सुषमा रही अपार।
नृप में उसके राजते, टिकता है संसार।। ५७१

सोहना — शोभित होना। सुषमा — अत्यंत सुन्दरता।

கண்ணோட்டத் துள்ளது உலகியல் அஃதிலார்
உண்மை நிலக்குப் பொறை. 572

कण्णोट्टत्तुळ्ळदु उलहियल् अहदिलार्
उण्मै निलक्कुप् पॉरै.

करुणा से है चल रहा, सांसारिक व्यवहार।
जो नर उससे रहित है, केवल भू का भार।। ५७२

भू का भार — भूमि के लिये भार — स्वरूप है।

பண்என்னும் பாடற்கு இயைபின்றேல் கண்என்னும்
கண்ணோட்டம் இல்லாத கண். 573

पण् ऍन्नाम् पाडऱ्कु इयैपिन्ड्रेल् कण् ऍन्नाम्
कण्णोट्टम् इल्लाद कण्.

मेल न हो तो गान से, तान करे क्या काम।
दया न हो तो दृष्टि में, दृग आये क्या काम।। ५७३

तान — राग आलाप। दृग — आँख।

உளபோல் முகத்தெவன் செய்யும் அளவினல்
கண்ணோட்டம் இல்லாத கண். 574

उळपोल् मुहत्तॅवन् शॅय्युम् अळविनाल्
कण्णोट्टम् इल्लाद कण्.

करुणा कलित नयन नहीं, समुचित सीमाबद्ध।
तो क्या आवें काम वे, मुख से रह संबद्ध।। ५७४

करुणा कलित — करुणा से सुसज्जित, सुन्दर।

கண்ணிற்கு அணிகலம் கண்ணோட்டம் அஃதின்றேல்
புண்ணென்று உணரப் படும். 575

कण्णिऱ्कु अणिकलम् कण्णोट्टम् अह्दिन्ड्रेल्
पुण्णॅन्ड्रु उणरप्पडुम्.

आभूषण है नेत्र का, करुणा का सद्भाव।
उसके बिन जानो उसे, केवल मुख पर घाव।। ५७५

மண்ணோ டியைந்த மரத்தனையர் கண்ணோ
டியைந்துகண் ணோடா தவர். 576

मण्णोडियैन्द मरत्तनैयर् कण्णो
डियैन्दु कण्णोडादवर्.

रहने पर भी आँख के, जिसके है नहिं आँख।
यथा ईख भू में लगी, जिसके भी हैं आँख।। ५७६

नहिं आँख — दया दृष्टि नहीं। ईख की आँख — ईख की गाँठ पर की नोक जिससे अँकुआ निकलता है।

கண்ணோட்டம் இல்லவர் கண்ணிலர் கண்ணுடையார்
கண்ணோட்டம் இன்மையும் இல். 577

कण्णोट्टम् इल्लवर् कण्णिलर् कण्णुडैयार्
कण्णोट्टम् इन्मैयुम् इल्.

आँखहीन ही हैं मनुज, यदि न आँख का भाव।
आँखयुक्त में आँख का, होता भी न अभाव।। ५७७

आँख का भाव — करुणा का भाव। आँख का अर्थ दया, करुणा भी है। तमिल भाषा में भी 'कण्' का अर्थ नेत्र है, साथ ही दया या करुणा भी है। 'कुरळ' मूल में ऐसा ही प्रयोग है।

கருமஞ் சிதையாமல் கண்ணோட வல்லார்க்கு
உரிமை உடைத்திவ் வுலகு. 578

करुमञ् चितैयामल् कण्णोड वल्लार्क्कु
उरिमै उडैत्तिव्वुलहु.

हानि बिना निज धर्म की, करुणा का व्यवहार।
जो कर सकता है उसे, जग पर है अधिकार।। ५७८

ஒறுத்தாற்றும் பண்பினார் கண்ணும்கண் ணோடிப்
பொறுத்தாற்றும் பண்பே தலை. 579

ओऱ्ँतूताट्रुम् पण्बिनार् कण्णुम् कण्णोडिप्
पोऱ्ुतूताट्रुम् पण्बे तलै.

अपनी क्षति भी जो करे, उसपर करुणा-भाव।
धारण कर, करना क्षमा, नृप का श्रेष्ठ स्वभाव।। ५७९

क्षति — हानि। नृप — राजा।

பெயக்கண்டும் நஞ்சுண் டமைவர் நயத்தக்க
நாகரிகம் வேண்டு பவர். 580

पेॅयक्कण्डुम् नञ्जुण्डमैवर् नयतूतक्क
नागरिकम् वेण्डुपवर्.

देख मिलाते गरल भी, खा जाते वह भोग।
वाँछनीय दाक्षिण्य के, इच्छुक हैं जो लोग।। ५८०

गरल — विष। भोग — खाद्य पदार्थ (नैवेद्य; प्रिय साथी का दिया हुआ ऐसा भोजन भी)

அதிகாரம்—59 अध्याय — ५९ அரசியல் शासन — प्रकरण

ஒற்றாடல் गुप्तचर-व्यवस्था ओट्राडल

ஒற்றும் உரைசான்ற நூலும் இவையிரண்டும்
தெற்றென்க மன்னவன் கண். 581

ओट्रुम् उरैशान्ड्र नूलुम् इवैयिरण्डुम्
तेॅट्रेॅन्ग मन्नवन् कण्.

जो अपने चर हैं तथा, नीतिशास्त्र विख्यात।
ये दोनों निज नेत्र हैं, नृप को होना ज्ञात।। ५८१

चर – जासूस। नृप – राजा। होना ज्ञात – जानना चाहिये।

எல்லார்க்கும் எல்லாம் நிகழ்பவை எஞ்ஞான்றும்
வல்லறிதல் வேந்தன் தொழில். **582**

ऍल्लार्क्कुम् ऍल्लाम् निहऴ्पवै ऍञ्ञान्ड्रुम्
वल्लरिदल् वेन्दन् तॊऴिल्.

सब पर जो जो घटित हों, सब बातें सब काल।
राजधर्म है जानना, चारों से तत्काल।। ५८२

चारों से – गुप्तचरों से।

ஒற்றினான் ஒற்றிப் பொருள்தெரியா மன்னவன்
கொற்றங் கொளக்கிடந்தது இல். **583**

ऑट्रिनान् ऑट्रिप् पोरुळ् तैरिया मन्नवन्
कॉट्रङ् कॉळक्किडन्ददु इल्.

बात चरों से जानते, आशय का नहिं ज्ञान।
तो उस नृप की विजय का, मार्ग नहीं है आन।। ५८३

चरों से – गुप्तचरों से। आशय – आंतरिक उद्देश्य। आन – अन्य।

வினைசெய்வார் தம்சுற்றம் வேண்டாதார் என்றாங்கு
அனைவரையும் ஆராய்வது ஒற்று. **584**

विनैशॅय्वार् तम् शुट्रम् वेण्डादार् ऍन्ड्राङ्गु
अनैवरैयुम् आरायवदु ऑट्रु.

राजकर्मचारी, स्वजन, तथा शत्रु जो वाम।
सब के सब को परखना, रहा गुप्तचर-काम।। ५८४

वाम – प्रतिकूल। परखना – परीक्षा करना। गुप्तचर – जासूस।

கடாஅ உருவொடு கண்ணஞ்சாது யாண்டும்
உகாஅமை வல்லதே ஒற்று. 585

कडाअ उरुवोॅडु कणण्ञ्जादु याण्डुम्
उहा अमै वल्लदे ओॅट्ऱु.

रूप देख कर शक न हो, आँख हुई, निर्भीक।
कहीं कहे नहिं मर्म को, सक्षम वह चर ठीक।। ५८५

आँख होना — पहचान होना। निर्भीक — निडर (पहचाने जाने पर)।

துறந்தார் படிவத்த ராகி இறந்தாராய்ந்து
என்செயினும் சோர்விலது ஒற்று. 586

तुऱन्दार् पडिवत्तराहि इऱन्दारायन्दु
ऍन्शॅयिनुम् शोर्विलदु ओॅट्ऱु.

साधु वेष में घुस चले, पता लगाते मर्म।
फिर कुछ भी हो चुप रहे, यही गुप्तचर-कर्म।। ५८६

மறைந்தவை கேட்கவற் றாகி அறிந்தவை
ஐயப்பாடு இல்லதே ஒற்று. 587

मऱैन्दवै केट्कवट्राहि अऱिन्दवै
ऐयप्पाडु इल्लदे ओॅट्ऱु.

भेद लगाने में चतुर, फिर जो बातें ज्ञात।
उनमें संशयरहित हो, वही भेदिया ख्यात।। ५८७

चतुर — समर्थ। संशय — संदेह, शक। भेदिया — गुप्तचर।

ஒற்றொற்றித் தந்த பொருளையும் மற்றுமோர்
ஒற்றினால் ஒற்றிக் கொளல். 588

ओॅट्रोॅट्रित् तन्द पोॅरुळैयुम् मट्रुमोर्
ओॅट्रिनाल् ओॅट्रिक् कोॅळल्.

पता लगा कर भेद का, लाया यदि इक चार।
भेद लगा फिर अन्य से, तुलना कर स्वीकार।। ५८८

चार — गुप्तचर। अन्य से — अन्य गुप्तचर से। स्वीकार — मानना।

ஒற்றொற் றுணராமை ஆள்க உடன்மூவர்
சொல்தொக்க தேறப் படும். 589

ऑट्रॊट्रुणरामै आळ्ह उडन् मूवर्
शॊल् तॊक्क तेरप्पडुम्.

चर चर को जाने नहीं, यों कर शासन-कर्म।
सत्य मान, जब तीन चर, कहें एक सा मर्म।। ५८९

चर चर को — एक गुप्त चर दूसरे को। मान — मानो। मर्म — रहस्य।

சிறப்பறிய ஒற்றின்கண் செய்யற்க செய்யின்
புறப்படுத்தா னாகும் மறை. 590

शिऱप्पऱिय ऑट्रिन्कण् शॆय्यऱ्क शॆय्यिन्
पुऱप्पडुत्तानाहुम् मऱै.

खुले आम जासूस का, करना मत सम्मान।
अगर किया तो भेद को, प्रकट किया खुद जान।। ५९०

खुले आम् — सब के सामने। गुप्तचर, चर, चार, भेदिया, जासूस; ये समानर्थवाची शब्द हैं।
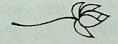
ஊக்கம் உடைமை उत्साहयुक्तता ऊक्कम् उडैमै

உடைய ரெனப்படுவது ஊக்கம்அஃ தில்லார்
உடையது உடையரோ மற்று. 591

उडैयरॅनप्पडुवदु ऊक्कम् अहृदिल्लार्
उडैयदु उडैयरो मट्रॢ.

धनी कहाने योग्य है, यदि हो धन उत्साह।
उसके बिन यदि अन्य धन, हो तो क्या परवाह।। ५९१

क्या परवाह—क्या आसरा अर्थात् प्रयोजन नहीं है।

உள்ளம் உடைமை உடைமை பொருளுடைமை
நில்லாது நீங்கி விடும். 592

उळ्ळम् उडैमै उडैमैं पोरुॅळुडैमै
निल्लादु नीङ्गिविडुम्.

एक स्वत्व उत्साह है, स्थायी स्वत्व ज़रूर।
अस्थायी रह अन्य धन, हो जायेंगे दूर।। ५९२

ஆக்கம் இழந்தேமென்று அல்லாவார் ஊக்கம்
ஒருவந்தம் கைத்துடை யார். 593

आक्कम् इऴन्देमेंन्ड्रु अल्लावार् ऊक्कम्
ओरुॅवन्दम् कैत्तुडैयार्.

रहता जिनके हाथ में, उमंग का स्थिर वित्त।
'वित्त गया' कहते हुए, ना हों अधीर-चित्त।। ५९३

वित्त — धन। अधीर — चित्त — व्याकुल मन का।

ஆக்கம் அதர்வினாய்ச் செல்லும் அசைவிலா
ஊக்க முடையா னுழை. 594

आक्कम् अदर्विनाय्च् चॅल्लुम् अशैविला
ऊक्कमुडैयानुऴै.

जिस उत्साही पुरुष का, अचल रहे उत्साह।
वित्त चले उसके यहाँ, पूछ-ताछ कर राह।। ५९४

வெள்ளத் தனைய மலர்நீட்டம் மாந்தர்தம்
உள்ளத் தனையது உயர்வு. 595

वॆळ्ळत्तनैय मलर् नीट्टम् मान्दर्तम्
उळ्ळत्तनैयदु उयर्वु.

जलज-नाल उतनी बड़ी, जितनी जल की थाह।
नर होता उतना बड़ा, जितना हो उत्साह।। ५९५

जलज—नाल—कमल की पोली लंबी डंडी। थाह—गहराई की सीमा।

உள்ளுவ தெல்லாம் உயர்வுள்ளல் மற்றது
தள்ளினும் தள்ளாமை நீர்த்து. 596

उळ्ळुवदॆल्लाम् उयर्वुळ्ळल् मट्रदु
तळ्ळिनुम् तळ्ळामै नीर्त्तु.

जो विचार मन में उठें, सब हों उच्च विचार।
यद्यपि सिद्ध न उच्चता, विफल न वे सुविचार।। ५९६

उच्चता—ऊँचा लक्ष्य। सिद्ध न—प्राप्त नहीं।

சிதைவிடத்து ஒல்கார் உரவோர் புதையம்பிற்
பட்டுப்பா டூன்றும் களிறு. 597

शिदैविडत्तु ऒल्हार् उरवोर् पुदैयम्बिऱ्
पट्टुप्पाडून्ड्रुम् कळिरु.

दुर्गति में भी उद्यमी, होते नहीं अधीर।
घायल भी शर-राशि से, गज रहता है धीर।। ५९७

उद्यमी—प्रयत्नशील (उत्साह से)। शर—राशि— तीरों के समूह।

உள்ளம் இலாதவர் எய்தார் உலகத்து
வள்ளியம் என்னும் செருக்கு. 598

उळ्ळम् इलादवर् ऍय्दार् उलहत्तु
वळ्ळियम् ऍन्नुम् शॆरुक्कु.

'हम तो हैं इस जगत में, दानी महा धुरीण'।
कर सकते नहिं गर्व यों, जो हैं जोश-विहीन।। ५९८

धुरीण—मुख्य, जोश—विहीन—(जिनको) उत्साह नहीं।

பரியது கூர்ங்கோட்டது ஆயினும் யானை
வெரூஉம் புலிதாக் குறின். 599

पारयदु कूर्ङ्कोट्टदु आयिनुम् यानै
वॆरूउम् पुलिताक् कुरिन्.

यद्यपि विशालकाय है, तथा तेज़ हैं दांत।
डरता है गज बाघ से, होने पर आक्रांत।। ५९९

विशालकाय—बड़ा शरीरवाला। आक्रांत होने पर—हमला होने पर।

உரமொருவற்கு உள்ள வெறுக்கை அஃதில்லார்
மரம்மக்க ளாதலே வேறு. 600

उरमॊरुवर्कु उळ्ळवॆरुक्कै अह्दिल्लार्
मरम् मक्कळादले वेरु.

सच्ची शक्ति मनुष्य की, है उत्साह अपार।
उसके बिन नर वृक्ष सम, केवल नर आकार।। ६००

नर आकार—मनुष्य का रूप।

மடி இன்மை आलस्यहीनता मडि इन्मै

குடியென்னும் குன்றா விளக்கம் மடியென்னும்
மாசூர மாய்ந்து கெடும். 601

कुडियेँन्नुम् कुन्ड्रा विळक्कम् मडियेँन्नुम्
माशूर मायून्दु कॅड्डुम्.

जब तम से आलस्य के, आच्छादित हो जाय।
अक्षय दीप कुटुंब का, मंद मंद बुझ जाय।। ६०१

आलस्य — सुस्ती। आच्छादित होना — छा जाना। तम — अँधेरा।

மடியை மடியா ஒழுகல் குடியைக்
குடியாக வேண்டு பவர். 602

मडियै मडिया ओँषुहल् कुडियैक्
कुडियाह वेण्डुपवर्.

जो चाहें निज वंश का, बना रहे उत्कर्ष।
नाश करें आलस्य का, करते उसका धर्ष।। ६०२

उत्कर्ष — श्रेष्ठता। धर्ष — दमन।

மடிமடிக் கொண்டொழுகும் பேதை பிறந்த
குடிமடியும் தன்னினும் முந்து. 603

मडि मडिक्कोँण्डोँषुहुम् पेदै पिरन्द
कुडि मडियुम् तन्निनुम् मुन्दु.

गोद लिये आलस्य को, जो जड़ करे विलास।
होगा उसके पूर्व ही, जात-वंश का नाश।। ६०३

जड़ — मूर्ख। जात-वंश — उसका वंश जिस में जन्म हो चुका है और
जिसका वह पालक है।

குடிமடிந்து குற்றம் பெருகும் மடிமடிந்து
மாண்ட உஞற்றி லவர்க்கு. 604

कुडि मडिन्दु कुटम् पॆरुहुम् मडि मडिन्दु
माण्ड उञट्रिलवर्क्कु.

जो सुस्ती में मग्न हों, यत्न बिना सुविशेष।
तो उनका कुल नष्ट हो, बढें दोष निःशेष।। ६०४

நெடுநீர் மறவி மடிதுயில் நான்கும்
கெடுநீரார் காமக் கலன். 605

नॆंडुनीर् मरवि मडि तुयिल् नान्गुम्
कॆडु नीरार् कामक्कलन्.

दीर्घसूत्रता, विस्मरण, सुस्ती, निद्रा-चाव।
जो जन चाहें डूबना, चारों हैं प्रिय नाव।। ६०५

दार्घसूत्रता — काम करने में विलम्ब करने का स्वभाव। निद्रा— चाव — सोते रहने में इच्छा। अर्थात् अधिक सोना।

படியுடையார் பற்றமைந்தக் கண்ணும் மடியுடையார்
மாண்பயன் எய்தல் அரிது. 606

पडियुडैयार् पट्मैन्दक्कण्णुम् मडियुडैयार्
माण्पयन् ऍय्दल् अरिदु.

सार्वभौम की श्री स्वयं, चाहे आवे पास।
तो भी जो हैं आलसी, पावें नहिं फल ख़ास।। ६०६

सार्वभौम — चक्रवर्ती राजा। श्री — ऐश्वर्य। खास — विशेष।

இடிபுரிந்து எள்ளுஞ்சொல் கேட்பர் மடிபுரிந்து
மாண்ட உஞற்றி லவர். 607

इडिपुरिन्दु एळ्ळुञ्चॊल् केट्पर् मडिपुरिन्दु
माण्ड उञट्रिलवर्.

सुस्ती-प्रिय बन, यत्न सुठि, करते नहिं जो लोग।
डांट तथा उपहास भी, सुनते हैं वे लोग।। ६०७

सुठि—अच्छा। उपहास—निन्दा।

மடிமை குடிமைக்கண் தங்கின்தன் ஒன்னார்க்கு
அடிமை புகுத்தி விடும். 608

मडिमै कुडिमैक्कण् तङ्गिन् तन् ओऩ्ऩार्क्कु
अडिमै पुहुत्तिविडुम्.

घर कर ले आलस्य यदि, रह कुलीन के पास।
उसके रिपु के वश उसे, बनायगा वह दास।। ६०८

कुलीन—उत्तम कुल में पैदा हुआ। रिपु—शत्रु। वह—आलस्य।

குடியாண்மை யுள்வந்த குற்றம் ஒருவன்
மடியாண்மை மாற்றக் கெடும். 609

कुडियाण्मैयुळ् वन्द कुट्रम् ओंरुवन्
मडियाण्मै माट्रक्कॅडुम्.

सुस्ती-पालन बान का, कर देगा यदि अंत।
वंश और पुरुषार्थ में, लगे दोष हों अंत।। ६०९

बान—स्वभाव। पुरुषार्थ—पुरुष के योग्य उद्योग।

மடியிலா மன்னவன் எய்தும் அடியளந்தான்
தாஅய தெல்லாம் ஒருங்கு. 610

मडियिला मन्नवन् ऍय्दुम् अडियळन्दान्
ताअयदॅल्लाम् ओंरुङ्गु.

क़दम बढ़ा कर विष्णु ने, जिसे किया था व्याप्त।
वह सब आलसहीन नृप, करे एकदम प्राप्त।। ६१०

वह सब—सारा जगत। आलस्यहीन—जिसे सुस्ती नहीं। नृप—राजा।

ஆள்வினை உடைமை उद्यमशीलता आळ्विनै उडैमै

அருமை உடைத்தென்று அசாவாமை வேண்டும்
பெருமை முயற்சி தரும். 611

अरुमै उडैत्तेन्ड्रु अशावामै वेण्डुम्
पॅरुमै मुयर्चि तरुम्.

दुष्कर यह यों समझकर, होना नहीं निरास।
जानो योग्य महानता, देगा सतत प्रयास।। ६११

दुष्कर—करना कठिन। निरास—निराश। प्रयास—प्रयत्न।

வினைக்கண் வினைகெடல் ஓம்பல் வினைக்குறை
தீர்ந்தாரின் தீர்ந்தன்று உலகு. 612

विनैक्कण् विनै कॅडल् ओम्बल् विनैक्कुरै
तीर्न्दारिन् तीर्न्दन्ड्रु उलहु.

ढीला पड़ना यत्न में, कर दो बिलकुल त्याग।
त्यागेंगे जो यत्न को, उन्हें करे जग त्याग।। ६१२

தாளாண்மை என்னுந் தகைமைக்கண் தங்கிற்றே
வேளாண்மை என்னுஞ் செருக்கு. 613

ताळाण्मै ऍन्नुन् तहैमैक्कण् तङ्गिट्रे
वेळाण्मै ऍन्नुञ् चॅरुक्कु.

यत्नशीलता जो रही, उत्तम गुणस्वरूप।
उसपर स्थित है श्रेष्ठता, परोपकार स्वरूप।। ६१३

தாளாண்மை இல்லாதான் வேளாண்மை பேடிகை
வாளாண்மை போலக் கெடும். 614

ताळाण्मै इल्लादान् वेळाण्मै पेडिकै
वाळाण्मै पोलक्कॅडुम्.

यों है उद्यमरहित का, करना परोपकार।
कोई कायर व्यर्थ ज्यों, चला रहा तलवार।। ६१४

இன்பம் விழையான் வினைவிழைவான் தன்கேளிர்
துன்பம் துடைத்தூன்றும் தூண். 615

इनूबम् विष़ैयान् विनैविष़ैवान् तनूकेळिर्
तुनूबम् तुडैत्तून्ड्रुम् तूण्.

जिसे न सुख की चाह है, कर्म-पूर्ति है चाह।
स्तंभ बने वह थामता, मिटा बन्धुजन-आह।। ६१५

முயற்சி திருவினை யாக்கும் முயற்றின்மை
இன்மை புகுத்தி விடும். 616

मुयऱ्चि तिरुविनैयाक्कुम् मुयट्रिन्मै
इनूमै पुहुत्ति विडुम्.

बढ़ती धन-संपत्ति की, कर देता है यत्न।
दारिद्रय को घुसेड़ कर, देता रहे अयत्न।। ६१६

மடியுளாள் மாமுகடி என்ப மடியிலான்
தாளுளாள் தாமரையி னாள். 617

मडियुळाळ् मामुहडि ऍनूब मडियिलान्
ताळुळाळ् तामरैयिनाळ्.

करती है आलस्य में, काली ज्येष्ठा वास।
यत्नशील के यत्न में, कमला का है वास।। ६१७

ज्येष्ठा — लक्ष्मी की बड़ी बहन, अलक्ष्मी। कमला — लक्ष्मी। आलस्य — सुस्ती।

பொறியின்மை யார்க்கும் பழியன்று அறிவறிந்து
ஆள்வினை இன்மை பழி. 618

पोऱियिनूमै यारूक्कुम् पष़ियन्ड्रु अऱिवऱिन्दु
आळ्विनै इनूमै पष़ि.

यदि विधि नहिं अनुकूल है, तो न किसी का दोष।
खूब जान ज्ञातव्य को, यत्न न करना दोष।। ६१८

ज्ञातव्य — जानने योग्य विषय।

தெய்வத்தான் ஆகாது எனினும் முயற்சிதன்
மெய்வருத்தக் கூலி தரும். 619

दॅय्वत्तान् आहादु ऍनिनुम् मुयऱ्चि तन्
मॅय् वरुत्तक् कूलि तरुम्.

यद्यपि मिले न दैववश, इच्छित फल जो भोग्य।
श्रम देगा पारिश्रमिक, निज देह-श्रम-योग्य।। ६१९

दैववश — भाग्यवश। श्रम ... योग्य — परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता।

ஊழையும் உப்பக்கம் காண்பர் உலைவின்றித்
தாழாது உஞற்று பவர். 620

ऊऴैयुम् उप्पक्कम् काण्बर् उलैविन्ड्रित्
ताऴादु उञट्रुपवर्.

विधि पर भी पाते विजय, जो हैं उद्यमशील।
सतत यत्न करते हुए, बिना किये कुछ ढील।। ६२०

அதிகாரம்-63

अध्याय—६३ அரசியல் शासन—प्रकरण

இடுக்கண் அழியாமை — संकट में अनाकुलता — इडुक्कण अऴियामै

இடுக்கண் வருங்கால் நகுக அதனை
அடுத்தூர்வது அஃதொப்பது இல். 621

इडुक्कण् वरुङ्गाल् नहुह अदनै
अडुत्तूर्वदु अह्दॉप्पदु इल्.

जब दुख-संकट आ पड़े, तब करना उल्लास।
तत्सम कोई ना करे, भिड़ कर उसका नाश।। ६२१

तत्सम—उसके समान।

வெள்ளத் தனைய இடும்பை அறிவுடையான்
உள்ளத்தின் உள்ளக் கெடும். 622

वेळ्ळत्तनैय इडुम्बै अरिवुडैयान्
उळ्ळत्तिन् उळ्ळक् कॆंडुम्.

जो आवेगा बाढ़ सा, बुद्धिमान को कष्ट।
मनोधैर्य से सोचते, हो जावे वह नष्ट।। ६२२

இடும்பைக்கு இடும்பை படுப்பர் இடும்பைக்கு
இடும்பை படாஅ தவர். 623

इडुम्बैक्कु इडुम्बै पडुप्पर् इडुम्बैक्कु
इडुम्बै पडाअ दवर्.

दुख-संकट जब आ पड़े दुखी न हों जो लोग।
दुख-संकट को दुःख में, डालेंगे वे लोग।। ६२३

மடுத்தவா யெல்லாம் பகடன்னான் உற்ற
இடுக்கண் இடர்ப்பாடு உடைத்து. 624

मडुत्तवायॆल्लाम् पहडन्नान् उट्र
इडुक्कण् इडर्प्पाड़ उडैत्तु.

ऊबट में भी खींचते, बैल सदृश जो जाय।
उसपर जो दुख आ पड़े, उस दुख पर दुख आय।। ६२४

ऊबट में—कठिन मार्ग में। सदृश—समान।

அடுக்கி வரினும் அழிவிலான் உற்ற
இடுக்கண் இடுக்கட் படும். **625**

अडुक्कि वरिनुम् अऴिविलान् उट्र
इडुक्कण् इडुक्कट् पडुम्.

दुःख निरंतर हो रहा, फिर भी धैर्य न जाय।
ऐसों को यदि दुख हुआ, उस दुख पर दुख आय।। ६२५

दुख पर दुख आय—दुःख संकट में पड़ेगा अर्थात् नष्ट हो जायेगा।

அற்றேமென்று அல்லற் படுபவோ பெற்றேமென்று
ஓம்புதல் தேற்று தவர். **626**

अट्रेमॅन्ड्रु अल्लरूपडुपवो पॅट्रेमॅन्ड्रु
ओम्बुदल् तेट्रादवर्.

धन पा कर, आग्रह सहित, जो नहिं करते लोभ।
धन खो कर क्या खिन्न हो, कभी करेंगे क्षोभ।। ६२६

இலக்கம் உடம்பிடும்பைக் கென்று கலக்கத்தைக்
கையாறாக் கொள்ளாதாம் மேல். **627**

इलक्कम् उडम्बिडुक्कैक्कॅन्ड्रु कलक्कत्तैक्
कैयाऱाक् कॉळ्ळादाम् मेल्.

'देह दुःख का लक्ष्य तो, होती है' यों जान।
क्षुब्ध न होते दुःख से, जो हैं पुरुष महान।। ६२७

இன்பம் விழையான் இடும்பை இயல்பென்பான்
துன்பம் உறுதல் இலன். **628**

इन्बम् विऴैयान् इडुम्बै इयल्पॅन्बान्
तुन्बम् उऱुदल् इलन्.

'विधिवश होता दुःख है', यों जिसको है ज्ञान।
तथा न सुख की चाह भी, दुखी न हो वह प्राण।। ६२८

प्राण—जीवन, अर्थात् मनुष्य।

இன்பத்துள் இன்பம் விழையாதான் துன்பத்துள்
துன்பம் உறுதல் இலன். 629

इऩ्बत्तुळ् इऩ्बम् विऴैयादाऩ् तुऩ्बत्तुळ्
तुऩ्बम् उऱुदल् इलऩ्.

सुख में सुख की चाह से, जो न करेगा भोग। ६२९
दुःखी होकर दुःख में, वह न करेगा शोक॥

இன்னாமை இன்பம் எனக்கொளின் ஆகுந்தன்
ஒன்னார் விழையுஞ் சிறப்பு. 630

इऩ्ऩामै इऩ्बम् ऍऩक्कॊळिऩ् आहुन्तऩ्
ओऩ्ऩार् विऴैयुञ् चिऱप्पु.

दुख को भी सुख सदृश ही, यदि ले कोई मान।
तो उसको उपलब्ध हो, रिपु से मानित मान।। ६३०

सदृश—तरह, जैसा। रिपु से ... मान—शत्रु भी जिस गौरव को ऊँचा मानता है।

அதிகாரம்-64 अध्याय—६४ *அமைச்சியல்* मंत्रिता—प्रकरण

அமைச்சு अमात्य अमैच्चु

கருவியும் காலமும் செய்கையும் செய்யும்
அருவினையும் மாண்டது அமைச்சு. 631

करुवियुम् कालमुम् शॆय्हैयुम् शॆय्युम्
अरुविऩैयुम् माण्डदु अमैच्चु.

साधन, काल, उपाय औ', कार्यसिद्धि दुस्साध्य।
इनका श्रेष्ठ विधान जो, करता वही अमात्य।। ६३१

வன்கண் குடிகாத்தல் கற்றறிதல் ஆள்வினையோடு
ஐந்துடன் மாண்டது அமைச்சு. 632

वन्कण् कुडि कात्तल् कट्रिदल् आळ्विनैयोडु
ऐन्दुडन् माण्डदु अमैच्चु.

दृढ़ता, कुल-रक्षण तथा, यत्न, सुशिक्षा, ज्ञान।
पाँच गुणों से युक्त जो, वही अमात्य सुजान।। ६३२

பிரித்தலும் பேணிக் கொளலும் பிரிந்தார்ப்
பொருத்தலும் வல்லது அமைச்சு. 633

पिरित्तलुम् पेणिक्कोॅळ्ळुम् पिरिन्दारए्
पोॅरुत्तलुम् वल्लदु अमैच्चु.

फूट डालना शत्रु में, पालन मैत्री-भाव।
लेना बिछुड़ों को मिला, योग्य अमात्य-स्वभाव।। ६३३

தெரிதலும் தேர்ந்து செயலும் ஒருதலையாச்
சொல்லலும் வல்லது அமைச்சு. 634

तेॅरिदलुम् तेर्न्दु शेॅयलुम् ओॅरुतलैयाच्
चोॅल्ललुम् वल्लदु अमैच्चु.

विश्लेषण करता तथा, परख कार्य को साध्य।
दृढ़ता पूर्वक मंत्रणा, देता योग्य अमात्य।। ६३४

அறனறிந்து ஆன்றமைந்த சொல்லான்எஞ் ஞான்றுந்
திறனறிந்தான் தேர்ச்சித் துணை. 635

अऱनरिन्दु आन्ड्रमैन्द शोॅल्लान् ऍञ्ञान्ड्रुन्
तिऱनरिन्दान् तेर्च्चित् तुणै.

धर्म जान, संयम सहित, ज्ञानपूर्ण कर बात।
सदा समझता शक्ति को, साथी है वह ख्यात।। ६३५

जान – जान कर। शक्ति को – राजा की क्षमता को।

மதிநுட்பம் நூலோடு உடையார்க்கு அதிநுட்பம்
யாஉள முன்னிற் பவை. 636

मतिनुट्पम् नूलोडु उडैयार्क्कु अतिनुट्पम्
या उळ मुन् निऱ्पवै.

शास्त्र जानते जो रहा, सूक्ष्म बुद्धि का भौन।
उसका करते सामना, सूक्ष्म प्रश्न अति कौन।। ६३६

भौन – भवन। सूक्ष्म ... भौन – अति बुद्धिमान।

செயற்கை அறிந்தக் கடைத்தும் உலகத்து
இயற்கை அறிந்து செயல். 637

शॆयऱ्कै अऱिन्दक् कडैत्तुम् उलहत्तु
इयऱ्कै अऱिन्दु शॆयल्.

यद्यपि विधियों का रहा, शास्त्र रीति से ज्ञान।
फिर भी करना चाहिये, लोकरीति को जान।। ६३७

विधि – कार्य करने का ढंग। जान – जान कर।

அறிகொன்று அறியான் எனினும் உறுதி
உழையிருந்தான் கூறல் கடன். 638

अऱिकॊन्ड्रु अऱियान् ऍनिनुम् उऱुदि
उऴैयिरुन्दान् कूऱल् कडन्.

हत्या कर उपदेश की, खुद हो अज्ञ नरेश।
फिर भी धर्म अमात्य का, देना दृढ़ उपदेश।। ६३८

अज्ञ – मूर्ख। नरेश – राजा।

பழுதெண்ணும் மந்திரியின் பக்கத்துள் தெவ்வோர்
எழுபது கோடி உறும். **639**

पषुदॆण्णुम् मन्दिरियिन् पक्कत्तुळ् तॆव्वोर्
ऍषुपदु कोटि उरुम्.

हानि विचारे निकट रह, यदि दुरमंत्री एक।
उससे सत्तर कोटि रिपु, मानो बढ़ कर नेक।। ६३९

हानि विचारे—(राजा की) हानि करने की बात सोचेगा। रिपु—शत्रु।
नेक—अच्छा।

முறைப்படச் சூழ்ந்தும் முடிவிலவே செய்வர்
திறப்பாடு இலாஅ தவர். **640**

मुऱैप्पडच् चूष़्न्दुम् मुडिविलवे शॆय्वर्
तिऱप्पाडु इलाअदवर.

यद्यपि क्रम से सोच कर, शुरू करें सब कर्म।
जिनमें दृढ़ क्षमता नहीं, करें अधूरा कर्म।। ६४०

अधूरा—अपूर्ण, जो पूरा न हो।

சொல்வன்மை वाक्-पटुत्व शॊल्वन्मै

நாநலம் என்னும் நலனுடைமை அந்நலம்
யாநலத்து உள்ளதூஉம் அன்று. **641**

नानलम् ऍन्नुम् नलनुडैमै अन्नलम्
या नलत्तु उळ्ळदूउम् अन्ड्रु.

वाक्-शक्ति की संपदा, है मंत्री को श्रेष्ठ।
उनके अन्तर्गत नहीं, जो गुण अन्य यथेष्ट।। ६४१

उनके .. यथेष्ट—अन्य कई गुणों के रहते हुए भी इसकी विशिष्टता है ही।

ஆக்கமுங் கேடும் அதனால் வருதலால்
காத்தோம்பல் சொல்லின்கண் சோர்வு.　　642

आक्कमुम् केडुम् अदनाल् वरुदलाल्
कात्तोम्बल् शॊल्लिन् कण् शोर्वु.

अपनी वाणी ही रही, लाभ-हानि का मूल।
इससे रहना सजग हो, न हो बोलते भूल।।　　६४२

கேட்டார்ப் பிணிக்குந் தகையவாய்க் கேளாரும்
வேட்ப மொழிவதாஞ் சொல்.　　643

केट्टार्प् पिणिक्कुन् तहैयवाय्क् केळारुम्
वेट्प मॊऴिवदाञ् चॊल्.

जो सुनते वश में पड़े, भाषण वही समर्थ।
वे भी जो सुनते नहीं, चाहें गुण के अर्थ।।　　६४३

सुनते—(भाषण सुन कर उसको) मानते। सुनते नहीं—विपक्षी जो मानने को तैयार नहीं।

திறனறிந்து சொல்லுக சொல்லை அறனும்
பொருளும் அதனினூஉங்கு இல்.　　644

तिऱनऱिन्दु शॊल्लुह शॊल्लै अऱनुम्
पॊरुळुम् अदनिनूउङ्गु इल्.

शक्ति समझ कर चाहिये, करना शब्द प्रयोग।
इससे बढ़ कर है नहीं, धर्म अर्थ का योग।।　　६४४

शक्ति—सामर्थ्य, (मंत्री की अपनी और सुननेवालों की)।

சொல்லுக சொல்லைப் பிறிதோர்சொல் அச்சொல்லை
வெல்லுஞ்சொல் இன்மை அறிந்து. 645

शॊॅल्लुह शॊॅल्लैप् पिरिदोर् शॊॅल् अच्चॊॅल्लै
वॆॅल्लुञ् चॊॅल् इन्मै अरिन्दु.

बात बताना जान यह, अन्य न कोई बात।
ऐसी जो उस बात को, कर सकती है मात।। ६४५

जान यह — यह जान कर। मात — हरा, पराजित।

வேட்பத்தாஞ் சொல்லிப் பிறர்சொல் பயன்கோடல்
மாட்சியின் மாசற்றார் கோள். 646

वेट्पत्ताञ् चॊॅल्लिप् पिरर् शॊॅल् पयन् कोडल्
माट्चियिन् माशट्रार् कोळ्.

सारग्रहण पर-वचन का, स्वयं करे प्रिय बात।
निर्मल गुणयुत सचिव में, है यह गुण विख्यात।। ६४६

சொலல்வல்லன் சோர்விலன் அஞ்சான் அவனை
இகல்வெல்லல் யார்க்கும் அரிது. 647

शॊॅलल् वल्लन् शोर्विलन् अञ्जान् अवनै
इहल् वॆॅल्लल् यार्क्कुम् अरिदु.

भाषण-पटु, निर्भय तथा, रहता जो अश्रान्त।
उसपर जय प्रतिवाद में, पाना कठिन नितान्त।। ६४७

भाषण–पटु– बोलने में प्रवीण। अश्रांत–जो थका माँदा न हो।
नितांत – बहुत अधिक।

விரைந்து தொழில்கேட்கும் ஞாலம் நிரந்தினிது
சொல்லுதல் வல்லார்ப் பெறின். 648

विरैन्दु तॊॅषिल् केट्कुम् ञालम् निरन्दिनिदु
शॊॅल्लुदल् वल्लार्प् पॆॅरिन्.

भाषण-पटु जो ढंग से, करता मीठी बात।
यदि पाये तो जगत झट, माने उसकी बात।। ६४८

பலசொல்லக் காமுறுவர் மன்றமா சற்ற
சிலசொல்லல் தேற்று தவர். 649

पल शॊल्लक् कामुरुवर् मन्ड्र् माशट्र
शिल शॊल्लल् तेट्रादवर्.

थोड़े वचन दोष रहित, कहने में असमर्थ।
निश्चय वे हैं चाहते, बहुत बोलना व्यर्थ।। ६४९

இணரூழ்த்தும் நாறா மலரனையர் கற்றது
உணர விரித்துரையா தார். 650

इणरूष़त्तुम् नाऱा मलरनैयर् कट्रदु
उणर विरित्तुरैयादार्.

पठित ग्रन्थ व्याख्या सहित, प्रवचन में असमर्थ।
खिला किन्तु खुशबू रहित, पुष्प-गुच्छ सम व्यर्थ।। ६५०

प्रवचन—अच्छी तरह समझा कर कहना।

அதிகாரம்-66 अध्याय—६६ அமைச்சியல் मंत्रिता — प्रकरण

வினைத்தூய்மை कर्म-शुद्धि विनैत्तूय्मै

துணைநலம் ஆக்கம் தரூஉம் வினைநலம்
வேண்டிய எல்லாம் தரும். 651

तुणै नलम् आक्कम् तरूउम् विनै नलम्
वेण्डिय ऍल्लाम् तरुम्.

साथी की परिशुद्धता, दे देती है प्रेय।
कर्मों की परिशुद्धता, देती है सब श्रेय।। ६५१

प्रेय — इहलौकिक धन। सब श्रेय —(इहलौकिक तथा) पारलौकिक भोग्य वस्तुएँ।

என்றும் ஒருவுதல் வேண்டும் புகழொடு
நன்றி பயவா வினை. 652

ऍन्ड्रुम् ओरुवुदल् वेण्डुम् पुहऴोंडु
नन्ड्रि पयवा विनै.

सदा त्यागना चाहिये, जो हैं ऐसे कर्म।
कीर्ति-लाभ के साथ जो, देते हैं नहिं धर्म।। ६५२

ஓஒதல் வேண்டும் ஒளிமாழ்கும் செய்வினை
ஆஅதும் என்னு மவர். 653

ओओदल् वेण्डुम् ऑळिमाऴहुम् शेय्विनै
आअदुम् ऍन्नुमवर्.

'उन्नति करनी चाहिये', यों जिनको हो राग।
निज गौरव को हानिकर, करें कर्म वे त्याग।। ६५३

राग — अभिलाषा।

இடுக்கட் படினும் இளிவந்த செய்யார்
நடுக்கற்ற காட்சி யவர். 654

इडुक्कट् पडिनुम् इळिवन्द शेय्यार्
नडुक्कट्र काट्चियवर्.

यद्यपि संकट-ग्रस्त हों, जिनका निश्चल ज्ञान।
निंद्य कर्म फिर भी सुधी, नहीं करेंगे जान।। ६५४

संकट — ग्रस्त — कष्ट में पड़ा हुआ। सुधी — बुद्धिमान।

எற்றென்று இரங்குவ செய்யற்க செய்வானேல்
மற்றன்ன செய்யாமை நன்று. 655

ऍट्रेन्ड्रु इरङ्गुव शेय्यर्क शेय्वानेल्
मट्रन्न शेय्यामै नन्ड्रु.

जिससे पश्चात्ताप हो, करो न ऐसा कार्य।
अगर किया तो फिर भला, ना कर ऐसा कार्य।। ६५५

पश्चात्ताप — पछतावा। ना कर — मत करो।

ஈன்றாள் பசிகாண்பான் ஆயினுஞ் செய்யற்க
சான்றோர் பழிக்கும் வினை. 656

ईनॣाळ् पशि काण्बान् आयिनुञ् चॅय्यरक्
शानॣोर् पषिक्कुम् विनै.

जननी को भूखी सही, यद्यपि देखा जाय।
सज्जन-निन्दित कार्य को, तो भी किया न जाय।। ६५६

பழிமலைந்து எய்திய ஆக்கத்தின் சான்றோர்
கழிநல் குரவே தலை. 657

पषि मलैनॖदु ऍय्दिय आक्कत्तिन् शानॣोर्
कषि नल्हुरवे तलै.

दोष वहन कर प्राप्त जो, सज्जन को ऐश्वर्य।
उससे अति दारिद्रय ही, सहना उसको वर्य।। ६५७

वहन कर — (अपने ऊपर) उठा कर। वर्य — श्रेष्ठ।

கடிந்த கடிந்தொரார் செய்தார்க்கு அவைதாம்
முடிந்தாலும் பீழை தரும். 658

कडिनॖद कडिनॖदॊरार् शॆय्दारक्कु अवैदाम्
मुडिनॖदालुम् पीषै तरुम्.

वर्जे किये बिन वर्ज्य सब, जो करता दुष्कर्म।
कार्य-पूर्ति ही क्यों न हो, पीड़ा दें वे कर्म।। ६५८

वर्ज करना — त्याग करना। वर्ज्य — छोड़ने योग्य।

அழக்கொண்ட எல்லாம் அழப்போம் இழப்பினும்
பிற்பயக்கும் நற்பா லவை. 659

अऴक्कोण्ड ऍल्लाम् अऴप्पोम् इऴप्पिनुम्
पिऱ्पयक्कुम् नऱ्पालवै.

रुला अन्य को प्राप्त सब, रुला उसे वह जाय।
खो कर भी सत्संपदा, पीछे फल दे जाय।। ६५९

சலத்தால் பொருள்செய்தே மார்த்தல் பசுமட்
கலத்துள்நீர் பெய்திரீஇ யற்று. 660

चलत्ताल् पोरुळ् शॆय्दे मार्त्तल् पशुमट्
कलत्तुळ् नीर् पॆय्तिरीइ यट्रु.

छल से धन को जोड़ कर, रखने की तदबीर।
कच्चे मिट्टी कलश में, भर रखना ज्यों नीर।। ६६०

அதிகாரம்—67 अध्याय — ६७ அமைச்சியல் मंत्रिता — प्रकरण

வினைத்திட்பம் कर्म में दृढ़ता विनैत्तिट्पम्

வினைத்திட்பம் என்பது ஒருவன் மனத்திட்பம்
மற்றைய எல்லாம் பிற. 661

विनैत्तिट्पम् ऍन्बदु ओरुवन् मनत्तिट्पम्
मट्रैय ऍल्लाम् पिऱ.

दृढ़ रहना है कर्म में, मन की दृढ़ता जान।
दृढ़ता कहलाती नहीं, जो है दृढ़ता आन।। ६६१

दृढ़ता आन—अन्य (प्रकार की) दृढ़ता।

ஊறொரால் உற்றபின் ஒல்காமை இவ்விரண்டின்
ஆறென்பர் ஆய்ந்தவர் கோள். 662

ऊऱोरॉल् उट्रपिन् ऑल्हामै इव्विरण्डिन्
आऱॅन्बर् आयन्दवर् कोळ्.

दुष्ट न करना, यदि हुआ, तो फिर न हो अधीर।
मत यह है नीतिज्ञ का, दो पथ मानें मीर।। ६६२

दुष्ट—दोष—युक्त (काम) । यदि हुआ— विधिवश ऐसा काम हुआ। दो पथ—कर्म में दृढ़ता तथा कर्म—शुद्धि (पिछला अध्याय)। नीतिज्ञ — शास्त्रकार। मीर—धार्मिक आचार्य।

கடைக்கொட்கச் செய்தக்க தாண்மை இடைக்கொட்கின்
எற்றா விழுமந் தரும். 663

कडैक्कोंट्कच् चॅय्दक्कदाण्मै इडैक्कोंट्किन्
ऍट्रा विषुमन् तरुम्.

प्रकट किया कर्मान्त में, तो है योग्य सुधीर।
प्रकट किया यदि बीच में, देगा अनन्त पीर।। ६६३

कर्मान्त में – काम पूर्ण होने के बाद। पीर—पीड़ा, वेदना।

சொல்லுதல் யார்க்கும் எளிய அரியவாம்
சொல்லிய வண்ணம் செயல். 664

शॉल्लुदल् यार्क्कुम् ऍळिय अरियवाम्
शॉल्लिय वण्णम् शैयल्.

कहना तो सब के लिये, रहता है आसान।
करना जो! जैसा कहे, है दुस्साध्य निदान।। ६६४

'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में इस दोहे की तुलना कबीरदास के दोहे से की गई है।

வீறெய்தி மாண்டார் வினைத்திட்பம் வேந்தன்கண்
ஊறெய்தி உள்ளப் படும். 665

वीऱॆय्दि माण्डाऱ् विनैत्तिट्पम् वेन्दन् कण्
ऊऱॆय्दि उळ्ळप्पडुम्.

कीर्ति दिला कर सचिव को, कर्म-निष्ठता-बान।
नृप पर डाल प्रभाव वह, पावेगी सम्मान।। ६६५

वह—कर्म-निष्ठता (सचिव की)। सम्मान—जनता का सम्मान।

எண்ணிய எண்ணியாங்கு எய்துப எண்ணியார்
திண்ணிய ராகப் பெறின். 666

ऍण्णिय ऍण्णियाङ्गु ऍय्दुप ऍण्णियार्
तिण्णियराहप् पॆऱिन्.

संकल्पित सब वस्तुएँ, यथा किया संकल्प।
संकल्पक पा जायगा, यदि वह दृढ-संकल्प।। ६६६

'अनुवाद के संबंध में' अध्याय में इस दोहे का उल्लेख है।

உருவுகண்டு எள்ளாமை வேண்டும் உருள்பெருந்தேர்க்கு
அச்சாணி அன்னார் உடைத்து. 667

उरुवुकण्डु ऍळ्ळामै वेण्डुम् उरुळ् पॆरुन्तेर्क्कु
अच्चाणि अन्नाऱ् उडैत्तु.

तिरस्कार करना नहीं, छोटा क़द अवलोक।
चलते भारी यान में, अक्ष-आणि सम लोग।। ६६७

अनुवाद के सम्बन्ध में' अध्याय में इस दोहे का उल्लेख है।

கலங்காது கண்ட வினைக்கண் துளங்காது
தூக்கங் கடிந்து செயல். 668

कलङ्गादु कण्ड विनैक्कण् तुळङ्गादु
तूक्कङ् कडिन्दु शॅयल्.

सोच समझ निश्चय किया, करने का जो कर्म।
हिचके बिन अविलम्ब ही,, कर देना वह कर्म।। ६६८

துன்பம் உறவரினும் செய்க துணிவாற்றி
இன்பம் பயக்கும் வினை. 669

तुन्बम् उऱवरिनुम् शॅय्ह तुणिवाट्रि
इन्बम् पयक्कुम् विनै.

यद्यपि होगा बहुत दुख, कर दृढता से काम।
सुख-फल दायक ही रहा, जिसका शुभ परिणाम।। ६६९

எனைத்திட்பம் எய்தியக் கண்ணும் வினைத்திட்பம்
வேண்டாரை வேண்டாது உலகு. 670

ऍनैत्तिट्पम् ऍय्दियक्कण्णुम् विनैत्तिट्पम्
वेण्डारै वेण्डादु उलहु.

अन्य विषय में सुदृढता, रखते सचिव सुजान।
यदि दृढता नहिं कर्म की, जग न करेगा मान।। ६७०

அதிகாரம்-68 अध्याय — ६८ அமைச்சியல் मंत्रिता — प्रकरण

வினைசெயல்வகை कर्म करने की रीति विनैशॅयल् वहै

சூழ்ச்சி முடிவு துணிவெய்தல் அத்துணிவு
தாழ்ச்சியுள் தங்குதல் தீது. 671

शूऴ्च्चि मुडिवु तुणिवॅय्दल् अत्तुणिवु
ताऴ्च्चियुळ् तङ्गुदल् तीदु.

निश्चय कर लेना रहा, विचार का परिणाम।
हानि करेगा देर से, रुकना निश्चित काम।। ६७१

देर से—विलम्ब करने के कारण।

தூங்குக தூங்கிச் செயற்பால தூங்கற்க
தூங்காது செய்யும் வினை. 672

तूङ्गुह तूङ्गिच् चेॅयऱ्पाल तूङ्गऱ्क
तूङ्गादु शेॅय्युयुम् विनै.

जो विलम्ब के योग्य है, करो उसे सविलम्ब।
जो होना अविलम्ब ही, करो उसे अविलम्ब।। ६७२

ஒல்லும்வா யெல்லாம் வினைநன்றே ஒல்லாக்கால்
செல்லும்வாய் நோக்கிச் செயல். 673

ओॅल्लुम् वायेॅल्लाम् विनै नन्ड्रे ओॅल्लाक्काल्
शेॅल्लुम् वाय नोक्किच् चेॅयल्.

जहाँ जहाँ वश चल सके, भलाकार्य हो जाय।
वश न चले तो कीजिये, संभव देख उपाय।। ६७३

வினைபகை என்றிரண்டின் எச்சம் நினையுங்கால்
தீயெச்சம் போலத் தெறும். 674

विनै पहै ऍन्ड्रिरण्डिन् ऍच्चम् निनैयुङ्गाल्
तीयेॅच्चम् पोलत् तेॅरुम्.

कर्म-शेष रखना तथा, शत्रु जनों में शेष।
अग्नि-शेष सम ही करें, दोनों हानि विशेष।। ६७४

பொருள்கருவி காலம் வினையிடனொடு ஐந்தும்
இருள்தீர எண்ணிச் செயல். 675

पोॅरुळ् करुवि कालम् विनैयिडनोॅडु ऐन्दुम्
इरुळ् तीर ऍण्णिच् चेॅयल्.

धन साधन अवसर तथा, स्थान व निश्चित कर्म।
पाँचों पर भ्रम के बिना, विचार कर कर कर्म।। ६७५

முடிவும் இடையூறும் முற்றியாங்கு எய்தும்
படுபயனும் பார்த்துச் செயல். 676

मुडिवुम् इडैयूऱुम् मुट्रियाङ्गु ऍय्दुम्
पडु पयनुम् पार्त्तुच् चॅयल्.

साधन में श्रम, विघ्न भी, पूरा हो जब कर्म।
प्राप्य लाभ कितना बड़ा, देख इन्हें कर कर्म।। ६७६

செய்வினை செய்வான் செயல்முறை அவ்வினை
உள்ளறிவான் உள்ளம் கொளல். 677

शॅय्विनै शॅय्वान् शॅयल् मुऱै अव्विनै
उळ्ळऱिवान् उळ्ळम् कॉळल्.

विधि है कर्मी को यही, जब करता है कर्म।
उसके अति मर्मज्ञ से, ग्रहण करे वह मर्म।। ६७७

कर्मी—काम करनेवाला। विधि—नियम। मर्मज्ञ—गूढ तत्व को जाननेवाला।

வினையால் வினையாக்கிக் கோடல் நனைகவுள்
யானையால் யானையாத் தற்று. 678

विनैयाल् विनैयाक्किक् कोडल् ननैकवुळ्
यानैयाल् यानै यात्तट्रु.

एक कर्म करते हुए, और कर्म हो जाय।
मद गज से मद-मत्त गज, जैसे पकड़ा जाय।। ६७८

நட்டார்க்கு நல்ல செயலின் விரைந்ததே
ஒட்டாரை ஒட்டிக் கொளல். 679

नट्टारूकु नलूल शॅयलिनू विरैनूददे
ऑट्टारै ऑट्टिकू कोळॅल.

करने से हित कार्य भी, मित्रों के उपयुक्त।
शत्रु जनों को शीघ्र ही, मित्र बनाना युक्त।। ६७९

உறைசிறியார் உள்நடுங்கல் அஞ்சிக் குறைபெறின்
கொள்வர் பெரியார்ப் பணிந்து. 680

उरै शिरियारू उळूनडुङ्गलू अञ्जिकू कुरै पॅरिनू
कॉळूवरू पॅरियारूपू पणिनदु.

भीति समझकर स्वजन की, मंत्री जो कमज़ोर।
संधि करेंगे नमन कर, रिपु यदि है बरज़ोर।। ६८०

அதிகாரம்-69 अध्याय – ६९ அமைச்சியல் मंत्रिता — प्रकरण

தூது दूत तूदु

அன்புடைமை ஆன்ற குடிப்பிறத்தல் வேந்தவாம்
பண்புடைமை தூதுரைப்பான் பண்பு. 681

अनबुडैमै आनूड्र कुडिपिरतूतलू वेनूदवामू
पणबुडैमै तूदुरैपूपानू पणबु.

स्नेहशीलता उच्चकुल, नृप-इच्छित आचार।
राज-दूत में चाहिये, यह उत्तम संस्कार।। ६८१

அன்பறிவு ஆராய்ந்த சொல்வன்மை தூதுரைப்பார்க்கு
இன்றி யமையாத மூன்று. **682**

अनबरिवु आरायन्द शोॅल्वन्मै तूदुरैप्पारक्कु
इन्ड्रियमैयाद मूनड्रु.

प्रेम बुद्धिमानी तथा, वाक्शक्ति सविवेक।
ये तीनों अनिवार्य हैं, राजदूत को एक।। ६८२

நூலாருள் நூல்வல்லன் ஆகுதல் வேலாருள்
வென்றி வினையுரைப்பான் பண்பு. **683**

नूलारुळ नूलवल्लन आहुदल वेलारुळ
वेॅन्ड्रि विनैयुरैप्पान पणबु.

रिपु-नृप से जा जो करे, निज नृप की जय-बात।
लक्षण उसका वह रहे, विज्ञों में विख्यात।। ६८३

रिपु—नृप—शत्रु राजा। जा—जा कर।

அறிவுரு ஆராய்ந்த கல்விஇம் மூன்றன்
செறிவுடையான் செல்க வினைக்கு. **684**

अरिवुरु आरायन्द कल्वि इम मूनड्रन
शैॅरिवुडैयान शैॅलह विनैक्कु.

दूत कार्य हित वह चले, जिसके रहें अधीन।
शिक्षा अनुसंधानयुत,, बुद्धि, रूप ये तीन।। ६८४

தொகச்சொல்லித் தூவாத நீக்கி நகச்சொல்லி
நன்றி பயப்பதாம் தூது. **685**

तोहॅच चोॅल्लित तूवाद नीक्कि नहच्चोॅल्लि
ननड्रि पयप्पदाम तूदु.

परुष वचन को त्याग कर, करे समन्वित बात।
लाभ करे प्रिय बोल कर, वही दूत है ज्ञात।। ६८५

परुष वचन—कठोर शब्द। समन्वित—कार्य—कारण सहित।

கற்றுக்கண் அஞ்சான் செலச்சொல்லிக் காலத்தால்
தக்காது அறிவதாம் தூது. 686

कट्रुक्कण् अञ्जान् चेलॅच्चोलॅल्लिक् कालत्ताल्
तक्कदु अऱिवदाम् तूदु.

नीति सीख कर, हो निडर, कर प्रभावकर बात।
समयोचित जो जान ले, वही दूत है ज्ञात।। ६८६

கடனறிந்து காலம் கருதி இடனறிந்து
எண்ணி உரைப்பான் தலை. 687

कडनऱिन्दु कालम् करुदि इडनऱिन्दु
ऍण्णि उरैप्पान् तलै.

स्थान समय कर्तव्य भी, इनका कर सुविचार।
बात करे जो सोच कर, उत्तम दूत निहार।। ६८७

தூய்மை துணைமை துணிவுடைமை இம்மூன்றின்
வாய்மை வழியுரைப்பான் பண்பு. 688

तूय्मै तुणैमै तुणिवुडैमै इम्मूनड्रिन्
वाय्मै वऴियुरैप्पान् पण्बु.

शुद्ध आचरण संग-बल, तथा धैर्य ये तीन।
इनके ऊपर सत्यता, लक्षण दूत प्रवीण।। ६८८

விடுமாற்றம் வேந்தர்க்கு உரைப்பான் வடுமாற்றம்
வாய்சோரா வன்கண வன். 689

विडुमाट्रम् वेन्दर्क्कु उरैप्पान् वडुमाट्रम्
वाय्शोरा वन्कणवन्.

नृप को जो संदेशवह, यों हो वह गुण-सिद्ध।
भूल चूक भी निंद्य वच, कहे न वह दृढ-चित्त।। ६८९

संदेशवह—संदेश वाहक।

இறுதி பயப்பினும் எஞ்சாது இறைவற்கு
உறுதி பயப்பதாம் தூது. 690

इऱुदि पयप्पिनुम् ऎञ्जादु इऱैवऱ्कु
उऱुदि पयप्पदाम् तूदु.

चाहे हो प्राणान्त भी, निज नृप का गुण-गान।
करता जो भय के बिना, दूत उसी को जान।। ६९०

अதிகாரம்-70   अध्याय — ७०   அமைச்சியல் मंत्रिता — प्रकरण

மன்னரைச் சேர்ந்தொழுகல् — राजा से योग्य व्यवहार — मन्नरैच् चेर्न्दॊऴुहल्

அகலாது அணுகாது தீக்காய்வார் போல்க
இகல்வேந்தர்ச் சேர்ந்தொழுகு வார். 691

अहलादु अणुहादु तीक्कायवार् पोॅल्ह
इहल् वेन्दर्च् चेर्न्दॊऴुहुवार्.

दूर न पास न रह यथा, तापें उसी प्रकार।
भाव-बदलते भूप से, करना है व्यवहार।। ६९१

तापना—आग की आँच से अपने को गरम करना। भाव—बदलते भूपसे—ऐसे राजा से जिसकी चित्त—वृत्ति स्थिर नहीं रहती।

மன்னர் விழைப விழையாமை மன்னரால்
மன்னிய ஆக்கந் தரும். 692

मन्नर् विऴैप विऴैयामै मन्नराल्
मन्निय आक्कन् तरुम्.

राजा को जो प्रिय रहें, उनकी हो नहिं चाह।
उससे स्थायी संपदा, दिलायगा नरनाह।। ६९२

போற்றின் அரியவை போற்றல் கடுத்தபின்
தேற்றுதல் யார்க்கும் அரிது. 693

पोँट्रिन अरियवै पोँट्रल् कडुत्तपिन्
तेट्रुदल् यार्क्कुम् अरिदु.

यदि बचना है तो बचो, दोषों से विकराल।
समाधान संभव नहीं, शक करते नरपाल।। ६९३

विकराल—भीषण, भयकर। शक ... नरपाल—राजा का संदेह करते हुए।

செவிச்சொல்லும் சேர்ந்த நகையும் அவித்தொழுகல்
ஆன்ற பெரியா ரகத்து. 694

शॅविच्चोॅल्लुम् शेर्न्द नहैयुम् अवित्तोॅऴुहल्
आन्ड्र पॅरियारहत्तु.

कानाफूसी साथ ही, हँसी अन्य के साथ।
महाराज के साथ में, छोड़ो इनका साथ।। ६९४

कानाफूसी—कान के पास धीरे से बात करना, (राजा का देखते हुए, दूसरे के साथ)।

எப்பொருளும் ஓரார் தொடரார்மற் றப்பொருளை
விட்டக்கால் கேட்க மறை. 695

ऍप्पोॅरुळुम् ओरार् तोॅडरार् मट्रप्पोॅरुळै
विट्टक्काल् केट्क मरै.

छिपे सुनो मत भेद को, पूछो मत 'क्या बात'।
प्रकट करे यदि नृप स्वयं, तो सुन लो वह बात।। ६९५

भेद—राजा का भेद।

குறிப்பறிந்து காலம் கருதி வெறுப்பில
வேண்டுப வேட்பச் சொலல். 696

कुरिप्पऱिन्दु कालम् करुदि वॆ़रुप्पिल
वेण्डुप वेट्पच् चॉलल्.

भाव समझ समयज्ञ हो, छोड़ घृणित सब बात।
नृप-मनचाहा ढंग से, कह आवश्यक बात।। ६९६

समयज्ञ हो—अवसर जान कर। घृणित—जिससे नफ़रत हो। नृप ...से—राजा की इच्छा के अनुसार। कह—कहना।

வேட்பன சொல்லி வினையில எஞ்ஞான்றும்
கேட்பினும் சொல்லா விடல். 697

वेट्पन शॉल्लि विनैयिल ऍञ्ञानृरुम्
केट्पिनुम् शॉल्ला विडल्.

नृप से वांछित बात कह, मगर निरर्थक बात।
पूछें तो भी बिन कहे, सदा त्याग वह बात।। ६९७

இளையர் இனமுறையர் என்றிகழார் நின்ற
ஒளியோடு ஒழுகப் படும். 698

इळैयर् इनमुऱैयर् ऍन्ड्रिहऴार् निन्ड्र
ऑळियोडु ऑऴुहप्पडुम्.

'छोटे हैं, ये बन्धु हैं', यों नहिं कर अपमान।
किया जाय नरपाल का, देव तुल्य सम्मान।। ६९८

கொளப்பட்டேம் என்றெண்ணிக் கொள்ளாத செய்யார்
துளக்கற்ற காட்சி யவர். 699

कॉळप्पट्टेम् ऍन्ड्रॅण्णिक् कॉळ्ळाद शॅय्यार्
तुळक्कट्र काट्चियवर्.

'नृप के प्रिय हम बन गये', ऐसा कर सुविचार।
जो हैं निश्चल बुद्धि के, करें न अप्रिय कार।। ६९९

कार—कार्य।

பழையம் எனக்கருதிப் பண்பல்ல செய்யும்
கெழுதகைமை கேடு தரும். 700

पऴैयम् ऍनक्करुदिप् पण्बल्ल शॅय्युम्
केऴु तहैमै केडु तरुम्.

'चिरपरिचित हैं' यों समझ, नृप से दुर्व्यवहार।
करने का अधिकार तो, करता हानि अपार।। ७००

अतिकारम्-71 अध्याय — ७१ அமைச்சியல் मंत्रिता — प्रकरण

குறிப்பறிதல् भावज्ञता कुऱिप्पऱिदल्

கூறாமை நோக்கிக் குறிப்பறிவான் எஞ்ஞான்றும்
மாறாநீர் வையக்கு அணி. 701

कूऱामै नोक्किक् कुऱिप्पऱिवान् ऍञ्ञान्ड्रुम्
माऱानीर् वैयक्कु अणि.

बिना कहे जो जान ले, मुख-मुद्रा से भाव।
सदा रहा वह भूमि का, भूषण महानुभाव॥ ७०१

ஐயப் படாஅது அகத்தது உணர்வானைத்
தெய்வத்தோ டொப்பக் கொளல். 702

ऐयप्पडाअदु अहत्तदु उणर्वानैत्
दॅय्वत्तो डॉप्पक् कॉळल्.

बिना किसी संदेह के, हृदयस्थित सब बात।
जो जाने मानो उसे, देव तुल्य साक्षात।। ७०२

குறிப்பிற் குறிப்புணர் வாரை உறுப்பினுள்
யாது கொடுத்தும் கொளல். 703

कुऱिप्पिऱ् कुऱिप्पुणर्वारै उऱुप्पिनुळ्
यादु कॉडुत्तुम् कॉळल्.

मनोभाव मुख-भाव से, जो जानता निहार।
अंगों में कुछ भी दिला, करो उसे स्वीकार।। ७०३

निहार—देख कर। अंगों में — सैन्य, राष्ट्र, धन, मित्रगण दुर्ग और अमात्य, ऐसे छः अंग (देखिये दोहा— ३८१)।

குறித்தது கூறாமைக் கொள்வாரோ டேனை
உறுப்போ ரனையரால் வேறு. 704

कुऱित्तदु कूऱामैक् कॉळ्वारोडेनै
उऱुप्पोरनैयराल् वेऱु.

बिना कहे भावज्ञ हैं, उनके सम भी लोग।
आकृति में तो हैं मगर, रहें भिन्न वे लोग।। ६०४

भावज्ञ—मतलब जाननेवाले। आकृति—रूप।

குறிப்பிற் குறிப்புணரா வாயின் உறுப்பினுள்
என்ன பயத்தவோ கண். 705

कुऱिप्पिऱ् कुऱिप्पुणरा वायिन् उऱुप्पिनुळ्
ऍन्न पयत्तवो कण्.

यदि नहिं जाना भाव को, मुख-मुद्रा अवलोक।
अंगों में से आँख का, क्या होगा उपयोग।। ७०५

मुख—मुद्रा—मुँह की आकृति व चेष्टा। अवलोक—देख कर।

அடுத்தது காட்டும் பளிங்குபோல் நெஞ்சம்
கடுத்தது காட்டும் முகம். 706

अडुत्तदु काट्टुम् पळिङ्गुपोल् नॆञ्जम्
कडुत्तदु काट्टुम् मुहम्.

बिम्बित करता स्फटिक ज्यों, निकट वस्तु का रंग।
मन के अतिशय भाव को, मुख करता बहिरंग।। ७०६

निकट वस्तु—पास की चीज़। अतिशय—अत्यधिक। बहिरंग करना—प्रकट करना।

முகத்தின் முதுக்குறைந்தது உண்டோ உவப்பினும்
காயினும் தான்முந் துறும். 707

मुहत्तिन् मुदुक्कुरैन्ददु उण्डो उवप्पिनुम्
कायिनुम् तान् मुन्दुरुम्.

मुख से बढ़ कर बोधयुत, है क्या वस्तु विशेष।
पहले वह बिम्बित करे, प्रसन्नता या द्वेष।। ७०७

முகம்நோக்கி நிற்க அமையும் அகம்நோக்கி
உற்ற துணர்வார்ப் பெறின். 708

मुहम् नोक्कि निऱ्क अमैयुम् अहम् नोक्कि
उट्रदुणरुवार्प् पॆऱिन्.

बीती समझे देखकर, यदि ऐसा नर प्राप्त।
अभिमुख उसके हो खड़े, रहना है पर्याप्त।। ७०८

பகைமையும் கேண்மையும் கண்ணுரைக்கும் கண்ணின்
வகைமை உணர்வார்ப் பெறின். 709

पहैमैयुम् केण्मैयुम् कण्णुरैक्कुम् कण्णिन्
वहैमै उणरुवार्प् पॆऱिन्.

बतलायेंगे नेत्र ही, शत्रु-मित्र का भाव।
अगर मिलें जो जानते, दृग का भिन्न स्वभाव।। ७०९

दृग—नेत्र, आँख।

நுண்ணியம் என்பார் அளக்குங்கோல் காணுங்கால்
கண்ணல்லது இல்லை பிற. 710

नुण्णियम् ऍन्बार् अळक्कुङ्कोल् काणुङ्गाल्
कण्णल्लदु इल्लै पिऱ.

जो कहते हैं 'हम रहे' सूक्ष्म बुद्धि से धन्य।
मान-दण्ड उनका रहा, केवल नेत्र, न अन्य।। ७१०

अதிகாரம்-72 अध्याय — ७२ அமைச்சியல் मंत्रिता — प्रकरण

அவை அறிதல् सभा-ज्ञान अवै अरिदल्

அவையறிந்து ஆராய்ந்து சொல்லுக சொல்லின்
தொகையறிந்த தூய்மை யவர். 711

अवैयऱिन्दु आराय्न्दु शॉल्लुह शॉल्लिन्
तॉहैयऱिन्द तूय्मैयवर्.

शब्द-शक्ति के ज्ञानयुत, जो हैं पावन लोग।
समझ सभा को, सोच कर, करना शब्द-प्रयोग।। ७११

இடைதெரிந்து நன்குணர்ந்து சொல்லுக சொல்லின
நடைதெரிந்த நன்மை யவர். 712

इडै तॅरिन्दु नन्गुणर्न्दु शॉल्लुह शॉल्लिन्
नडै तॅरिन्द नन्मैयवर्.

शब्दों की शैली समझ, जिनको है अधिकार।
सभासदों का देख रुख़, बोलें स्पष्ट प्रकार।। ७१२

அவையறியார் சொல்லல்மேற் கொள்பவர் சொல்லின்
வகையறியார் வல்லதூஉம் இல் 713

अवैयऱियार् शॊल्लल् मेऱ्कॊळ्बवर् शॊल्लिन्
वहैयऱियार् वल्लदूउम् इल्.

उद्यत हों जो बोलने, सभा-प्रकृति से अज्ञ।
भाषण में असमर्थ वे, शब्द-रीति से अज्ञ।। ७१३

ஒளியார்முன் ஒள்ளிய ராதல் வெளியார்முன்
வான்சுதை வண்ணம் கொளல். 714

ऑळियार् मुन् ओळ्ळियरादल् वॆंळियार् मुन्
वान् शुदै वण्णम् कॊंळल्.

प्राज्ञों के सम्मुख रहो, तुम भी प्राज्ञ सुजान।
मूर्खों के सम्मुख बनो, चून सफ़ेद समान।। ७१४

सफ़ेद चून—तमिल भाषा में इसका अर्थ 'मूर्ख' भी होता है।

நன்றென்ற வற்றுள்ளும் நன்றே முதுவருள்
முந்து கிளவாச் செறிவு. 715

नन्ऱॆन्ऱ वट्रुळ्ळुम् नन्ऱे मुदुवरुळ्
मुन्दु किळवाच् चॆंऱिवु.

भले गुणों में है भला, ज्ञानी गुरुजन मध्य।
आगे बढ़ बोलें नहीं, ऐसा संयम पथ्य।। ७१५

पथ्य—मंगल, कल्याण।

ஆற்றின் நிலைதளர்ந் தற்றே வியன்புலம்
ஏற்றுணர்வார் முன்னர் இழுக்கு. 716

आट्रिन् निलै तळर्न्दट्रे वियन्पुलम्
एट्रुणर्वार् मुन्नर् इऴुक्कु.

विद्वानों के सामने, जिनका विस्तृत ज्ञान।
जो पा गया कलंक, वह, योग-भ्रष्ट समान।। ७१६

கற்றறிந்தார் கல்வி விளங்கும் கசடறச்
சொல்தெரிதல் வல்லா ரகத்து. 717

कट्ररिन्दार् कल्वि विळङ्गुम् कशडरच्
चॊल् तॆरिदल् वल्लारहत्तु.

निपुण पारखी शब्द के, जो हैं, उनके पास।
विद्वत्ता शास्त्रज्ञ की, पाती खूब प्रकाश।। ७१७

पारखी—परीक्षक।

உணர்வ துடையார்முன் சொல்லல் வளர்வதன்
பாத்தியுள் நீர்சொரிந் தற்று. 718

उणर्वदुडैयार् मुन् शॊल्लल् वळर्वदन्
पात्तियुळ् नीर् शॊरिन्दट्रु.

बुद्धिमान के सामने, जो बोलता सुजान।
क्यारी बढ़ती फ़सल की, यथा सींचना जान।। ७१८

புல்லவையுள் பொச்சாந்தும் சொல்லற்க நல்லவையுள்
நன்கு செலச்சொல்லு வார். 719

पुल्लवैयुळ् पॊच्चान्दुम् शॊल्लर्क नल्लवैयुळ्
नन्गु शॆलच् चॊल्लुवार्.

सज्जन-मण्डल में करें, जो प्रभावकर बात।
मूर्ख-सभा में भूल भी, करें न कोई बात।। ७१९

भूल भी—भूल कर भी।

அங்கணத்துள் உக்க அமிழ்தற்றால் தங்கணத்தர்
அல்லார்முன் கோட்டி கொளல். 720

अङ्गणत्तुळ् उक्क अमिषदट्राल् तङ्गणत्तर्
अल्लार् मुन् कोट्टि कॉळल्.

यथा उँडेला अमृत है, आंगन में अपवित्र।
भाषण देना है वहाँ, जहाँ न गण हैं मित्र॥ ७२०

अதிகாரம்-73 अध्याय – ७३ அமைச்சியல்

அவை அஞ்சாமை सभा में निर्भीकता अवै अञ्जामै

வகையறிந்து வல்லவை வாய்சோரார் சொல்லின்
தொகையறிந்த தூய்மை யவர். 721

वहैयरिन्दु वल्लवै वाय् शोरार् शॉल्लिन्
तौहैयरिन्द तूय्मै यवर्.

शब्द शक्ति के ज्ञानयुत, जो जन हैं निर्दोष।
प्राज्ञ-सभा में ढब समझ, करें न शब्द सदोष।। ७२१

प्राज्ञ–सभा–बुद्धिमानों की सभा। ढब–ढंग, रीति।

கற்றாருள் கற்றார் எனப்படுவர் கற்றார்முன்
கற்ற செலச்சொல்லு வார். 722

कट्रारुळ् कट्रार् ऍनप्पडुवर् कट्रार् मुन्
कट्र शॅलच्चॉल्लुवार्.

जो प्रभावकर ढंग से, अर्जित शास्त्र-ज्ञान।
प्रगटे विज्ञ-समक्ष, वह, विज्ञों में विद्वान।। ७२२

विज्ञ समक्ष–विद्वानों के सामने। विज्ञों में विद्वान–सर्व श्रेष्ठ विद्वान।

பகையகத்துச் சாவார் எளியர் அரியர்
அவையகத்து அஞ்சா தவர். 723

पहैयहतुतुच् चावार् ऍळियर् अरियर्
अवैयहतुतु अञ्जादवर्.

शत्रु-मध्य मरते निडर, मिलते सुलभ अनेक।
सभा-मध्य भाषण निडर, करते दुर्लभ एक।। ७२३

सुलभ—आसानी से। दुर्लभ—मुश्किल से।

கற்றார்முன் கற்ற செலச்சொல்லித் தாம்கற்ற
மிக்காருள் மிக்க கொளல். 724

कट्रार् मुन् कट्र शेलॅच्चोल्लित् ताम् कट्र
मिक्कारुळ् मिक्क कोळॅल्.

विज्ञ-मध्य स्वज्ञान की, कर प्रभावकर बात।
अपने से भी विज्ञ से, सीखो विशेष बात।। ७२४

ஆற்றின் அளவறிந்து கற்க அவையஞ்சா
மாற்றம் கொடுத்தற் பொருட்டு. 725

आट्रिन् अळवरिन्दु कर्क अवैयञ्जा
माट्रम् कोॅडुतुतर् पोॅरुट्टु.

सभा-मध्य निर्भीक हो, उत्तर देने ठीक।
शब्द-शास्त्र, फिर ध्यान से, तर्क-शास्त्र भी सीख।। ७२५

निर्भीक हो — निडर हो कर। देने—देने के लिये।

வாளொடென் வன்கண்ணர் அல்லார்க்கு நூலொடென்
நுண்ணவை அஞ்சு பவர்க்கு. 726

वाळोॅडॅन् वन् कण्णर् अल्लार्क्कु नूलोॅडॅन्
नुण्णवै अञ्जु पवर्क्कु.

निडर नहीं हैं जो उन्हें, खाँडे से क्या काम।
सभा-भीरु ज़ो हैं उन्हें, पोथी से क्या काम॥ ७२६

खांडा—खड्ग, तलवार। पोथी—पुस्तक।

பகையகத்துப் பேடிகை ஒள்வாள் அவையகத்து
அஞ்சு மவன்கற்ற நூல். 727

पहैयहत्तुप् पेडिकै ऑळ्वाळ् अवैयहत्तु
अञ्जुमवन् कट्र नूल्.

सभा-भीरु को प्राप्त है, जो भी शास्त्र-ज्ञान।
कायर-कर रण-भूमि में, तीक्षण खड्ग समान।। ७२७

सभा—भीरु—सभा में डरनेवाला। कायर कर—कायर के हाथ में

பல்லவை கற்றும் பயமிலரே நல்லவையுள்
நன்கு செலச்சொல்லா தார். 728

पल्लवै कट्रुम् पयमिलरे नल्लवैयुळ्
नन्गु शॅलच् चॉल्लादार्.

रह कर भी बहु शास्त्रविद, है ही नहिं उपयोग।
विज्ञ-सभा पर असर कर, कह न सके जो लोग।। ७२८

கல்லா தவரின் கடையென்ப கற்றறிந்தும்
நல்லார் அவையஞ்சு வார். 729

कल्लादवरिन् कडैयॅन्ब कट्ररिन्दुम्
नल्लार् अवैयञ्जुवार्.

जो होते भयभीत हैं, विज्ञ-सभा के बीच।
रखते शास्त्रज्ञान भी, अनपढ से हैं नीच।। ७२९

உளரெனினும் இல்லாரொடு ஒப்பர் களன்அஞ்சிக்
கற்ற செலச்சொல்லா தார். 730

उळरॆनिनुम् इल्लारोडु ओप्पर् कळन् अञ्जिक्
कट्र् शॆलच् चॊल्लादार्.

जो प्रभावकर ढंग से, कह न सका निज ज्ञान।
सभा-भीरु वह मृतक सम, यद्यपि है सप्राण।। ७३०

मृतक—मरा हुआ। सप्राण—जीवित।

அதிகாரம்-74 अध्याय — ७४ அரணியல் दुर्ग — प्रकरण

நாடு राष्ट्र नाडु

தள்ளா விளையுளும் தக்காரும் தாழ்விலாச்
செல்வரும் சேர்வது நாடு. 731

तळ्ळा विळैयुळुम् तक्कारुम् ताऴ्विलाच्
चॆल्वरुम् शेर्वदु नाडु.

अक्षय उपज सुयोग्य जन, ह्रासहीन धनवान।
मिल कर रहते हैं जहाँ, है वह राष्ट्र महान।। ७३१

ह्रासहीन—जिसकी अवनीत नहीं होती।

பெரும்பொருளால் பெட்டக்க தாகி அருங்கேட்டால்
ஆற்ற விளைவது நாடு. 732

पॆरुम् पॊरुळाल् पॆट्टक्कताहि अरुङ्केट्टाल्
आट्र विळैवदु नाडु.

अति धन से कमनीय बन, नाशहीनता युक्त।
प्रचुर उपज होती जहाँ, राष्ट्र वही है उक्त।। ७३२

பொறையொருங்கு மேல்வருங்கால் தாங்கி இறைவற்கு
இறையொருங்கு நேர்வது நாடு. 733

पोरै योॅरुङ्गु मेल् वरुङ्गाल् ताङ्गि इरैवऱ्कु
इरैयोॅरुङ्गु नेर्वदु नाडु.

एक साथ जब आ पड़ें, तब भी सह सब भार।
देता जो राजस्व सब, है वह राष्ट्र अपार॥ ७३३

உறுபசியும் ஓவாப் பிணியும் செறுபகையும்
சேரா தியல்வது நாடு. 734

उरुपशियुम् ओवाप्पिणियुम् शेॅरुपहैयुम्
शेरादियल्वदु नाडु.

भूख अपार न है जहाँ, रोग निरंतर है न।
और न नाशक शत्रु भी, श्रेष्ठ राष्ट्र की सैन।। ७३४

பல்குழுவும் பாழ்செய்யும் உட்பகையும் வேந்தலைக்கும்
கொல்குறும்பும் இல்லது நாடு. 735

पल्कुऴुवुम् पाऴ्शेॅय्युम् उट्पहैयुम् वेन्दलैक्कुम्
कोॅल्कुरुम्बुम् इल्लदु नाडु.

होते नहीं विभिन्न दल, नाशक अंतर-वैर।
नृप-कंटक खूनी नहीं, वही राष्ट्र है, ख़ैर।। ७३५

नृप—कंटक—राजा का क्षुद्र शत्रु।

கேடறியாக் கெட்ட விடத்தும் வளங்குன்றா
நாடென்ப நாட்டில் தலை. 736

केडरियाक् केॅट्टविडत्तुम् वळङ्कुन्ऱा
नाडेॅन्ब नाट्टिल् तलै.

नाश न होता, यदि हुआ, तो भी उपज यथेष्ट।
जिसमें कम होती नहीं, वह राष्ट्रों में श्रेष्ठ।। ७३६

இருபுனலும் வாய்ந்த மலையும் வருபுனலும்
வல்லரணும் நாட்டிற்கு உறுப்பு. 737

इरुपुनलुम् वाय्न्द मलैयुम् वरुपुनलुम्
वल्लरणुम् नाट्टिऱ्कु उऱुप्पु.

कूप सरोवर नद-नदी, इनके पानी संग।
सुस्थित पर्वत सुदृढ़ गढ़, बनते राष्ट्र-सुअंग।। ७३७

कूप—कुआँ। पानी संग—पानी के साथ (पानी की कमी नहीं)

பிணியின்மை செல்வம் விளைவின்பம் ஏமம்
அணியென்ப நாட்டிற்கிவ் வைந்து. 738

पिणियिन्मै शॆल्वम् विळैविन्बम् एमम्
अणियॆन्ब नाट्टिऱ्किव् वैन्दु.

प्रचुर उपज, नीरोगता, प्रसन्नता, ऐश्वर्य।
और सुरक्षा, पाँच हैं, राष्ट्र-अलंकृति वर्य।। ७३८

नीरोगता—रोग न होना। अलंकृति वर्य—श्रेष्ठ आभूषण।

நாடென்ப நாடா வளத்தன நாடல்ல
நாட வளந்தரு நாடு. 739

नाडॆन्ब नाडा वळत्तन नाडल्ल
नाड वळन्तरु नाडु.

राष्ट्र वही जिसकी उपज, होती है बिन यत्न।
राष्ट्र नहीं वह यदि उपज, होती है कर यत्न।। ७३९

ஆங்கமை வெய்தியக் கண்ணும் பயமின்றே
வேந்தமை வில்லாத நாடு. 740

आङ्गमै वेँय्दियक् कण्णुम् पयमिन्ड्रे
वेन्दमै विल्लाद नाड्डु.

उपर्युक्त साधन सभी, होते हुए अपार।
प्रजा-भूप-सद्भाव बिन, राष्ट्र रहा बेकार।। ७४०

उपर्युक्त—ऊपर कहे हुए। प्रजा—भूप—सद्भाव—राजा और प्रजा के बीच परस्पर प्रेम—भावना।

அதிகாரம்-75 अध्याय — ७५ அரணியல்/दुर्ग — प्रकरण

அரண் दुर्ग अरण्

ஆற்று பவர்க்கும் அரண்பொருள் அஞ்சித்தற்
போற்று பவர்க்கும் பொருள். 741

आट्रुपवर्क्कुम् अरण्पोॅरुळ् अञ्जित्तर्
पोट्रुपवर्क्कुम् पोॅरुळ्.

आक्रामक को दुर्ग है, साधन महत्वपूर्ण।
शरणार्थी-रक्षक वही, जो रिपु-भय से चूर्ण।। ७४१

आक्रामक—जो आक्रमण करना चाहते हैं। रिपु—भय से चूर्ण—शत्रु से भय—भीत। भाव यह है कि दोनों प्रकार के राजाओं के लिये, जो आक्रमण करना चाहते हैं और केवल सुरक्षित रहना चाहते हैं, दुर्ग बहुत आवश्यक है।

மணிநீரும் மண்ணும் மலையும் அணிநிழற்
காடும் உடையது அரண். 742

मणि नीरुम् मणणुम् मलैयुम् अणिनिष़र्
काडुम् उडैयदु अरण्.

मणि सम जल, मरु भूमि औं', जंगल घना पहाड़।
कहलाता है दुर्ग वह, जब हो इनसे आड़।। ७४२

आड़—रक्षा। मणि—नील मणि। जल—जल से भरी खाई। जल—दुर्ग, स्थल—दुर्ग, वन—दुर्ग और पर्वत—दुर्ग—ऐसे चार प्रकार के दुर्ग।

உயர்வகலம் திண்மை அருமைஇந் நான்கின்
அமைவரண் என்றுரைக்கும் நூல். 743

उयर्वहलम् तिण्मै अरुमै इन्नान्गिन्
अमैवरण् ऍन्रुरैक्कुम् नूल्.

ऊँचा, चौड़ा और दृढ़, अगम्य भी अत्यंत।
चारों गुणयुत दुर्ग है, यों कहते हैं ग्रन्थ।। ७४३

ग्रन्थ—शास्त्र अर्थात शास्त्रज्ञ।

சிறுகாப்பிற் பேரிடத்த தாகி உறுபகை
ஊக்கம் அழிப்பது அரண். 744

शिरु काप्पिर् पेरिडत्तताहि उरुपहै
ऊक्कम् अष़िप्पदु अरण्.

अति विस्तृत होते हुए, रक्षणीय थल तंग।
दुर्ग वही जो शत्रु का, करता नष्ट उमंग।। ७४४

கொளற்கரிதாய்க் கொண்டகூழ்த் தாகி அகத்தார்
நிலைக்கெளிதாம் நீரது அரண். 745

कोऴ्ऱ्करिदायक् कोण्ड कूष़्त्ताहि अहत्तार्
निलैक्कॆळिदाम् नीरदु अरण्.

जो रहता दुर्जेय है, रखता यथेष्ट अन्न।
अंतरस्थ टिकते सुलभ, दुर्ग वही संपन्न।। ७४५

எல்லாப் பொருளும் உடைத்தாய் இடத்துதவும்
நல்லாள் உடையது அரண். 746

ऍल्लाप्पॊरुळुम् उडैत्ताय् इडत्तुदवुम्
नल्लाळ् उडैयदु अरण्.

कहलाता है दुर्ग वह, जो रख सभी पदार्थ।
देता संकट काल में, योग्य वीर रक्षार्थ।। ७४६

முற்றியும் முற்று தெறிந்தும் அறைப்படுத்தும்
பற்றற் கரியது அरண். 747

मुट्रियुम् मुट्रादॆऱिन्दुम् अऱैप्पडुत्तुम्
पट्रऱ्करियदु अरण्.

पिल पड़ कर या घेर कर, या करके छलछिद्र।
जिसको हथिया ना सके, है वह दुर्ग विचित्र।। ७४७

पिल पड़ना—एक बारगी टूट पड़ना।

முற்றாற்றி முற்றி யவரையும் பற்றாற்றிப்
பற்றியார் வெல்வது அரண். 748

मुट्राट्रि मुट्रियवरैयुम् पट्राट्रिप्
पट्रियार् वॆल्वदु अरण्.

दुर्ग वही यदि चतुर रिपु, घेरा डालें घोर।
अंतरस्थ डट कर लडें, पावें जय बरज़ोर।। ७४८

अंतरस्थ—दुर्ग के अन्दर रहनेवाले।

முனைமுகத்து மாற்றலர் சாய வினைமுகத்து
வீறெய்தி மாண்டது அரண். 749

मुनै मुहत्तु माट्रलर् शाय विनैमुहत्तु
वीऱॆय्दि माण्डदु अरण्.

शत्रु-नाश हो युद्ध में, ऐसे शस्त्र प्रयोग।
करने के साधन जहाँ, है गढ़ वही अमोघ।। ७४९

எனைமாட்சித் தாகியக் கண்ணும் வினைமாட்சி
இல்லார்கண் இல்லது அரண். 750

ऍनैमाट्चित् ताहियक् कण्णुम् विनैमाट्चि
इल्लार्कण् इल्लदु अरण्.

गढ़-रक्षक रण-कार्य में, यदि हैं नहीं समर्थ।
अत्युत्तम गढ़ क्यों न हो, होता है वह व्यर्थ।। ७५०

அதிகாரம்-76 अध्याय — ७६ கூழியல் वित्त — प्रकरण

பொருள் செயல்வகை — वित्त-साधन-विधि — पोरुळ् शॆय्ल् वहै

பொருளல் லவரைப் பொருளாகச் செய்யும்
பொருளல்லது இல்லை பொருள். 751

पॊरुळल्लवरैप् पॊरुळाहच् चॆय्युम्
पॊरुळल्लदु इल्लै पॊरुळ्.

धन जो देता है बना, नगण्य को भी गण्य।
उसे छोड़ कर मनुज को, गण्य वस्तु नहिं अन्य।। ७५२

இல்லாரை எல்லாரும் எள்ளுவர் செல்வரை
எல்லாரும் செய்வர் சிறப்பு. 752

इल्लारै ऍल्लारुम् ऍळ्ळुवर् शॅल्वरै
ऍल्लारुम् शॅय्वर् शिऱप्पु.

निर्धन लोगो का सभी, करते हैं अपमान।
धनवानों का तो सभी, करते हैं सम्मान।। ७५२

பொருளென்னும் பொய்யா விளக்கம் இருளறுக்கும்
எண்ணிய தேயத்துச் சென்று. 753

पॉरुळॅन्नुम् पोय्या विळक्कम् इरुळरुक्कुम्
ऍण्णिय तेयत्तुच् चॅन्ड्रु.

धनरूपी दीपक अमर, देता हुआ प्रकाश।
मनचाहा सब देश चल, करता है तम-नाश।। ७५३

तम—अंधकार (शत्रुरूपी)।

அறன்ஈனும் இன்பமும் ஈனும் திறனறிந்து
தீதின்றி வந்த பொருள். 754

अऱन् ईनुम् इन्बमुम् ईनुम् तिऱनऱिन्दु
तीदिन्ड्रि वन्द पॉरुळ्.

पाप-मार्ग को छोड़कर, न्याय-रीति को जान।
अर्जित धन है सुखद औ', करता धर्म प्रदान।। ७५४

जान—जान कर। अर्जित—कमाया हुआ।

அருளொடும் அன்பொடும் வாராப் பொருளாக்கம்
புல்லார் புரள விடல். 755

अरुळॊडुम् अन्बॊडुम् वाराप् पॊरुळाक्कम्
पुल्लार् पुरळ विडल्.

दया और प्रिय भाव से, प्राप्त नहीं जो वित्त।
जाने दो उस लाभ को, जमे न उसपर चित्त।। ७५५

உறுபொருளும் உல்கு பொருளும்தன் ஒன்னார்த்
தெறுபொருளும் வேந்தன் பொருள். 756

उरु पॊरुळुम् उल्हु पॊरुळुम्तन् ऒन्नारत्
तॆरु पॊरुळुम् वेन्दन् पॊरुळ्.

धन जिसका वारिस नहीं, धन चुँगी से प्राप्त।
विजित शत्रु का भेंट-धन, धन हैं नृप हित आप्त।। ७५६

नृप हित आप्त—राजा का स्वत्व।

அருளென்னும் அன்பீன் குழவி பொருளென்னும்
செல்வச் செவிலியால் உண்டு. 757

अरुळॆन्नुम् अन्बीन् कुषवि पॊरुळॆन्नुम्
शॆल्वच् चॆविलियाल् उण्डु.

जन्माता है प्रेम जो, दयारूप शिशु सुष्ट।
पालित हो धन-धाय से, होता है वह पुष्ट।। ७५७

सुष्ट—अच्छा, भला। धन—धाय—धन रूपी दाई।

குன்றேறி யானைப்போர் கண்டற்றால் தன்கைத்தொன்று
உண்டாகச் செய்வான் வினை. 758

कुन्ड्रेरि यानैप्पोर् कण्डट्राल् तन् कैत्तॊन्ड्रु
उण्डाहच् चॆय्वान् विनै.

निज धन रखते हाथ में, करना कोई कार्य।
गिरि पर चढ़ गज-समर का, ईक्षण सदृश विचार्य।। ७५८

चढ़—चढ़कर। गज—समर—हाथी का हाथी से युद्ध।

ईक्षण—देखना। सदृश—समान।।

செய்க பொருளைச் செறுநர் செருக்கறுக்கும்
எஃகதனிற் கூரியது இல். 759

शॅय्ह पॉरुळैच् चॅऱुनर् शॅरुक्करुक्कुम्
ऍह्कदनिऱ् कूरियदु इल्.

शत्रु-गर्व को चीरने, तेज शस्त्र जो सिद्ध।
धन से बढ़ कर है नहीं, सो संग्रह कर वित्त।। ७५९

ஒண்பொருள் காழ்ப்ப இயற்றியார்க்கு எண்பொருள்
ஏனை இரண்டும் ஒருங்கு. 760

ओंण्पॉरुळ् काऴ्प्प इयट्रियार्क्कु ऍण्पॉरुळ्
एनै इरण्डुम् ऑरुङ्गु.

धर्म, काम दोनों सुलभ, मिलते हैं इक साथ।
न्यायार्जित धन प्रचुर हो, लगता जिसके हाथ।। ७६०

न्यायार्जित धन—न्याय मार्ग से कमाया हुआ धन। प्रचुर—बहुत अधिक।

படைமாட்சி सैन्य-माहात्म्य पडै माट्चि

உறுப்பமைந்து ஊறஞ்சா வெல்படை வேந்தன்
வெறுக்கையு ளெல்லாம் தலை. 761

उरुप्पमैन्दु ऊरञ्जा वेॅल्पहै वेन्दन्
वेॅरुक्कैयुळॅल्लाम् तलै.

सब अंगों से युक्त हो, क्षत से जो निर्भीक।
जयी सैन्य है भूप के, ऐश्वर्यों में नीक।। ७६१

अंग—रथ, गज, तुरग, पदाति। क्षत—घाव। नीक—अच्छा।

உலைவிடத்து ஊறஞ்சா வன்கண் தொலைவிடத்துத்
தொல்படைக் கல்லால் அரிது. 762

उलैविडत्तु ऊरञ्जा वन्कण् तॉलैविडत्तुत्
तॉल्पडैक्कल्लाल् अरिदु.

छोटा फिर भी विपद में, निर्भय सहना चोट।
यह साहस संभव नहीं, मूल सैन्य को छोड़।। ७६२

मूलसैन्य—वह सेना जो परंपरा से रहती आयी है। पुश्तैनी सेना।

ஒலித்தக்கால் என்னாம் உவரி எலிப்பகை
நாகம் உயிர்ப்பக் கெடும். 763

ऑलित्तक्काल् ऍन्नाम् उवरि ऍलिप्पहै
नाहम् उयिर्प्पक् कॅडुम्.

चूहे-शत्रु समुद्र सम, गरजें तो क्या कष्ट।
सर्पराज फुफकारते, होते हैं सब नष्ट।। ७६३

அழிவின்று அறைபோகா தாகி வழிவந்த
வன்க ணதுவே படை. 764

अषिविनॣड्रु अरै पोहादाहि वषि़वनॣद
वनॣकणदुवे पडै.

अविनाशी रहते हुए, छल का हो न शिकार।
पुश्तैनी साहस जहाँ, वही सैन्य निर्धार।। ७६४

கூற்றுடன்று மேல்வரினும் கூடி எதிர்நிற்கும்
ஆற்ற லதுவே படை. 765

कूट्रुडनॣड्रु मेलॣ वरिनुमॣ कूडि ऍदिरॣ निऱ्कुमॣ
आट्रलदुवे पडै.

क्रोधित हो यम आ भिड़े, फिर भी हो कर एक।
जो समर्थ मुठ-भेड़ में, सैन्य वही है नेक।। ७६५

மறமானம் மாண்ட வழிச்செலவு தேற்றம்
எனநான்கே ஏமம் படைக்கு. 766

मऱ मानमॣ माणॣड वषि़चॣचॅलवु तेट्रमॣ
ऍन नाऩ्गे एममॣ पडैक्कु.

शौर्य, मान, विश्वस्तता, करना सद्व्यवहार।
ये ही सेना के लिये, रक्षक गुण हैं चार।। ७६६

தார்தாங்கிச் செல்வது தானை தலைவந்த
போர்தாங்கும் தன்மை யறிந்து. 767

तारॣ ताङॣगिचॣ चॅलॣवदु तानै तलैवनॣद
पोरॣताङ्गुमॣ तनॣमैयऱिनॣदु.

चढ़ आने पर शत्रु के, व्यूह समझ रच व्यूह।
रोक चढ़ाई खुद चढ़े, यही सैन्य की रूह।। ७६७

அடற்றகையும் ஆற்றலும் இல்லெனினும் தானை
படைத்தகையால் பாடு பெறும். 768

अडट्रहैयुम् आट्रलुम् इल्लॅनिनुम् तानै
पडैत्तहैयाल् पाडु पेरुम्.

यद्यपि संहारक तथा, सहन शक्ति से हीन।
तड़क-भड़क से पायगी, सेना नाम धुरीण।। ७६८

धुरीण—प्रधान, धुरंधर।

சிறுமையும் செல்லாத் துனியும் வறுமையும்
இல்லாயின் வெல்லும் படை. 769

शिरुमैयुम् शॅल्लात् तुनियुम् वरुमैयुम्
इल्लायिन् वॅल्लुम् पडै.

लगातार करना घृणा, क्षय होना औ' दैन्य।
जिसमें ये होते नहीं, पाता जय वह सैन्य।। ७६९

करना घृणा —राजा के बुरे बर्ताव के कारण जवानों का उससे घृणा करना। क्षय होना — जवानों के छोड़ जाने से सेना का घट जाना। दैन्य—दीनता— दरिद्रता।

நிலைமக்கள் சால உடைத்தெனினும் தானை
தலைமக்கள் இல்வழி இல். 770

निलैमक्कळ् शाल उडैत्तॅनिनुम् तानै
तलैमक्कळ् इल्वषि इल्.

रखने पर भी सैन्य में, अगणित स्थायी वीर।
स्थायी वह रहता नहीं, बिन सेनापति धीर।। ७७०

படைச் செருக்கு सैन्य-साहस पडैच् चेरुक्कु

என்னைமுன் நில்லன்மின் தெவ்விர் பலர்என்னை
முன்நின்று கல்நின் றவர். 771

ऍन्नै मुन् निल्लन्मिन् तॅव्विर् पलर् ऍन्नै
मुन् निन्ड्रु कल् निन्ड्रवर्.

डटे रहो मत शत्रुओ, मेरे अधिप समक्ष।
डट कर कई शिला हुए, मेरे अधिप समक्ष।। ७७१

डट कर —अड़े हुए रह कर। शिला हुए —उनका स्मारक चिन्ह बनाया गया अर्थात् वे मारे गये।

கான முயலெய்த அம்பினில் யானை
பிழைத்தவேல் ஏந்தல் இனிது. 772

कान मुयलॅय्द अम्बिनिल् यानै
पिष़ैत्त वेल् एन्दल् इनिदु.

वन में शश पर जो लगा, धरने से वह बाण।
गज पर चूके भाल को, धरने में है मान॥ ७७२

शश—ख़रगोश। इस दोहे का भाव यह है कि कमज़ोर शत्रु को मार कर जय पाने से बढ़ कर शक्तिशाली शत्रु का सामना करना भी श्रेष्ठ है चाहे जय मिले या न मिले।

பேராண்மை என்ப தறுகண்ஒன் றுற்றக்கால்
ஊராண்மை மற்றதன் எஃகு. 773

पेराण्मै ऍन्ब तऱुकण् ओन्ड्रुट्रक्काल्
ऊराण्मै मट्रदन् ऍह्कु.

निर्दय साहस को कहें, महा धीरता सार।
संकट में उपकार है, उसकी तीक्ष्ण धार।। ७७३

கைவேல் களிற்றொடு போக்கி வருபவன்
மெய்வேல் பறியா நகும். 774

कैवेल् कळिट्रोॅडु पोक्कि वरुपवन्
मेय्वेल् परिया नहुम्..

कर-भाला गज पर चला, फिरा खोजते अन्य।
खींच भाल छाती लगा, हर्षित हुआ सुधन्य।। ७७४

कर—भाला—जो भाला हाथ में था। चला—चलाकर। खींच...सुधन्य—दूसरे भाल की आवश्यकता हुई तो वह छाती में लगे भाल से पूरी हुई। धन्य वह वीर।

விழித்தகண் வேல்கொண் டெறிய அழித்திமைப்பின்
ஓட்டன்றோ வன்க ணவர்க்கு. 775

विष़ित्त कण् वेल् कोॅण्डॅरिय अष़ित्तिमैप्पिन्
ओॅट्टन्ड्रो वन् कणवर्क्कु.

क्रुद्ध नेत्र यदि देख कर, रिपु का भाल-प्रहार।
झपकेंगे तो क्या नहीं, वह वीरों को हार।। ७७५

விழுப்புண் படாதநாள் எல்லாம் வழுக்கினுள்
வைக்கும்தன் நாளை எடுத்து. 776

विष़ुप्पुण् पडाद नाळ् ऍल्लाम् वष़ुक्किनुळ्
वैक्कुम् तन् नाळै ऍडुत्तु.

'गहरा घाव लगा नहीं,' ऐसे दिन सब व्यर्थ'।
बीते निज दिन गणन कर, यों मानता समर्थ।। ७७६

बीते ... गणन कर—अपने जीवन के जो दिन बीत गये उनकी गिनती करके।

சுழலும் இசைவேண்டி வேண்டா உயிரார்
கழல்யாப்புக் காரிகை நீர்த்து. 777

शुषलुम् इशै वेण्डि वेण्डा उयिरार्
कषल्यापपुक् कारिहै नीर्त्तु.

जग व्यापी यश चाहते, प्राणों की नहिं चाह।
ऐसों का धरना कड़ा, शोभाकर है, वाह।। ७७७

कड़ा—वीरोचित आभूषण जो पाँव में पहना जाता है।

உறின்உயிர் அஞ்சா மறவர் இறைவன்
செறினும்சீர் குன்றல் இலர். 778

उऱिन् उयिर् अञ्जा मऱवर् इऱैवन्
शॆऱिनुम् शीर् कुन्ऱल् इलर्.

प्राण-भय-रहित वीर जो, जब छिड़ता है युद्ध।
साहस खो कर ना रुकें, नृप भी रोकें क्रुद्ध।। ७७८

இழைத்தது இகவாமைச் சாவாரை யாரே
பிழைத்தது ஒறுக்கிற் பவர். 779

इऴैत्तदु इहवामैच् चावारै यारे
पिऴैत्तदु ऒऱुक्किऱ्पवर्.

प्रण रखने हित प्राण भी, छोडेंगे जो चण्ड।
कौन उन्हें प्रण-भंग का, दे सकता है दण्ड।। ७७९

प्रण रखने हित—प्रतिज्ञा की रक्षा करने के लिये।

புரந்தார்கண் நீர்மல்கச் சாகிற்பின் சாக்காடு
இரந்துகோள் தக்கது உடைத்து. 780

पुरन्दारूकण् नीरूमलूहच् चाहिरू पिन् शाकूकाडु
इरन्दु कोळ् तकूकदु उडैतुतु.

दृग भर आये भूप के, सुन जिसका देहांत।
ग्रहण योग्य है माँग कर, उसका जैसा अंत।। ७८०

दृग...भूप के—राजा की आँखों से आँसू बह गये।

अதிகாரம்-79 अध्याय – ७९ நட்பியல் मैत्री — प्रकरण

நட்பு मैत्री नट्पु

செயற்கரிய யாவுள நட்பின் அதுபோல்
வினைக்கரிய யாவுள காப்பு. 781

शॅयरूकरिय यावुळ नट्पिन् अदुपोल्
विनैकूकरिय यावुळ कापुपु.

करने को मैत्री सदृश, कृति है कौन महान।
दुर्लभ-रक्षक शत्रु से, उसके कौन समान।। ७८१

நிறைநீர நீரவர் கேண்மை பிறைமதிப்
பின்நீர பேதையார் நட்பு. 782

निरैनीर नीरवर् केण्मै पिरैमदिप्
पिन् नीर पेदैयार् नट्पु.

प्राज्ञ मित्रता यों बढ़े, यथा दूज का चाँद।
मूर्ख मित्रता यों घटे, ज्यों पूनो के बाद।। ७८२

पूनो के बाद—पूर्णिमा के बाद।

நவில்தொறும் நூல்நயம் போலும் பயில்தொறும்
பண்புடை யாளர் தொடர்பு. 783

नविल्तोरुम् नूल् नयम् पोलुम् पयिल्तोरुम्
पण्बुडैयाळर् तॊंडर्बु.

करते करते अध्ययन, अधिक सुखद ज्यों ग्रन्थ।
परिचय बढ़ बढ़ सुजन की, मैत्री दे आनन्द।। ७८३

तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि ' अध्याय में गिरिधर शर्मा ' नवरत्न '
की कविता से इस दोहे की तुलना की गई है।

நகுதற் பொருட்டன்று நட்டல் மிகுதிக்கண்
மேற்சென்று இடித்தற் பொருட்டு. 784

नहुदर् पोरुट्टन्ड्रु नट्टल् मिहुदिक्कण्
मेर्चॆन्ड्रु इडित्तर् पॊरुट्टु.

हँसी-खेल करना नहीं, मैत्री का उपकार।
आगे बढ़ अति देख कर, करना है फटकार।। ७८४

புணர்ச்சி பழகுதல் வேண்டா உணர்ச்சிதான்
நட்பாம் கிழமை தரும். 785

पुणर्च्चि पऴहुदल् वेण्डा उणर्च्चिदान्
नट्पाम् किऴमै तरुम्.

परिचय औ' संपर्क की, नहीं ज़रूरत यार।
देता है भावैक्य ही, मैत्री का अधिकार।। ७८५

முகநக நட்பது நட்பன்று நெஞ்சத்து
அகநக நட்பது நட்பு. 786

मुहनह नट्पदु नट्पन्ड्रु नॆञ्जत्तु
अहनह नट्पदु नट्पु.

केवल मुख खिल जाय तो, मैत्री कहा न जाय।
सही मित्रता है वही, जिससे जी खिल जाय।। ७८६

அழிவி னவைநீக்கி ஆறுய்த்து அழிவின்கண்
அல்லல் உழப்பதாம் நட்பு. 787

अऴिविनवै नीक्कि आरुय्त्तु अऴिविन्कण्
अल्लल् उऴप्पदाम् नट्पु.

चला सुपथ पर मित्र को, हटा कुपथ से दूर।
सह सकती दुख विपद में, मैत्री वही ज़रूर।। ७८७

உடுக்கை இழந்தவன் கைபோல ஆங்கே
இடுக்கண் களைவதாம் நட்பு. 788

उडुक्कै इऴन्दवन् कैपोल आङ्गे
इडुक्कण् कळैवदाम् नट्पु.

ज्यों धोती के खिसकते, थाम उसे ले हस्त।
मित्र वही जो दुःख हो, तो झट कर दे पस्त।। ७८८

थाम ... हस्त—हाथ उसको गिरने न दे कर पकड़ ले। पस्त करना —दबा देना अर्थत् दूर करना।

நட்பிற்கு வீற்றிருக்கை யாதெனில் கொட்பின்றி
ஒல்லும்வாய் ஊன்றும் நிலை. 789

नट्पिऱ्कु वीट्रिरुक्कै यादॆनिल् कॊट्पिन्ड्रि
ओल्लुम् वायूऊन्ड्रुम् निलै.

यथा शक्ति सब काल में, भेद बिना उपकार।
करने की क्षमता सुदृढ़, है मैत्री-दरबार।। ७८९

இனையர் இவரெமக்கு இன்னம்யாம் என்று
புனையினும் புல்லெனன் னும் நட்பு. 790

इनैयर् इवरॅमक्कु इन्नम्याम् ऍन्ड्रु
पुनैयिनुम् पुल्लॅन्नुम् नट्पु.

'ऐसे ये मेरे लिये', 'मैं हूँ इनका यार'।
मैत्री की महिमा गयी, यों करते उपचार।। ७९०

दोहे का भाव यह है कि औपचारिक ढंग से मैत्री प्रकट करने से उसकी महिमा घट जाती है।

அதிகாரம்-80 अध्याय – ८०

நட்பியல் मैत्री – प्रकरण

நட்பாராய்தல் मैत्री की परख नट्पारायदल्

நாடாது நட்டலிற் கேடில்லை நட்டபின்
வீடில்லை நட்பாள் பவர்க்கு. 791

नाडादु नट्टलिर् केडिल्लै नट्टपिन्
वीडिल्लै नट्पाळ् पवर्क्कु.

जाँचे बिन मैत्री सदृश, हानि नहीं है अन्य।
मित्र बना तो छूट नहीं, जिसमें वह सौजन्य।। ७९१

ஆய்ந்தாய்ந்து கொள்ளாதான் கேண்மை கடைமுறை
தான்சாந் துயரம் தரும். 792

आय्न्दाय्न्दु कोॅळ्ळादान् केण्मै कडैमुरै
तान् शान्तुयरम् तरुम्.

परख परख कर जो नहीं, किया गया सौहार्द।
मरण दिलाता अन्त में, यों करता वह आर्त।। ७९२

குணனும் குடிமையும் குற்றமும் குன்றா
இனனும் அறிந்தியாக்க நட்பு. 793

कुणनुम् कुडिमैयुम् कुट्रमुम् कुन्ड्रा
इननुम् अरिन्दियाक्क नट्पु.

गुण को कुल को दोष को, जितने बन्धु अनल्प।
उन सब को भी परख कर, कर मैत्री का कल्प।। ७९३

अनल्प—अधिक। कल्प—विधान। 'अनुवाद के सम्बन्ध में' अध्याय में इस दोहे का उल्लेख हुआ है।

குடிப்பிறந்து தன்கட் பழிநாணு வானைக்
கொடுத்தும் கொளல்வேண்டும் நட்பு. 794

कुडिप्पिरन्दु तन्कट् पषि नाणुवानैक्
कॊँडुत्तुम् कॊॅळल् वेण्डुम् नट्पु.

जो लज्जित बदनाम से, रहते हैं कुलवान।
कर लो उनकी मित्रता, कर भी मूल्य-प्रदान।। ७९४

அழச்சொல்லி அல்லது இடித்து வழக்கறிய
வல்லார்நட்பு ஆய்ந்து கொளல். 795

अषच्चॊॅल्लि अल्लदु इडित्तु वषक्करिय
वल्लार् नट्पु आयन्दु कॊॅळल्.

झिड़की दे कर या रुला, समझावे व्यवहार।
ऐसे समर्थ को परख, मैत्री कर स्वीकार।। ७९५

கேட்டினும் உண்டோர் உறுதி கிளைஞரை
நீட்டி அளப்பதோர் கோல். 796

केट्टिनुम् उण्डोर् उरुदि किळैञरै
नीट्टि अळप्पदोर् कोल्.

होने पर भी विपद के, बड़ा लाभ है एक।
मित्र-खेत सब मापता, मान-दंड वह एक।। ७९६

मित्र खेत—दोस्त रूपी खेत को। 'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि अध्याय में 'रहीम' के दोहे से इसकी तुलना की गई है।

ஊதியம் என்பது ஒருவற்குப் பேதையார்
கேண்மை ஒரீஇ விடல். 797

ऊदियम् ऍन्बदु ऑरुवऱ्कुप् पेदैयार्
केण्मै ऑरीइ विडल्.

मूर्खों के सौहार्द से, बच कर तजना साफ़।
इसको ही नर के लिये, कहा गया है लाभ।। ७९७

सौहार्द—मित्रता। तजना (उस मित्रता को) छोड़ देना

உள்ளற்க உள்ளம் சிறுகுவ கொள்ளற்க
அல்லற்கண் ஆற்றறுப்பார் நட்பு. 798

उळ्ळऱ्क उळ्ळम् शिऱुहुव कॊळ्ळऱ्क
अल्लऱ्कण् आट्ऱुप्पार् नट्पु.

ऐसे कर्म न सोचिये, जिनसे घटे उमंग।
मित्र न हो जो दुःख में, छोड़ जायगा संग।। ७९८

கெடுங்காலைக் கைவிடுவார் கேண்மை அடுங்காலை
உள்ளினும் உள்ளம் சுடும். 799

कॅडुङ्कालैक् कैविडुवार् केण्मै अडुङ्कालै
उळ्ळिनुम् उळ्ळम् शुडुम्.

विपद समय जो बन्धु जन, साथ छोड दें आप।
मरण समय भी वह स्मरण, दिल को देगा ताप।। ७९९

आप—स्वयं। विपद समय—आपत्ति के समय। ताप—दुःख।

மருவுக மாசற்றார் கேண்மை ஒன்றீத்தும்
ஒருவுக ஒப்பிலார் நட்பு. 800

मरुवुह माशट्रार् केण्मै ओन्ड्रीत्तुम्
ओरुवुह ओप्पिलार् नट्पु.

निर्मल चरित्रवान की, मैत्री लेना जोड़।
कुछ दे सही अयोग्य की, मैत्री देना छोड।। ८००

अதிகாரம்-81 अध्याय — ८१ நட்பியல் मैत्री — प्रकरण

பழைமை चिर-मैत्री पषमै

பழைமை எனப்படுவது யாதெனின் யாதும்
கிழமையைக் கீழ்ந்திடா நட்பு. 801

पष़मै ऍनप्पडुवदु यादॅनिन् यादुम्
किष़मैयैक् कीष़न्दिडा नट्पु.

जो कुछ भी अधिकार से, करते हैं जन इष्ट।
तिरस्कार बिन मानना, मैत्री कहो घनिष्ठ।। ८०१

நட்பிற் குறுப்புக் கெழுதகைமை மற்றதற்கு
உப்பாதல் சான்றோர் கடன். 802

नट्पिऱ् कुऱुप्पुक् कॅष़ुतहैमै मट्रदऱ्कु
उप्पादल् शान्ड्रोर् कडन्.

हक़ से करना कार्य है, मैत्री का ही अंग।
फ़र्ज़ समझ सज्जन उसे, मानें सहित उमंग।। ८०२

பழகிய நட்பெவன் செய்யும் கெழுதகைமை
செய்தாங்கு அமையாக் கடை. 803

पष़हिय नट्पॅवन् शॅय्युम् कॅष़ुतहैमै
शॅय्दाङ्गु अमैयाक् कडै.

निज कृत सम जो मित्र का, साधिकार कृत काम।
यदि स्वीकृत होता नहीं, चिर-मैत्री क्या काम।। ८०३

निज कृत सम—अपने आप से किये हुए काम के समान।

விழைதகையான் வேண்டி யிருப்பர் கெழுதகையாற்
கேளாது நட்டார் செயின். **804**

विष़ैतहैयान् वेण्डियिरुप्पर् कॆष़ुतहैयाऱ्
केळादु नट्टार् शॆयिन्.

पूछे बिन हक़ मान कर, मित्र करे यदि कार्य।
वांछनीय गुण के लिये, मानें वह स्वीकार्य।। ८०४

பேதைமை ஒன்றோ பெருங்கிழமை என்றுணர்க
நோதக்க நட்டார் செயின். **805**

पेदैमै ऒन्ऱो पॆरुङ्किष़मै ऎन्ऱुणर्ह
नोदक्क नट्टार् शॆयिन्.

दुःखजनक यदि कार्य हैं, करते मित्र सुजान।
अति हक़ या अज्ञान से, यों करते हैं जान।। ८०५

எல்லைக்கண் நின்றார் துறவார் தொலைவிடத்தும்
தொல்லைக்கண் நின்றார் தொடர்பு. **806**

ऎल्लैक्कण् निन्ऱार् तुऱवार् तॊलैविडत्तुम्
तॊल्लैक्कण् निन्ऱार् तॊडर्बु.

चिरपरिचित घन मित्र से, यद्यपि हुआ अनिष्ट।
मर्यादी छोडें नहीं, वह मित्रता घनिष्ठ।। ८०६

அழிவந்த செய்யினும் அன்பறார் அன்பின்
வழிவந்த கேண்மை யவர். 807

अऴिवन्द शॆय्यिनुम् अन्बऱार् अन्बिन्
वऴिवन्द केण्मै यवर्.

स्नेही स्नेह-परंपरा, जो करते निर्वाह।
मित्र करे यदि हानि भी, तजें न उसकी चाह।। ८०७

கேளிழுக்கம் கேளாக் கெழுதகைமை வல்லார்க்கு
நாளிழுக்கம் நட்டார் செயின். 808

केळिऴुक्कम् केळाक् कॆऴुतहैमै वल्लार्क्कु
नाळिऴुक्कम् नट्टार् शॆयिन्.

मित्र-दोष को ना सुनें, ऐसे मित्र घनिष्ठ।
मानें उस दिन को सफल, दोष करें जब इष्ट।। ८०८

मित्र—दोष—मित्र से किया हुआ अपराध। ना सुनें —यदि कोई कहेगा तो उसे न मानेगा। मानें ... सफल—दोष को अनसुनी करके मित्रता का परिचय देने का अवसर मिलने के कारण उस दिन को सफल मानेंगे।

கெடாஅ வழிவந்த கேண்மையார் கேண்மை
விடாஅர் விழையும் உலகு. 809

कॆडाअ वऴिवन्द केण्मैयार् केण्मै
विडाअर् विऴैयुम् उलहु.

अविच्छिन्न चिर-मित्रता, जो रखते हैं यार।
उनका स्नेह तजें न जो, उन्हें करे जग प्यार।। ८०९

अविच्छिन्न—अटूट।

விழையார் விழையப் படுப பழையார்கண்
பண்பின் தலைப்பிரியா தார். 810

विष़ैयार् विष़ैयपप्पडुप पष़ैयार्कण्
पण्बिन् तलैप्पिरियादार्.

मैत्री का गुण पालते, चिरपरिचित का स्नेह।
जो न तजें उस सुजन से, करें शत्रु भी स्नेह।। ८१०

அதிகாரம்-82 अध्याय — ८२ நட்பியல் मैत्री — प्रकरण

தீ நட்பு बुरी मैत्री ती नट्पु

பருகுவார் போலினும் பண்பிலார் கேண்மை
பெருகலிற் குன்றல் இனிது. 811

परुहुवार् पोलिनुम् पण्बिलार् केण्मै
पॅरुहलिऱ् कुन्ऱल् इनिदु.

यद्यपि अतिशय मित्र सम, दिखते हैं गुणहीन।
बढ़ने से वह मित्रता, अच्छा यदि हो क्षीण।। ८११

உறின்நட்டு அறின்ஒரூஉம் ஒப்பிலார் கேண்மை
பெறினும் இழப்பினும் என். 812

उऱिन नट्टु अऱिन् ऑरूउम् ऑप्पिलार् केण्मै
पॅऱिनुम् इष़प्पिनुम् ऍन्.

पा या खो कर क्या हुआ, अयोग्य का सौहार्द।
जो मैत्री कर स्वार्थवश, तज दे जब नहिं स्वार्थ।। ८१२

உறுவது சீர்தூக்கும் நட்பும் பெறுவது
கொள்வாரும் கள்வரும் நேர். 813

उऱुवदु शीर्तूक्कुम् नट्पुम् पॅऱुवदु
कॉळ्वारुम् कळ्वरुम् नेर्.

मित्र बने जो गणन कर, स्वार्थ-लाभ का मान।
धन-गाहक गणिका तथा, चोर एक सा जान।। ८१३

मान—माप। धन—गाहक गणिका—पैसा लेनेवाली वेश्या।

அமரகத்து ஆற்றறுக்குங் கல்லாமா அன்னார்
தமரின் தனிமை தலை. 814

अमरहत्तु आट्रऱुक्कुम् कल्लामा अन्नार्
तमरिन् तनिमै तलै.

अनभ्यस्त हय युद्ध में, पटक चले ज्यों भाग।
ऐसों के सौहार्द से, एकाकी बड़भाग।। ८१४

अनभ्यस्त हय—घोड़ा जिसका अभ्यास न किया गया हो। भाग चले पटक —(सवार को) झोंके के साथ नीचे गिरा कर भाग चलेगा। ऐसों के—संकट के समय छोड़ जानेवालों के। बड़भाग — बड़ा भाग्य। एकाकी—अकेला रहना।

செய்தேமஞ் சாராச் சிறியவர் புன்கேண்மை
எய்தலின் எய்தாமை நன்று. 815

शेय्देमञ् चाराच् चिऱियवर् पुन् केण्मै
ऍय्दलिन् ऍय्दामै नन्ड्रु.

तुच्छ मित्रता विपद में, जो देती न सहाय।
ना होने में है भला, होने से भी, हाय।। ८१५

பேதை பெருங்கெழீஇ நட்பின் அறிவுடையார்
ஏதின்மை கோடி உறும். 816

पेदै पेरुङ्केऴीइ नट्पिन् अऱिवुडैयार्
एदिन्मै कोडि उऱुम्.

अति घनिष्ठ बन मूर्ख का, हो जाने से इष्ट।
समझदार की शत्रुता, लाखों गुणा वरिष्ठ।। ८१६

நகைவகைய ராகிய நட்பின் பகைவரால்
பத்தடுத்த கோடி உறும். 817

नहैवहैयराहिय नट्पिन् पहैवराल्
पत्तडुत्त कोडि उरुम्.

हास्य-रसिक की मित्रता, करने से भी प्राप्त।
भले बनें दस कोटि गुण, रिपु से जो हों प्राप्त।। ८१७

ஒல்லும் கருமம் உடற்றுபவர் கேண்மை
சொல்லாடார் சோர விடல். 818

ऑल्लुम् करुमम् उडट्रुपवर् केण्मै
शॊल्लाडार् शोर विडल्.

यों असाध्य कह साध्य को, जो करता न सहाय।
चुपके से उस ढोंग की, मैत्री छोड़ी जाय।। ८१८

கனவினும் இன்னாது மன்னோ வினைவேறு
சொல்வேறு பட்டார் தொடர்பு. 819

कनविनुम् इन्नादु मन्नो विनैवेरु
शॊल्वेरु पट्टार् तॊडर्पु.

कहना कुछ करना अलग, जिनकी है यह बान।
उनकी मैत्री खायगी, सपने में भी जान।। ८१९

बान—स्वभाव। जान खायगी—कष्ट देगी। 'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में कबीरदास के दोहे से इसकी तुलना की गई है।

எனைத்தும் குறுகுதல் ஓம்பல் மனைக்கெழீஇ
மன்றில் பழிப்பார் தொடர்பு. 820

ऍनैत्तुम् कुऱुहुदल् ओम्बल् मनैक्कॆष़ीइ
मन्ड्रिल् पष़िप्पार् तॊडर्पु.

घर पर मैत्री पालते, सभा-मध्य धिक्कार।
जो करते वे तनिक भी, निकट न आवें, यार।। ८२०

அதிகாரம்-83 अध्याय — ८३ நட்பியல் मैत्री — प्रकरण

கூடா நட்பு कपट-मैत्री कूडा नट्पु

சீரிடம் காணின் எறிதற்குப் பட்டடை
நேரா நிரந்தவர் நட்பு. 821

शीरिडम् काणिन् ऍऱिदऱ्कुप् पट्टडै
नेरा निरन्दवर् नट्पु.

अंतरंग मैत्री नहीं, पर केवल बहिरंग।
अवसर पा वह पीटती, पकड़ निहाई ढंग।। ८२१

निहाई—लोहे का चौकोर औज़ार जिसपर लोहार या सोनार धातु को कूटते या पीटते हैं। निहाई पर पड़ी धातु तभी पिटती है जब उसका अवसर आता है। कपटी मित्र निहाई जैसा है।

இனம்போன்று இனமல்லார் கேண்மை மகளிர்
மனம்போல வேறு படும். 822

इनम् पोन्ड्रु इनमल्लार् केण्मै महळिर्
मनम् पोल वेऱु पडुम्.

बन्धु सदृश पर बन्धु नहिं, उनकी मैत्री-बान।
है परिवर्तनशील ही, नारी-चित्त समान।। ८२२

பலநல்ல கற்றக் கடைத்தும் மனநல்லர்
ஆகுதல் மாணார்க்கு அரிது. 823

पल नलूल कट्रक् कडैत्तुम् मन नलूलर्
आहुदल् माणार्क्कु अरिदु.

सद्‌ग्रंथों का अध्ययन, यद्यपि किया अनेक।
शत्रु कभी होंगे नहीं- स्नेह-मना सविवेक।। ८२३

முகத்தின் இனிய நகாஅ அகத்தின்னு
வஞ்சரை அஞ்சப் படும். 824

मुहत्तिन् इनिय नहाअ अहत्तिन्ना
वञ्ज़रै अञ्ज़प्पडुम्.

मुख पर मधुर हँसी सहित, हृदय वैर से पूर।
ऐसे लोगों से डरो, ये हैं वंचक कूर।। ८२४

पूर—पूर्ण। कूर—क्रूर।

மனத்தின் அமையா தவரை எனைத்தொன்றும்
சொல்லினால் தேறற்பாற்று அன்று. 825

मनत्तिन् अमैयादवरै ऍनैत्तॉन्ड्रुम्
शॉल्लिनाल् तेरऱ्पाट्रु अन्ड्रु.

जिससे मन मिलता नहीं, उसका सुन वच मात्र।
किसी विषय में मत समझ, उसे भरोसा पात्र।। ८२५

நட்டார்போல் நல்லவை சொல்லினும் ஒட்டார்சொல்
ஒல்லை உணரப் படும். 826

नट्टार् पोल् नल्लवै शॉल्लिनुम् ऑट्टार्शॉल्
ऑल्लै उणरप्पडुम्.

यद्यपि बोलें मित्र सम, हितकर वचन गढ़ंत।
शत्रु-वचन की व्यर्थता, होती प्रकट तुरंत।। ८२६

சொல்வணக்கம் ஒன்னார்கண் கொள்ளற்க வில்வணக்கம்
தீங்கு குறித்தமை யான். 827

शॊल् वणक्कम् ऒन्नार्कण् कॊळ्ळऱ्क विल्वणक्कम्
तीङ्गु कुरित्तमैयान्.

सूचक है आपत्ति का, धनुष नमन की बान।
सो रिपु-वचन-विनम्रता, निज हितकर मत जान।। ८२७

தொழுதகை யுள்ளும் படையொடுங்கும் ஒன்னார்
அழுத கண்ணீரும் அனைத்து. 828

तॊऴुद कैयुळ्ळुम् पडैयॊडुङ्गुम् ऒन्नार्
अऴुद कण्णीरुम् अनैत्तु.

जुड़े हाथ में शत्रु के, छिप रहता हथियार।
वैसी ही रिपु की रही, रुदन-अश्रु-जल-धार।। ८२८

इस दोहे का भाव यह है कि शत्रु का हाथ जोड़ कर प्रणाम करना या रो कर आँसू बहाना देख कर धोखा नहीं खाना चाहिये।

மிகச்செய்து தம் எள்ளுவாரை நகச்செய்து
நட்பினுள் சாப்புல்லற் பாற்று. 829

मिहच् चॆय्दु तम् ऎळ्ळुवारै नहच्चॆय्दु
नट्पिनुळ् शाप्पुल्लऱ् पाट्रु.

जों अति मैत्री प्रकट कर, मन में करता हास।
खुश कर मैत्री भाव से, करना उसका नाश।। ८२९

हास — उपहास, दिल्लगी।

பகைநட்பாம் காலம் வருங்கால் முகநட்டு
அகநட்பு ஒரீஇ விடல். 830

पहै नट्पाम् कालम् वरुङ्गाल् मुह नट्टु
अह नट्पु ओॅरीइ विडल्.

शत्रु, मित्र जैसा बने, जब आवे यह काल।
मुख पर मैत्री प्रकट कर, मन से उसे निकाल।। ८३०

அதிகாரம்-84 अध्याय – ८४ நட்பியல் मैत्री – प्रकरण

பேதைமை मूढता पेदैमै

பேதைமை என்பதொன்று யாதெனின் ஏதங்கொண்டு
ஊதியம் போக விடல். 831

पेदैमै ऍन्बदोॅन्ड्रु यादेॅनिन् एदङ्कोॅण्डु
ऊदियम् पोह विडल्.

किसको कहना मूढता, जो है दारुण दाग।
हानिप्रद को ग्रहण कर, लाभप्रद का त्याग।। ८३१

பேதைமையு ளெல்லாம் பேதைமை காதன்மை
கையல்ல தன்கட் செயல். 832

पेदैमैयुळ्ॅलाम् पेदैमै कादन्मै
कैयलल तन् कट् चैॅयल्.

परम मूढता मूढ में, जानो उसे प्रसिद्ध।
उन सब में आसक्ति हो, जो हैं कर्म निषिद्ध।। ८३२

நாணாமை நாடாமை நாரின்மை யாதொன்றும்
பேணாமை பேதை தொழில். 833

नाणामै नाडामै नारिन्मै यादोॅन्ड्रुम्
पेणामै पैदै तोॅषिल्.

निर्दयता, निर्लज्जता, निर्विचार का भाव।
पोषण भी नहिं पोष्य का, ये हैं मूढ स्वभाव।। ८३३

ஓதி உணர்ந்தும் பிறர்க்குரைத்தும் தானடங்காப்
பேதையின் பேதையார் இல். 834

ओदि उणर्न्दुम् पिऱर्क्कुरैत्तुम् तानडङ्गाप्
पैदैयिन् पैदैयार् इल्.

शास्त्रों का कर अध्ययन, अर्थ जानते गूढ।
शिक्षक भी, पर नहिं वशी, उनसे बड़ा न मूढ।। ८३४

वशी—अपने को वश में रखनेवाला।

ஒருமைச் செயலாற்றும் பேதை எழுமையும்
தான்புக் கழுந்தும் அளறு. 835

ऑरुमैच् चॅयलाट्रुम् पेदै ऍषुमैयुम्
तान्पुक् कषुन्दुम् अळरु.

सात जन्म जो यातना, मिले नरक के गर्त्त।
मूढ एक ही में बना, लेने में सुसमर्थ।। ८३५

பொய்படும் ஒன்றோ புனைபூணும் கையறியாப்
பேதை வினைமேற் கொளின். 836

पॉय्पडुम् ऑन्ड्रो पुनैपूणुम् कैयऱियाप्
पैदै विनैमेर् कॉळिन्.

प्रविधि-ज्ञान बिन मूढ यदि, शुरू करेगा काम।
वह पहनेगा हथकड़ी, बिगड़ेगा ही काम।। ८३६

प्रविधि—वैज्ञानिक ढंग। पहनेगा हथकड़ी—दण्ड भोगेगा।

ஏதிலார் ஆரத் தமர்பசிப்பர் பேதை
பெருஞ்செல்வம் உற்றக் கடை. 837

एदिलार् आरतूतमर् पशिप्पर् पेदै
पॆरुञ् चॆल्वम् उट्रक्कडै.

जम जाये तो प्रचुर धन, अगर मूढ के पास।
भोग करेंगे अन्य जन, परिजन तो उपवास।। ८३७

மையல் ஒருவன் களித்தற்றால் பேதை தன்
கையொன்று உடைமை பெறின். 838

मैयल् ऒरुवन् कळितूतट्राल् पेदै तन्
कैयॊन्ड्रु उडैमै पॆरिन्.

लगना है संपत्ति का, एक मूढ के हस्त।
पागल का होना यथा, ताड़ी पी कर मस्त।। ८३८

பெரிதினிது பேதையார் கேண்மை பிரிவின்கண்
பீழை தருவதொன்று இல். 839

पॆरिदिनिदु पेदैयार् केण्मै पिरिविन्कण्
पीषै तरुवदॊन्ड्रु इल्.

पीड़ा तो देती नहीं, जब होती है भंग।
सो मूढों की मित्रता, है अति मधुर प्रसंग।। ८३९

प्रसंग—बात, विषय। 'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में तुलसीदास की कविता से इसकी तुलना की गई है।

கழாஅக்கால் பள்ளியுள் வைத்தற்றால் சான்றோர்
குழாஅத்துப் பேதை புகல். 840

कष़ा अक्काल् पळ्ळियुळ् वैतूतट्राल् शान्ड्रोर्
कुष़ा अतूतुप् पेदै पुहल्.

सुधी - सभा में मूढ का, घुसना है यों, ख़ैर।
ज्यों रखना धोये बिना, स्वच्छ सेज पर पैर।। ८४०

खैर — अच्छा, अस्तु। सेज—शय्या, पलंग।

அதிகாரம்-85 अध्याय — ८५ நட்பியல் मैत्री — प्रकरण

புல்லறிவாண்மை अहम्मन्य-मूढता पुल्लरिवाण्मै

அறிவின்மை இன்மையுள் இன்மை பிறிதின்மை
இன்மையா வையாது உலகு. 841

अरिविन्मै इन्मैयुळ् इन्मै पिरिदिन्मै
इन्मैया वैयादु उलहु.

सबसे बुरा अभाव है, सद्‌बुद्धि का अभाव।
दुनिया अन्य अभाव को, नहिं मानती अभाव।। ८४१

அறிவிலான் நெஞ்சுவந்து ஈதல் பிறிதுயாதும்
இல்லை பெறுவான் தவம். 842

अरिविलान् नेॅञ्जुवन्दु ईदल् पिरिदु यादुम्
इल्लै पेॅरुवान् तवम्.

बुद्धिहीन नर हृदय से, करता है यदि दान।
प्रतिग्राही का सुकृत वह, और नहीं कुछ जान।। ८४२

प्रतिग्राही का सुकृत — लेनेवाले का पुण्य – फल।

அறிவிலார் தாம்தம்மைப் பீழிக்கும் பீழை
செறுவார்க்கும் செய்தல் அரிது. 843

अरिविलार् ताम् तम्मैप् पीषिक्कुम् पीषै
शेॅरुवार्क्कुम् शेॅय्दल् अरिदु.

जितनी पीड़ा मूढ़ नर, निज को देता आप।
रिपु को भी संभव नहीं, देना उतना ताप।। ८४३

'रिपु को भी'—मूल के अनुरूप जो अनुवाद किया गया है इसकी विशेषता पर 'अनुवाद के सम्बन्ध में' अध्याय में प्रकाश डाला गया है।

வெண்மை எனப்படுவது யாதெனின் ஒண்மை
உடையம்யாம் என்னும் செருக்கு. 844

वॆ॑ण्मै ऍनप्पडुवदु यादॆ॑निन् ऑण्मै
उडैयम् याम् ऍन्नुम् शॆरुक्कु.

हीन-बुद्धि किसको कहें, यदि पूछोगे बात।
स्वयं मान 'हम हैं सुधी', भ्रम में पड़ना ज्ञात।। ८४४

கல்லாத மேற்கொண்டு ஒழுகல் கசடற
வல்லதூஉம் ஐயம் தரும். 845

कल्लाद मेऱ्कॊण्डु ऒऴुहल् कशडऱ
वल्लदूउम् ऐयम् तरुम्.

अपठित में ज्यों पठित का, व्यंजित करना भाव।
सुपठित में भी दोष बिन, जनमे संशय-भाव।। ८४५

इस दोहे का भाव यह है कि जिस शास्त्र का ज्ञान नहीं है उसको भी जानने का दिखावा न करना चाहिये। ऐसा करने से जिस शास्त्र में उसको पूर्ण ज्ञान है उसकी जानकारी के सम्बन्ध में भी लोगों को उसपर विश्वास न होगा।

அற்றம் மறைத்தலோ புல்லறிவு தம்வயின்
குற்றம் மறையா வழி. 846

अट्रम् मऱैत्तलो पुल्लऱिवु तम् वयिन्
कुट्रम् मऱैया वऴि.

मिटा न कर निज दोष को, गोपन कर अज्ञान।
ढकना पट से गुहय को, अल्प बुद्धि की बान।। ८४६

अज्ञान—मूर्ख। गोपन कर—छिपा कर। पट—कपड़ा। गुहय—छिपाने योग्य अंग।
इस दोहे का भाव यह है कि कपड़े से छिपाने से गुहय अंग का अभाव न माना जायगा। दोष को छिपाना भी वैसा ही है।

அருமறை சோரும் அறிவிலான் செய்யும்
பெருமிறை தானே தனக்கு. **847**

अरुमऱै शोरुम् अऱिविलान् शेॅय्युम्
पेॅरुमिऱै ताने तनक्कु.

प्रकट करे मतिहीन जो, अति रहस्य की बात।
अपने पर खुद ही बड़ा, कर लेगा आघात।। ८४७

ஏவவும் செய்கலான் தான்தேறான் அவ்வுயிர்
போஒம் அளவுமோர் நோய். **848**

एववुम् शेॅय्हलान् तान् तेऱान् अव्वुयिर्
पोओॅम् अळवुमोर् नोय्.

समझाने पर ना करे, और न समझे आप।
मरण समय तक जीव वह, रहा रोग-अभिशाप।। ८४८

காணாதான் காட்டுவான் தான்காணான் காணாதான்
கண்டானாம் தான்கண்ட வாறு. **849**

काणादान् काट्टुवान् तान् काणान् काणादान्
कण्डानाम् तान् कण्डवाऱु.

समझाते नासमझ को, रहे नासमझ आप।
समझदार सा नासमझ, स्वयं दिखेगा आप।। ८४९

உலகத்தார் உண்டென்பது இல்லென்பான் வையத்து
அலகையா வைக்கப் படும். 850

उलहत्तार् उण्डॅन्बदु इल्लॅन्बान् वैयत्तु
अलहैया वैक्कप्पडुम्..

जग जिसके अस्तित्व को, 'है' कह लेता मान।
जो न मानता वह रहा, जग में प्रेत समान।। ८५०

அதிகாரம்-86 अध्याय – ८६ நட்பியல் मैत्री – प्रकरण

இகல் विभेद इहल्

இகலென்ப எல்லா உயிர்க்கும் பகலென்னும்
பண்பின்மை பாரிக்கும் நோய். 851

इहलॅन्ब ऍल्ला उयिरक्कुम् पहलॅन्नुम्
पण्बिन्मै पारिक्कुम् नोय्.

सब जीवों में फूट ही, कहते हैं बुध लोग।
अनमिल-भाव-अनर्थ का, पोषण करता रोग।। ८५१

பகல்கருதிப் பற்ரு செயினும் இகல்கருதி
இன்னுசெய் யாமை தலை. 852

पहल् करुदिप् पट्रा शॅयिनुम् इहल् करुदि
इन्ना शॅय्यामै तलै.

कोई अनमिल भाव से, कर्म करे यदि पोच।
अहित न करना है भला, भेद-भाव को सोच।। ८५२

पोच कर्म —तुच्छ कर्म। अनमिल भाव—बेमेल होने का भाव।

இகலென்னும் எவ்வநோய் நீக்கின் தவலில்லாத்
தாவில் விளக்கம் தரும். 853

इहलॅन्नुम् ऍव्वनोय् नीक्किन् तवलिल्लात्
ताविल् विळक्कम् तरुम्.

रहता है दुःखद बड़ा, भेद-भाव का रोग।
उसके वर्जन से मिले, अमर कीर्तिका भोग।। ८५३

இன்பத்துள் இன்பம் பயக்கும் இகலென்னும்
துன்பத்துள் துன்பம் கெடின். 854

इन्बत्तुळ् इन्बम् पयक्कुम् इहलॅन्नुम्
तुन्बत्तुळ् तुन्बम् कॅडिन्।

दुःखों में सबसे बड़ा, है विभेद का दुःख।
जब होता है नष्ट वह, होता सुख ही सुक्ख।। ८५४

இகலெதிர் சாய்ந்தொழுக வல்லாரை யாரே
மிகலூக்கும் தன்மையவர். 855

इहलॅदिर् शाय्न्दॊऴुह वल्लारै यारे
मिहलूक्कुम् तन्मैयवर्.

उठते देख विभेद को, हट कर रहे समर्थ।
उसपर कौन समर्थ जो, सोचे जय के अर्थ।। ८५५

हट कर रहे –(भेद–भाव को) प्रोत्साहन न दे कर रहे।

இகலின் மிகலினிது என்பவன் வாழ்க்கை
தவலும் கெடலும் நணித்து. 856

इहलिन् मिंहलिनिदु ऍन्बवन् वाऴ्क्कै
तवलुम् कॅडलुम् नणित्तु.

भेद-वृद्धि से मानता, मिलता है आनन्द।
जीवन उसका चूक कर, होगा नष्ट तुरन्त।। ८५६

मानता—जो मानता है। भेद—वृद्धि—भेद—भाव का बढ़ना।

மிகல்மேவல் மெய்ப்பொருள் காணார் இகல்மேவல்
இன்னா அறிவினவர். 857

मिहल् मेवल् मॅय्प्पॉरुळ् काणार् इहल्मेवल्
इन्ना अऱिविनवर्.

करते जो दुर्बुद्धि हैं, भेद-भाव से प्रति।
तत्व-दर्श उनको नहीं, जो देता है जीत।। ८५७

இகலிற்கு எதிர்சாய்தல் ஆக்கம் அதனை
மிகலூக்கின் ஊக்குமாம் கேடு. 858

इहलिऱ्कु ऍदिर् शाय्दल् आक्कम् अदनै
मिहलूक्किन् ऊक्कुमाम् केडु.

हट कर रहना भेद से, देता है संपत्ति।
उससे अड़ कर जीतना, लाता पास विपत्ति।। ८५८

இகல்காணான் ஆக்கம் வருங்கால் அதனை
மிகல்காணும் கேடு தரற்கு. 859

इहल् काणान् आक्कम् वरुङ्गाल् अदनै
मिहल् काणुम् केडु तरऱ्कु.

भेद-भाव नहिं देखता, तो होती संपत्ति।
अधिक देखना है उसे, पाना है आपत्ति।। ८५९

இகலானாம் இன்னாத எல்லாம் நகலானாம்
நன்னயம் என்னும் செருக்கு. 860

इहलानाम् इनूनाद ऍलूलाम् नहलानाम्
ननूनयम् ऍनूनुम् शेॅरुकूकु.

होती हैं सब हानियाँ, भेद-भाव से प्राप्त।
मैत्री से शुभ नीति का, उत्तम धन है प्राप्त।। ८६०

அதிகாரம்–87 अध्याय - ८७ நட்பியல் मैत्री — प्रकरण

பகை மாட்சி शत्रुता - उत्कर्ष पहैमाटूचि

வலியார்க்கு மாறேற்றல் ஓம்புக ஓம்பா
மெலியார்மேல் மேக பகை. 861

वलियारूकूकु मारेट्रल् ओमूबुह ओमूबा
मॅलियार् मेल् मेह पहै.

बलवानों से मत भिड़ो, करके उनसे वैर।
कमज़ोरों की शत्रुता, सदा चाहना ख़ैर।। ८६१

அன்பிலன் ஆன்ற துணையிலன் தான் துவ்வான்
என்பரியும் ஏதிலான் துப்பு. 862

अनूबिलन् आनूड्र तुणैयिलन् तान् तुवूवान्
ऍनूबरियुम् एदिलान् तुपूपु.

प्रेम रहित निज बल रहित, सबल सहाय न पास।
कर सकता है किस तरह, शत्रु-शक्ति का नाश।। ८६२

அஞ்சும் அறியான் அமைவிலன் ஈகலான்
தஞ்சம் எளியன் பகைக்கு. 863

अञ्जुम् अरियान् अमैविलन् ईहलान्
तञ्जम् ऍळियन् पहैकूकु.

अनमिल है कंजूस है, कायर और अजान।
उसपर जय पाना रहा, रिपु को अति आसान।। ८६३

अनमिल—असंबद्ध। अजान—मूर्ख। रिपु—शत्रु।

நீங்கான் வெகுளி நிறையிலன் எஞ்ஞான்றும்
யாங்கணும் யார்க்கும் எளிது. 864

नीङ्गान् वॅहुळि निरैयिलन् ऍञ्ञानृड्रुम्
याङ्गणुम् यार्क्कुम् ऍळिदु.

क्रोधी हो फिर हृदय से, जो दे भेद निकाल।
उसपर जय सबको सुलभ, सब थल में, सब काल।। ८६४

भेद—रहस्य। थल—स्थल, जगह।

வழிநோக்கான் வாய்ப்பன செய்யான் பழிநோக்கான்
பண்பிலன் பற்றார்க்கு இனிது. 865

वषिनोक्कान् वाय्प्पन शॅय्यान् पषिनोक्कान्
पण्बिलन् पट्रार्क्कु इनिदु.

नीतिशास्त्र जो ना पढे, विधिवत् करे न काम।
दुर्जन निंदा-भय-रहित, रिपु हित है सुख-धाम।। ८६५

காணாச் சினத்தான் கழிபெருங் காமத்தான்
பேணாமை பேணப்படும். 866

काणाच्चिनत्तान् कषिपॅरुङ् कामत्तान्
पेणामै पेणप्पडुम्.

जो रहता क्रोधान्ध है, कामी भी अत्यन्त।
है उसका शत्रुत्व तो, वांछनीय सानन्द।। ८६६

கொடுத்தும் கொளல்வேண்டும் மன்ற அடுத்திருந்து
மாணாத செய்வான் பகை. 867

कॊडुत्तुम् कॊळ्ल्वेण्डुम् मन्ऱ अडुत्तिरुन्दु
माणाद शॆय्वान् पहै.

करके कार्यारम्भ जो, करता फिर प्रतिकूल।
निश्चय उसकी शत्रुता, करना दे भी मूल।। ८६७

दे भी मूल—मूल्य दे कर भी (मोल लेना)। मूल—पूँजी, धन।

குணனிலனாய்க் குற்றம் பலவாயின் மாற்றார்க்கு
இனனிலனாம் ஏமாப்பு உடைத்து. 868

गुणनिलनाय् कुट्रम् पलवायिन् माट्रार्क्कु
इननिलनाम् एमाप्पु उडैत्तु.

गुणविहीन रहते हुए, यदि हैं भी बहुदोष।
तो है वह साथी रहित, रिपु को है संतोष।। ८६८

செறுவார்க்குச் சேணிகவா இன்பம் அறிவிலா
அஞ்சும் பகைவர்ப் பெறின். 869

शॆरुवार्क्कुच् चेणिहवा इन्बम् अऱिविला
अञ्जुम् पहैवर्प् पॆरिन्.

यदि वैरी कायर तथा, नीतिशास्त्र अज्ञात।
उनसे भिड़ते, उच्च सुख, छोड़ेंगे नहिं साथ।। ८६९

கல்லான் வெகுளும் சிறுபொருள் எஞ்ஞான்றும்
ஒல்லானை ஒல்லாது ஒளி. 870

कल्लान् वॆहुळुम् शिरुपॊरुळ् ऍञ्ञान्ड्रुम्
ऑल्लानै ऑल्लादु ऑळि.

अनपढ़ की कर शत्रुता, लघुता से जय-लाभ।
पाने में असमर्थ जो, उसे नहीं यश-लाभ।। ८७०

लघुता से—आसानी से। यश—लाभ—कीर्ति पाना।

அதிகாரம்–88 अध्याय—८८ நட்பியல் मैत्री — प्रकरण

பகைத் திறம் தெரிதல் शत्रु-शक्ति का ज्ञान पहैत् तिरम् तेरिदल्

பகைஎன்னும் பண்பி லதனை ஒருவன்
நகையேயும் வேண்டற்பாற்று அன்று. 871

पहै ऍन्नुम् पण्बिलदनै ओॅरुवन्
नहैयेयुम् वेण्डऱ्पाट्रु अन्ड्रु.

रिपुता नामक है वही, असभ्यता-अवगाह।
हँसी-मज़े में भी मनुज, उसकी करे न चाह।। ८७१

रिपुता—दुश्मनी। अवगाह—गहरा-स्थान अर्थात् गहरा विचार।

வில்லேருழவர் பகைகொளினும் கொள்ளற்க
சொல்லேருழவர் பகை. 872

विल्लेरुऴवर् पहै कोळिनुम् कॉळ्ळऱ्क
शॉल्लेरुऴवर् पहै.

धनु-हल-धारी कृषक से, करो भले ही वैर।
वाणी-हल-धर कृषक से, करना छोड़ो वैर।। ८७२

धनु-हल-धारी—शस्त्र-धारी। वाणी-हल-धारी—नीति शास्त्रज्ञ।

ஏமுற் றவரினும் ஏழை தமியனாய்ப்
பல்லார் பகைகொள் பவன். 873

एमुट्रवरिनुम् एऴै तमियनाय्प्
पल्लार् पहै कॉळ्बवन्

एकाकी रह जो करे, बहुत जनों से वैर।
पागल से बढ़ कर रहा, बुद्धिहीन वह, खैर।। ८७३

பகைநட்பாக் கொண்டொழுகும் பண்புடை யாளன்
தகைமைக்கண் தங்கிற்று உலகு. 874

पहै नट्पाक् कॊण्डॊ़ष़ुहुम् पण्बुडैयाळन्
तहैमैक् कण् तङ्गिट्रु उलहु.

मित्र बना कर शत्रु को, जो करता व्यवहार।
महिमा पर उस सभ्य की, टिकता है संसार।। ८७४

தன்துணை இன்றால் பகைஇரண்டால் தான்ஒருவன்
இன்துணையாக் கொள்கவற்றின் ஒன்று. 875

तन् तुणै इन्ड्राल् पहै इरण्डाल् तान् ओरुवन्
इन् तुणैयाक् कॊळ्हवट्रिन् ऑन्ड्रु.

अपना तो साथी नहीं, रिपु हैं दो, खुद एक।
तो उनमें से ले बना, उचित सहायक एक।। ८७५

தேறினும் தேறா விடினும் அழிவின்கண்
தேறான் பகாஅன் விடல். 876

तेऱिनुम् तेऱाविडिनुम् अष़िविन्कण्
तेऱान् पहाअन् विडल्.

पूर्व-ज्ञात हो परख कर, अथवा हा अज्ञात्।
नाश-काल में छोड़ दो, शत्रु-मित्रता बात।। ८७६

पूर्व ... कर—परीक्षा करके पहले ही जानता हो।

நோவற்க நொந்தது அறியார்க்கு மேவற்க
மென்மை பகைவ ரகத்து. 877

नोवऱ्क नॊन्ददु अरियार्क्कु मेवऱ्क
मॆन्मै पहैवरहत्तु.

दुःख न कह उस मित्र से, यदि खुद उसे न ज्ञात।
प्रकट न करना शत्रु से, कमज़ोरी की बात।। ८७७

வகையறிந்து தற்செய்து தற்காப்ப மாயும்
பகைவர்கண் பட்ட செருக்கு. **878**

वहैयऱिन्दु तऱ्शॆय्दु तऱ्काप्प मायुम्
पहैवर् कण् पट्ट शॆरुक्कु.

ढंग समझ कर कर्म का, निज बल को कर चंड।
अपनी रक्षा यदि करे, रिपु का मिटे घमंड।। ८७८

இளைதாக முள்மரம் கொல்க களையுநர்
கைகொல்லும் காழ்த்த விடத்து. **879**

इळैदाह मुळ्मरम् कॊल्ह कळैयुनर्
कैकॊल्लुम् काष़्त्त विडत्तु.

जब पौधा है काटना, जो तरु कांटेदार।
बढ़ने पर घायल करे, छेदक का कर दार।। ८७९

तरु—पेड़। छेदक—काटनेवाला। कर दार—हाथ को चीर कर।

உயிர்ப்ப உளரல்லர் மன்ற செயிர்ப்பவர்
செம்மல் சிதைக்கலா தார். **880**

उयिर्प्प उळरल्लर् मन्ऱ शॆयिर्प्पवर्
शॆम्मल् शिदैक्कलादार्.

जो रिपुओं के दर्प का, कर सकते नहिं नाश।
निश्चय रिपु के फूँकते, होता उनका नाश।। ८८०

दर्प—घमंड, अहंकार।

உட்பகை अन्तर्वैर उट्पहै

நிழல் நீரும் இன்னாத இன்னா தமர்நீரும்
இன்னாவாம் இன்னா செயின். 881

निष़ल् नीरुम् इन्नाद इन्ना तमर् नीरुम्
इन्नावाम् इन्ना शॆयिन्.

छाया, जल भी हैं बुरे, जब करते हैं हानि।
स्वजन-भाव भी हैं बुरे, यदि देते हैं ग्लानि।। ८८१

छाया और जल जीवन के लिये आवश्यक हैं। स्वजन—भाव—आत्मीयता का व्यवहार करना।

வாள்போல் பகைவரை அஞ்சற்க அஞ்சுக
கேள் போல் பகைவர் தொடர்பு. 882

वाळ्पोल् पहैवरै अञ्जऱ्क अञ्जुह
केळ्पोल् पहैवर् तॊडर्बु.

डरना मत उस शत्रु से, जो है खड्ग समान।
डर उस रिपु के मेल से, जो है मित्र समान।। ८८२

खड्ग—तलवार। डर—तू डर।

உட்பகை அஞ்சித்தற் காக்க உலைவிடத்து
மட்பகையின் மாணத் தெறும். 883

उट्पहै अञ्जित्तऱ्काक्क उलैविडत्तु
मट्पहैयिन् माणत्तॆऱुम्.

बचना अन्तः शत्रु से, उनसे खा कर त्रास।
मिट्टी-छेदक ज्यों करें, थका देख वे नाश।। ८८३

मिट्टी–छेदक–कुम्हार का हथियार जिससे वह चाक पर की मिट्टी काटता है। घडा बनने के बाद, मिट्टी के लोंदें में बची मिट्टी को वह अलग कर देता है।

மனமாணா உட்பகை தோன்றின் இனமாணா
ஏதம் பலவுந் தரும். 884

मनमाणा उट्पहै तोन्ड्रिन् इनमाणा
एदम् पलवुन् तरुम्.

मन में बिना लगाव के, यदि हो अन्तर्वैर।
बन्धु-भेद-कारक कई, करता है वह गैर।। ८८४

गैर–अन्धेर, अत्याचार।

உறல்முறையான் உட்பகை தோன்றின் இறல்முறையான்
ஏதம் பலவுந் தரும். 885

उऱल् मुऱैयान् उट्पहै तोन्ड्रिन् इऱल् मुऱैयान्
एदम् पलवुन् तरुम्.

यदि होता बन्धुत्व में, कोई अन्तर्वैर।
मृत्युजनक जो सो कई, करता है वह गैर।। ८८५

ஒன்றாமை ஒன்றியார் கட்படின் எஞ்ஞான்றும்
பொன்றாமை ஒன்றல் அரிது. 886

ऑन्ड्रामै ऑन्ड्रियार् कट्पडिन् ऍञ्ञान्ड्रुम्
पॉन्ड्रामै ऑन्ड्रल् अरिदु

आश्रित लोगों से निजी, यदि होता है वैर।
सदा असंभव तो रहा, बचना नाश-बगैर।। ८८६

செப்பின் புணர்ச்சிபோல் கூடினும் கூடாதே
உட்பகை உற்ற குடி. 887

शॆप्पिन् पुणर्च्चिपोल् कूडिनुम् कूडादे
उट्पहै उट्रकुडि.

डब्बा-ढक्कन योग सम, रहने पर भी मेल।
गृह में अन्तर्वैर हो, तो होगा नहिं मेल।। ८८७

அரம்பொருத பொன்போலத் தேயும் உரம்பொருது
உட்பகை உற்ற குடி. 888

अरम्पॊरुद पॊन्पोलत्तेयुम् उरम्पॊरुदु
उट्पहै उट्र कुडि.

रेती से घिस कर यथा, लोहा होता क्षीण।
गृह भी अन्तर्वैर से, होता है बलहीन।। ८८८

எட்பக வன்ன சிறுமைத்தே ஆயினும்
உட்பகை உள்ளதாம் கேடு. 889

ऍट्पहवन्न शिरुमैत्ते आयिनुम्
उट्पहै उळ्ळदाम् केडु.

अति छोटा ही क्यों न हो, तिल में यथा दरार।
फिर भी अन्तर्वैर तो, है ही विनाशकार।। ८८९

உடம்பாடு இலாதவர் வாழ்க்கை குடங்கருள்
பாம்போடு உடனுறைந் தற்று. 890

उडम्बाडु इलादवर् वाष़्क्कै कुडङ्करुळ्
पाम्बोडु उडनुऱैन्दट्रु.

जिनसे मन मिलता नहीं, जीवन उनके संग।
एक झोंपड़ी में यथा, रहना सहित भुजंग।। ८९०

भुजंग—साँप।

பெரியாரைப் பிழையாமை बड़ों का अपचार न करना पॅरियारैप् पिष़ैयामै

ஆற்றுவார் ஆற்றல் இகழாமை போற்றுவார்
போற்றலு ளெல்லாம் தலை. 891

आट्रुवार् आट्रल् इहष़ामै पोट्रुवार्
पोट्रलुळॅल्लाम् तलै.

सक्षम की करना नहीं, क्षमता का अपमान।
रक्षा हित जो कार्य हैं, उनमें यही महान।। ८९१

பெரியாரைப் பேணாது ஒழுகின் பெரியாரால்
பேரா இடும்பை தரும். 892

पॅरियारैप् पेणादु ओष़ुहिन् पॅरियाराल्
पेरा इडुम्बैत् तरुम्.

आदर न कर महान का, करे अगर व्यवहार।
होगा उसे महान से, दारुण दुःख अपार।। ८९२

கெடல்வேண்டின் கேளாது செய்க அடல்வேண்டின்
ஆற்று பவர்கண் இழுக்கு. 893

कॅडल् वेण्डिन् केळादु शॅयूह अडल् वेण्डिन्
आट्रुपवर् कण् इष़ुक्कु.

करने की सामर्थ्य है, जब चाहें तब नाश।
उनका अपचारी बनो, यदि चाहो निज नाश।। ८९३

उनका—उन समर्थों का। अपचारी—अनुचित आचरण करनेवाला।

கூற்றத்தைக் கையால் விளித்தற்றால் ஆற்றுவார்க்கு
ஆற்றாதார் இன்னா செயல். 894

कूट्रत्तैक् कैयाल् विळित्तट्राल् आट्रुवार्क्कु
आट्रादार् इन्ना शॅयल्.

करना जो असमर्थ का, समर्थ का नुक़सान।
है वह यम को हाथ से, करना ज्यों आह्वान।। ८९४

आह्वान करना—बुलाना (हाथ से इशारा करके)।

யாண்டுச்சென்று யாண்டும் உளராகார் வெந்துப்பின்
வேந்து செறப்பட் டவர். 895

याण्डुच्चॅन्ड्रु याण्डुम् उळराहार् वॅन्दुप्पिन्
वेन्दु शॅऱप्पट्टवर्.

जो पराक्रमी भूप के, बना कोप का पात्र।
बच कर रह सकता कहाँ, कहीं न रक्षा मात्र।। ८९५

எரியால் சுடப்படினும் உய்வுண்டாம் உய்யார்
பெரியார்ப் பிழைத்தொழுகு வார். 896

ऍरियाल् शुडप्पडिनुम् उय्वुण्डाम् उय्यार्
पॅरियारप् पिऴैत् तॊऴुहुवार्.

जल जाने पर आग से, बचना संभव जान।
बचता नहीं महान का, जो करता अपमान।। ८९६

வகைமாண்ட வாழ்க்கையும் வான்பொருளும் என்னாம்
தகைமாண்ட தக்கார் செறின். 897

वहै माण्ड वाऴ्क्कैयुम् वान्पॊरुळुम् ऍन्नाम्
तहै माण्ड तक्कार् शॅऱिन्.

तपःश्रेष्ठ हैं जो महा, यदि करते हैं कोप।
क्या हो धन संपत्ति की, और विभव की ओप।। ८९७

ओप–शोभा। क्या हो–क्या होगा (कुछ प्रयोजन नहीं)।

குன்றன்னார் குன்ற மதிப்பின் குடியொடு
நின்றன்னார் மாய்வர் நிலத்து. **898**

कुऩ्ड्रऩ्ऩार् कुऩ्ड्र मदिप्पिऩ् कुडियोॅडु
निऩ्ड्रऩ्ऩार् मायवर् निलत्तु.

जो महान हैं अचल सम, करते अगर विचार।
जग में शाश्वत सम धनी, मिटता सह परिवार।। ८९८

अचल–पहाड़। करते विचार–मन में सोचने मात्र से।

ஏந்திய கொள்கையார் சீறின் இடைமுரிந்து
வேந்தனும் வேந்து கெடும். **899**

एऩ्दिय कोॅळ्हैयार् शीऱिऩ् इडैमुरिन्दु
वेऩ्दनुम् वेऩ्दु कॅडुम्.

उत्तम व्रतधारी अगर, होते हैं नाराज।
मिट जायेगा इन्द्र भी, गँवा बीच में राज।। ८९९

राजा नहुष को इन्द्र की पदवी प्राप्त हुई। परन्तु अधिक गर्व होने के कारण उसने अगस्त्य ऋषि का अपमान किया और ऋषि ने उसको शाप दिया जिसके फलस्वरूप उसको प्राप्त पदवी को खोना पड़ा। इस दोहे में इस वृत्तान्त का संकेत है।

இறந்தமைந்த சார்புடைய ராயினும் உய்யார்
சிறந்தமைந்த சீரார் செறின். **900**

इऱऩ्दमैऩ्द शार्बुडैयरायिनुम् उय्यार्
शिऱऩ्दमैऩ्द शीरार् शॅऱिऩ्.

तपःश्रेष्ठ यदि क्रुद्ध हों, रखते बड़ा प्रभाव।
रखते बड़े सहाय भी, होता नहीं बचाव।। ९००

பெண்வழிச் சேறல् स्त्री-वश होना पॆण्वऴिच् चेऱल्

மனைவிழைவார் மாண்பயன் எய்தார் வினைவிழைவார்
வேண்டாப் பொருளும் அது. 901

मनै विऴैवार् माण्पयन् ऍय्दार् विनै विऴैवार्
वेण्डाप् पॊरुॅळुम् अदु.

स्त्री पर जो आसक्त हैं, उनको मिले न धर्म।
अर्थार्थी के हित रहा, घृणित वस्तु वह कर्म।। ९०१

स्त्री—पत्नी। अर्थार्थी—धन चाहनेवाला। वह कर्म—आसक्त होना।

பேணாது பெண்விழைவான் ஆக்கம் பெரியதோர்
நாணாக நாணுத் தரும். 902

पेणादु पॆॅण्विऴैवान् आक्कम् पॆॅरियदोर्
नाणाह नाणुत् तरुम्.

स्त्री लोलुप की संपदा, वह है पौरुष-त्यक्त।
लज्जास्पद बन कर बड़ी, लज्जित करती सख्त।। ९०२

लोलुप-परम आसक्त। पौरुष-त्यक्त—पुरुषत्वहीन। वह—स्त्री लोलुप।
लज्जास्पद—लज्जित होने का कार्य।

இல்லாள்கண் தாழ்ந்த இயல்பின்மை எஞ்ஞான்றும்
நல்லாருள் நாணுத் தரும். 903

इल्लाळ्कण् ताऴ्न्द इयल्पिन्मै ऍञ्ञान्ड्रुम्
नल्लारुळ् नाणुत् तरुम्.

डरने की जो बान है, स्त्री से दब कर नीच।
सदा रही लज्जाजनक, भले जनों के बीच।। ९०३

மனையாளை அஞ்சும் மறுமையி லாளன்
வினையாண்மை வீறெய்தல் இன்று. **904**

मनैयाळै अञ्ञुम् मऱुमैयिलाळन्
विनैयाण्मै वीऱॅय्दल् इन्ड्रु.

गृहिणी से डर है जिसे, औ ' न मोक्ष की सिद्धि।
उसकी कर्म-विदग्धता, पाती नहीं प्रसिद्धि।। ९०४

कर्म—विदग्धता—काम करने में पाण्डित्य।

இல்லாளை அஞ்சுவான் அஞ்சுமற் றெஞ்ஞான்றும்
நல்லார்க்கு நல்ல செயல். **905**

इल्लाळै अञ्ञुवान् अञ्ञु मट्रॅञ्ञान्ड्रुम्
नल्लार्क्कु नल्ल शॅयल्.

पत्नी-भीरु सदा डरे, करने से वह कार्य।
सज्जन लोगों के लिये, जो होते सत्कार्य।। ९०५

पत्नी—भीरु—स्त्री से डरनेवाला।

இமையாரின் வாழினும் பாடிலரே இல்லாள்
அமையார்தோள் அஞ்சு பவர். **906**

इमैयारिन् वाऴिनुम् पाडिलरे इल्लाळ्
अमैयार्' तोळ् अञ्ञुपवर्.

जो डरते स्त्री-स्कंध से, जो हैं बाँस समान।
यद्यपि रहते देव सम, उनका है नहिं मान।। ९०६

स्कंध—कंधा। सुन्दर कंधे की उपमा बाँस से दी जाती है।

பெண்ணேவல் செய்தொழுகும் ஆண்மையின் நாணுடைப்
பெண்ணே பெருமை உடைத்து. 907

पॆण्णेवल् शॆय्दॊऴुहुम् आण्मैयिन् नाणुडैप्
पॆण्णे पॆरुमै उडैत्तु.

स्त्री की आज्ञा पालता, जो पौरुष निर्लज्ज।
उससे बढ़ कर श्रेष्ठ है, स्त्री का स्त्रीत्व सलज्ज।। ९०७

நட்டார் குறைமுடியார் நன்றாற்றார் நன்னுதலாள்
பெட்டாங்கு ஒழுகு பவர். 908

नट्टार् कुऱै मुडियार् नन्ऱाट्रार् नन्नुदलाळ्
पॆट्टाङ्गु ऒऴुहुपवर्.

चारु मुखी वांछित वही, करते हैं जो कर्म।
भरते कमी न मित्र की, करते नहीं सुधर्म।। ९०८

அறவினையும் ஆன்ற பொருளும் பிறவினையும்
பெண்ஏவல் செய்வார்கண் இல். 909

अऱविनैयुम् आन्ऱ पॊरुळुम् पिऱविनैयुम्
पॆण् एवल् शॆय्वार्कण् इल्.

धर्म-कर्म औ' प्रचुर धन, तथा अन्य जो काम।
स्त्री के आज्ञापाल को, इनका नहिं अंजाम।। ९०९

अंजाम—पूर्ति, फल।

எண்சேர்ந்த நெஞ்சத் திடனுடையார்க்கு எஞ்ஞான்றும்
பெண்சேர்ந்தாம் பேதைமை இல். 910

ऎण्शेर्न्द नॆञ्जत्तिडनुडैयार्क्कु ऎञ्ञान्ऱुम्
पॆण् शेर्न्दाम् पेदैमै इल्.

जिनका मन हो कर्मरत, औ ' जो हों धनवान।
स्त्री-वशिता से उन्हें, कभी न है अज्ञान।। ९१०

स्त्री–वशिता से – स्त्रा के वश में पड़ने का।

அதிகாரம்-92 अध्याय–९२ நட்பியல் मैत्री – प्रकरण

வரைவின் மகளிர் वार-वनिता वरैविन् महळिर्

அன்பின் விழையார் பொருள்விழையும் ஆய்தொடியார்
இன்சொல் இழுக்குத் தரும். 911

अन्बिन् विष़ैयार् पोरुळ् विष़ैयुम् आय्तोडियार्
इन्शोॅल् इष़ुक्कुत् तरुम्.

चाह नहीं है प्रेमवश, धनमूलक है चाह।
ऐसी स्त्री का मधुर वच, ले लेता है आह।। ९११

धनमूलक–धन की इच्छा से। वच–वचन। आह लेना–सताना।

பயன்தூக்கிப் பண்புரைக்கும் பண்பின் மகளிர்
நயன்தூக்கி நள்ளா விடல். 912

पयन् तूक्किप् पण्बुरैक्कुम् पण्बिन् महळिर्
नयन् तूक्कि नळ्ळा विडल्.

मधुर वचन है बोलती, तोल लाभ का भाग।
वेश्या के व्यवहार को, सोच समागम त्याग।। ९१२

பொருட்பெண்டிர் பொய்ம்மை முயக்கம் இருட்டறையில்
ஏதில் பிணந்தழீஇ யற்று. 913

पोरुट्ट् पेॅण्डिर् पोय्म्मै मुयक्कम् इरुट्टऱैयिल्
एदिल् पिणन्तष़ी इयट्रु.

पण-स्त्री आलिंगन रहा, यों झूठा ही जान।
ज्यों लिपटे तम-कोष्ठ में, मुरदे से अनजान।। ९१३

पण—स्त्री—वेश्या। तम—कोष्ठ—अंधकार पूर्ण कमरा। अनजाम—अपरिचित।

பொருட்பொருளார் புன்னலம் தோயார் அருட் பொருள்
ஆயும் அறிவி னவர். 914

पॊरुट् पॊरुळार् पुन्नलम् तोयार् अरुट्पॊरुळ्
आयुम् अऱिविनवर्.

रहता है परमार्थ में, जिनका मनोनियोग।
अर्थ-अर्थिनी तुच्छ सुख, करते नहिं वे भोग।। ९१४

अर्थ—अर्थिनी—धन चाहनेवाली (वेश्या)।

பொதுநலத்தார் புன்னலம் தோயார் மதிநலத்தின்
மாண்ட அறிவி னவர். 915

पॊदु नलत्तार् पुन्नलम् तोयार् मदिनलत्तिन्
माण्ड अऱिविनवर्.

सहज बुद्धि के साथ है, जिनका विशिष्ट ज्ञान।
पण्य-स्त्री का तुच्छ सुख, भोगेंगे नहिं जान।। ९१५

पण्य—स्त्री, पण—स्त्री, वार—वनिता, वेश्या समानार्थी शब्द हैं।

தந்நலம் பாரிப்பார் தோயார் தகைசெருக்கிப்
புன்னலம் பாரிப்பார் தோள். 916

तन्नलम् पारिप्पार् तोयार् तहै शॆरुक्किप्
पुन्नलम् पारिप्पार् तोळ्.

रूप-दृप्त हो तुच्छ सुख, जो देती हैं बेच।
निज यश-पालक श्रेष्ठ जन, गले लगें नहिं, हेच।। ९१६

दृप्त—गर्वित। हेच—निःसार, तुच्छ।

நிறைநெஞ்சம் இல்லவர் தோய்வர் பிறநெஞ்சிற்
பேணிப் புணர்பவர் தோள். 917

निऱै नॆञ्जम् इल्लवर् तोय्वर् पिऱनॆञ्जिर्
पेणिप्पुणर्पवर् तोळ्.

करती है संभोग जो, लगा अन्य में चित्त।
उससे गले लगे वही, जिसका चंचल चित्त।। ९१७

ஆயும் அறிவினர் அல்லார்க்கு அணங்கென்ப
மாய மகளிர் முயக்கு. 918

आयुम् अऱिविनर् अल्लार्क्कु अणङ्गॆन्ब
माय महळिर् मुयक्कु.

जो स्त्री है मायाविनी, उसका भोग विलास।
अविवेकी जन के लिये, रहा मोहिनी-पाश।। ९१८

வரைவிலா மாணிழையார் மென்றோள் புரையிலாப்
பூரியர்கள் ஆழும் அளறு. 919

वरैविला माणिऴैयार् मॆन्ऱोळ् पुरैयिलाप्
पूरियर्कळ् आऴुम् अळऱु.

वेश्या का कंधा मृदुल, भूषित है जो खूब।
मूढ़-नीच उस नरक में, रहते हैं कर डूब।। ९१९

मूढ़—नीच—(जाति के कारण नहीं पर) मूर्खता के कारण नीच।

இருமனப் பெண்டிரும் கள்ளும் கவறும்
திருநீக்கப் பட்டார் தொடர்பு. 920

इरुमनप् पॅण्डिरुम् कळ्ळुम् कवरूम्
तिरु नीक्कपूपट्टार् तॉडॅरपु.

द्वैध-मना व्यभिचारिणी, मद्य, जुए का खेल।
लक्ष्मी से जो त्यक्त हैं, उनका इनसे मेल।। ९२०

द्वैध—मना—दो प्रकार का मन (एक से मिलना शरीर मात्र से, पर मन कहीं अलग)। मद्य—मधु—पान।

அதிகாரம்-93 अध्याय—९३ நட்பியல் मैत्री — प्रकरण

கள்ளுண்ணாமை मद्य-निषेध कळ्ळुण्णामै

உட்கப் படாஅர் ஒளியிழப்பர் எஞ்ஞான்றும்
கட்காதல் கொண்டொழுகு வார். 921

उट्कप्पडा अर् औंळियिष़पूपर् ऍञ्ञानूड्रुम्
कट्कादल् कॉण्डॉष़ुहुवार्.

जो मधु पर आसक्त हैं, खोते हैं सम्मान।
शत्रु कभी डरते नहीं, उनसे कुछ भय मान।। ९२१

உண்ணற்க கள்ளை உணில்உண்க சான்றோரான்
எண்ணப் படவேண்டா தார். 922

उण्णरूक कळ्ळै उणिल् उण्ग शानूड्रोरान्
ऍण्णपूपड वेण्डादार्.

मद्य न पीना, यदि पिये, वही पिये सोत्साह।
साधु जनों के मान की, जिसे नहीं परवाह।। ९२२

**ஈன்றாள் முகத்தேயும் இன்னாதால் என்மற்றுச்
சான்றோர் முகத்துக் களி.** **923**

ईन्ड्राळ् मुहत्तेयुम् इन्नादाल् ऍन्मट्रुच्
चान्ड्रोर् मुहत्तुक् कळि

माँ के सम्मुख भी रही, मद-मत्तता खराब।
तो फिर सम्मुख साधु के, कितनी बुरी शराब।। ९२३

**நாண்என்னும் நல்லாள் புறங்கொடுக்கும் கள்ளென்னும்
பேணாப் பெருங்குற்றத் தார்க்கு.** **924**

नाण् ऍन्नुम् नल्लाळ् पुरङ्कॊडुक्कुम् कळ्ळॅन्नुम्
पेणाप् पॆरुङ् कुट्रत्तार्क्कु.

जग-निंदित अति दोषयुत, जो हैं शराबखोर।
उनसे लज्जा-सुन्दरी, मुँह लेती है मोड़।। ९२४

लज्जा—सुन्दरी ... मोड़—लज्जा का भाव उनमें नहीं रहता।

**கையறி யாமை யுடைத்தே பொருள்கொடுத்து
மெய்யறி யாமை கொளல்.** **925**

कैयऱियामै युडैत्ते पॊरुळ् कॊडुत्तु
मॆय्यऱियामै कॊळल्.

विस्मृति अपनी देह की, क्रय करना दे दाम।
यों जाने बिन कर्म-फल, कर देना है काम।। ९२५

विस्मृति—भूल जाना। क्रय करना—ख़रीदना।

**துஞ்சினார் செத்தாரின் வேறல்லர் எஞ்ஞான்றும்
நஞ்சுண்பார் கள்ளுண் பவர்.** **926**

तुञ्जिनार् शॅत्तारिन् वेऱल्लर् ऍञ्ञान्ड्रुम्
नञ्जुण्बार् कळ्ळुण्पवर्.

सोते जन तो मृतक से, होते हैं नहिं भिन्न।
विष पीते जन से सदा, मद्यप रहे अभिन्न।। ९२६

मद्यप—मधु पीनेवाला। मृतक—मरा हुआ।

உள்ளொற்றி உள்ளூர் நகப்படுவர் எஞ்ஞான்றும்
கள்ளொற்றிக் கண்சாய் பவர். 927

उळ्ळोट्रि उळ्ळूर् नहप्पडुवर् ऍञ्ञान्ड्रुम्
कळ्ळोट्रिक् कण् शाय्पवर्.

जो लुक-छिप मधु पान कर, खोते होश-हवास।
भेद जान पुर-जन सदा, करते हैं परिहास।। ९२७

களித்தறியேன் என்பது கைவிடுக நெஞ்சத்து
ஒளித்ததூஉம் ஆங்கே மிகும். 928

कळित्तरियेन् ऍन्बदु कैविडुह नॅञ्जत्तु
ऑळित्तदूउम् आङ्गे मिहुम्.

‘मधु पीना जाना नहीं’, तज देना यह घोष।
पीने पर झट हो प्रकट, मन में गोपित दोष।। ९२८

मधु ... घोष—यह घोषित करना कि मैं शराबखोर नहीं जब सच्ची बात वह नहीं है। गोपित—छिपाया हुआ।

களித்தானைக் காரணம் காட்டுதல் கீழ்நீர்க்
குளித்தானைத் தீத்துரீஇ யற்று. 929

कळित्तानैक् कारणम् काट्टुदल् कीष़्नीर्क्
कुळित्तानैत् तीत्तुरीइयट्रु.

मद्यप का उपदेश से, होना होश-हवास।
दीपक ले जल-मग्न की, करना यथा तलाश।। ९२९

கள்ளுண்ணாப் போழ்தில் களித்தானைக் காணுங்கால்
உள்ளான்கொல் உண்டதன் சோர்வு. **930**

कळ्ळुण्णाप् पोष़्दिल् कळित्तानैक् काणुङ्गाल्
उळ्ळान् कॉल् उण्डदन् शोर्वु.

बिना पिये रहते समय, मद-मस्त को निहार।
सुस्ती का, पीते स्वयं, करता क्यों न विचार।। ९३०

निहार—देख कर। मद-मस्त—पी कर होश में न रहनेवाले (दूसरे को)। सुस्ती—सुध-बुध न रहना।

அதிகாரம்-94 अध्याय—९४ நட்பியல் मैत्री — प्रकरण

சூது जुआ शूदु

வேண்டற்க வென்றிடினும் சூதினை வென்றதூஉம்
தூண்டிற்பொன் மீன்விழுங்கி யற்று. **931**

वेण्ड्रक वॅन्ड्रिडिनुम् शूदिनै वॅन्ड्रदूउम्
तूण्डिऱ्पॉन् मीन् विष़ुङ्गियट्रु.

चाह जुए की हो नहीं, यद्यपि जय स्वाधीन।
जय भी तो कांटा सदृश, जिसे निगलता मीन।। ९३१

कांटा—मछली पकड़ने की झुकी हुई नोकदार कंटिया।

ஒன்றெய்தி நூறிழக்கும் சூதர்க்கும் உண்டாங்கொல்
நன்றெய்தி வாழ்வதோர் ஆறு. **932**

ऑन्ड्रॅय्दि नूरिष़क्कुम् शूदर्क्कुम् उण्डाङ्कॉल्
ननूड्रॅय्दि वाष़्वदोर् आरु.

लाभ, जुआरी, एक कर, फिर सौ को खो जाय।
वह भी क्या सुख प्राप्ति का, जीवन-पथ पा जाय।। ९३२

உருளாயம் ஓவாது கூறின் பொருளாயம்
போஒய்ப் புறமே படும். 933

उरुळायम् ओवादु कूऱिन् पोरुँळायम्
पोओय्प् पुऱमे पडुम्.

पासा फेंक सदा रहा, करते धन की आस।
उसका धन औ' आय सब, चलें शत्रु के पास।। ९३३

आस—आशा।

சிறுமை பலசெய்து சீரழிக்கும் சூதின்
வறுமை தருவதொன்று இல். 934

शिऱुमै पलशॆय्दु शीरषिक्कुम् शूदिन्
वऱुमै तरुवदोन्ड्रु इल्.

करता यश का नाश है, दे कर सब दुख-जाल।
और न कोई द्यूत सम, बनायगा कंगाल।। ९३४

द्यूत—जुआ। कंगाल—दरिद्र।

கவறும் கழகமும் கையும் தருக்கி
இவறியார் இல்லாகி யார். 935

कवऱुम् कषहमुम् कैयुम् तरुक्कि
इवऱियार् इल्लाहियार्.

पासा, जूआ-घर तथा, हस्त-कुशलता मान।
जूए को हठ से पकड़, निर्धन हुए निदान।। ९३५

हस्त—कुशलता—पासा फेंकने में अपनी सामर्थ्य पर गर्व कर।

அகடாரார் அல்லல் உழப்பர்சூ தென்னும்
முகடியால் மூடப் பட்டார். 936

अहडारार् अल्लल् उष़प्पर् शूदॆॅन्नुम्
मुहडियाल् मूडप्पट्टार्.

जुआरूप ज्येष्ठा जिन्हें, मुँह में लेती डाल।
अन्हें न मिलता पेट भर, भोगें दुःख कराल।। ।। ९३६

ज्येष्ठा—लक्ष्मी की बड़ी बहन। अलक्ष्मी।

பழகிய செல்வமும் பண்பும் கெடுக்கும்
கழகத்துக் காலை புகின். 937

पष़हिय शॆॅल्वमुम् पण्बुम् कॆॅडुक्कुम्
कष़हत्तुक् कालै पुहिन्.

द्यूत-भूमि में काल सब, जो करना है वास।
करता पैतृक धन तथा, श्रेष्ठ गुणों का नाश।। ९३७

पैतृक धन—पुरखों का धन।

பொருள்கெடுத்துப் பொய்மேற் கொளீஇ அருள்கெடுத்து
அல்லல் உழப்பிக்கும் சூது. 938

पॊरुळ् कॆॅडुत्तुप् पॊय् मेऱ् कॊळीइ अरुळ्कॆॅडुत्तु
अल्लल् उष़प्पिक्कुम् शूदु.

प्रेरित मिथ्या-कर्म में, करके धन को नष्ट।
दया-धर्म का नाश कर, जुआ दिलाता कष्ट।। ९३८

உடைசெல்வம் ஊண்ஒளி கல்விஎன்று ஐந்தும்
அடையாவாம் ஆயம் கொளின். 939

उडै शॆॅल्वम् ऊण् ओळि कल्वि ऍन्ड्रु ऐन्दुम्
अडैयावाम् आयम् कॊळिन्.

रोटी कपड़ा संपदा, विद्या औ' सम्मान।
पाँचों नहिं उनके यहाँ, जिन्हें जुए की बान।। ९३९

இழத்தொறூஉம் காதலிக்கும் சூதேபோல் துன்பம்
உழத்தொறூஉம் காதற்று உயிர். 940

इषतूतोॅरूउम् कादलिक्कुम् शूदेपोल् तुन्बम्
उषतूतोॅरूउम् कादट्रु उयिर्.

खोते खोते धन सभी, यथा जुएँ में मोह।
सहते सहते दुःख भी, है जीने में मोह।। ९४०

अதிகாரம்-95 अध्याय—९५ நட்பியல் | मैत्री — प्रकरण

மருந்து औषध मरुन्दु

மிகினும் குறையினும் நோய்செய்யும் நூலோர்
வளிமுதலா எண்ணிய மூன்று. 941

मिहिनुम् कुरैयिनुम् नोय् शेॅय्युम् नूलोर्
वळि मुदला ऍण्णिय मून्ड्रु.

वातादिक जिनको गिना, शास्त्रज्ञों ने तीन।
बढ़ते घटते दुःख दें, करके रोगाधीन।। ९४१

वातादिक—वात, पित्त और कफ। बढ़ते—घटते—भोजन और कार्य के उचित मात्रा से अधिक या कम होने से।

மருந்தென வேண்டாவாம் யாக்கைக்கு அருந்தியது
அற்றது போற்றி உணின். 942

मरुन्देॅन वेण्डावाम् याक्कैक्कु अरुन्दियदु
अट्रदु पोट्रि उणिन्.

खादित का पचना समझ, फिर दे भोजन-दान।
तो तन को नहिं चाहिये, कोई औषध-पान।। ९४२

खादित—खाया हुआ। समझ—समझकर।

அற்றால் அளவறிந்து உண்க அஃதுடம்பு
பெற்றான் நெடிதுய்க்கு மாறு. 943

अट्राल् अळवरिनुदु उणह अहुदुडमबु
पेट्रान् नेडिदुयक्कुमारु.

जीर्ण हुआ तो खाइये, जान उचित परिमाण।
देहवान हित है वही, चिरायु का सामान।। ९४३

देहवान—शरीरधारी, मनुष्य। सामान—उपकरण, सामग्री।

அற்றது அறிந்து கடைப்பிடித்து மாறல்ல
துய்க்க துவரப் பசித்து. 944

अट्रदु अरिनुदु कडैपपिडितुतु मारलल
तुयक्क तुवरप् पशितुतु.

जीर्ण हुआ यह जान फिर, खूब लगे यदि भूख।
खाओ जो जो पथ्य हैं, रखते ध्यान अचूक।। ९४४

மாறுபாடு இல்லாத உண்டி மறுத்துண்ணின்
ஊறுபாடு இல்லை உயிர்க்கு. 945

मारुपाडु इललाद उणडि मरुतुतुणणिन्
ऊरुपाडु इललै उयिरक्कु.

करता पथ्याहार का, संयम से यदि भोग।
तो होता नहिं जीव को, कोई दुःखद रोग।। ९४५

पथ्याहार—रोगी के लिये जल्दी पचनेवाला लाभदायक खाना।

இழிவறிந்து உண்பான்கண் இன்பம்போல் நிற்கும்
கழிபே ரிரையான்கண் நோய். 946

इऴिवऱिन्दु उण्बान्कण् इन्बम्पोल् निऱ्कुम्
कऴि पेरिरैयान् कण् नोय्.

भला समझ मित भोज का, जीमे तो सुख-वास।
वैसे टिकता रोग है, अति पेटू के पास।। ९४६

मित–परिमित, कम । जीमना–खाना । पेटू–बहुत अधिक खानेवाला।

தீயள வன்றித் தெரியான் பெரிதுண்ணின்
நோயள வின்றிப் படும். 947

तीयळवन्ड्रित् तॆरियान् पॆरिदुण्णिन्
नोयळविन्ड्रिप् पडुम्.

जाठराग्नि की शक्ति का, बिना किये सुविचार।
यदि खाते हैं अत्यधिक, बढ़ते रोग अपार।। ९४७

जाठराग्नि–पेट की वह गरमी जिससे अन्न पचता है।

நோய்நாடி நோய்முதல் நாடி அதுதணிக்கும்
வாய்நாடி வாய்ப்பச் செயல். 948

नोय्नाडि नोय्मुदल् नाडि अदुतणिक्कुम्
वाय्नाडि वाय्प्पच् चॆयल्.

ठीक समझ कर रोग क्या, उसका समझ निदान।
समझ युक्ति फिर शमन का, करना यथा विधान।। ९४८

निदान –आदि कारण। युक्ति–उपाय (रोग को दूर करने का)।

உற்றான் அளவும் பிணியளவும் காலமும்
கற்றான் கருதிச் செயல். **949**

उट्रान् अळवुम् पिणियळवुम् कालमुम्
कट्रान् करुदिच् चॅयल्

रोगी का वय, रोग का, काल तथा विस्तार।
सोच समझ कर वैद्य को, करना है उपचार।। ९४९

உற்றவன் தீர்ப்பான் மருந்துஉழைச் செல்வானென்று
அப்பால்நாற் கூற்றே மருந்து. **950**

उट्रवन् तीर्प्पान् मरुन्दु उष़ैच् चॅल्वानॅन्ड्रु
अपपाल नार् कूट्रे मरुन्दु.

रोगी वैद्य दवा तथा, तीमारदार संग।
चार तरह के तो रहे, वैद्य शास्त्र के अंग।। ९५०

அதிகாரம்-96 अध्याय—९६ குடியியல் प्रजा — प्रकरण

குடிமை कुलीनता कुडिमै

இற்பிறந்தார் கண்அல்லது இல்லை இயல்பாகச்
செப்பமும் நாணும் ஒருங்கு. **951**

इऱ्पिऱन्दार् कण् अल्लदु इल्लै इयल्पाहच्
चॅप्पमुम् नाणुम् ऑरुङ्गु.

लज्जा, त्रिकरण-एकता, इन दोनों का जोड़।
सहज मिले नहिं और में, बस कुलीन को छोड़।। ९५१

लज्जा—पाप कर्म करने से लज्जित होना। त्रिकरण एकता—मन, वचन, कर्म इन तीनों का ऐक्य भाव होना। कुलीन—उच्च कुल में पैदा हुआ।

ஒழுக்கமும் வாய்மையும் நாணும்இம் மூன்றும்
இழுக்கார் குடிப்பிறந் தார். 952

ओऍषुक्कमुम् वाय्मैयुम् नाणुम् इम्मूनड्रुम्
इषुक्कार् कुडिप्पिऱन्दार्.

सदाचार लज्जा तथा, सच्चाई ये तीन।
इन सब से विचलित कभी, होते नहीं कुलीन।। ९५२

நகைஈகை இன்சொல் இகழாமை நான்கும்
வகைஎன்ப வாய்மைக் குடிக்கு. 953

नहै ईहै इन्शॊल् इहषामै नान्गुम्
वहै ऍन्ब वाय्मैक्कुडिक्कु.

सुप्रसन्न मुख प्रिय वचन, निंदा-वर्जन दान।
सच्चे श्रेष्ठ कुलीन हैं, चारों का संस्थान।। ९५३

அடுக்கிய கோடி பெறினும் குடிப்பிறந்தார்
குன்றுவ செய்தல் இலர். 954

अडुक्किय कोडि पॆऱिनुम् कुडिप्पिऱन्दार्
कुन्ड्रुव शॆय्दल् इलर्.

कोटि कोटि धन ही सही, पायें पुरुष कुलीन।
तो भी वे करते नहीं, रहे कर्म जो हीन।। ९५४

வழங்குவ துள்வீழ்ந்தக் கண்ணும் பழங்குடி
பண்பில் தலைப்பிரிதல் இன்று. 955

वष़ङ्गुवदुळ् वीष़्न्दक्कण्णुम् पष़ङ्गुडि
पण्बिल् तलैप्पिरिदल् इन्ड्रु.

हाथ खींचना ही पड़े, यद्यपि हो कर दीन।
छोड़ें वे न उदारता, जिनका कुल प्राचीन।। ९५५

சலம்பற்றிச் சால்பில செய்யார்மா சற்ற
குலம்பற்றி வாழ்தும்என் பார். **956**

चलम्पट्रिच् चाल्पिल शॆय्यार् माशट्र
कुलम् पट्रि वाषदुम् ऍन्बार्.

पालन करते जी रहें, जो निर्मल कुल धर्म।
यों जो हैं वे ना करें, छल से अनुचित कर्म।। ९५६

अनुवाद के सम्बन्ध में ' अध्याय में इस दोहे का उल्लेख हुआ है।

குடிப்பிறந்தார் கண்விளங்கும் குற்றம் விசும்பின்
மதிக்கண் மறுப்போல் உயர்ந்து. **957**

कुडिपिऱन्दार् कण्विळङ्गुम् कुट्रम् विशुम्बिन्
मदिक्कण् मऱुप्पोल् उयर्न्दु.

जो जन बड़े कुलीन हैं, उनपर लगा कलंक।
नभ में चन्द्र-कलंक सम, प्रकटित हो अत्तंग।। ९५७

नभ—आकाश। उत्तंग—उत्तुंग, बहुत ऊँचा।

நலத்தின்கண் நாரின்மை தோன்றின் அவனைக்
குலத்தின்கண் ஐயப் படும். **958**

नलत्तिन्कण् नारिन्मै तोन्ड्रिन् अवनैक्
कुलत्तिन्कण् ऐयप्पडुम्.

रखते सुगुण कुलीन के, जो निकले निःस्नेह।
उसके कुल के विषय में, होगा ही संदेह।। ९५८

நிலத்தில் கிடந்தமை கால்காட்டும் காட்டும்
குலத்தில் பிறந்தார்வாய்ச் சொல். **959**

निलत्तिल् किडन्दमै काल्काट्टुम् काट्टुम्
कुलत्तिल् पिऱन्दार् वाय्च् चॊल्.

अंकुर करता है प्रकट, भू के गुण की बात।
कुल का गुण, कुल-जात की, वाणी करती ज्ञात।। ९५९

भू—भूमि। कुल—जात—कुलीन, उत्तम कुल में पैदा हुआ।

நலம்வேண்டின் நாணுடைமை வேண்டும் குலம்வேண்டின்
வேண்டுக யார்க்கும் பணிவு. **960**

नलम् वेण्डिन् नाणुडैमै वेण्डुम् कुलम्वेण्डिन्
वेण्डुह यार्क्कुम् पणिवु.

जो चाहे अपना भला, पकड़े लज्जा-रीत।
जो चाहे कुल-कानि को, सब से रहे विनीत।। ९६०

लज्जा—रीत—लज्जित होने का स्वभाव (पाप—कर्म से)। कुल—कानि—
कुल की मर्य्यादा।

மானம் मान मानम्

இன்றி யமையாச் சிறப்பின ஆயினும்
குன்ற வருப விடல். **961**

इन्ड्रियमैयाच् चिऱप्पिन आयिनुम्
कुन्ड्र वरुप विडल्.

जीवित रहने के लिये, यद्यपि हैं अनिवार्य।
फिर भी जो कुल-हानिकर, तज देना वे कार्य।। ९६१

சீரினும் சீரல்ல செய்யாரே சீரொடு
பேராண்மை வேண்டு பவர். 962

शीरिनुम् शीरल्ल शॅय्यारे शीरोॅडु
पेराण्मै वेण्डुपवर्.

जो हैं पाना चाहते, कीर्ति सहित सम्मान।
यश-हित भी करते नहीं, जो कुल-हित अपमान।। ९६२

பெருக்கத்து வேண்டும் பணிதல் சிறிய
சுருக்கத்து வேண்டும் உயர்வு. 963

पॅरुक्कत्तु वेण्डुम् पणिदल् शिऱिय
शुरुक्कत्तु वेण्डुम् उयर्वु.

सविनय रहना चाहिये, रहते अति संपन्न।
तन कर रहना चाहिये, रहते बड़ा विपन्न।। ९६३

தலையின் இழிந்த மயிரனையர் மாந்தர்
நிலையின் இழிந்தக் கடை. 964

तलैयिन् इऴिन्द मयिरनैयर् मान्दर्
निलैयिन् इऴिन्दक् कडै.

गिरते हैं जब छोड़कर, निज सम्मानित स्थान।
नर बनते हैं यों गिरे, सिर से बाल समान।। ९६४

குன்றின் அனையாரும் குன்றுவர் குன்றுவ
குன்றி அனைய செயின். 965

कुन्ड्रिन् अनैयारुम् कुन्ड्रुवर् कुन्ड्रुव
कुन्ड्रि अनैय शॅयिन्.

अल्प घुंघची मात्र भी, करते जो दुष्काम।
गिरि सम ऊँचे क्यों न हों, होते हैं बदनाम।। ९६५

புகழ்இன்றால் புத்தேள் நாட்டு உய்யாதால் என்மற்று
இகழ்வார்பின் சென்று நிலை. 966

पुहष़् इनूड्राल् पुत्तेळ् नाट्टु उय्यादाल् ऍन् मट्रु
इहष़्वार् पिन् शॅन्ड्रु निलै.

न तो कीर्ति की प्राप्ति हो, न हो स्वर्ग भी प्राप्त।
निंदक का अनुचर बना, तो औ' क्या हो प्राप्त।। ९६६

ஒட்டார்பின் சென்றொருவன் வாழ்தலின் அந்நிலையே
கெட்டான் எனப்படுதல் நன்று. 967

ऑट्टार् पिन् शॅन्ड्रॉरुवन् वाष़दलिन् अन्निलैये
कॅट्टान् ऍनप्पडुदल् नन्ड्रु.

निंदक का अनुचर बने, जीवन से भी हेय।
'ज्यों का त्यों रह मर गया', कहलाना है श्रेय।। ९६७

'ज्यों... मर गया' —इसका भाव यह है कि यदि ऐसा अवसर आ गया कि अपने निंदक का दास बनने पर धन मिलेगा और तभी जीवन की रक्षा होगी तो उस धन को पाये बिना मर जाना ही अच्छा है। हेय—नीच, निकृष्ट।

மருந்தோமற்று ஊன்ஓம்பும் வாழ்க்கை பெருந்தகைமை
பீடழிய வந்த இடத்து. 968

मरुन्दो मट्रु ऊनओम्बुम् वाष़क्कै पॅरुन्तहैमै
पीडष़िय वन्द इडत्तु.

नाश काल में मान के, जो कुलीनता-सत्व।
तन-रक्षित-जीवन भला, क्या देगा अमरत्व।। ९६८

कुलीनता—सत्व—उच्च कुल के लक्षण का सार मान है। तन...भला—केवल शरीर की रक्षा करना।

மயிர்நீப்பின் வாழாக் கவரிமா அன்னார்
உயிர்நீப்பர் மானம் வரின். 969

मयिर् नीप्पिन् वाऴाक् कवरिमा अन्नार्
उयिर् नीप्पर् मानम् वरिन्.

बाल कटा तो त्याग दे, चमरी-मृग निज प्राण।
उसके सम नर प्राण दें, रक्षा-हित निज मान।। ९६९

चमरी–मृग–सुरागाय जिसकी पूँछ के बालों से चंवर बनाया जाता है। यह जनश्रुति है कि चमरी मृग को अपनी पूँछ पर इतना अभिमान है कि उसका एक भी बाल कट जाने पर वह प्राण–त्याग कर देता है।

இளிவரின் வாழாத மானம் உடையார்
ஒளிதொழுது ஏத்தும் உலகு. 970

इळिवरिन् वाऴाद मानम् उडैयार्
ऑळि तॉऴुदु एत्तुम् उलहु.

जो मानी जीते नहीं, होने पर अपमान।
उनके यश को पूज कर, लोक करे गुण-गान।। ९७०

अதிகாரம்-98 अध्याय - ९८ குடியியல் प्रजा — प्रकरण

பெருமை महानता पॅरुमै

ஒளிஒருவற்கு உள்ள வெறுக்கை இளிஒருவற்கு
அஃதிறந்து வாழ்தும் எனல். 971

ऑळि ऑरुवर्कु उळ्ळ वॅरुक्कै इळि ऑरुवर्कु
अहदिरन्दु वाऴ्दुम् ऍनल्.

मानव को विख्याति दे, रहना सहित उमंग।
'जीयेंगे उसके बिना', है यों कथन कलक।। ९७१

उसके बिना—उमंग के बिना।

பிறப்பொக்கும் எல்லா உயிர்க்கும் சிறப்பொவ்வா
செய்தொழில் வேற்றுமை யான். 972

पिऱप्पोक्कुम् ऍल्ला उयिर्क्कुम् शिऱप्पॉव्वा
शॆय्तॊऴिल् वेट्रुमैयान्.

सभी मनुज हैं जन्म से, होते एक समान।
गुण-विशेष फिर सम नहीं, कर्म-भेद से जान।। ९७२

மேலிருந்தும் மேலல்லார் மேலல்லர் கீழிருந்தும்
கீழல்லார் கீழல்லவர். 973

मेलिरुन्दुम् मेलल्लार् मेलल्लर् कीऴिरुन्दुम्
कीऴल्लार् कीऴल्लवर्.

छोटे नहिं होते बड़े, यद्यपि स्थिति है उच्च।
निचली स्थिति में भी बड़े, होते हैं नहिं तुच्छ।। ९७३

ஒருமை மகளிரே போலப் பெருமையும்
தன்னைத்தான் கொண்டொழுகின் உண்டு. 974

ऒरुमै महळिरे पोलप् पॆरुमैयुम्
तन्नैत्तान् कॊण्डॊऴुहिन् उण्डु.

एक निष्ठ रहती हुई, नारी सती समान।
आत्म-संयमी जो रहा, उसका हो बहुमान।। ९७४

மயிர்நீப்பின் வாழாக் கவரிமா அன்னார்
உயிர்நீப்பர் மானம் வரின். 969

मयिर् नीप्पिन् वाष़ाक् कवरिमा अन्नार्
उयिर् नीप्पर् मानम् वरिन्.

बाल कटा तो त्याग दे, चमरी-मृग निज प्राण।
उसके सम नर प्राण दें, रक्षा-हित निज मान।। ९६९

चमरी–मृग–सुरागाय जिसकी पूँछ के बालों से चंवर बनाया जाता है। यह जनश्रुति है कि चमरी मृग को अपनी पूँछ पर इतना अभिमान है कि उसका एक भी बाल कट जाने पर वह प्राण–त्याग कर देता है।

இளிவரின் வாழாத மானம் உடையார்
ஒளிதொழுது ஏத்தும் உலகு. 970

इळिवरिन् वाष़ाद मानम् उडैयार्
ऑळि तॉष़ुदु एत्तुम् उलहु.

जो मानी जीते नहीं, होने पर अपमान।
उनके यश को पूज कर, लोक करे गुण-गान।। ९७०

அதிகாரம்-98 अध्याय-९८ குடியியல் प्रजा – प्रकरण

பெருமை महानता पॅरुमै

ஒளிஒருவற்கு உள்ள வெறுக்கை இளிஒருவற்கு
அஃதிறந்து வாழ்தும் எனல். 971

ऑळि ऑरुवर्कु उळ्ळ वॅरुक्कै इळि ऑरुवर्कु
अह्दिऱन्दु वाष़्दुम् ऍनल्.

मानव को विख्याति दे, रहना सहित उमंग।
'जीयेंगे उसके बिना', है यों कथन कलक।। ९७१

उसके बिना—उमंग के बिना।

பிறப்பொக்கும் எல்லா உயிர்க்கும் சிறப்பொவ்வா
செய்தொழில் வேற்றுமை யான். 972

पिऱप्पोक्कुम् ऍल्ला उयिर्क्कुम् शिऱप्पोव्वा
शॆय्तॊषिल् वेट्रुमैयान्.

सभी मनुज हैं जन्म से, होते एक समान।
गुण-विशेष फिर सम नहीं, कर्म-भेद से जान।। ९७२

மேலிருந்தும் மேலல்லார் மேலல்லர் கீழிருந்தும்
கீழல்லார் கீழல்லவர். 973

मेलिरुन्दुम् मेलल्लार् मेलल्लर् कीषिरुन्दुम्
कीष़ल्लार् कीष़ल्लवर्.

छोटे नहिं होते बड़े, यद्यपि स्थिति है उच्च।
निचली स्थिति में भी बड़े, होते हैं नहिं तुच्छ।। ९७३

ஒருமை மகளிரே போலப் பெருமையும்
தன்னைத்தான் கொண்டொழுகின் உண்டு. 974

ऑरुमै महळिरे पोलप् पॆरुमैयुम्
तन्नैत्तान् कॉण्डोषुहिन् उण्डु.

एक निष्ठ रहती हुई, नारी सती समान।
आत्म-संयमी जो रहा, उसका हो बहुमान।। ९७४

பெருமை உடையவர் ஆற்றுவார் ஆற்றின்
அருமை உடைய செயல். 975

पॆॅरुमै उडैयवर् आट्रुवार् आट्रिन्
अरुमै उडैय शॆॅयल्.

जो जन महानुभाव हैं, उनको है यह साध्य।
कर चुकना है रीति से, जो हैं कार्य असाध्य।। ९७५

சிறியார் உணர்ச்சியுள் இல்லை பெரியாரைப்
பேணிக்கொள்வேம் என்னும் நோக்கு. 976

शिऱियार् उणर्च्चियुळ् इल्लै पॆॅरियारैप्
पेणिक्कॉॅळ्वेम् ऍन्नुम् नोक्कु.

छोटों के मन में नहीं, होता यों सुविचार।
पावें गुण नर श्रेष्ठ का, कर उनका सत्कार।। ९७६

இறப்பே புரிந்த தொழிற்றாம் சிறப்புந்தான்
சீரல்லவர்கட் படின். 977

इऱप्पे पुरिन्द तॉॅऴिट्राम् शिऱप्पुन्दान्
शीरल्लवर्कट् पडिन्.

लगती है संपन्नता, जब ओछों के हाथ।
तब भी अत्याचार ही, करे गर्व के साथ।। ९७७

इस दोहे का भाव यह है कि उत्तम गुणवाले संपन्न होने पर नम्रता के साथ व्यवहार करते हैं। पर नीच लोग प्रभुता प्राप्त करने पर अत्याचार ही करते हैं। ओछा—जो गंभीर और उच्चाशय न हो, तुच्छ।

பணியுமாம் என்றும் பெருமை சிறுமை
அணியுமாம் தன்னை வியந்து. **978**

पणियुमाम् ऍन्ड्रुम् पॅरुमै शिऱुमै
अणियुमाम् तन्नै वियन्दु.

है तो महानुभावता, विनयशील सब पर्व।
अहम्मन्य हो तुच्छता, करती है अति गर्व।। ९७८

महानुभावता—जो महानुभाव होते हैं। तुच्छता—नीच लोग।

பெருமை பெருமிதம் இன்மை சிறுமை
பெருமிதம் ஊர்ந்து விடல். **979**

पॅरुमै पॅरुमिदम् इन्मै शिऱुमै
पॅरुमिदम् ऊरन्दु विडल्.

अहम्मन्यता-हीनता, है महानता बान।
अहम्मन्यता-सींव ही, ओछापन है जान।। ९७९

अहम्मन्यता—हीनता—अहंकारी अर्थात् घमंडी न होना। सींव—पराकाष्टा, चरम सीमा।

அற்றம் மறைக்கும் பெருமை சிறுமைதான்
குற்றமே கூறி விடும். **980**

अट्रम् मरैक्कुम् पॅरुमै शिऱुमैदान
कुट्रमे कूरिविडुम्.

दोषों को देना छिपा, है महानता-भाव।
दोषों की ही घोषणा, है तुच्छता-स्वभाव।। ९८०

दोषों को—(दूसरे लोगों के) अवगुणों को।

சான்றாண்மை सर्वगुण-पूर्णता शानड्राण्मै

கடன்என்ப நல்லவை எல்லாம் கடன்அறிந்து
சான்றாண்மை மேற்கொள் பவர்க்கு. 981

कडन् ऍन्ब नल्लवै ऍल्लाम् कडन् अऱिन्दु
शानड्राण्मै मेऱ्कॊळ्पवर्क्कु.

जो सब गुण हैं पालते, समझ योग्य कर्तव्य।
उनकों अच्छे कार्य सब, सहज बने कर्तव्य।। ९८१

குணநலம் சான்றோர் நலனே பிறநலம்
எந்நலத்து உள்ளதூஉம் அன்று. 982

गुणनलम् शानड्रोर् नलने पिऱनलम्
ऍन्नलत्तु उळ्ळदूउम् अन्ड्रु.

गुण-श्रेष्ठता-लाभ ही, महापुरुष को श्रेय।
अन्य लाभ की प्राप्ति से, श्रेय न कुछ भी ज्ञेय।। ९८२

அன்புநாண் ஒப்புரவு கண்ணோட்டம் வாய்மையொடு
ஐந்துசால்பு ஊன்றிய தூண். 983

अन्बु नाण् ऑप्पुरवु कण्णोट्टम् वाय्मैयॊडु
ऐन्दु शाल्पु ऊन्ड्रिय तूण्.

लोकोपकारिता, दया, प्रेम हया औ' साँच।
सुगुणालय को थामते, खंभे हैं ये पाँच।। ९८३

हया—लज्जा। साँच—सत्य।

கொல்லா நலத்தது நோன்மை பிறர்தீமை
சொல்லா நலத்தது சால்பு. 984

कॊल्ला नलत्तदु नोन्मै पिऱर्तीमै
शॊल्ला नलत्तदु शाल्बु.

वध-निषेध-व्रत-लाभ ही, तप को रहा प्रधान।
पर-निंदा वर्जन रही, गुणपूर्णता महान।। ९८४

ஆற்றுவார் ஆற்றல் பணிதல் அதுசான்றோர்
மாற்றாரை மாற்றும் படை. 985

आट्रुवार् आट्रल् पणिदल् अदु शान्ड्रोर्
माट्रारै माट्रुम् पडै.

विनयशीलता जो रही, बलवानों का सार।
है रिपु-रिपुता नाश-हित, सज्जन का हथियार।। ९८५

सार—शक्ति। रिपु... हित—शत्रु की शत्रुता दूर करने के लिये।

சால்பிற்குக் கட்டளை யாதெனில் தோல்வி
துலையல்லார் கண்ணும் கொளல். 986

शाल्पिर्कुक् कट्टळै यादॅनिल् तोल्वि
तुलैयल्लार् कण्णुम् कॊळल्.

कौन कसौटी जो परख, जाने गुण-आगार।
है वह गुण जो मान ले, नीचों से भी हार।। ९८६

हार—पराजय (मूल में यही शब्द है जिसका भाव विनम्रता है)।

இன்னாசெய் தார்க்கும் இனியவே செய்யாக்கால்
என்ன பயத்ததோ சால்பு. 987

इन्ना शॆय्दार्क्कुम् इनियवे शॆय्याक्काल्
ऍन्न पयत्तदो शाल्पु.

अपकारी को भी अगर, किया नहीं उपकार।
होता क्या उपयोग है, हो कर गुण-आगार।। ९८७

'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में इस दोहे की तुलना कबीर के दोहे से की गई है। 'अनुवाद के सम्बन्ध में' अध्याय में भी इसका उल्लेख हुआ है।

இன்மை ஒருவற்கு இளிவன்று சால்பென்னும்
திண்மைஉண் டாகப் பெறின். **988**

इऩ्मै ओरुवऱ्कु इळिवऩ्ऱु शाल्पॆऩ्ऩुम्
तिण्मै उण्डाहप् पॆऱिऩ्.

निर्धनता नर के लिये, होता नहिं अपमान।
यदि बल है जिसको कहें, सर्व गुणों की खान।। **९८८**

ஊழி பெயரினும் தாம்பெயரார் சான்றாண்மைக்கு
ஆழி எனப்படு வார். **989**

ऊऴि पॆयरिनुम् ताम् पॆयरार् शाऩ्ऱाण्मैक्कु
आऴि ऎऩप्पडुवार्.

गुण-सागर के कूल सम, जो मर्यादा-पाल।
मर्यादा छोड़े नहीं, यद्यपि युगान्त-काल।। **९८९**

युगान्त–काल–प्रलय जब सारा संसार मिट जाता है। इसका भाव यह है कि अति भयंकर स्थिति आने पर भी गुणवान अपनी मर्यादा नहीं छोड़ता।

சான்றவர் சான்றாண்மை குன்றின் இருநிலந்தான்
தாங்காது மன்னோ பொறை. **990**

शाऩ्ऱवर् शाऩ्ऱाण्मै कुऩ्ऱिऩ् इरुनिलऩ्ताऩ्
ताङ्गादु मऩ्ऩो पॊऱै.

घटता है गुण-पूर्ण का, यदि गुण का आगार।
तो विस्तृत संसार भी, ढो सकता नहिं भार।। **९९०**

பண்புடைமை शिष्टाचार पण्बुडैमै

எண்பதத்தால் எய்தல் எளிதென்ப யார்மாட்டும்
பண்புடைமை என்னும் வழக்கு. **991**

ऍण्पदत्ताल् ऍय्दल् ऍळिदॆन्ब यार् माट्टुम्
पण्बुडैमै ऍन्नुम् वष़क्कु.

मिलनसार रहते अगर, सब लोगों को मान।
पाना शिष्टाचार है, कहते हैं आसान।। ९९१

அன்புடைமை ஆன்ற குடிப்பிறத்தல் இவ்விரண்டும்
பண்புடைமை என்னும் வழக்கு. **992**

अन्बुडैमै आन्ऱ् कुडिप्पिऱत्तल् इव्विरण्डुम्
पण्बुडैमै ऍन्नुम् वष़क्कु.

उत्तम कुल में जन्म औ', प्रेम पूर्ण व्यवहार।
दोनों शिष्टाचार के, हैं ही श्रेष्ठ प्रकार।। ९९२

உறுப்பொத்தல் மக்களொப்பு அன்றால் வெறுத்தக்க
பண்பொத்தல் ஒப்பதாம் ஒப்பு. **993**

उरुप्पॊत्तल् मक्कळॊप्पु अन्ऱाल् वॆऱुत्तक्क
पण्बॊत्तल् ऒप्पदाम् ऒप्पु.

न हो देह के मेल से, श्रेष्ठ जनों का मेल।
आत्माओं के योग्य तो, हैं संस्कृति का मेल।। ९९३

நயனொடு நன்றி புரிந்த பயனுடையார்
பண்புபா ராட்டும் உலகு. **994**

नयनॊडु नन्ऱि पुरिन्द पयनुडैयार्
पण्बु पाराट्टुम् उलहु.

नीति धर्म को चाहते, जो करते उपकार।
उनके शिष्ट स्वभाव को, सराहता संसार।। ९९४

நகையுள்ளும் இன்னாது இகழ்ச்சி பகையுள்ளும்
பண்புள பாடறிவார் மாட்டு. 995

नहैयुळ्ळुम् इन्नादु इहष्च्चि पहैयुळ्ळुम्
पण्बुळ पाडऱिवार् माट्टु.

हँसी खेल में भी नहीं, निंदा करना इष्ट।
पर-स्वभाव ज्ञाता रहें, रिपुता में भी शिष्ट।। ९९५

பண்புடையார்ப் பட்டுண்டு உலகம் அதுஇன்றேல்
மண்புக்கு மாய்வது மன். 996

पण्बुडैयार्प् पट्टुण्डु उलहम् अदु इन्ड्रेल्
मणबुक्कु माय्वदु मन्.

शिष्टों के आधार पर, टिकता है संसार।
उनके बिन तो वह मिले, मिट्टी में निर्धार।। ९९६

அரம்போலும் கூர்மைய ரேனும் மரம்போல்வர்
மக்கட் பண்பு இல்லா தவர். 997

अरम् पोलुम् कूर्मैयरेनुम् मरम् पोल्वर्
मक्कट् पण्बु इल्लादवर्.

यद्यपि हैं रेती सदृश, तीक्ष्ण बुद्धि-निधान।
मानव-संस्कृति के बिना, नर हैं वृक्ष समान।। ९९७

बुद्धि—निधान—बुद्धि का आश्रय।

நண்பாற்று ராகி நயமில செய்வார்க்கும்
பண்பாற்று ராதல் கடை. 998

नण्पाट्राराहि नयमिल शेय्‌वारक्कुम्
पण्बाट्रारादल् कडै.

मित्र न रह जो शत्रु हैं, उनसे भी व्यवहार।
सभ्य पुरुष का नहिं किया, तो वह अधम विचार।। ९९८

நகல்வல்லர் அல்லார்க்கு மாயிரு ஞாலம்
பகலும்பாற் பட்டன்று இருள். 999

नहल् वल्लर् अल्लारक्कु मायिरु ञालम्
पहलुम् पार्पट्टन्ड्रु इरुळ्.

जो जन कर सकते नहीं, प्रसन्न मन व्यवहार।
दिन में भी तम में पड़ा, है उनका संसार।। ९९९

तम में—अंधकार में '

பண்பிலான் பெற்ற பெருஞ்செல்வம் நன்பால்
கலந்தீமை யால்திரிந் தற்று. 1000

पण्बिलान् पॆट्र पॆरुञ् चॆल्वम् नन्पाल्,
कलन् तीमैयाल् तिरिन्दट्रु.

जो है प्राप्त असभ्य को, धन-सम्पत्ति अमेय।
कलश-दोष से फट गया, शुद्ध दूध सम ज्ञेय।। १०००

अमेय—असीम। कलश—दोष—बरतन की मैल।

நன்றியில் செல்வம् निष्फल धन ननूड्रियिल् शॅल्वम्

வைத்தான்வாய் சான்ற பெரும்பொருள் அஃதுண்ணான்
செத்தான் செயக்கிடந்தது இல். 1001

वैत्तान् वाय् शान्ड्र पॅरुम्पॉरुळ् अहदुण्णान्
शॅत्तान् शॅयक्किडन्ददु इल्.

भर कर घर भर प्रचुर धन, जो करता नहिं भोग।
धन के नाते मृतक है, जब है नहिं उपयोग।। १००१

प्रचुर धन — बहुत अधिक संपत्ति।

பொருளானும் எல்லாமென்று ஈயாது இவறும்
மருளானும் மாணாப் பிறப்பு. 1002

पॉरुळानाम् ऍल्लामॅन्ड्रु ईयादु इवरुम्
मरुळानाम् माणाप्पिरप्पु.

'सब होता है अर्थ से'; रख कर ऐसा ज्ञान।
कंजूसी के मोह से, प्रेत जन्म हो मलान।। १००२

म्लान — मलिन। प्रेत जन्म — पिशाच का जन्म।

ஈட்டம் இவறி இசைவேண்டா ஆடவர்
தோற்றம் நிலக்குப் பொறை. 1003

ईट्टम् इवरि इशै वेण्डा आडवर्
तोट्रम् निलक्कुप् पॉरै.

लोलुप संग्रह मात्र का, यश का नहीं विचार।
ऐसे लोभी का जनम, है पृथ्वी को भार।। १००३

लोलुप — लोभी, लालची। संग्रह मात्र — केवल धन जमा करना।

எச்சமென்று என்எண்ணுங் கொல்லோ ஒருவரால்
நச்சப் படாஅ தவன். **1004**

ऍच्चमेॅन्ड्रु ऍन् एण्णुङ् कोॅल्लो ओॅरुवराल्
नच्चप् पडा अदवन्.

किसी एक से भी नहीं, किया गया जो प्यार।
निज अवशेष स्वरूप वह, किसको करे विचार।। १००४

अवशेष–मरने के बाद जो छोड़ा जायगा अर्थात् कीर्ति।

கொடுப்பதூஉம் துய்ப்பதூஉம் இல்லார்க்கு அடுக்கிய
கோடிஉண் டாயினும் இல். **1005**

कोॅडुप्पदूउम् तुय्प्पदूउम् इल्लार्क्कु अडुक्किय
कोडि उण्डायिनुम् इल्.

जो करते नहिं दान ही, करते भी नहिं भोग।
कोटि कोटि धन क्यों न हो, निर्धन हैं वे लोग।। १००५

ஏதம் பெருஞ்செல்வம் தான்றுவ்வான் தக்கார்க்கொன்று
ஈதல் இயல்பிலா தான். **1006**

एदम् पेॅरुञ् चेॅल्वम् तान्ड्रुव्वान् तक्कार्क्कोॅन्ड्रु
ईदल् इयल्पिलादान्.

योग्य व्यक्ति को कुछ न दे, स्वयं न करता भोग।
विपुल संपदा के लिये, इस गुण का नर रोग।। १००६

विपुल संपदा–बहुत अधिक संपत्ति।

அற்றார்க்கொன்று ஆற்றாதான் செல்வம் மிகநலம்
பெற்றாள் தமியள் மூத்தற்று. **1007**

अट्रारक्कोन्ड्रु आट्रादान् शॅल्वम् मिह नलम्
पॅट्राळ् तमियळ् मूत्तट्रु.

कुछ देता नहिं अधन को, ऐसों का धन जाय।
क्वाँरी रह अति गुणवती, ज्यों बूढ़ी हो जाय।। १००७

धन जाय—धन व्यर्थ। क्वाँरी—कुमारी, अविवाहित।

நச்சப் படாதவன் செல்வம் நடுவூருள்
நச்சு மரம்பழுத் தற்று. **1008**

नच्चप्पडादवन् शॅल्वम् नडुवूरुळ्
नच्चु मरम् पष़ुत्तट्रु.

अप्रिय जन के पास यदि, आश्रित हो संपत्ति।
ग्राम-मध्य विष-वृक्ष ज्यों, पावे फल-संपत्ति।। १००८

அன்பொரீஇத் தற்செற்று அறநோக்காது ஈட்டிய
ஒண்பொருள் கொள்வார் பிறர். **1009**

अन्बॉरीइत् तऱ्चॅट्रु अऱनोक्कादु ईट्टिय
ऑण् पॉरुळ् कॉळ्वार पिऱर्.

प्रेम-भाव तज कर तथा, भाव धर्म से जन्य।
आत्म-द्रोह कर जो जमा, धन हथियाते अन्य।। १००९

हथियाना—उड़ा लेना।

சீருடைச் செல்வர் சிறுதுனி மாரி
வறங்கூர்ந் தனையது உடைத்து. **1010**

शीरुडैच् चॅल्वर् शिऱु तुनि मारि
वऱङ्कूर्न्दनैयदु उडैत्तु.

उनकी क्षणिक दरिद्रता, जो नामी धनवान।
जल से खाली जलद का, है स्वभाव समान।। १०१०

जलद–बादल। हल्का बादल फिर घना हो कर पानी बरसेगा, वैसे कुछ काल के लिये दरिद्र रहने पर भी सज्जन अपना दानी स्वभाव नहीं छोड़ते।

அதிகாரம்–102 अध्याय - १०२ குடியியல் प्रजा — प्रकरण

நாணுடைமை **लज्जाशीलता** **नाणुडैमै**

கருமத்தால் நாணுதல் நாணுத் திருநுதல்
நல்லவர் நாணுப் பிற. **1011**

करुमत्ताल् नाणुदल् नाणुत्तिरुनुदल्
नल्लवर् नाणुप्पिऱ.

लज्जित होना कर्म से, लज्जा रही बतौर।
सुमुखी कुलांगना-सुलभ, लज्जा है कुछ और।। १०११

लज्जाशीलता–निंद्य कर्म करने से लज्जित होना। बतौर–रीतियुक्त अर्थात् साधारणतः यही अर्थ माना जाता है। सुंदर कुल स्त्रियों की स्वाभाविक लज्जा कुछ और प्रकार की है।

ஊணுடை எச்சம் உயிர்க்கெல்லாம் வேறல்ல
நாணுடைமை மாந்தர் சிறப்பு. **1012**

ऊणुडै ऍच्चम् उयिर्क्कॅल्लाम् वेऱल्ल
नाणुडैमै मान्दर् शिऱप्पु.

अन्न वस्त्र इत्यादि हैं, सब के लिये समान।
सज्जन की है श्रेष्ठता, होना लज्जावान।। १०१२

ஊனைக் குறித்த உயிரெல்லாம் நாண்என்னும்
நன்மை குறித்தது சால்பு. **1013**

ऊनैक्कुरित्त उयिरॅल्लाम् नाण् ऍन्नुम्
नन्मै कुरित्तदु शाल्पु.

सभी प्राणियों के लिये, आश्रय तो है देह।
रखती है गुण-पूर्णता, लज्जा का शुभ गेह।। १०१३

गेह–घर। रखती..... गेह–गुणवान लज्जाशील होते हैं।

அணிஅன்றோ நாணுடைமை சான்றோர்க்கு அஃதின்றேல்
பிணிஅன்றோ பீடு நடை. **1014**

अणि अन्ड्रो नाणुडैमै शान्ड्रोर्क्कु अहृदिन्ड्रेल्
पिणि अन्ड्रो पीडु नडै.

भूषण महानुभाव का, क्या नहिं लज्जा-भाव।
उसके बिन गंभीर गति, क्या नहिं रोग-तनाव।। १०१४

रोग–तनाव–किसी रोग के कारण तन कर चलता है ऐसा समझा जायगा।

பிறர்பழியும் தம்பழியும் நாணுவார் நாணுக்கு
உறைபதி என்னும் உலகு. **1015**

पिरर् पऴियुम् तम् पऴियुम् नाणुवार् नाणुक्कु
उऱैपति ऍन्नुम् उलहु.

लज्जित हैं जो देख निज, तथा पराया दोष।
उनको कहता है जगत, 'यह लज्जा का कोष'।। १०१५

நாண்வேலி கொள்ளாது மன்னோ வியன்ஞாலம்
பேணலர் மேலா யவர். 1016

नाण्वेलि कॊॆळ्ळादु मन्नो वियन् ञालम्
पेणलर् मेलायवर्.

लज्जा को घेरा किये, बिना सुरक्षण-योग।
चाहेंगे नहिं श्रेष्ठ जन, विस्तृत जग का भोग।। १०१६

घेरा—चहारदीवारी। चाहेंगे...... भोग—निर्लज्ज सुखमय जीवन वे नहीं चाहेंगे।

நாணால் உயிரைத் துறப்பர் உயிர்ப்பொருட்டால்
நாண்துறவார் நாண்ஆள் பவர். 1017

नाणाल् उयिरैत् तुऱप्पर उयिर्प्पोॅरुट्टाल्
नाण् तुऱवार् नाण् आळ्पवर्.

लज्जा-पालक त्याग दें, लज्जा के हित प्राण।
लज्जा को छोडें नहीं, रक्षित रखने जान।। १०१७

பிறர்நாணத் தக்கது தான்நாணா னாயின்
அறம்நாணத் தக்கது உடைத்து. 1018

पिऱर् नाणत्तक्कदु तान् नाणानायिन्
अऱम् नाणत्तक्कदु उडैत्तु.

अन्यों को लज्जित करे, करते ऐसे कर्म।
उससे खुद लज्जित नहीं, तो लज्जित हो धर्म।। १०१८

குலஞ்சுடும் கொள்கை பிழைப்பின் நலஞ்சுடும்
நாணின்மை நின்றக் கடை. 1019

कुलञ्चुडुम् कॉळ्है पिषैप्पिन् नलञ्चुडुम्
नाणिन्मै निन्ड्रक् कडै.

यदि चूके सिद्धान्त से, तो होगा कुल नष्ट।
स्थाई हो निर्लज्जता, तो हों सब गुण नष्ट।। १०१९

நாண்அகத் தில்லார் இயக்கம் மரப்பாவை
நாணால் உயிர்மருட்டி யற்று. 1020

नाण् अहत्तिल्लार् इयक्कम् मरप्पावै
नाणाल् उयिर् मरुट्टियट्रु.

कठपुतली में सूत्र से, है जीवन-आभास।
त्यों है लज्जाहीन में, चैतन्य का निवास।। १०२०

அதிகாரம்–103 अध्याय - १०३ குடியியல் प्रजा — प्रकरण

குடிசெயல் வகை — वंशोत्कर्ष-विधान — कुडिशॆयल् वहै

கருமம் செயஒருவன் கைதூவேன் என்னும்
பெருமையின் பீடுடையது இல். 1021

करुमम् शेयॅ ओरुॅवन् कैतूवेन् एन्नुम्
पेरुॅमैयिन् पीडुडैयदु इल्.

'हाथ न खींचूँ कर्म से, जो कुल हित कर्तव्य'।
इसके सम नहिं श्रेष्ठता, यों है जो मन्तव्य।। १०२१

हाथ खीचना–किसी काम से अलग होना। मंतव्य–विचार।

ஆள்வினையும் ஆன்ற அறிவும் எனஇரண்டின்
நீள்வினையால் நீளும் குடி. **1022**

आळ् विनैयुम् आन्ड्र अरिवुम् ऍन इरण्डिन्
नीळ् विनैयाल् नीळुम् कुडि.

सत् प्रयत्न गंभीर मति, ये दोनों ही अंश।
क्रियाशील जब हैं सतत, उन्नत होता वंश।। १०२२

குடிசெய்வல் என்னும் ஒருவற்குத் தெய்வம்
மடிதற்றுத் தான்முந் துறும். **1023**

कुडि शॅय्वल् ऍन्नुम् ओरुँवरुकुत् दॅय्वम्
मडि तट्रुत् तान् मुन्दुरुम्.

'कुल को उन्नत मैं करूँ,' कहता है दृढ़ बात।
तो आगे बढ़ कमर कस, दैव बँटावे हाथ।। १०२३

சூழாமல் தானே முடிவெய்தும் தம்குடியைத்
தாழாது உஞற்று பவர்க்கு. **1024**

शूषामल् ताने मुडिवॅय्दुम् तम् कुडियैत्
ताषादु उञट्रुपवर्क्कु.

कुल हित जो अविलम्ब ही, हैं प्रयत्न में चूर।
अनजाने ही यत्न वह, बने सफलता पूर।। १०२४

अनजाने ही—अपने आप ही। पूर—पूर्ण।

குற்றம் இலனாய்க் குடிசெய்து வாழ்வானைச்
சுற்றமாச் சுற்றும் உலகு. **1025**

कुट्रम् इलनाय्क् कुडिशॅय्दु वाष्वानैच्
चुट्रमाच् चुट्रुम् उलहु.

कुल उन्नति हित्त दोष बिन, जिसका है आचार।
बन्धु बनाने को उसे, घेर रहा संसार।। १०२५

நல்லாண்மை என்பது ஒருவற்குத் தான்பிறந்த
இல்லாண்மை ஆக்கிக் கொளல். 1026

नल्लाण्मै ऍन्बदु ओरुवर्कुत् तान् पिरन्द
इल्लाण्मै आक्किक् कॉळल्.

स्वयं जनित निज वंश का, परिपालन का मान।
अपनाना है मनुज को, उत्तम पौरुष जान।। १०२६

அமரகத்து வன்கண்ணர் போலத் தமரகத்தும்
ஆற்றுவார் மேற்றே பொறை. 1027

अमरहत्तु वन् कण्णर् पोलत् तमरहत्तुम्
आट्रुवार् मेट्रे पोरै.

महावीर रणक्षेत्र में, ज्यों हैं जिम्मेदार।
त्यों है सुयोग्य व्यक्ति पर, निज कुटुंब का भार।। १०२७

குடிசெய்வார்க்கு இல்லை பருவம் மடிசெய்து
மானம் கருதக் கெடும். 1028

कुडि शॅय्वार्क्कु इल्लै परुवम् मडि शॅय्दु
मानम् करुदक् कॅडुम्.

कुल-पालक का है नहीं, कोई अवसर ख़ास।
आलसवश मानी बने, तो होता है नाश।। १०२८

नहीं.....ख़ास—विशेष समय की प्रतीक्षा में चुप नहीं रहना चाहिये। हमेशा अपने काम पर तत्पर रहना चाहिये। मानी.... नाश—वैसे ही झूठे गौरव के लिये सुस्ती में पड़ कर कर्तव्य से विमुख न रहना चाहिये।

இடும்பைக்கே கொள்கலங் கொல்லோ குடும்பத்தைக்
குற்றம் மறைப்பான் உடம்பு. 1029

इडुम्बैक्के कॉळ्कलङ् कॉल्लो कुडुम्बत्तैक्
कुट्रम् मऱैप्पान् उडम्बु.

जो होने देता नहीं, निज कुटुंब में दोष।
उसका बने शरीर क्या, दुख-दर्दों का कोष।। १०२९

இடுக்கண்கால் கொன்றிட வீழும் அடுத்தூன்றும்
நல்லாள் இலாத குடி. 1030

इडुक्कण् काल् कॉन्ड्रिड वीषुम् अडुत्तून्ड्रुम्
नल्लाळ् इलाद कुडि.

योग्य व्यक्ति कुल में नहीं, जो थामेगा टेक।
जड़ में विपदा काटते, गिर जाये कुल नेक।। १०३०

इस दोहे का भाव यह है कि कुल रूपी पेड़ को थामने के लिये सक्षम व्यक्ति के अभाव में, विपत्ति रूपी कुल्हाड़ी से कट कर वह गिर जायगा।

அதிகாரம்–104   अध्याय - १०४   குடியியல் प्रजा — प्रकरण

உழவு   कृषि   उऴवु

சுழன்றும்ஏர்ப் பின்னது உலகம் அதனால்
உழந்தும் உழவே தலை. 1031

शुषन्ड्रुम् एर्प्पिन्नदु उलहम् अदनाल्
उऴन्दुम् उऴवे तलै.

कृषि-अधीन ही जग रहा, रह अन्यों में घूर्ण।
सो कृषि सबसे श्रेष्ठ है, यद्यपि है श्रमपूर्ण।। १०३१

रह..... घूर्ण—दूसरे प्रकार के काम—धंधों में पड़कर घूमते रहता है।

உழுவார் உலகத்தார்க்கு ஆணிஅஃ தாற்றாது
எழுவாரை எல்லாம் பொறுத்து. 1032

उषुवार् उलहत्ताक्कु आणि अह्दाट्रादु
ऍषुवारै ऍल्लाम् पॊरुत्तु.

जो कृषि की क्षमता बिना, करते धंधे अन्य।
कृषक सभी को वहन कर, जगत-धुरी सम गण्य।। १०३२

உழுதுண்டு வாழ்வாரே வாழ்வார்மற் றெல்லாம்
தொழுதுண்டு பின்செல் பவர். 1033

उषुदुण्डु वाष्वारे वाष्वार् मट्रॅल्लाम्
तॊषुदुण्डु पिन् शॅल्पवर.

जो जीवित हैं हल चला, उनका जीवन धन्य।
झुक कर खा पी कर चलें, उनके पीछे अन्य।। १०३३

பலகுடை நீழலும் தங்குடைக்கீழ்க் காண்பர்
அலகுடை நீழ லவர். 1034

पलकुडै नीषलुम् तङ्गुडैक् कीष्क् काण्बर्
अलहुडै नीषलवर्.

निज नृप छत्रच्छाँह में, कई छत्रपति शान।
छाया में पल धान की, लाते सौम्य किसान।। १०३४

इस दोहे का भाव यह है कि किसान अनाज का उत्पादन बढ़ा कर राज्य को इतना शक्तिशाली बनाते हैं कि अन्य देश के राजा भी इनके राजा के अधीन हो जाते हैं। छाया.... धान की – धान के पौधों की छाया में पल कर, अर्थात् खेती से पोषित हो कर।

இரவார் இரப்பார்க்கொன்று ஈவர் கரவாது
கைசெய்தூண் மாலை யவர். **1035**

इरवार् इरप्पार्क्कोन्ड्रु ईवर् करवादु
कै शेय्दूण् मालैयवर्.

निज कर से हल जोत कर, खाना जिन्हें स्वभाव।
माँगें नहिं, जो माँगता, देंगे बिना दुराव।। १०३५

உழவினார் கைம்மடங்கின் இல்லை விழைவதூஉம்
விட்டேமென் பார்க்கும் நிலை. **1036**

उऴविनार् कैम्मडंगिन् इल्लै विऴैवदूउम्
विट्टेम् ऍन्बार्क्कुम् निलै.

हाथ खिँचा यदि कृषक का, उनकी भी नहिं टेक।
जो ऐसे कहते रहे, 'हम हैं निस्पृह एक'।। १०३६

निस्पृह—निष्काम, कामना रहित। अर्थात् सन्यासी लोग। टेक—सहारा, आश्रय।

தொடிப்புழுதி கஃசா உணக்கின் பிடித்தெருவும்
வேண்டாது சாலப் படும். **1037**

तॊडिप्पुऴुदि कह्शा उणक्किन् पिडित्तॆरुवुम्
वेण्डादु शालप्पडुम्.

एक सेर की सूख यदि, पाव सेर हो धूल।
मुट्ठी भर भी खाद बिन, होगी फ़सल अतूल।। १०३७

सूख–सूखा (मिट्टी का ढेला)। अतूल–अतुल, असीम। फ़स्ल काटने के बाद गरमी में मिट्टी को इतना सूखना चाहिये कि गीली रहते समय उसका वज़न जितना था उससे एक चौथा हो जाय, फिर जोतने पर वह नरम धूल बने।

ஏரினும் நன்றால் எருஇடுதல் கட்டபின்
நீரினும் நன்றதன் காப்பு. ***1038***

एरिनुम नन्ड्राल् ऎरु इडुदल् कट्टपिन्
नीरिनुम् नन्ड्रदन् कापुपु.

खेत जोतने से अधिक, खाद डालना श्रेष्ठ।
बाद निराकर सींचना, फिर भी रक्षण श्रेष्ठ।। १०३८

செல்லான் கிழவன் இருப்பின் நிலம்புலந்து
இல்லாளின் ஊடி விடும். ***1039***

शॆल्लान् किष़वन् इरुप्पिन् निलम् पुलन्दु
इल्लाळिन् ऊडि विडुम्.

चल कर यदि देखे नहीं, मालिक दे कर ध्यान।
गृहिणी जैसी रूठ कर, भूमि करेगी मान।। १०३९

இலமென்று அசைஇ இருப்பாரைக் காணின்
நிலமென்னும் நல்லாள் நகும். ***1040***

इलमॆन्ड्रु अशैइ इरुप्पारैक्काणिन्
निलमॆन्नुम् नल्लाळ् नहुम्.

'हम दरिद्र हैं' यों करे, सुस्ती में आलाप।
भूमि रूप देवी उसे, देख हँसेगी आप।। १०४०

நல்குரவு दरिद्रता नलहुरवु

இன்மையின் இன்னாதது யாதெனின் இன்மையின்
இன்மையே இன்னா தது. 1041

इन्मैयिन् इन्नाददु यादॆंनिन् इन्मैयिन्
इन्मैये इन्नाददु.

यदि पूछो दारिद्र्य सम, दुःखद कौन महान।
तो दुःखद दारिद्र्य सम, दरिद्रता ही जान।। १०४१

இன்மை எனவொரு பாவி மறுமையும்
இம்மையும் இன்றி வரும். 1042

इन्मै ऍन ओरुँ पावि मऱुमैयुम्
इम्मैयुम् इन्ड्रि वरुम्.

निर्धनता की पापिनी, यदि रहती है साथ।
लोक तथा परलोक से, धोना होगा हाथ।। १०४२

தொல்வரவும் தோலும் கெடுக்கும் தொகையாக
நல்குரவு என்னும் நசை. 1043

तॊंल्वरवुम् तोलुम् कॅंडुक्कुम् तॊंहैयाह
नलहुरवु ऍन्नुम् नशै.

निर्धनता के नाम से, जो है आशा-पाश।
कुलीनता, यश का करे, एक साथ ही नाश।। १०४३

இற்பிறந்தார் கண்ணேயும் இன்மை இளிவந்த
சொற்பிறக்கும் சோர்வு தரும். 1044

इरॖपिऱन्दारॖ कणॖणेयुम् इनॖमै इळिवन्द
शॉरॖपिऱक्कुम् शोरवु तरुम्.

निर्धनता पैदा करे, कुलीन में भी ढील।
जिसके वश वह कह उठे, हीन वचन अश्लील।। १०४४

நல்குரவு என்னும் இடும்பையுள் பல்குரைத்
துன்பங்கள் சென்று படும். 1045

नलॖहुरवु ऍन्नुम इडुम्बैयुळॖ पलॖहुरैतॖ
तुन्बङ्गळॖ शॅन्ड्रु पडुम्.

निर्धनता के रूप में, जो है दुख का हाल।
उसमें होती है उपज, कई तरह की साल।। १०४५

साल—वेदना।

நற்பொருள் நன்குணர்ந்து சொல்லினும் நல்கூர்ந்தார்
சொற்பொருள் சோர்வு படும். 1046

नरॖपॉरुळॖ ननॖगुणरॖन्दु शॉलॖलिनुम् नलॖहूरॖन्दारॖ
शॉरॖपॉरुळॖ शोरवु पडुम्.

यद्यपि अनुसंधान कर, कहे तत्व का अर्थ।
फिर भी प्रवचन दीन का, हो जाता है व्यर्थ।। १०४६

அறஞ்சாரா நல்குரவு ஈன்றதா யானும்
பிறன்போல நோக்கப் படும். 1047

अरञ्चारा नलॖहुरवु ईन्ड्रतायानुम्
पिऱनॖपोल नोक्कपॖपडुम्.

जिस दरिद्र का धर्म से, कुछ भी न अभिप्राय।
जननी से भी अन्य सम, वह तो देखा जाय।। १०४७

जिस...... अभिप्राय–दरिद्र का धर्म कार्य से कुछ मतलब नहीं अर्थात् वह असमर्थ रहेगा।

இன்றும் வருவது கொல்லோ நெருநலும்
கொன்றது போலும் நிரப்பு. 1048

इन्ड्रुम् वरुवदु कोॅल्लो नेॅरुनलुम्
कोॅन्ड्रदु पोलुम् निरप्पु.

कंगाली जो कर चुकी, कल मेरा संहार।
आयेगी क्या आज भी, करने उसी प्रकार।। १०४८

यह नित्य–दरिद्र का उद्गार है और इससे यह साफ़ प्रकट होता है कि उसका दैनिक जीवन कितना दुःखमय है।

நெருப்பினுள் துஞ்சலும் ஆகும் நிரப்பினுள்
யாதொன்றும் கண்பாடு அரிது. 1049

नेॅरुप्पिनुळ् तुञ्जलुम् आहुम् निरप्पिनुळ्
यादोॅन्ड्रुम् कण्पाडु अरिदु.

अन्तराल में आग के, सोना भी है साध्य।
आँख झपकना भी ज़रा, दारिद में नहिं साध्य।। १०४९

अंतराल में–बीच में। दारिद–दरिद्रता।

துப்புரவு இல்லார் துவரத் துறவாமை
உப்பிற்கும் காடிக்கும் கூற்று. 1050

तुप्पुरवु इल्लार् तुवरत् तुऱ्वामै
उप्पिऱ्कुम् काडिक्कुम् कूट्ऱु.

भोग्य-हीन रह, दीन का, लेना नहिं संन्यास।
मॉंड-नमक का यम बने, करने हित है नाश।। १०५०

मांड–नमक..... नाश–रूखा-सूखा खा कर व्यर्थ जीवन बिताना।

அதிகாரம்-106 अध्याय - १०६ குடியியல் प्रजा – प्रकरण

இரவு याचना इरवु

இரக்க இரத்தக்கார்க் காணின் கரப்பின்
அவர்பழி தம்பழி யன்று. 1051

इरक्क इरत्तक्कार्क् काणिन् करप्पिन्
अवर पऴि तम् पऴियन्ड्रु.

याचन करने योग्य हों, तो मॉंगना ज़रूर।
उनका गोपन-दोष हो, तेरा कुछ न कसूर।। १०५१

गोपन–दोष–छिपाने का दोष (धन रख कर भी अपनी असमर्थता प्रकट करके इनकार करना)।

இன்பம் ஒருவற்கு இரத்தல் இரந்தவை
துன்பம் உறூஅ வரின். 1052

इन्बम् ओरुवऱ्कु इरत्तल् इरन्दवै
तुन्बम् उऱूअ वरिन्

याचित चीज़ें यदि मिलें, बिना दिये दुख-दून्द।
याचन करना मनुज को, देता है आनन्द।। १०५२

கரப்பிலா நெஞ்சின் கடனறிவார் முன்நின்று
இரப்புமோ ரேஎர் உடைத்து. 1053

करप्पिला नैंञ्जिन् कडनरिवार् मुन् निन्ड्रु
इरप्पुमोरेएॅर् उडैत्तु.

खुला हृदय रखते हुए, जो मानेंगे मान।
उनके सम्मुख जा खड़े, याचन में भी शान।। १०५३

मानेंगे मान—अपने गौरव का ख्याल करेंगे।

இரத்தலும் ஈதலே போலும் கரத்தல்
கனவிலும் தேற்றாதார் மாட்டு. 1054

इरत्तलुम् ईदले पोलुम् करत्तल्
कनविलुम् तेट्रादार् माट्टु.

जिन्हें स्वप्न में भी 'नहीं', कहने की नहिं बान।
उनसे याचन भी रहा, देना ही सम जान।। १०५४

கரப்பிலார் வையகத்து உண்மையால் கண்ணின்று
இரப்பவர் மேற்கொள் வது. 1055

करप्पिलार् वैयहत्तु उण्मैयाल् कण्णिन्ड्रु
इरप्पवर् मेर्कॉळ्वदु.

सम्मुख होने मात्र से, बिना किये इनकार।
दाता हैं जग में, तभी, याचन है स्वीकार।। १०५५

கரப்பிடும்பை இல்லாரைக் காணின் நிரப்பிடும்பை
எல்லாம் ஒருங்கு கெடும். 1056

करप्पिडुम्बै इल्लारैक्काणिन् निरप्पिडुम्बै
ऍल्लाम् ऑरुङ्गु केडुम्.

उन्हें देख जिनको नहीं, 'ना' कह सहना कष्ट।
दुःख सभी दारिद्र्य के, एक साथ हों नष्ट।। १०५६

இகழ்ந்தெள்ளாது ஈவாரைக் காணின் மகிழ்ந்துள்ளம்
உள்ளுள் உவப்பது உடைத்து. 1057

इहष्न्दॆ‌ळ्ळादु ईवारैक्काणिन् महिष्न्दुळ्ळम्
उळ्ळुळ् उवप्पदु उडैत्तु.

बिना किये अवहेलना, देते जन को देख।
मन ही मन आनन्द से, रहा हर्ष-अतिरेक।। १०५७

இரப்பாரை இல்லாயின் ஈர்ங்கண்மா ஞாலம்
மரப்பாவை சென்றுவந் தற்று. 1058

इरप्पारै इल्लायिन् ईर्ङ्कण् मा ञालम्
मरप्पावै शॆन्ड्रु वन्दट्रु.

शीतल थलयुत विपुल जग, यदि हो याचक-हीन।
कठपुतली सम वह रहे, चलती सूत्राधीन।। १०५८

ஈவார்கண் என்னுண்டாம் தோற்றம் இரந்துகோள்
மேவார் இலாஅக் கடை. 1059

ईवार्कण् ऍन्नुण्डाम् तोट्रम् इरन्दुकोळ्
मेवार् इला अक् कडै.

जब कि प्रतिग्रह चाहते, मिलें न याचक लोग।
दाताओं को क्या मिले, यश पाने का योग।। १०५९

पिछले दोहे में यह कहा गया कि यदि याचक न रहा तो दाता को क्रियाशील होने का अवसर न मिलेगा और उसका चलना फिरना सूत्रधार के अधीन चलती फिरती कठपुतली के समान रहेगा। फिर इस दोहे में यह बताया गया है दाताओं को कीर्ति पाने के लिये याचकों का आभार मानना चाहिये।

இரப்பான் வெகுளாமை வேண்டும் நிரப்பிடும்பை
தானேயும் சாலும் கரி. **1060**

इरप्पान् वॆहुळामै वेण्डुम् निरप्पिडुम्बै
तानेयुम् शालुम् करि.

याचक को तो चाहिये, ग्रहण करे अक्रोध।
निज दरिद्रता-दुःख ही, करे उसे यह बोध।। १०६०

இரவச்சம் याचना-भय इरवच्चम्

கரவாது உவந்தீயும் கண்ணன்னார் கண்ணும்
இரவாமை கோடி யுறும். **1061**

करवादु उवन्दीयुम् कण्णन्नार् कण्णुम्
इरवामै कोडियुरुम्.

जो न छिपा कर, प्रेम से, करते दान यथेष्ट।
उनसे भी नहिं माँगना, कोटि गुना है श्रेष्ठ।। १०६१

இரந்தும் உயிர்வாழ்தல் வேண்டின் பரந்து
கெடுக உலகியற்றி யான். **1062**

इरन्दुम् उयिर्वाष्दल् वेण्डिन् परन्दु
कॅडुह उलहियट्रियान्.

यदि विधि की करतार ने, भीख माँग नर खाय।
मारा मारा फिर वही, नष्ट-भ्रष्ट हो जाय।। १०६२

'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में इस दोहे की तुलना बालकृषण शर्मा 'नवीन' जी की कविता से की गई है।

இன்மை இடும்பை இரந்துதீர் வாமென்னும்
வன்மையின் வன்பாட்டது இல். **1063**

इन्मै इडुम्बै इरन्दु तीर्वामॅन्नुम्
वन्मैयिन् वन्पाट्टदु इल्.

'निर्धनता के दुःख को, करें माँग कर दूर'।
इस विचार से क्रूरतर, और न है कुछ क्रूर।। १०६३

இடமெல்லாம் கொள்ளாத் தகைத்தே இடமில்லாக்
காலும் இரவொல்லாச் சால்பு. **1064**

इडमॅल्लाम् कॉळ्ळात् तहैत्ते इडमिल्लाक्
कालुम् इरवॉल्लाच् चाल्पु.

दारिदवश भी याचना, जिसे नहीं स्वीकार।
भरने उसके पूर्ण-गुण, काफ़ी नहिं संसार।। १०६४

தெண்ணீர் அடுபுற்கை யாயினும் தாள்தந்தது
உண்ணலி னூங்கினியது இல். 1065

तॅण्णीर् अडुपुर्कैयायिनुम् ताळ् तन्ददु
उण्णलिनूङ्गिनियदु इल्.

पका माँड ही क्यों न हो, निर्मल नीर समान।
खाने से श्रम से कमा, बढ़ कर मधुर न जान।। १०६५

खाने से..... कमा—परिश्रम करके उस माँड को खाने से।

ஆவிற்கு நீரென்று இரப்பினும் நாவிற்கு
இரவின் இளிவந்தது இல். 1066

आविर्कु नीरॅन्ड्रु इरप्पिनुम् नाविर्कु
इरविन् इळिवन्ददु इल्.

यद्यपि माँगे गाय हित, पानी का ही दान।
याचन से बदतर नहीं, जिह्वा को अपमान।। १०६६

जिह्वा—जीभ।

இரப்பன் இரப்பாரை எல்லாம் இரப்பின்
கரப்பார் இரவன்மின் என்று. 1067

इरप्पन् इरप्पारै ऍल्लाम् इरप्पिन्
करप्पार् इरवन्मिन् ऍन्ड्रु.

याचक सबसे याचना, यही कि जो भर स्वाँग।
याचन करने पर न दें, उनसे कभी न माँग।। १०६७

'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में इसका उल्लेख हुआ है, 'नवीन' जी की कविता के प्रसंग में।

இரவென்னும் ஏமாப்பில் தோணி கரவென்னும்
பார்தாக்கப் பக்கு விடும். **1068**

इरवॆन्नुम् एमाप्पिल् तोणि करवॆन्नुम्
पारताक्कप् पक्कु विडुम्.

याचन रूपी नाव यदि, जो रक्षा बिन नग्न।
गोपन की चट्टान से, टकराये तो भग्न।। १०६८

गोपन की चट्टान – (धनी अपने धन को) छिपाने की चट्टान।

இரவுள்ள உள்ளம் உருகும் கரவுள்ள
உள்ளதூஉம் இன்றிக் கெடும். **1069**

इरवुळ्ळ उळ्ळम् उरुहुम् करवुळ्ळ
उळ्ळदूउम् इन्ड्रिक् कॆडुम्.

दिल गलता है, ख्याल कर, याचन का बदहाल।
गले बिना ही नष्ट हो, गोपन का कर ख्याल।। १०६९

गले बिना.....ख्याल – (ने देकर) धन छिपानेवालों का विचार करके हृदय फट जाता है जब कि याचकों को देखकर वह गलता है।

கரப்பவர்க்கு யாங்கொளிக்குங் கொல்லோ இரப்பவர்
சொல்லாடப் போஒம் உயிர். **1070**

करप्पवर्क्कु याङ्गॊळिक्कुङ् कॊल्लो इरप्पवर्
शॊल्लाडप् पोऒम् उयिर्.

'नहीं' शब्द सुन जायगी, याचक जन की जान।
गोपन करते मनुज के, कहाँ छिपेंगे प्राण।। १०७०

கயமை नीचता कयमै

மக்களே போல்வர் கயவர் அவரன்ன
ஒப்பாரி யாங்கண்டது இல். **1071**

मक्कळे पोलूवर कयवर् अवरन्न
ओॅप्पारि याङ् कण्डदु इल्.

हैं मनुष्य के सदृश ही, नीच लोग भी दृश्य।
हमने तो देखा नहीं, ऐसा जो सादृश्य।। १०७१

नीच और कुलीन में बाहरी रूप में समता देख कर आश्चर्य का भाव इस दोहे में व्यंजित किया गया है।

நன்றறி வாரிற் கயவர் திருவுடையர்
நெஞ்சத்து அவலம் இலர். **1072**

नन्ड्ररिवारिर् कयवर् तिरुवुडैयर्
नॆॅञ्जत्तु अवलम् इलर्.

चिन्ता धर्माधर्म की, नहीं हृदय के बीच।
सो बढ़ कर धर्मज्ञ से, भाग्यवान हैं नीच।। १०७२

सो.....नीच–जब कि धर्मज्ञों को यह चिन्ता रहती है कि हम धर्म–मार्ग से विचलित न हो जायं, नीच लोग अधार्मिक काम निश्चिन्त हो कर करते हैं। भाग्यवान कहने में व्यंग्य है।

தேவர் அனையர் கயவர் அவருந்தாம்
மேவன செய்தொழுக லான். **1073**

देवर् अनैयर् कयवर् अवरुन् ताम्
मेवन शॆॅय्दॊॅषुहलान्.

नीच लोग हैं देव सम, क्योंकि निरंकुश जीव।
वे भी करते आचरण, मनमानी बिन सींव।। १०७३

देवों का उनकी उच्चता के कारण कोई नियामक नहीं है। मनमानी करनेवाले नीच लोगों पर भी किसी का वश नहीं चलता तो वे भी देवों के समान हैं। कैसा व्यंग्य है। सींव–सीमा।

அகப்பட்டி ஆவாரைக் காணின் அவரின்
மிகப்பட்டுச் செம்மாக்கும் கீழ். 1074

अहप्पट्टि आवारैक् काणिन् अवरिन्
मिहप्पट्टुच् चेॅम्माक्कुम् कीष़्.

मनमौजी ऐसा मिले, जो अपने से खर्व।
तो उससे बढ़ खुद समझ, नीच करेगा गर्व।। १०७४

खर्व–छोटा। गुंडापन में अपने से छोटों को देख कर नीच लोगों को यह गर्व होता है कि मैं उससे बढ़ कर हूँ।

அச்சமே கீழ்களது ஆசாரம் எச்சம்
அவாஉண்டேல் உண்டாம் சிறிது. 1075

अच्चमे कीष़्हळदु आचारम् ऍच्चम्
अवा उण्डेल् उण्डाम् शिऱिदु.

नीचों के आचार का, भय ही है आधार।
भय बिन भी कुछ तो रहे, यदि हो लाभ-विचार।। १०७५

आचार–सदाचार।

அறைபறை அன்னர் கயவர்தாம் கேட்ட
மறைபிறர்க்கு உய்த்துரைக்க லான். 1076

अऱै पऱै अन्नर् कयवर् ताम् केट्ट
मऱै पिऱर्क्कु उय्त्तुरैक्कलान्.

नीच मनुज ऐसा रहा, जैसा पिटता ढोल।
स्वयं सुने जो भेद हैं, ढो अन्यों को खोल।। १०७६

ஈர்ங்கை விதிரார் கயவர் கொடிறுடைக்கும்
கூன்கைய ரல்லா தவர்க்கு. 1077

ईरुङ्कै विदिरार् कयवर् कॉडिऱुडैक्कुम्
कून् कैयरल्लादवर्क्कु.

गाल-तोड़ घूँसा बिना, जो फैलाये हाथ।
झाडेंगे नहिं अधम जन, निज जूठा भी हाथ।। १०७७

சொல்லப் பயன்படுவர் சான்றோர் கரும்புபோல்
கொல்லப் பயன்படும் கீழ். 1078

शॉल्लप् पयन् पडुवर् शान्ड्रोर् करुम्बु पोल्
कॉल्लप् पयन् पडुम् कीष्.

सज्जन प्रार्थन मात्र से, देते हैं फल-दान।
नीच निचोड़ो ईख सम, तो देते रस-पान।। १०७८

உடுப்பதூஉம் உண்பதூஉம் காணின் பிறர்மேல்
வடுக்காண வற்றாகும் கீழ். 1079

उडुप्पदूउम् उण्पदूउम् काणिन् पिऱर्मेल्
वडुक्काण वट्राहुम् कीष्.

खाते पीते पहनते, देख पराया तोष।
छिद्रान्वेषण-चतुर जो, नीच निकाले दोष।। १०७९

तोष—संतोष। नीच ईर्ष्यावश सुखी लोगों पर झूठा दोषारोप करते हैं।

எற்றிற் குரியர் கயவரொன்று உற்றக்கால்
விற்றற்கு உரியர் விரைந்து. 1080

ऍट्रिऱ्कुरियर् कयवरॊन्ड्रु उट्रक्काल्
विट्रऱ्कु उरियर् विरैन्दु.

नीच लोग किस योग्य हों, आयेंगे क्या काम।
संकट हो तो झट स्वयं, बिक कर बनें गुलाम।। १०८०

अर्थ-कांड समाप्त

காமத்துப்பால்

कामत्तुप्पाल्
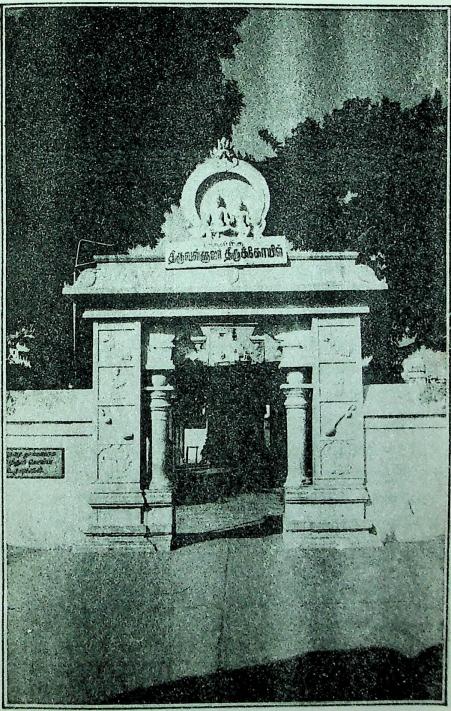
काम-कांड

कामत्तुप्पाल्

काम–कांड

तिरुक्कुरल – माहात्म्य में मैंने लिखा है कि धर्म और अर्थ–कांड नीतिप्रधान होने पर भी उनमें कविता की सरसता और सौन्दर्य हैं ही। फिर काम–कांड की तो क्या पूछना? संयोग और विप्रलंब श्रृंगर की ऐसी हृदयग्राही छटा अन्यत्र दुर्लभ है। मुक्तक काव्य की तरह जहाँ एक एक 'कुरल' अपने में पूर्ण है वहाँ सारे कांड में एक सुन्दर नाटक का सा भान होता है। इस नाटक में प्रधान पात्र नायक और नायिका हैं और उनकी सहायता के लिये एक सखी और एक सखा का भी आयोजन हुआ है। पूर्वराग, प्रथम मिलन, संयोगानन्द, विरह–दुःख फिर पुनर्मिलन के साथ यह सरस कांड समाप्त होता है।

मूल ग्रंथ में इन पात्रों का प्रस्ताव नहीं है फिर भी प्राचीन परंपरा के अनुसार टीकाकारों ने इसका निर्णय किया है अमुक उक्ति अमुक पात्र की है। विद्वानों का मत है कि इस कांड में प्रतिपादित श्रृंगार का विषय न केवल भौतिक है परन्तु आध्यात्मिक है तथा जीवात्मा और परमात्मा से संबंधित माधुर्य भाव को व्यक्त करता है।

மலரினும் மெல்லிது காமம் சிலர் அதன்
செவ்வி தலைப்படு வார். **1289**

मलरिनुम् मॆ̆ल्लिदु कामम् शिलर् अदन्
शॆ̆व्वि तलैप्पडुवार्.

मृदुतर होकर सुमन से,
जो रहता है काम।
बिरले जन को प्राप्त है,
उसका शुभ परिणाम॥ १२८९

தகையணங் குறுத்தல் **सौन्दर्य की पीड़ा** **तहैयणङ्गुरुत्तल्**

அணங்குகொல் ஆய்மயில் கொல்லோ கனங்குழை
மாதர்கொல் மாலுமென் நெஞ்சு. **1081**

अणङ्गु कॉल् आयूमयिल् कॉल्लो कनङ्कुषै
मादर कॉल् मालुम् ऍन् नॆञ्जु.

क्या यह है देवांगना, या सुविशेष मयूर।
या नारी कुंडल-सजी, मन है भ्रम में चूर।। १०८१

संयोगवश नायक और नायिका का मिलन हुआ तो यह नायक का स्वगत कथन है। १०८१ से १०९८ तक वही है।

நோக்கினாள் நோக்கெதிர் நோக்குதல் தாக்கணங்கு
தானைக்கொண் டன்னது உடைத்து. **1082**

नोकूकिनाळ् नोकूकॅदिर् नोक्कुदल् ताकूकणङ्गु
तानैकूकॉण्डन्नदु उडैत्तु.

दृष्टि मिलाना सुतनु का, होते दृष्टि-निपात।
हो कर खुद चँडी यथा, चढ़ आये दल साथ।। १०८२

सुतनु — सुंदर शरीरवाली।

பண்டறியேன் கூற்றென் பதனை இனியறிந்தேன்
பெண்டகையால் பேரமர்க் கட்டு. **1083**

पण्डरियेन् कूट्रॅन्बदनै इनियरिन्देन्
पॅण्डहैयाल् पेरमरूक् कट्टु.

पहले देखा है नहीं, अब देखा यम कौन।
लड़ते विशाल नेत्रयुत, वह है स्त्री-गुण-भौन।। १०८३

स्त्री–गुण–भौन — स्त्रियों के योग्य गुणों का भण्डार। भौन–भवन।

கண்டார் உயிருண்ணும் தோற்றத்தால் பெண்டகைப்
பேதைக்கு அமர்த்தன கண். 1084

कण्डार, उयिरुण्णुम् तोट्रत्ताल् पॆण्डहैप्
पेदैक्कु अमर्त्तन कण्.

मुग्धा इस स्त्री-रत्न के, दिखी दृगों की रीत।
खाते दर्शक-प्राण हैं, यों है गुण विपरीत।। १०८४

दिखी-रीत—आँखों का ऐसा ढंग दिखाई पड़ा। रीत-ढंग।

கூற்றமோ கண்ணோ பிணையோ மடவரல்
நோக்கம்இம் மூன்றும் உடைத்து. 1085

कूट्रमो कण्णो पिणैयो मडवरल्
नोक्कम् इम्मून्ड्रुम् उडैत्तु.

क्या यम है, या आँख है, या है मृगी सुरंग।
इस मुग्धा की दृष्टि में, है तीनों का ढंग।। १०८५

यम—मारना। आँख—दया दृष्टि। मृगी—चंचल दृष्टि मृगी सदृश। 'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में इस दोहे की तुलना 'रहीम' के दोहे से की गई है।

கொடும்புருவம் கோடா மறைப்பின் நடுங்கஞர்
செய்யல மன்இவள் கண். 1086

कॊडुम्पुरुवम् कोडा मऱैप्पिन् नडुङ्कञर्
शॆय्यल मन् इवळ् कण्.

ऋजु हो टेढ़ी भृकुटियाँ, मना करें दे छाँह।
तो इसकी आँखें मुझे, हिला, न लेंगी आह।। १०८६

आह लेना–सताना। ऋजु-सीधा। भृकुटी भौंह। इसका भाव यह है कि इसकी भौहें सीधी (सरल) न हो कर टेढ़ी (कुटिल) होने के कारण मुझे सता रही हैं।

கடாஅக் களிற்றின்மேல் கட்படாம் மாதர்
படாஅ முலைமேல் துகில். 1087

कडा अक् कळिट्रिन् मेल् कट्पडाम् मादर्
पडा अ मुलै मेल तुहिल्.

अनत कुचों पर नारि के, पड़ा रहा जो पाट
मद-गज के दृग ढांकता, मुख-पट सम वह ठाट।। १०८७

अनत-न झुका हुआ। कुच-स्तन। पाट-वस्त्र, पट। दृग-आँख।

ஒண்ணுதற் கொஓ உடைந்ததே ஞாட்பினுள்
நண்ணாரும் உட்குமென் பீடு. 1088

ऑॅण्णुतर् कोओॅ उडैन्ददे ञाट्पिनुळ्
नण्णारुम् उट्कुम् ऍन् पीडु.

उज्जवल माथे से अहो, गयी शक्ति वह रीत।
भिड़े बिना रण-भूमि में, जिससे रिपु हों भीत।। १०८८

रीत–खाली। नायक की अपार शक्ति बेकार हो गई।

பிணையேர் மடநோக்கும் நாணும் உடையாட்கு
அணிஎவனோ ஏதில தந்து. 1089

पिणैयेर् मड नोक्कुम् नाणुम् उडैयाट्कु
अणि ऍवनो एदिल तन्तु.

सरल दृष्टि हरिणी सदृश, औ ' रखती जो लाज।
उसके हित गहने बना, पहनाना क्या काज।। १०८९

உண்டார்கண் அல்லது அடுநறாக் காமம்போல்
கண்டார் மகிழ்செய்தல் இன்று. 1090

उण्डार्कण् अल्लदु अडु नराक् कामम् पोल्
कण्डार् महिष् शॅय्दल् इन्ड्रु.

हर्षक है केवल उसे, जो करता है पान।
दर्शक को हर्षक नहीं, मधु तो काम समान।। १०९०

குறிப்பறிதல् संकेत समझना कुऱिप्परिदल्

இருநோக்கு இவளுண்கண் உள்ளது ஒருநோக்கு
நோய்நோக்கொன் றந்நோய் மருந்து. 1091

इरुनोक्कु इवळ्णकण् उळ्ळदु ओरुनोक्कु
नोय्नोक्कॉन्ड्रन् नोय् मरुन्दु.

इसके कजरारे नयन, रखते हैं दो दृष्टि।
रोग एक, उस रोग की, दवा दूसरी दृष्टि।। १०९१

१०९१ से १०९८ तक नायक का स्वगत कथन।

கண்களவு கொள்ளும் சிறுநோக்கம் காமத்தில்
செம்பாகம் அன்று பெரிது. **1092**

कण् कळवु कॉॅ़ळ्ळुम् शिरु नोक्कम् कामत्तिल्
शॅम्पाहम् अन्ड्रु पॅरिदु.

आँख बचा कर देखना, तनिक मुझे क्षण काल।
अर्द्ध नहीं, संयोग का, उससे अधिक रसाल।। १०९२

रसाल–रसीला, मधुर। अर्द्ध नहीं–अर्थात् पूरा समझना चाहिये।

நோக்கினாள் நோக்கி இறைஞ்சினாள் அஃதவள்
யாப்பினுள் அட்டிய நீர். **1093**

नोक्किनाळ् नोक्कि इरैञ्जिनाळ् अहूदवळ्
यापूपिनुळ् अट्टिय नीर्.

देखा, उसने देख कर, झुका लिया जो सीस।
वह क्यारी में प्रेम की, देना था जल सींच।। १०९३

யான்நோக்குங் காலை நிலன்நோக்கும் நோக்காக்கால்
தான்நோக்கி மெல்ல நகும். **1094**

यान् नोक्कुङ्कालै निलन् नोक्कुम् नोक्काक्काल्
तान् नोक्कि मॅल्ल नहुम्.

मैं देखूँ तो डालती, दृष्टि भूमि की ओर।
ना देखूँ तो देख खुद, मन में रही हिलोर।। १०९५

குறிக்கொண்டு நோக்காமை அல்லால் ஒருகண்
சிறக்கணித்தாள் போல நகும். **1095**

कुरिक्कॉण्डु नोक्कामै अल्लाल् ऑरु कण्
शिरक्कणित्ताळ् पोल नहुम्.

सीधे वह नहीं देखती, यद्यपि मेरी ओर।
सुकुचाती सी एक दृग, मन में रही हिलोर।। १०९५

உரு அதவர்போல் சொலினும் செருஅர்சொல்
ஒல்லை உணரப்படும். 1096

उ़राअदवर् पोल् शौँलिनुम् शॅ़रा अर् शौँल्
ऑ़ल्लै उणरप्पडुम्.

यद्यपि वह अनभिज्ञ सी, करती है कटु बात।
बात नहीं है क्रुद्ध की, झट होती यह ज्ञात।। १०९६

செருஅச் சிறுசொல்லும் செற்றார்போல் நோக்கும்
உருஅர்போன்று உற்றார் குறிப்பு. 1097

शॅ़रा अच्चिऱु शौल्लुम् शॅट्रार् पोल् नोक्कुम्
उ़राअर् पोन्ड्रु उट्रार् कुरिप्पु.

रुष्ट दृष्टि है शत्रु सम, कटुक वचन सप्रीति।
दिखना मानों अन्य जन, प्रेमी जन की रीति।। १०९७

அசையியற்கு உண்டாண்டோர் ஏஎர்யான் நோக்கப்
பசையினள் பைய நகும். 1098

अशैयियऱ्कु उण्डाण्डोर् एएर्यान् नोक्कप्
पशैयिनळ् पैय नहुम्.

मैं देखूँ तो, स्निग्ध हो, करे मंद वह हास।
सुकुमारी में उस समय, एक रही छवि ख़ास।। १०९८

ஏதிலார் போலப் பொதுநோக்கு நோக்குதல்
காதலார் கண்ணே யுள. **1099**

एदिलार् पोलप् पॉंदु नोक्कु नोक्कुदल्
कादलार् कण्णेयुळ.

उदासीन हो देखना, मानों हो अनजान।
प्रेमी जन के पास ही, रहती ऐसी बान।। १०९९

१०९९ और ११०० ये दोहे सखी का स्वगत कथन हैं। नायक और नायिका दोनों का व्यवहार देख कर वह मन में यों सोचती है।

கண்ணொடு கண்ணிணை நோக்கொக்கின் வாய்ச்சொற்கள்
என்ன பயனும் இல. **1100**

कण्णोॅडु कण्णिणै नोक्कोॅक्किन् वाय्च्चोॅर्कळ्
ऍन्न पयनुम् इल.

नयन नयन मिल देखते, यदि होता है योग।
वचनों का मुँह से कहे, है नहिं कुछ उपयोग।। ११००

'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में इस दोहे की तुलना 'बिहारी' के दोहे से की गई है।

புணர்ச்சி மகிழ்தல् संयोग का आनन्द पुणर्च्चि महिष्दल्

கண்டுகேட்டு உண்டுயிர்த்து உற்றறியும் ஐம்புலனும்
ஒண்டொடி கண்ணே உள. 1101

कण्डु केट्टु उण्डुयिर्त्तु उट्ऱ्रियुम् ऐम्बुलनुम्
ऑण्डॉडि कण्णे उळ.

पंचेन्द्रिय सुख, रूप औ,' स्पर्श गंध रस शब्द।
उज्ज्वल चूड़ी से सजी, इसमें सब उपलब्ध।। ११०१

११०१ और ११०२ – नायक का स्वगत कथन है।

பிணிக்கு மருந்து பிறமன் அணியிழை
தன்நோய்க்குத் தானே மருந்து. 1102

पिणिक्कु मरुन्दु पिऱमन् अणियिषै
तन् नोयूक्कुत् ताने मरुन्दु.

रोगों की तो है दवा, उनसे अलग पदार्थ।
जो सुतनू का रोग है, दवा वही रोगार्थ।। ११०२

सुतनू–सुंदरी नायिका। वही–नायिका ही।

தாம்வீழ்வார் மென்றோள் துயிலின் இனிதுகொல்
தாமரைக் கண்ணான் உலகு. 1103

ताम् वीष्वार् मॅन्ड्रोळ् तुयिलिन् इनिदु कॉल्
ताभरैक् कण्णान् उलहु.

निज दयिता मृदु स्कंध पर, सोते जो आराम।
उससे क्या रमणीय है, कमल-नयन का धाम।। १९०३

दयिता–प्रियतमा। कमल–धाम–वैकुंठ। स्कंध–कंधा।
११०३ और ११०४ नायक का सखा से कथन।

நீங்கின் தெறூஉம் குறுகுங்கால் தண்ணென்னும்
தீயாண்டுப் பெற்றாள் இவள். 1104

नीङ्गिन् तॆरूउम् कुरुहुङ्काल् तण्णॆन्नुम्
तीयाण्डुप् पॆट्राळ् इवळ्.

हटने पर देती जला, निकट गया तो शीत।
आग कहाँ से पा गयी, बाला यह विपरीत।। ११०४

'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में 'प्रसाद' जी की कविता से इसकी तुलना की गई है। बाला–नायिका। विपरीत–शीतल आग।

வேட்ட பொழுதின் அவையவை போலுமே
தோட்டார் கதுப்பினாள் தோள். 1105

वेट्ट पॊऴुदिन् अवैयवै पोलुमे
तोट्टार् कदुप्पिनाळ् तोळ्.

इच्छित ज्यों इच्छित समय, आकर दें आनन्द।
पुष्पालंकृत केशयुत, हैं बाला के स्कंध।। ११०५

११०५ से ११०९ तक नायक का सखी से कथन।

உறுதோறு உயிர்தளிர்ப்பத் தீண்டலால் பேதைக்கு
அமிழ்தின் இயன்றன தோள். 1106

उऱुतोऱु उयिर् तळिर्प्पत् तीण्डलाल् पेदैक्कु
अमिष्दिन् इयन्ड्रन तोळ्.

लगने से हर बार है, नवजीवन का स्पंद।
बने हुए हैं अमृत के, इस मुग्धा के स्कंध।। ११०६

தம்மில் இருந்து தமதுபாத்து உண்டற்றால்
அம்மா அரிவை முயக்கு. 1107

तम्मिल् इरुन्दु तमदु पात्तु उण्डट्राल्
अम्मा अरिवै मुयक्कु.

स्वगृह में स्वपादर्थ का, यथा बाँट कर भोग।
रहा गेहुँए रंग की, बाला से संयोग।। ११०७

भोग–देखिये दोहे ४३ और ४४.

வீழும் இருவர்க்கு இனிதே வளியிடை
போழப் படாஅ முயக்கு. 1108

वीषुम् इरुवर्क्कु इनिदे वळियिडै
पोषप्पडा अ मुयक्कु.

आलिंगन जो यों रहा, बीच हवा-गति बंद।
दोनों को, प्रिय औ' प्रिया, देता है आनन्द।। ११०८

ஊடல் உணர்தல் புணர்தல் இவைகாமம்
கூடியார் பெற்ற பயன். 1109

ऊडल् उणर्दल् पुणर्दल् इवै कामम्
कूडियार् पॅट्र पयन्.

मान मनावन मिलनसुख, ये जो हैं फल-भोग।
प्रेम-पाश में जो पड़े, उनको है यह भोग।। ११०९

அறிதோறு அறியாமை கண்டற்றால் காமம்
செறிதோறும் சேயிழை மாட்டு. 1110

अरितोरु अरियामै कण्डट्राल् कामम्
शॅरिदोरुम् शेयिषै माट्टु.

होते होते ज्ञान के, यथा ज्ञात अज्ञान।
मिलते मिलते सुतनु से, होता प्रणय-ज्ञान।। (नायक स्वगत) १११०

அதிகாரம்-112 अध्याय - ११२ களவியல் गुप्त — संयोग

நலம் புனைந்துரைத்தல் — सौन्दर्य-वर्णन — नलम् पुनैनुदुरैत्तल्

நன்னீரை வாழி அனிச்சமே நின்னினும்
மென்னீரள் யாம்வீழ் பவள். 1111

नन्नीरै वाषि अनिच्चमे निन्निनुम्
मॅन्नीरळ् याम् वीष्पवळ्.

रे अनिच्च तू धन्य है, तू है कोमल प्राण।
मेरी जो है प्रियतमा, तुझसे मृदुतर जान।। ११११

११११ और १११२ दोहे नायक का स्वगत कथन है। अनिच्च एक अतिमृदु फूल है।

மலர்காணின் மையாத்தி நெஞ்சே இவள்கண்
பலர்காணும் பூவொக்கும் என்று.　　**1112**

मलर् काणिन् मैयात्ति नेँञ्जे इवळ् कण्
पलर् काणुम् पूवोँक्कुम् ऍन्ड्रु.

बहु-जन-दृष्ट सुमन सदृश, इसके दृग को मान।
रे मन यदि देखो सुमन, तुम हो भ्रमित अजान।।　　१११२

सुमन–फूल, यहाँ कमल। नायक मन को समझाता है कि इसके नेत्रों को कमल के समान समझोगे तो वह तेरा भ्रम है। कमल से भी ये अधिक सुन्दर हैं। साधारण जन कमल को ऐसे देखते हैं।

முறிமேனி முத்தம் முறுவல் வெறிநாற்றம்
வேலுண்கண் வேய்த்தோ ளவட்கு.　　**1113**

मुऱिमेनि मुत्तम् मुरुवल् वेँऱि नाट्रम्
वेलुण्कण् वेय्त्तोळवट्कु.

पल्लव तन, मोती रदन, प्राकृत गंध सुगंध।
भाला कजरारा नयन, जिसके बाँस-स्कंध।।　　१११३

रदन–दांत। कजरारा–काजल लगा हुआ। स्कँध–कँधा। तमिल साहित्य में सुन्दर कँधों की उपमा बांस से की जाती है।
१११३ और १११४ दोहे नायक का सखा से कथन है।

காணிற் குவளை கவிழ்ந்து நிலன்நோக்கும்
மாணிழை கண்ணொவ்வேம் என்று.　　**1114**

काणिर् कुवळै कविष्न्दु निलन् नोक्कुम्
माणिषै कण्णोँव्वेम् ऍन्ड्रु.

कुवलय दल यदि देखता, सोच झुका कर सीस।
इसके दृग सम हम नहीं, होती उसको खीस।। १११४

कुवलय दल–नील कमल का समूह। खीस–लज्जा।

அனிச்சப்பூக் கால்களையாள் பெய்தாள் நுசுப்பிற்கு
நல்ல படாஅ பறை. 1115

अनिच्चप्पूक् काल्कळैयाळ् पैंय्दाळ् नुशुप्पिऱ्कु
नल्ल पडा अ पऱै.

धारण किया अनिच्च को, बिना निकाले वृन्त।
इसकी कटि हित ना बजे, मंगल बाजा-वृन्द।। १११५

१११५ से १११९ तक नायक का स्वगत कथन है। वृन्त–लंबा डंठल जिसमें फूल लगा होता है। नायिका की कमर इतनी पतली है कि डंठलयुक्त अनिच्च फूल के बोझ से कमर टूट जायगी। फलस्वरूप मृत्यु जिसकी सूचना अमंगल सूचक बाजे बजाने से होगी।

மதியும் மடந்தை முகனும் அறியா
பதியிற் கலங்கிய மீன். 1116

मदियुम् मडन्दै मुहनुम् अऱिया
पदियिर् कलङ्गिय मीन्.

महिला मुख औ' चन्द्र में, उडुगण भेद न जान।
निज कक्षा से छूट कर, होते चलायमान।। १११६

அறுவாய் நிறைந்த அவிர்மதிக்குப் போல
மறுவுண்டோ மாதர் முகத்து. 1117

अऱुवाय् निऱैन्द अविर्मदिक्कुप्पोल
मऱुवुण्डो मादर् मुहत्तु.

क्षय पाकर फिर पूर्ण हो, शोभित रहा मयंक।
इस नारी के वदन पर, रहता कहाँ कलंक।। १११७

मयंक-चाँद

மாதர் முகம்போல் ஒளிவிட வல்லையேல்
காதலை வாழி மதி. 1118

मादर् मुहम् पोल् ऑळिविड वल्लैयेल्
कादलै वाऴि मदि.

इस नारी के वदन सम, चमक सके तो चाँद।
प्रेम-पात्र मेरा बने, चिरजीवी रह चाँद।। १११८

மலரன்ன கண்ணாள் முகமொத்தியாயின்
பலர்காணத் தோன்றல் மதி. 1119

मलरन्न कण्णाळ् मुहमोॅत्तियायिन्
पलर् काणत् तोन्ड्रल् मदि.

सुमन-नयन युत वदन सम, यदि होने की चाह।
सबके सम्मुख चन्द्र तू, चमक न बेपरवाह।। १११९

அனிச்சமும் அன்னத்தின் தூவியும் மாதர்
அடிக்கு நெருஞ்சிப் பழம். **1120**

अनिच्चमुम् अन्नत्तिन् तूवियुम् मादर
अडिक्कु नेरुञ्जिप् पऴम्.

मृदु अनिच्च का फूल औ ' हंसी का मृदु तूल ।
बाला के मृदु पाद हित, रहे गोखरू शूल ।। ११२०

नायक का सखी से कथन। तूल—रूई जैसा पंख।

अதிகாரம்–113 अध्याय - ११३ களவியல் गुप्त — संयोग

காதற் சிறப்புரைத்தல் — प्रेम-प्रशंसा — कादऱ्चिऱप्पुरैत्तल्

பாலொடு தேன்கலந் தற்றே பணிமொழி
வாலெயிறு ஊறிய நீர். **1121**

पालॊडु तेन् कलन्दट्रे पणिमोऴि
वालॆयिऱु ऊऱिय नीर्.

मधुर भाषिणी सुतनु का, सित रद निःसृत नीर ।
यों लगता है मधुर वह, ज्यों मधु-मिश्रित क्षीर ।। ११२१

११२१ से ११२४ तक नायक का स्वगत कथन। 'अनुवाद के संबंध में' अध्याय में इस दोहे का उल्लेख हुआ है।

உடம்பொடு உயிரிடை என்னமற் றன்ன
மடந்தையொடு எம்மிடை நட்பு. 1122

उडम्बॉडु उयिरिडै ऍन्न मट्रन्न
'मडन्दैयॉडु ऍम्मिडै नट्पु.

जैसा देही देह का, होता है सम्बन्ध ।
वैसा मेरे, नारि के, बीच रहा सम्बन्ध ।। ११२२

கருமணியிற் பாவாய்நீ போதாயாம் வீழும்
திருநுதற்கு இல்லை இடம். 1123

करुमणियिर् पावाय् नी पोदायाम् वीषुम्
तिरुनुदर्कु इल्लै इडम्.

पुतली में पुतली अरी, हट जाओ यह जान ।
मेरी ललित ललाटयुत, प्यारी को नहिं स्थान ।। ११२३

पुतली में—आँख के बीच के काले भाग में। अरी पुतली – पुतली के अंदर गुडिया सी दीखनेवाली को नायक संबोधित करता है।

வாழ்தல் உயிர்க்கன்னள் ஆயிழை சாதல்
அதற்கன்னள் நீங்கு மிடத்து. 1124

वाष्दल् उयिर्क्कन्नळ् आयिषै शादल्
अदर्कन्नळ् नीङ्गुमिडत्तु.

जीना सम है प्राण हित, बाला, जब संयोग ।
मरना सम उसके लिये, होता अगर वियोग ।। ११२४

जीना..... हित—शरीर के साथ जीवित रहना। उसके लिये – शरीर के लिये। बाला—नायिका।

உள்ளுவன் மன்யான் மறப்பின் மறப்பறியேன்
ஒள்ளமர்க் கண்ணாள் குணம். **1125**

उळ्ळुवन् मन् यान् मऱप्पिन् मऱप्पऱियेन्
ऒळ्ळमर्क् कण्णाळ् गुणम्.

लड़ते दृग युत बाल के, गुण यदि जाऊँ भूल।
तब तो कर सकता स्मरण, पर जाता नहिं भूल।। १२२५

बाल—बाला, नायिका। दृग—नेत्र। यह नायक का सखी से कथन है।

கண்ணுள்ளின் போகார் இமைப்பின் பருவரார்
நுண்ணியர் எங்காதலவர். **1126**

कण्णुळ्ळिन् पोहार् इमैप्पिन् परुवरार्
नुण्णियर् एङ्कादलवर्.

दृग में से निकलें नहीं, मेरे सुभग सुजान।
झपकी लूँ तो हो न दुख, वे हैं सूक्ष्म प्राण।। ११२६

११२६ से ११३० तक नायिका का स्वगत कथन है।

கண்ணுள்ளார் காதலவராகக் கண்ணும்
எழுதேம் கரப்பாக்கு அறிந்து. **1127**

कण्णुळ्ळार् कादलवराहक् कण्णुम्
ऍषुदेम् करप्पाक्कु अऱिन्दु.

यों विचार कर नयन में, करते वास सुजान।
नहीं आंजतीं हम नयन, छिप जायेंगे जान।। ११२७

நெஞ்சத்தார் காதலவராக வெய்துண்டல்
அஞ்சுதும் வேபாக்கு அறிந்து. 1128

नेञ्जत्तार् कादलवराह वॅय्दुण्डल्
अञ्जुदुम् वेपाक्कु अरिन्दु.

यों विचार कर हृदय में, करते वास सुजान।
खाने से डर है गरम, जल जायेंगे जान।। ११२८

இமைப்பின் கரப்பாக்கு அறிவல் அனைத்திற்கே
ஏதிலர் என்னும் இவ் வூர். 1129

इमैप्पिन् करप्पाक्कु अरिवल् अनैततिर्के
एदिलर् ऍननुम् इव्वूर्.

झपकी लूँ तो ज्ञात है, होंगे नाथ 'विलीन।
पर इससे पुरजन उन्हें, कहते प्रेम विहीन।। ११२९

உவந்துறைவர் உள்ளத்துள் என்றும் இகந்துறைவர்
ஏதிலர் என்னும் இவ் வூர். 1130

उवत्तुरैवर् उळ्ळत्तुळ् ऍन्ड्रुम् इहत्तुरैवर्
एदिलर् ऍन्नुम् इव्वूर्.

यद्यपि दिल में प्रिय सदा, रहे मज़े में लीन।
पुरजन कहते तज चले, कहते प्रेम विहीन।। ११३०

நாணுத் துறவுரைத்தல் — लज्जा-त्याग-कथन — नाणुत् तुऱवुरैत्तल्

காமம் உழந்து வருந்தினார்க்கு ஏமம்
மடலல்லது இல்லை வலி. **1131**

कामम् उऴन्दु वरुन्दिनार्क्कु एमम्
मडलल्लदु इल्लै वलि.

जो चखने पर प्रेम रस, सहें वेदना हाय।
' मडल '-सुरक्षा के बिना, उन्हें न सबल सहाय।। ११३१

११३१ से ११३७ तक नायका का सखी से कथन।
'मडल'—ताड़ के पत्तों के डंठल कड़े और पांच, छे फुट लंबे होते हैं। उनके दोनों छोरों में आरी के जैसे दांत होते हैं। इन डंठलों से घोड़े के आकार का वाहन बना कर उसपर नायक बैठ जाता है और पुरजनों से उसको खिंचवाता है। इस प्रकार की आत्महिंसा के द्वारा वह अपने असफल प्रेम को प्रकट करके लोगों की सहानुभूति प्राप्त करता है जिसके फलस्वरूप वह नायिका से विवाह करने में सफल होता है। पुराने काल में यह प्रथा थी जो 'मडल–चढ़ना' कहलाती थी। घोडे के आकार का वाहन 'मडल' कहलाता था।

நோனா உடம்பும் உயிரும் மடலேறும்
நாணினை நீக்கி நிறுத்து. **1132**

नोना उडम्बुम् उयिरुम् मडलेरुम्
नाणिनै नीक्कि निऱुत्तु.

आत्मा और शरीर भी, सह न सके जो आग।
चढें ' मडल ' पर धैर्य से, करके लज्जा त्याग।। ११३२

நாணொடு நல்லாண்மை பண்டுடையேன் இன்றுடையேன்
காமுற்றார் ஏறும் மடல். 1133

नाणॊडु नल्लाण्मै पण्डुडैयेन् इन्ड्रुडैयेन्
कामुट्रार् एरुम् मडल्.

पहले मेरे पास थीं, सुधीरता और लाज।
कामी जन जिसपर चढें, वही ' मडल ' है आज।। ११३३

காமக் கடும்புனல் உய்க்குமே நாணொடு
நல்லாண்மை என்னும் புணை. 1134

कामक्कडुम् पुनल् उय्क्कुमे नाणॊडु
नल्लाण्मै ऍन्नुम् पुणै.

मेरी थी लज्जा तथा, सुधीरता की नाव।
उसे बहा कर ले गया, भीषण काम-बहाव।। ११३४

தொடலைக் குறுந்தொடி தந்தாள் மடலொடு
மாலை உழக்கும் துயர். 1135

तॊडलैक् कुरुन्तोडि तन्दाळ् मडलॊडु
मालै उष़क्कुम् तुयर्.

माला सम चूड़ी सजे, जिस बाला के हाथ।
उसने संध्या-विरह-दुख, दिया ' मडल ' के साथ।। ११३५

மடலூர்தல் யாமத்தும் உள்ளுவேன் மன்ற
படல் ஒல்லா பேதைக்கென் கண். 1136

मडलूर्दल् यामत्तुम् उळ्ळुवेन् मन्ड्र
पडल् ऑल्ला पेदैक्कॅन् कण्.

कटती मुग्धा की वजह, आँखों में ही रात।
अर्द्ध-रात्रि में भी ' मडल ', आता ही है याद।। ।। ११३६

கடலன்ன காமம் உழந்தும் மடலேறாப்
பெண்ணின் பெருந்தக்கது இல். 1137

कडलन्न कामम् उऴन्दुम् मडलेराप्
पॅण्णिन् पॅरुन्दक्कदु इल्.

काम-वेदना जलधि में, रहती मग्न यथेष्ट।
फिर भी 'मडल' न जो चढे, उस स्त्री से नहिं श्रेष्ठ।। ११३७

'मडल' न चढ़ने पर भी नायिका को अपने से श्रेष्ठ मानता है।

நிறையரியர் மன்அளியர் என்னாது காமம்
மறையிறந்து மன்று படும். 1138

निऱैयऱियर् मन् अळियर् ऍन्नादु कामम्
मऱैयिऱन्दु मन्ड्रु पडुम्.

संयम से रहती तथा, दया-पात्र अति वाम।
यह न सोच कर छिप न रह, प्रकट हुआ है काम।। ११३८

वाम—वामा, नायिका। ११३८ से ११४० तक नायिका का स्वगत कथन है। उसका प्रेम आत्मसंयम के कारण अब तक अंतरंग था। नायक के 'मडल—चढ़ने' से अब वह बहिरंग हो गया है।

அறிகிலார் எல்லாரும் என்றேஎன் காமம்
மறுகின் மறுகும் மருண்டு. 1139

अऱिहिलार् ऍल्लारुम् ऍन्ड्रे ऍन् कामम्
मऱुहिन् मऱुहुम् मरुण्डु.

मेरा काम यही समझ, सबको वह नहिं ज्ञात।
नगर-वीथि में घूमता, है मस्ती के साथ।। ११३९

யாங்கண்ணின் காண நகுப அறிவில்லார்
யாம்பட்ட தாம்படா வாறு. **1140**

याङ्कण्णिन् काण नहुप अरिविल्लार्
याम् पट्ट ताम् पडा वारु.

रहे भुक्त-भोगी नहीं, यथा चुकी हूँ भोग।
हँसते मेरे देखते, बुद्धि हीन जो लोग।। ११४०

அதிகாரம்-115 अध्याय - ११५ களவியல் गुप्त — संयोग

அலர் அறிவுறுத்தல் प्रवाद-जताना अलर् अरिवुरुत्तल्

அலரெழ ஆருயிர் நிற்கும் அதனைப்
பலரறியார் பாக்கியத் தால். **1141**

अलरॆष़ आरुयिर् निऱ्कुम् अदनैप्
पलरऱियार् पाक्कियत्ताल्.

प्रचलन हुआ प्रवाद का, सो टिकता प्रिय प्राण।
इसका मेरे भाग्य से, लोगों को नहिं ज्ञान।। ११४१

११४१ से ११४५ तक नायक का सखी से कथन। प्रवाद-जनश्रुति, अफ़वाह। अफ़वाह से नायिका के साथ विवाह होने में अनुकूल परिस्थिति होगी, तो नायक उसे अपना भाग्य समझता है।

மலரன்ன கண்ணாள் அருமை அறியாது
அலரெமக்கு ஈந்ததிவ் வூர். **1142**

मलरन्न कण्णाळ् अरुमै अरियादु
अलरॆमक्कु ईन्ददिव्वूर्.

सुमन-नयन-युत बाल की, दुर्लभता नहिं जान।
इस पुर ने अफ़वाह तो, की है मुझे प्रदान।। ११४२

உறுஅதோ ஊரறிந்த கௌவை அதனைப்
பெறுஅது பெற்றன்ன நீர்த்து. **1143**

उराअदो ऊरऱिन्द कौवै अदनैप्
पॆ॑ऱाअदु पॆ॑ट्रन्ऩ नीरत्तु.

क्या मेरे लायक नहीं, पुरजन-ज्ञात प्रवाद।
प्राप्त किये बिन मिलन तो, हुई प्राप्त सी बात।। १९४३

கவ்வையால் கவ்விது காமம் அதுஇன்றேல்
தவ்வென்னும் தன்மை இழந்து. **1144**

कव्वैयाल् कव्विदु कामम् अदु इन्ड्रेल्
तवॆ॑न्ऩुम् तऩ्मै इऴन्दु.

पुरजन के अपवाद से, बढ़ जाता है काम।
घट जायेगा अन्यथा, खो कर निज गुण-नाम।। ११४४

களித்தொறும் கள்ளுண்டல் வேட்டற்றால் காமம்
வெளிப்படுந் தோறும் இனிது. **1145**

कलित्तॉरुम् कळ्ळुण्डल् वेट्टट्राल् कामम्
वॆ॑ळिप्पडुन् तोऱुम् इनिदु.

होते होते मस्त ज्यों, प्रिय लगता मधु-पान।
हो हो प्रकट प्रवाद से, मधुर काम की बान।। ११४५

கண்டது மன்னும் ஒருநாள் அலர்மன்னும்
திங்களைப் பாம்புகொண்டற்று. **1146**

कण्डदु मन्ऩुम् ऑरुनाळ् अलर् मन्ऩुम्
तिङ्गळैप् पाम्बु कॉ॑ण्डट्रु.

प्रिय से केवल एक दिन, हुई मिलन की बात।
लेकिन चन्द्रग्रहण सम, व्यापक हुआ प्रवाद।। ११४६

११४६ से ११४९ तक नायिका का सखी से कथन।

ஊரவர் கௌவை எருவாக அன்னைசொல்
நீராக நீளும்இந் நோய். **1147**

ऊरवर् कौवै ऍरुवाह अन्नैशॉल्
नीराह नीळुम् इन्नोय्.

पुरजन-निंदा खाद है, माँ का कटु वच नीर।
इनसे पोषित रोग यह, बढ़ता रहा अधीर।। ११४७

நெய்யால் எரிநுதுப்பேம் என்றற்றால் கௌவையால்
காமம் நுதுப்பேம் எனல். **1148**

नैय्याल् ऍरि नुदुप्पेम् ऍन्ड्रट्राल् कौवैयाल्
कामम् नुदुप्पेम् ऍनल्.

काम-शमन की सोचना, कर अपवाद प्रचार।
अग्नि-शमन घी डाल कर, करना सदृश विचार।। ११४८

அலர்நாண ஒல்வதோ அஞ்சலோம்பு என்றார்
பலர்நாண நீத்தக் கடை. **1149**

अलर् नाण ऑल्वदो अञ्जलोम्बु ऍन्ड्रार्
पलर् नाण नीत्तक् कडै.

अपवादों से क्यों डरूँ, जब कर अभय प्रदान।
सब को लज्जित कर गये, छोड़ मुझे प्रिय प्राण।। ११४९

छोड़ गये–अलग हो गये। कर अभय प्रदान–फिर मिलने का विश्वास दिलाकर मुझे निर्भय रहने को कहा।

தாம்வேண்டின் நல்குவர் காதலர் யாம்வேண்டும்
கௌவை எடுக்கும்இவ் வூர். 1150

ताम् वेण्डिन् नल्हुवर् कादलर् याम् वेण्डुम्
कौवै ऍडुक्कुम् इव्वूर्.

निज वांछित अपवाद का, पुर कर रहा प्रचार।
चाहूँ तो प्रिय नाथ भी, कर देंगे उपकार।। ११५०

यह सखी का नायिका से कथन है। चांहू..... उपकार–प्रवाद के फल-स्वरूप नायक का प्रेम–भाव और भी दृढ होने के लिये मैं भी (सखी) नायक को प्रभावित करूंगी।

गुप्त-संयोग समाप्त

அதிகாரம்–116 अध्याय - ११६ கற்பியல் पातिव्रत्य

பிரிவாற்றாமை विरह-वेदना पिरिवाट्रामै

செல்லாமை உண்டேல் எனக்குரை மற்றுநின்
வல்வரவு வாழ்வார்க்கு உரை. 1151

शॅल्लामै उण्डेल् ऍनक्कुरै मट्रु निन्
वल्वरवु वाष्वार्क्कु उरै.

अगर बिछुड़ जाते नहीं, मुझे जताओ नाथ।
जो जीयें उनसे कहो, झट फिरने की बात।। ११५१

यह नायिका का नायक से कथन है। जो..... बात–जल्दी लौट आने के आश्वासन से कोई प्रयोजन नहीं क्योंकि तब तक नायिका मर चुकी होगी।

இன்கண் உடைத்தவர் பார்வல் பிரிவஞ்சும்
புன்கண் உடைத்தால் புணர்வு. **1152**

इन्कण् उडैत्तवर् पार्वल् पिरिवञ्जुम्
पुन्कण् उडैत्ताल् पुणर्वु.

पहले उनकी दृष्टि तो, देती थी सुख-भोग।
विरह-भीति से दुखद है, अब उनका संयोग।। ११५२

इस दोहे से ले कर अध्याय के अंत तक नायिका का सखी से कथन है।

அரிதரோ தேற்றம் அறிவுடையார் கண்ணும்
பிரிவோரிடத்துண்மையான். **1153**

अरिदरोदेट्रम् अरिवुडैयार् कण्णुम्
पिरिवोरिडत्तुण्मैयान्.

विज्ञ नाथ का भी कभी, संभव रहा प्रवास।
सो करना संभव नहीं, इनपर भी विश्वास।। ११५३

அளித்தஞ்சல் என்றவர் நீப்பின் தெளித்தசொல்
தேறியார்க்கு உண்டோ தவறு. **1154**

अळित्तञ्जल् ऍन्ड्रवर् नीप्पिन् तॅळित्त शॉल्
तेरियार्क्कु उण्डो तवरु.

छोड़ चलेंगे यदि सदय, कर निर्भय का घोष।
जो दृढ़-वच विश्वासिनी, उसका है क्या दोष।। ११५४

ஓம்பின் அமைந்தார் பிரிவோம்பல் மற்றவர்
நீங்கின் அரிதால் புணர்வு. **1155**

ओम्बिन अमैन्दार् पिरिवोम्बल् मट्रवर्
नीङ्गिन् अरिदाल् पुणर्वु.

बचा सके तो यों बचा, जिससे चलें न नाथ।
फिर मिलना संभव नहीं, छोड़ गये यदि साथ।। ११५५

பிரிவுரைக்கும் வன்கண்ணராயின் அரிதவர்
நல்குவர் என்னும் நசை. 1156

पिरिवुरैक्कुम् वन्कण्णरायिन् अरिदवर्
नल्हुवर् ऍन्नुम् नशै.

विरह बताने तक हुए, इतने निठुर समर्थ।
प्रेम करेंगे लौट कर, यह आशा है व्यर्थ।। ११५६

துறைவன் துறந்தமை தூற்றாகொல் முன்கை
இறை இறவா நின்றவளை. 1157

तुरैवन् तुरन्दमै तूट्रा कॉल् मुन् कै
इरै इरवा निन्ड्रवळै.

नायक ने जो छोड़ कर, गमन किया, वह बात।
वलय कलाई से पतित, क्या न करें विख्यात।। ११५७

वलय—चूड़ियाँ।

இன்னாது இனன் இல் ஊர் வாழ்தல் அதனினும்
இன்னாது இனியார்ப் பிரிவு. 1158

इन्नादु इनन् इल् ऊर वाष्दल् अदनिनुम्
इन्नादु इनियारप् पिरिवु.

उस पुर में रहना दुखद, जहाँ न साथिन लोग।
उससे भी बढ़ कर दुखद, प्रिय से रहा वियोग।। ११५८

தொடிற்சுடின் அல்லது காமநோய் போல
விடிற் சுடல் ஆற்றுமோ தீ.   1159

तोँडिऱ् चुडिऩ् अल्लदु काम नोय् पोल
विडिऱ् चुडल् आट्रुमो ती.

छूने पर ही तो जला, सकती है, बस आग।
काम-ज्वर सम वह जला, सकती क्या, कर त्याग।।   ११५९

அரிதாற்றி அல்லல்நோய் நீக்கிப் பிரிவாற்றிப்
பின்இருந்து வாழ்வார் பலர்.   1160

अरिदाट्रि अल्लल् नोय् नीक्किप् पिरिंवाट्रिप्
पिन इरुन्दु वाष्वार् पलर्.

दुखद विरह को मानती, चिन्ता; व्याधि न नेक।
विरह-वेदना सहन कर, जीवित रहीं अनेक।।   ११६०

नेक–तनिक थी।
काकु–वक्रोक्ति है इस कथन में – जीवित रहीं अनेक। अर्थात् कोई भी नायिका जीवित नहीं रहेगी। सखी के द्वारा समझाने पर कि सहनशील होना चाहिये तब नायिका यों बोल उठती हैं।

படர்மெலிந் திரங்கல் विरह-क्षमा की व्यथा पडर् मॆलिनूदिरङ्गलू

மறைப்பேன்மன் யானிஃதோ நோயை இறைப்பவர்க்கு
ஊற்றுநீர் போல மிகும். **1161**

मरैप्पेन्मन् यानिह्दो नोयै इरैप्पवर्क्कु
ऊट्रु नीर् पोल मिहुम्।

यथा उलीचे सोत का, बढ़ता रहे बहाव।
बढ़ता है यह रोग भी, यदि मैं करूँ छिपाव।। ११६१

इस अध्याय में सब नायिका का सखी से कथन है।

கரத்தலும் ஆற்றேன் இந்நோயை நோய் செய்தார்க்கு
உரைத்தலும் நாணுத் தரும். **1162**

करत्तलुम् आट्रेन् इन्नोयै नोय् शॆय्दार्क्कु
उरैत्तलुम् नाणुत्तरुम्.

गोपन भी इस रोग का, है नहिं वश की बात।
कहना भी लज्जाजनक, रोगकार से बात।। ११६२

गोपन—छिपाना। रोगकार—नायक।

காமமும் நாணும் உயிர்காவாத்தூங்கும் என்
நோனா உடம்பினகத்து. **1163**

काममुम् नाणुम् उयिर्कावात्तूङ्गुम् ऍन्
नोना उडम्बिनहत्तु.

मेरी दुबली देह में, प्राणरूप जो डांड।
लटके उसके छोर में, काम व लज्जा कांड।। ११६३

डांड़—डांड़ी, इसके दोनों छोरों पर भारी सामान लटका कर कँधेपर रख कर ले जाते हैं।

காமக் கடல்மன்னும் உண்டே அதுநீந்தும்
ஏமப் புணைமன்னும் இல். 1164

कामक्कडल् मन्नुम् उण्डे अदु नीन्दुम्
एमपपुणै मननुम् इल्.

काम-रोग का तो रहा, पारावार अपार।
पर रक्षक बेड़ा नहीं, उसको करने पार।। ११६४

पारावार—समुद्र। बेड़ा—नाव (नावों का समूह)।

துப்பின் எவனாவர் மற்கொல் துயர்வரவு
நட்பினுள் ஆற்று பவர். 1165

तुप्पिन् ऍवनावर् मर्कोॅल् तुयर् वरवु
नट्पिनुळ् आट्रुपवर्.

जो देते हैं वेदना, रह कर प्रिय जन, खैर।
क्या कर बैठेंगे अहो, यदि रखते हैं वैर।। ११६५

இன்பம் கடல்மற்றுக் காமம் அஃதடுங்கால்
துன்பம் அதனிற் பெரிது. 1166

इन्बम् कडल् मट्रुक् कामम् अहूदडुङ्काल्
तुन्बम् अदनिर् पॅरिदु.

जो हैं, बस, यह काम तो, सुख का पारावार।
पीड़ा दे तो दुःख है, उससे बड़ा अपार।। ११६६

उससे—सुख के पारावार से।

காமக் கடும்புனல் நீந்திக் கரைகாணேன்
யாமத்தும் யானே உளேன். **1167**

कामक्कडुम् पुनल् नीन्दिक् करै काणेन्
यामत्तुम यानॆ उळेन्.

पार न पाती तैर कर, काम-समुद्र महान।
अर्द्ध रात्रि में भी निविड़, रही अकेली जान।। ११६७

जान—जीव, प्राणी।

மன்னுயிரெல்லாம் துயிற்றி அளித்திரா
என்னல்லது இல்லை துணை. **1168**

मन्नुयिरॆल्लाम् तुयिट्रि अळित्तिरा
ऍन्नल्लदु इल्लै तुणै.

सुला जीव सब को रही, दया-पात्र यह रात।
इसको मुझको छोड़ कर, और न कोई साथ।। ११६८

கொடியார் கொடுமையின் தாம்கொடிய இந்நாள்
நெடிய கழியும் இரா. **1169**

कॉडियार् कॉडुमैयिन् ताम् कॉडिय इन्नाळ
नॆंडिय कषियुम् इरा.

ये रातें जो आजकल, लम्बी हुई अथोर।
निष्ठुर के नैष्ठुर्य से, हैं खुद अधिक कठोर।। ११६९

अथोर—बहुत। निष्ठुर—क्रूर, निर्दय। नैष्ठुर्य—क्रूरता, निर्दयता।

உள்ளம்போன்று உள்வழிச் செல்கிற்பின் வெள்ளநீர்
நீந்தல மன்னோஎன் கண். 1170

उळ्ळम् पोन्ड्रु उळ्वषिच् चेॅल्हिऱ्पिन् वेळ्ळनीर्
नीन्दल मन्नो ऍन् कण्.

चल सकते हैं प्रिय के यहाँ, यदि झट हृदय समान।
नहीं तैरते बाढ़ में, यों मेरे दृग, जान।। ११७०

बाढ़ में—आँसू की बाढ़ में। दृग—नेत्र। जान—तू जान।

கண் விதுப்பழிதல் — नेत्रों का आतुरता से क्षय — कण् विदुप्पषिदल्

கண்தாம் கலுழ்வ தெவன்கொலோ தண்டாநோய்
தாம்காட்ட யாம் கண்டது. 1171

कण् ताम् कलुष्व दॅवन् कॉलो तण्डा नोय्
ताम् काट्ट याम् कण्डदु.

अब रोते हैं क्यों नयन, स्वयं दिखा आराध्य।
मुझे हुआ यह रोग है, जो बन गया असाध्य।। ११७१

इस अध्याय में सब नायिका का सखी से कथन है।
दिखा आराध्य—पूज्य प्रियतम को दिखा कर।

தெரிந்துணரா நோக்கிய உண்கண் பரிந்துணராப்
பைதல் உழப்பது எவன். **1172**

तॅरिन्दुणरा नोक्किय उण्कण् परिन्दुणराप्
पैदल् उऴप्पदु ऍवन्.

सोचे समझे बिन नयन, प्रिय को उस दिन देख।
अब क्यों होते हैं व्यथित, रखते कुछ न विवेक।। ११७२

கதுமெனத் தாம்நோக்கித் தாமே கலுழும்
இதுநகத் தக்கது உடைத்து. **1173**

कदुमॅनत्ताम् नोककित् तामे कलुषुम्
इदु नहत्तक्कदु उडैत्तु.

नयनों ने देखा स्वयं, आतुरता के साथ।
अब जो रोते हैं स्वयं, है हास्यास्पद बात।। ११७३

பெயலாற்றா நீருலந்த உண்கண் உயலாற்றா
உய்வில்நோய் என்கண் நிறுத்து. **1174**

पॅयॅलाट्रा नीरुलन्द उण्कण् उयलाट्रा
उय्विल् नोय् ऍन् कण् निरुत्तु.

मुझमें रुज उत्पन्न कर, असाध्य औ' अनिवार्य।
सूख गये, ना कर सके, दृग रोने का कार्य।। ११७४

रुज—रोग। असाध्य—कठिन। अनिवार्य—जिसका निवारण नहीं।

படலாற்று பைதல் உழக்கும் கடலாற்றுக்
காமநோய் செய்தஎன் கண். 1175

पडलाट्रा पैदल् उषक्कुम् कडलाट्रा
क़ाम नोय् शैंयद ऍन् कण्.

काम-रोग उत्पन्न कर, सागर से विस्तार।
नींद न पा मेरे नयन, सहते दुःख अपार।। ११७५

ஓஒ இனிதே எமக்கிந்நோய் செய்தகண்
தாஅம் இதற்பட் டது. 1176

ओ ओ इनिदे ऍमक्किन्नोय् शैंयदकण्
ताअम् इदर् पट्टदु.

ओहो यह अति सुखद है, मुझको दुख में डाल।
अब ये दृग सहते स्वयं, यह दुख, हो बेहाल।। ११७६

दृग—आँख। 'अनुवाद के संबंध में' अध्याय में इस दोहे का उल्लेख है।

உழந்துழந்து உள்நீர் அறுக விழைந்திழைந்து
வேண்டி யவர்க்கண்ட கண். 1177

उष़न्दुष़न्दु उळ्नीर् अऱुह विष़ैन्दिष़ैन्दु
वेण्डियवर्क्कण्ड कण्.

दिल पसीज, थे देखते, सदा उन्हें दृग सक्त।
सूख जाय दृग-स्रोत अब, सह सह पीड़ा सख्त।। ११७७

सक्त—आसक्त। सह सह—सह सह कर। दृग—स्रोत—आँसू।

பேணாது பெட்டார் உளர்மன்னோ மற்றவர்க்
காணாது அமைவில கண். **1178**

पेणाद् पॆट्टार् उळर् मन्नो मट्रवर्क्
काणाद् अमैविल कण्.

वचन मात्र से प्रेम कर, दिल से किया न प्रेम।
उस जन को देखे बिना, नेत्रों को नहिं क्षेम।। ११७८

नेत्र ऐसे जन को (प्रियतम) देखने के लिये आतुर हैं
जिसे अपने प्रति कुछ प्रेम नहीं है।

வாராக்கால் துஞ்சா வரின்துஞ்சா ஆயிடை
ஆரஞர் உற்றன கண். **1179**

वाराक्काल् तुञ्जा वरिन् तुञ्जा आयिडै
आरञर् उट्रन कण्.

ना आवें तो नींद नहिं, आवें, नींद न आय।
दोनों हालों में नयन, सहते हैं अति हाय।। ११७९

हाय—कष्ट। 'अनुवाद के संबंध में' इस दोहे का उल्लेख हुआ है।

மறைபெறல் ஊரார்க்கு அரிதன்றால் எம்போல்
அறைபறை கண்ணா ரகத்து. **1180**

मऱै पॆऱल् ऊरार्क्कु अरिदन्ड्राल् ऍम्पोल्
अऱै पऱै कण्णारहत्तु.

मेरे सम जिनके नयन, पिटते ढोल समान।
उससे पुरजन को नहीं, कठिन भेद का ज्ञान।। ११८०

भेद—प्रेम का रहस्य।

பசப்புறு பருவரல்

पीलापन-जनित पीड़ा पशप्पुरु परुवरल्

நயந்தவர்க்கு நல்காமை நேர்ந்தேன் பசந்தஎன்
பண்பியார்க்கு உரைக்கோ பிற. 1181

नयन्दवर्क्कु नलूहामै नेॅर्न्देन् पशन्द ऍन्
पणबियार्क्कु उरैक्को पिरै.

प्रिय को जाने के लिये, सम्मति दी उस काल।
अब जा कर किससे कहूँ, निज पीलापन-हाल।। ११८१

यह नायिका का स्वगत कथन है। पीलापन का हाल–
वियोगावस्था में नायिका के शरीर का रंग पीला सा हो जाता है।

அவர்தந்தார் என்னும் தகையால் இவர்தந்தென்
மேனிமேல் ஊரும் பசப்பு. 1182

अवर् तन्दार् ऍन्नुम् तहैयाल् इवर तन्दॅंन्
मेनिमेल् ऊरुम् पशप्पु.

पीलापन यह गर्व कर, 'मैं हूँ उनसे प्राप्त'।
चढ़ कर मेरी देह में, हो जाता है व्याप्त।। ११८२

इसके आगे सभी दोहे नायिका का सखी से कथन है।

சாயலும் நாணும் அவர்கொண்டார் கைம்மாறா
நோயும் பசலையும் தந்து. 1183

शायलुम् नाणुम् अवर् कोॅण्डार् कैम्मारा
नोयुम् पशलैयुम् तन्दु.

पीलापन औ' रोग का, करके वे प्रतिदान।
मेरी छवि औ' लाज का, ले कर चले सुदान।। ११८३

दोहे का भाव यह है कि वियोग में देह छविहीन हो गई। काम—रोग की पीड़ा होने लगी साथ ही लज्जा भी छूट गई।

உள்ளுவன் மன்யான் உரைப்பது அவர்திறமால்
கள்ளம் பிறவோ பசப்பு. 1184

उळ्ळुवन् मन् यान् उरैप्पदु अवर् तिरमाल्
कळ्ळम् पिरवो पशप्पु.

उनके गुण का स्मरण कर, करती हूँ गुण-गान।
फिर भी पीलापन चढ़ा, तो क्या यह धोखा न।। ११८४

உவக்காண்எம் காதலர் செல்வார் இவக்காண்என்
மேனி பசப்பூர் வது. 1185

उवक्काण् ऍम् कादलर् शॅल्वार् इवक्काण् एन्
मेनि पशप्पूर्वदु.

वह देखो, जाते बिछुड़, मेरे प्रियतम आप्त।
यह देखो, इस देह पर, पीलापन है व्याप्त।। ११८५

விளக்கற்றம் பார்க்கும் இருளேபோல் கொண்கன்
முயக்கற்றம் பார்க்கும் பசப்பு. 1186

विळक्कट्रम् पार्क्कुम् इरुळेपोल् कोंण्कन्
मुयक्कट्रम् पार्क्कुम् पशप्पु.

दीपक बुझने की यथा, तम की जो है ताक।
प्रिय-आलिंगन ढील पर, पीलापन की ताक।। ११८६

तम—अंधकार। ताक—(मौक़ा) देखना।

புல்லிக் கிடந்தேன் புடைபெயர்ந்தேன் அவ்வளவில்
அள்ளிக்கொள் வற்றே பசப்பு. 1187

पुल्लिक् किडन्देन् पुडै पैंयरुन्देन् अव्वळविल्
अळ्ळिक् कॉळ्वट्रे पशप्पु.

आलिंगन करके रही, करवट बदली थोर।
उस क्षण जम कर छा गया, पीलापन यह घोर।। ११८७

थोर—थोड़ा। आलिंगन करके—(प्रियतम को) गले लगा कर।

பசந்தாள் இவள்என்பது அல்லால் இவளைத்
துறந்தார் அவர்என்பார் இல். 1188

पशन्दाळ् इवळ् ऍन्बदु अल्लाल् इवळैत्
तुरन्दार् अवर् ऍन्बार् इल्.

'यह है पीली पड़ गयी', यों करते हैं बात।
इसे त्याग कर वे गये, यों करते नहिं बात।। ११८८

பசக்கமன் பட்டாங்கென் மேனி நயப்பித்தார்
நன்னிலையர் ஆவர் எனின். 1189

पशक्क मन् पट्टाङ्गॅन् मेनि नयप्पित्तार्
नन्निलैयर् आवर् ऍनिन्.

मुझे मना कर तो गये; यदि सकुशल हों नाथ।
तो मेरा तन भी रहे, पीलापन के साथ।। ११८९

பசப்பெனப் பேர்பெறுதல் நன்றே நயப்பித்தார்
நல்காமை தூற்ருர் எனின். 1190

पशप्पॆंनप् पेर्पॆरुदल् नन्ड्रे नयप्पितृतार्
नल्हामै तूट्रार् ऍनिन्.

अच्छा है पाना स्वयं, पीलापन का नाम।
प्रिय का तजना बन्धुजन, यदि न करें बदनाम।। ११९०

அதிகாரம்-120 अध्याय - १२० கற்பியல் पातिव्रत्य

தனிப்படர் மிகுதி विरह-वेदनातिरेक तनिप्पडर् मिहुदि

தாம்வீழ்வார் தம்வீழப் பெற்றவர் பெற்ருரே
காமத்துக் காழில் கனி. 1191

ताम् वीष्वार् तम् वीषप्पॆट्रवर् पॆट्रारे
कामत्तुक् काषिल् कनि.

जिससे अपना प्यार है, यदि पाती वह प्यार।
बीज रहित फल प्रेम का, पाती है निर्धार।। ११९१

११९१ से ११९९ तक नायिका का सखी से कथन है।

வாழ்வார்க்கு வானம் பயந்தற்ருல் வீழ்வார்க்கு
வீழ்வார் அளிக்கும் அளி. 1192

वाष़्वार्क्कु वानम् पयन्दट्राल् वीष़्वार्क्कु
वीष़्वार् अळिक्कुम् अळि.

जीवों का करता जलद, ज्यों जल दे कर क्षेम।
प्राण-पियारे का रहा, प्राण-प्रिया से प्रेम।। ११९२

வீழுநர் வீழப் படுவார்க்கு அமையுமே
வாழுநம் என்னும் செருக்கு. 1193

वीषुनर् वीष़प्पडुवार्क्कु अमैयुमे
वाषुनम् ऍननुम् शॅरुक्कु.

जिस नारी को प्राप्त है, प्राण-नाथ का प्यार।
'जीऊँगी' यों गर्व का, उसको है अधिकार।। ११९३

வீழப் படுவார் கெழீஇயிலர் தாம்வீழ்வார்
வீழப் படாஅர் எனின். 1194

वीष़प्पडुवार् कॅषीइयिलर् ताम् वीष़्वार्
वीष़ाप्पडा अर् ऍनिन्.

उसकी प्रिया बनी नहीं, जो उसका है प्रेय।
तो बहुमान्या नारि भी, पुण्यवती नहिं ज्ञेय।। ११९४

நாம்காதல் கொண்டார் நமக்கெவன் செய்பவோ
தாம்காதல் கொள்ளாக் கடை. 1195

नाम् कादल् कॉण्डार् नमक्कॅवन् शॅय्पवो
ताम कादल् कॉळ्ळाक् कडै.

प्यार किया मैंने जिन्हें, यदि खुद किया न प्यार।
तो उनसे क्या हो सके, मेरा क़ुछ उपकार।। ११९५

ஒருதலையான் இன்னாது காமம்காப் போல
இருதலை யானும் இனிது. 1196

ऑरु तलैयान् इन्नादु कामम् काप्पोल
इरु तलैयानुम् इनिदु.

प्रेम एक-तरफ़ा रहे, तो है दुखद अपार।
दोय तरफ़ हो तो सुखद, ज्यों डंडी पर भार।। ११९६

डंडी–बँडी, इसके दोनों छोरों पर भारी सामान लटकाते हैं और कंधे पर रख कर ले जाते हैं।

பருவரலும் பைதலும் காணான்கொல் காமன்
ஒருவர்கண் நின்றொழுகு வான். **1197**

परुवरलुम् पैदलुम् काणान् कॊल् कामन्
ऒरुवर् कण् निन्ड्रॊ़षुहुवान्.

जम कर सक्रिय एक में, रहा मदन बेदर्द।
क्या वह समझेगा नहीं, मेरा दुःख व दर्द।। ११९७

வீழ்வாரின் இன்சொல் பெறாஅது உலகத்து
வாழ்வாரின் வன்கணார் இல். **1198**

वीष़वारिन् इनशॊल् पॆ़राअदु उलहत्तु
वाष़्वारिन् वन्कणार् इल्.

प्रियतम से पाये बिना, उसका मधुमय बैन।
जग में जीती स्त्री सदृश, कोई निष्ठुर है न।। ११९८

बैन–वचन। जीती–जीवित रहती हुई। सदृश–तरह।

நசைஇயார் நல்கார் எனினும் அவர்மாட்டு
இசையும் இனிய செவிக்கு. **1199**

नशैइयार् नल्हार् ऍनिनुम् अवर् माट्टु
इशैयुम् इनिय शॆविक्कु.

प्रेम रहित प्रियतम रहे, यद्यपि है यह ज्ञात।
कर्ण मधुर ही जो मिले, उनकी कोई बात।। ११९९

எனைத்தொன்று இனிதேகாண் காமம்தாம் வீழ்வார்
நினைப்ப வருவதொன்று இல். 1202

ऍनैतूतॉन्ड्रु इनिदे काण् कामम् ताम् वीष्वार्
निनैप्प वरुवदॉन्ड्रु इल्.

दुख-नाशक उसका स्मरण, जिससे है निज प्रेम।
जो सुखदायक ही रहा, किसी हाल में प्रेम।

किसी हाल में – संयोग हो या वियोग। उसका – नायिका का।

நினைப்பவர் போன்று நினையார்கொல் தும்மல்
சினைப்பது போன்று கெடும். 1203

निनैप्पवर् पोन्ड्रु निनैयार् कॉल् तुम्मल्
शिनैप्पदु पोन्ड्रु कॅंडुम्.

छींका ही मैं चाहती, छींक गयी दब साथ।
स्मरण किया ही चाहते, भूल गये क्या नाथ।। १२०३

१२०३ से १२०९ तक नायिका का सखी से कथन है। छींका..... यह विश्वास है कि सुदूर रहनेवाला बन्धु जब स्मरण करता है तब स्मरण किये व्यक्ति को छींक आती है।

யாமும் உளேங்கொல் அவர்நெஞ்சத்து எந்நெஞ்சத்து
ஓஒ உளரே அவர். 1204

यामुम् उळेङ्कॉल् अवर् नॆञ्जत्तु ऍन्नॆञ्जत्तु
ओ ओ उळरे अवर्.

उनके दिल में क्या रहा, मेरा भी आवास।
मेरे दिल में, ओह, है, उनका सदा निवास।। १२०४

உறாஅர்க்கு உறுநோய் உரைப்பாய் கடலைச்
செறாஅஅய் வாழிய நெஞ்சு. **1200**

उ़राअर्क्कु उ़रुनोय् उरैप्पाय् कडलैच्
चे़ॅरा अ अय् वाषि़य नेँञ्जु.

प्रेम हीन से कठिन रुज, कहने को तैयार।
रे दिल ! तू चिरजीव रह ! सुखा समुद्र अपार।। १२००

यह नायिका का अपने दिल से कथन है। रुज–रोग। समुद्र–दुःख रूपी समुद्र। सुखा--तू सुखा देना। इसका भाव यह है कि प्रियतम को संदेश भेज कर विरह दुःख दूर करना समुद्र को सुखाना जैसा है।

अதிகாரம்–121 अध्याय - १२१ கற்பியல் पातिव्रत्य

நினைந்தவர் புலம்பல் — स्मरण में एकान्तता-दुःख निनैनूदवर् पुलम्बल्

உள்ளினும் தீராப் பெருமகிழ் செய்தலால்
கள்ளினும் காமம் இனிது. **1201**

उ़ळ्ळिनुम् तीराप् पेॅरु महिष् शेॅय्दलाल्
क़ळ्ळिनुम् कामम् इनिदु.

स्मरण मात्र से दे सके, अक्षय परमानन्द।
सो तो मधु से काम है, बढ़ कर मधुर अमन्द।। १२०१

१२०१ और १२०२ दोहे नायक का सखा से कथन है।

தந்நெஞ்சத்து எம்மைக் கடிகொண்டார் நாணார்கொல்
எந்நெஞ்சத்து ஓவா வரல். 1205

तन्नॅञ्जत्तु ऍम्मैक् कडि कॉण्डार् नाणार् कॉल्
ऍन्नॅञ्जत्तु ओवा वरल्.

निज दिल से मुझको हटा, कर पहरे का साज़।
मेरे दिल आते सदा, आती क्या नहिं लाज।। १२०५

மற்றியான் என்னுளேன் மன்னோ அவரொடுயான்
உற்றநாள் உள்ள உளேன். 1206

मट्रियान् ऍन्नुळेन् मन्नो अवरॉडु यान्
उट्रनाळ् उळ्ळ उळेन्.

मिलन-दिवस की, प्रिय सहित, स्मृति से हूँ सप्राण।
उस स्मृति के बिन किस तरह, रह सकती सप्राण।। १२०६

மறப்பின் எவனாவன் மற்கொல் மறப்பறியேன்
உள்ளினும் உள்ளம் சுடும். 1207

मऱप्पिन् ऍवनावन् मऱ्कॉल् मऱप्पऱियेन्
उळ्ळिनुम् उळ्ळम् शुडुम्.

मुझे ज्ञात नहिं भूलना, हृदय जलाती याद।
भूलूँगी मैं भी अगर, जाने क्या हो बाद।। १२०७

எனைத்து நினைப்பினும் காயார் அனைத்தன்றோ
காதலர் செய்யும் சிறப்பு. **1208**

ऍनत्तु निनैप्पिनुम् कायार् अनैत्तन्ड्रो
कादलर् शॅय्युम् शिऱप्पु.

कितनी ही स्मृति मैं करूँ, होते नहिं नाराज़।
करते हैं प्रिय नाथ तो, इतना बड़ा लिहाज़।। १२०८

விளியுமென் இன்னுயிர் வேறல்லம் என்பார்
அளியின்மை ஆற்ற நினைந்து. **1209**

विळियुमॅन् इन्नुयिर वेऱल्लम् ऍन्बार्
अळियिन्मै आट्र निनैन्दु.

'भिन्न न हम', जिसने कहा, उसकी निर्दय बान।
सोच सोच चलते बने, मेरे ये प्रिय प्राण।। १२०९

விடாஅது சென்றாரைக் கண்ணினால் காணப்
படாஅதி வாழி மதி. **1210**

विडा अदु शॅन्ड्रारैक् कण्णिनाल् काणप्
पडा अदि वाऴि मदि.

बिछुड़ गये संबद्ध रह, जो मेरे प्रिय कांत।
जब तक देख न लें नयन, डूब न, जय जय चांद।। १२१०

नायिका चांद को संबोधित करके यों कहती है। इसका भाव यह है कि जिस चांद को नायिका देख रही है उसे नायक भी देखेगा तो दृष्टि-समागम का अवसर मिलेगा।

கனவுநிலை உரைத்தல् स्वप्नावस्था का वर्णन कनवु निलै उरैत्तल्

காதலர் தூதொடு வந்த கனவினுக்கு
யாதுசெய்வேன்கொல் விருந்து. 1211

कादलर् तूदोॅडु वन्द कनविनुक्कु
यादु शेॅय्वेन् कोॅल् विरुन्दु.

प्रियतम का जो दूत बन, आया स्वप्नाकार।
उसका मैं कैसे करूँ, योग्य अतिथि-सत्कार।। १२११

इस अध्याय के सब दोहे नायिका का सखी से कथन हैं।

கயலுண்கண் யானிரப்பத் துஞ்சிற் கலந்தார்க்கு
உயலுண்மை சாற்றுவேன் மன். 1212

कयलुण् कण् यानिरप्पत्तुञ्जिर् कलन्दार्क्कु
उयलुण्मै शाट्रुवेन् मन्.

यदि सुन मेरी प्रार्थना, दृग हों निद्रावान।
दुख सह बचने की कथा, प्रिय से कहूँ बखान।। १२१२

दृग हों निद्रावान-आँखें सो जायंगी। प्रिय से..... स्वप्न में आये हुए प्रिय से विस्तृत रूप से अपनी कथा सुनायगी।

நனவினால் நல்காதவரைக் கனவினால்
காண்டலின் உண்டென் உயிர். 1213

ननविनाल् नल्हादवरैक् कनविनाल्
काण्डलिन् उण्डेॅन् उयिर्

जाग्रत रहने पर कृपा, करते नहीं सुजान।
दर्शन देते स्वप्न में, तब तो रखती प्राण।। १२१३

கனவினான் உண்டாகும் காமம் நனவினான்
நல்காரை நாடித் தரற்கு. 1214

कनविनान् उण्डाहुम् कामम् ननविनान्
नल्हारै नाडित् तरर्कु.

जाग्रति में करते नहीं, नाथ कृपा कर योग।
खोज स्वप्न ने ला दिया, सो उसमें सुख-भोग।। १२१४

நனவினால் கண்டதூஉம் ஆங்கே கனவுந்தான்
கண்டபொழுதே இனிது. 1215

ननविनाल् कण्डदूउम् आङ्गे कनवुन्दान्
कण्डपॊऴुदे इनिदु.

आँखों में जब तक रहे, जाग्रति में सुख-भोग।
सपने में भी सुख रहा, जब तक दर्शन-योग।। १२१५

आँखों में रहना—सम्मुख रहना।

நனவென ஒன்றில்லை யாயின் கனவினான்
காதலர் நீங்கலர் மன். 1216

ननवॆन ऑन्ड्रिल्लैयायिन् कनविनान्
कादलर् नीङ्गलर् मन्.

यदि न रहे यह जागरण, तो मेरे प्रिय नाथ।
जो आते हैं स्वप्न में, छोड़ न जावें साथ।। १२१६

'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि अध्याय' में इस दोहे की तुलना कविवर 'देव' की कविता से तुलना की गई है।

நனவினால் நல்காக் கொடியார் கனவினால்
என்எம்மைப் பீழிப்பது. 1217

ननविनाल् नलहाक् कॉडियार् कनविनाल्
ऍन् ऍम्मैप् पीषिप्पदु.

कृपा न कर जागरण में, निष्ठुर रहे सुजान।
पीड़ित करते किसलिये, मुझे स्वप्न में प्राण।। १२१७

துஞ்சுங்கால் தோள் மேலராகி விழிக்குங்கால்
நெஞ்சத்தர் ஆவர் விரைந்து. 1218

तुञ्जुङ्काल् तोळ् मेलराहि विषिक्कुङ्काल्
नॆञ्जत्तर् आवर् विरैन्दु.

गले लगाते नींद में, पर जब पडती जाग।
तब दिल के अन्दर सुजन, झट जाते हैं भाग।। १२१८

'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में इस दोहे की तुलना जयशंकर प्रसादजो की कविता से की गई है।

நனவினால் நல்காரை நோவர் கனவினால்
காதலர்க் காணாதவர். 1219

ननविनाल् नलहारै नोवर् कनविनाल्
कादलर्क् काणादवर्.

जाग्रति में अप्राप्त को, कोसेंगी वे वाम।
जिनके प्रिय ने स्वप्न में, मिल न दिया आराम।। १२१९

वाम—वामा, स्त्री।

நனவினால் நம் நீத்தார் என்பர் கனவினால்
காணார்கொல் இவ்வூ ரவர். **1220**

ननविनाल् नम् नीत्तार् ऍन्बर कनविनाल्
काणार् कॉल् इव्वूरवर्.

यों कहते प्रिय का मुझे, जाग्रति में नहिं योग।
सपने में ना देखते, क्या इस पुर के लोग।। १२२०

अतिकारम्-123 अध्याय - १२३ கற்பியல் पातिव्रत्य

பொழுதுகண்டு இரங்கல् — संध्या दर्शन से व्यथित होना — पॉषुदु कणूडु इरङ्गलू

மாலையோ அல்லை மணந்தார் உயிருண்ணும்
வேலைநீ வாழி பொழுது. **1221**

मालैयो अल्लै मणन्दार् उयिरुण्णुम्
वेलै नी वाषि पॉषुदु.

तेरी, सांझ, चिरायु हो, तू नहिं संध्याकाल।
ब्याह हुओं की जान तू, लेता अन्तिम काल।। १२२१

१२२१ और १२२२ दोहे नायिका संध्या को संबोधित करके कहती है। लेता—लेनेवाला।

புன்கண்ணை வாழி மருள்மாலை எம்கேள்போல்
வன்கண்ணதோ நின் துணை. **1222**

पुन् कणणै वाषि मरुळ् मालै ऍम् केळ् पोल्
वन् कणणदो निन् तुणै.

तेरी, सांझ, चिरायु हो, तू निष्प्रभ विभ्रान्त।
मेरे प्रिय के सम निठुर, है क्या तेरा कान्त।। १२२२

निष्प्रभ–कांति हीन। विभ्रान्त–व्याकुल। कान्त–पुरुष।

பனிஅரும்பிப் பைதல்கொள் மாலை துனிஅரும்பித்
துன்பம் வளர வரும். 1223

पनि अरुम्बिप् पैदल् कॉळ् मालै तुनि अरुम्बित्
तुन्बम् वळर वरुम्.

कंपित संध्या निष्प्रभा, मुझको बना विरक्त।
आती है देती मुझे, पीड़ा अति ही सख्त।। १२२३

कंपित–डरी हुई। नायिका का सखी से कथन है।

காதலர் இல்வழி மாலை கொலைக்களத்து
ஏதிலர் போல வரும். 1224

कादलर इल्वषि मालै कॉलैक्कळत्तु
एदिलर् पोल वरुम्.

वध करने के स्थान में, ज्यों आते जल्लाद।
त्यों आती है सांझ भी, जब रहते नहिं नाथ।। १२२४

इस अध्याय के शेष सब दोहे नायिका का सखी से कथन हैं।

காலைக்குச் செய்தநன்று என்கொல் எவன்கொல்யான்
மாலைக்குச் செய்த பகை. **1225**

कालैक्कुच् चॆय्द नन्ड्रु ऍन् कॊल् ऍवन् कॊल् यान्
मालैक्कुच् चॆय्द पहै.

मैंने क्या कुछ कर दिया, प्रातः का उपकार।
वैसे तो क्या कर दिया, संध्या का अपकार।। १२२५

प्रातः—सबेरा। संध्या—शाम।

மாலைநோய் செய்தல் மணந்தார் அகலாத
காலை அறிந்தது இலேன். **1226**

मालै नोय् शॆय्दल् मणन्दार् अहलाद
कालै अऱिन्ददु इलेन्.

पीड़ित करना सांझ का, तब था मुझे न ज्ञात।
गये नहीं थे बिछुड़कर, जब मेरे प्रिय नाथ।। १२२६

காலை அரும்பிப் பகலெல்லாம் போதாகி
மாலை மலரும்இந்நோய். **1227**

कालै अरुम्बिप् पहलॆल्लाम् पोदाहि
मालै मलरुम् इन्नोय्.

काम-रोग तो सुबह को, पा कर कली-लिवास।
दिन भर मुकुलित, शाम को, पाता पुष्प-विकास।। १२२७

कली-लिवास — कली के भेस में (रूप में) रहना। मुकुलित-अर्द्ध विकसित।

அழல்போலும் மாலைக்குத் தூதாகி ஆயன்
குழல்போலும் கொல்லும் படை.   1228

अषल् पोलुम् मालैक्कुत् तूदाहि आयन्
कुषल् पोलुम् कॉल्लुम् पडै.

दूत बनी है सांझ का, जो है अनल समान।
गोप-बाँसुरी है, वही, घातक भी सामान।।   १२२८

घातक सामान — मारने का हथियार (बाँसुरी)

பதிமருண்டு பைதல் உழக்கும் மதிமருண்டு
மாலை படர்தரும் போழ்து.   1229

पतिमरुण्डु पैदल् उषक्कुम् मतिमरुण्डु
मालै पडर् तरुम् पोषदु.

जब आवेगी सांझ बढ़, करके मति को घूर्ण।
सारा पुर मति-घूर्ण हो, दुख से होवे चूर्ण।।   १२२९

करके मति को घूर्ण—बुद्धि को भ्रम में डाल कर।

பொருள் மாலையாளரை உள்ளி மருள்மாலை
மாயும்என் மாயா உயிர்.   1230

पॉरुळ् मालैयाळरै उळ्ळि मरुळ् मालै
मायुम् ऍन् माया उयिर्

भ्रांतिमती इस सांझ में, अब तक बचती जान।
धन-ग्राहक का स्मरण कर, चली जायगी जान।।   १२३०

धन—ग्राहक — नायक, जो धन कमाने के लिये चले गये।

உறுப்புநலன் அறிதல் — अंगच्छवि-नाश — उरुप्पु नलन अऱिदल्

சிறுமை நமக்கொழியச் சேட்சென்றார் உள்ளி
நறுமலர் நாணின கண். **1231**

शिऱुमै नमक्कॊषियच् चेट् शॆंन्ड्रार् उळ्ळि
नऱुमलर् नाणिन कण्.

प्रिय की स्मृति में जो तुझे, दुख दे गये सुदूर।
रोते नयन सुमन निरख, लज्जित हैं बेनूर।। १२३१

१२३१ से १२३५ तक सखी का नायिका से कथन है। रोते..... बेनूर —पुष्प (कमल) को देखकर नयन अब लज्जित हैं कयोंकि रो रोकर वे कान्तिहीन हो गये हैं। पहले बात उलटी थी।

நயந்தவர் நல்காமை சொல்லுவ போலும்
பசந்து பனிவாரும் கண். **1232**

नयन्दवर् नल्हामै शॊल्लुव पोलुम्
पशन्दु पनिवारुम् कण्.

पीले पड़ कर जो नयन, बरस रहे हैं नीर।
मानों कहते निठुरता, प्रिय की जो बेपीर।। १२३२

தணந்தமை சால அறிவிப்ப போலும்
மணந்த நாள் வீங்கிய தோள். **1233**

तणन्दमै शाल अऱिविप्प पोलुम्
मणन्द नाळ् वीङ्गिय तोळ्.

जो कंधे फूले रहे, जब था प्रिय-संयोग।
मानों करते घोषणा, अब है दुसह वियोग।। १२३३

பணைநீங்கிப் பைந்தொடி சோரும் துணைநீங்கித்
தொல்கவின் வாடிய தோள். 1234

पणै नीङ्गिप् पैन्दोंडि शोरुम् तुणै नीङ्गित्
तोॅल् कविन् वाडिय तोळ्.

स्वर्ण वलय जाते खिसक, कृश हैं कंधे पीन।
प्रिय-वियोग से पूर्व की, छवि से हैं वे हीन।। १२३४

कृश--दुबला-पतला। पीन-मोटा, पुष्ट (कंधे जो थे)।

கொடியார் கொடுமை உரைக்கும் தொடியொடு
தொல்கவின் வாடிய தோள். 1235

कॉडियार् कोडुमें उरैक्कुम् तोॅडियोडु
तोॅल्कविन् वाडिय तोळ्.

वलय सहित सौन्दर्य भी, जिन कंधों को नष्ट।
निष्ठुर के नैष्ठुर्य को, वे कहते हैं स्पष्ट।। १२३५

தொடியொடு தோள்நெகிழ நோவல் அவரைக்
கொடியர் எனக்கூறல் நொந்து. 1236

तोॅडियोॅडु तोळ् नेॅहिष़ नोवल् अवरैक्
कोॅडियर् ऍनक् कूरल् नोॅन्दु.

स्कंध शिथिल चूड़ी सहित, देख मुझे जो आप।
कहती हैं उनको निठुर, उससे पाती ताप।। १२३६

यह नायिका का सखी से कथन है। उनको—प्रियतम को।

பாடு பெறுதியோ நெஞ்சே கொடியார்க்கென்
வாடுதோள் பூசல் உரைத்து. **1237**

पाडु पॆरुदियो नॆञ्जे कॊडियार्क्कॆन्
वाडु तोळ् पूशल् उरैत्तु.

यह आक्रन्दन स्कंध का, जो होता है क्षाम।
सुना निठुर को रे हृदय, पाओ क्यों न सुनाम।। १२३७

यह नायिका का दिल से कथन है। क्षाम—दुबला—पतला।

முயங்கிய கைகளை ஊக்கப் பசந்தது
பைந்தொடிப் பேதை நுதல். **1238**

मुयङ्गिय कैहळै ऊक्कप् पशन्ददु
पैन्दॊडिप् पेदै नुदुल्.

आलिंगन के पाश से, शिथिल किये जब हाथ।
तत्क्षण पीला पड गया, सुकुमारी का माथ।। १२३८

१२३८ से १२४० तक नायक का स्वगत कथन। माथ—माथा।

முயக்கிடைத் தண்வளி போழப் பசப்புற்ற
பேதை பெருமழைக் கண். **1239**

मुयक्किडैत् तण्वळि पोष़प् पशप्पुट्र
पेदै पॆरुम्पैक् कण्.

ज़रा हवा जब घुस गयी, आलिंगन के मध्य।
मुग्धा के पीले पड़े, शीत बड़े दृग सद्य।। १२३९

मुग्धा—नायिका। शीत—ठंडा अर्थात् आँसू—भरा। सद्य—तुरंत।

கண்ணின் பசப்போ பருவரல் எய்தின்றே
ஒண்ணுதல் செய்தது கண்டு. 1240

कणूणिन् पशपूपो परुवरल् ऍय्दिन्ड्रे
ऑण्णुदल् शॅयददु कण्डु.

उज्ज्वल माथे से जनित, पीलापन को देख।
पीलापन को नेत्र के, हुआ दुःख-अतिरेक।। १२४०

माथे का पीलापन और गहरा देखकर नेत्रों के पीलापन को अधिक दुःख हुआ।

அதிகாரம்–125 अध्याय - १२५ கற்பியல் पातिव्रत्य

நெஞ்சொடு கிளத்தல् — हृदय से कथन — नेञ्जॊडु किळत्तल्

நினைத்தொன்று சொல்லாயோ நெஞ்சே எனைத்தொன்றும்
எவ்வநோய் தீர்க்கும் மருந்து. 1241

निनैत्तॊन्ड्रु शॊल्लायो नॆञ्जे ऍनैत्तॊन्ड्रुम्
ऍव्व नोय् तीर्क्कुम् मरुन्दु.

रोग-शमन हित रे हृदय, जो यह हुआ असाध्य।
क्या न कहोगे सोच कर, कोई औषध साध्य।। १२४१

इस अध्याय के सभी दोहे नायिका का हृदय से कथन है।
रोग—काम—रोग। शमन—दमन अर्थात काबू मे लाना।।

காதல் அவரில ராகநீ நோவது
பேதைமை வாழிஎன் நெஞ்சு. 1242

कादल् अवरिलराह नी नोँवदु
पेदैमै वाषि ऍन् नॅञ्जु.

हृदय ! जिओ तुम, नाथ तो, करते हैं नहिं प्यार।
पर तुम होते हो व्यथित, यह मूढ़ता अपार।। १२४२

இருந்துள்ளி என்பரிதல் நெஞ்சே பரிந்துள்ளல்
பைதல்நோய் செய்தார்கண் இல். 1243

इरुन्दुळ्ळि ऍन्बरिदल् नॅञ्जे परिन्दुळ्ळल्
पैदल् नोय् शॅय्दार् काण इल्.

रे दिल ! बैठे स्मरण कर, क्यों हो दुख में चूर।
दुःख-रोग के जनक से, स्नेह-स्मरण है दूर।। १२४३

கண்ணும் கொளச்சேறி நெஞ்சே இவையென்னைத்
தின்னும் அவர்க்காண லுற்று. 1244

कण्णुम् कॉळच्चेरि नॅञ्जे इवैयॅन्नैत्
तिन्नुम् अवर्क्काणलुट्रु.

नेत्रों को भी ले चलो, अरे हृदय, यह जान।
उनके दर्शन के लिये, खाते मेरी जान।। १२४४

यह जान—यह जान कर। जान खाना—बहुत तंग करना।

செற்று ரெனக்கை விடல்உண்டோ நெஞ்சேயாம்
உற்றல் உறாஅ தவர். 1245

शॅट्रारॅनक् कैविडल् उण्डो नॅञ्जे याम्
उट्राल् उराअ दवर्.

यद्यपि हम अनुरक्त हैं, वे हैं नहिं अनुरक्त।
रे दिल, यों निर्मम समझ, हो सकते क्या त्यक्त।। १२४५

निर्मम—प्रेमहीन। हो..... त्यक्त—मैं त्याग कर सकूँ?

கலந்துணர்த்தும் காதலர்க்கண்டால் புலந்துணராய்
பொய்க்காய்வு காய்தி என் நெஞ்சு. 1246

कलन्दुणर्त्तुम् कादलर्क् कण्डाल् पुलन्दुणराय्
पोय्क्कायवु कायदि ऍन् नॅञ्जु.

जब प्रिय देते मिलन सुख, गया नहीं तू रूठ।
दिल, तू जो अब क्रुद्ध है, वह है केवल झूठ।। १२४६

காமம் விடுஒன்றோ நாண்விடு நன்னெஞ்சே
யானோ பொறேன் இவ்விரண்டு. 1247

कामम् विडु ऑन्ड्रो नाँण् विडु नन्नेञ्जे
यानो पॉरेन् इव्विरण्डु.

अरे सुदिल, तज काम को, या लज्जा को त्याग।
मैं तो सह सकती नहीं, इन दोनों की आग।। १२४७

'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में इस दोहे की तुलना 'बिहारी' की कविता से की गई है।

பிரிந்தவர் நல்காரென்று ஏங்கிப் பிரிந்தவர்
பின்செல்வாய் பேதைஎன் நெஞ்சு. 1248

पिरिन्दवर् नलहारॅन्ड्रु एङ्गिप्पिरिन्दवर्
पिन् शॅल्वाय् पेदै ऍन् नॅञ्जु.

रे मेरे दिल, यों समझ, नहीं दयार्द्र सुजान।
बिछुड़े के पीछे लगा, चिन्ताग्रस्त अजान।। १२४८

உள்ளத்தார் காதலவராக உள்ளிநீ
யாருழைச்சேறி என் நெஞ்சு. 1249

उळ्ळत्तार् कादलवराह उळ्ळि नी
यारुषैच् चेरि ऍन् नॅञ्जु.

तेरे अन्दर जब रहा, प्रियतम का आवास।
रे दिल, उनका स्मरण कर, जावे किसके पास।। १२४९

'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में इस दोहे की तुलना 'कबीर' के दोहे से की गई है।

துன்னாத்துறந்தாரை நெஞ்சத்து உடையேமா
இன்னும் இழந்தும் கவின். 1250

तुन्नात्तुरन्दारै नॅञ्जत्तु उडैयेमा
इन्नुम् इषन्दुम् कविन्.

फिर न मिलें यों तज दिया, उनको दिल में ठौर।
देने से मैं खो रही, अभ्यन्तर छवि और।। १२५०

ठौर-स्थान। अभ्यन्तर छवि-स्त्रियोचित धैर्य।
और-अर्थात् पहले ही जो नष्ट हुई थी वह और भी अब हो रही है।

நிறையழிதல் धैर्य-भंग निरैयषिदल्

காமக் கணிச்சி உடைக்கும் நிறையென்னும்
நாணுத்தாழ் வீழ்த்த கதவு. 1251

कामक् कणिच्चि उडैक्कुम् निऱैयॅन्नुम्
नाणुत्ताष् वीष्त्त कदवु.

लाज-चटखनी युक्त है, मनोधैर्य का द्वार।
खंडन करना है उसे, यह जो काम-कुठार।। १२५१

इस अध्याय के सब दोहे नायिका का सखी से कथन है।
चटखनी—किवाड़ों को बंद रखने के लिये लोहे का छड़।

காமமெனை ஒன்றோ கண்ணின்றென் நெஞ்சத்தை
யாமத்தும் ஆளும் தொழில். 1252

काममॅन ऑन्ड्रो कण्णिन्ड्रॅन् नॅञ्जत्तै
यामत्तुम् आळुम् तॊषिल्.

काम एक निर्दय रहा, जो दिल पर कर राज।
अर्द्ध रात्रि के समय भी, करवाता है काज।। १२५२

மறைப்பேன்மன் காமத்தை யானோ குறிப்பின்றித்
தும்மல்போல் தோன்றி விடும். 1253

मऱैप्पेन् मन् कामत्तै यानो कुऱिप्पिन्ड्रित्
तुम्मल् पोल् तोन्ड्रि विडुम्.

काम छिपाने यत्न तो, मैं करती हूँ जान।
प्रकट हुआ निर्देश बिन, वह तो छींक समान।। १२५३

நிறையுடையேன் என்பேன்மன் யானோஎன் காமம்
மறையிறந்து மன்று படும். 1254

निरैयुडैयेन् ऍन्बेन्मन् यानो ऍन् कामम्
मऱैयिरन्दु मन्ड्रु पडुम्.

कहती थी 'हूँ धृतिमती', पर मम काम अपार।
प्रकट सभी पर अब हुआ, गोपनीयता पार।। १२५४

धृतिमती-धैर्य रखनेवाली। गोपनीयता-रहस्य रहना।

செற்றார்பின் செல்லாப் பெருந்தகைமை காமநோய்
உற்றார் அறிவதொன்று அன்று. 1255

शॅट्रार् पिन् शॅल्लाप् पॅरुन्दहैमै काम नोय्
उट्रार् अऱिवदॉन्ड्रु अन्ड्रु.

उनके पीछे जा लगें, जो तज गये सुजान।
काम-रोगिणी को नहीं, इस बहुमति का ज्ञान।। १२५५

बहुमति--बहुमान, गौरव। सुजान--प्रियतम।

செற்றவர் பின்சேறல் வேண்டி அளித்தரோ
எற்றென்னை உற்ற துயர். 1256

शॅट्रवर् पिन्शेरल् वेण्डि अळित्तरो
ऍट्रॅन्नै उट्र तुयर्.

उनके पीछे लग रहूँ, चले गये जो त्याग।
काम-रोग को यों दिया, यह मेरा बड़भाग।। १२५६

நாணென ஒன்றோ அறியலம் காமத்தால்
பேணியார் பெட்ப செயின். 1257

नाणॅन् ऑन्ड्रो अरियलम् कामत्ताल्
पेणियार् पॅट्प चॅयिन्.

क़रते थे प्रिय नाथ जब, कामेच्छित सब काज।
तब यह ज्ञात न था हमें, एक वस्तु है लाज।। १२५७

பன்மாயக் கள்வன் பணிமொழி அன்றோநம்
பெண்மை உடைக்கும் படை. 1258

पन्मायक् कळ्वन् पणिमोषि अन्ड्रो नम्
पॅण्मै उडैक्कुम् पडै.

बहुमायामय चोर के, जो हैं नयमय बैन।
मेरी धृति को तोड़ने, क्या होते नहिं सैन।। १२५८

नयमय बैन–विनयपूर्ण वचन। सैन–सेना।

புலப்ப லெனச்சென்றேன் புல்லினேன் நெஞ்சம்
கலத்த லுறுவது கண்டு. 1259

पुलप्पलॅनच् चॅन्ड्रेन् पुल्लिनेन् नॅञ्जम्
कलत्तलुरुवदु कण्डु.

चली गई मैं रूठने, किन्तु हृदय को देख।
वह प्रवृत्त है मिलन हित, गले लगी, हो एक।। १२५९

'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में इस दोहे की तुलना और आगे के दोहे की तुलना भी 'बिहारी' की कविता से की गई है।

நிணந்தீயில் இட்டன்ன நெஞ்சினார்க்கு உண்டோ
புணர்ந்தூடி நிற்பேம் எனல். 1260

निणनृतीयिल् इट्टनून नेंञ्जिनाक्कु उण्डो
पुणरून्दूडि निरूपेम् ऍनल्.

अग्नि-दत्त मज्जा यथा, जिनका दिल द्रवमान।
उनको प्रिय के पास रह, क्या संभव है मान।। १२६०

द्रवमान–पिघलनेवाला। मान–रूठना।

अதிகாரம்-127 अध्याय - १२७ கற்பியல் पातिव्रत्य

அவர்வயின் விதும்பல் उनकी उत्कंठा अवरूवयिन् विदुम्बल्

வாளற்றுப் புற்கென்ற கண்ணும் அவர்சென்ற
நாளொற்றித் தேய்ந்த விரல். 1261

वाळट्रुप् पुरूकॅन्ड्र कणणुम् अवर् शॅन्ड्र
नाळॉट्रित् तेयून्द विरल्.

छू कर गिनते विरह दिन, घिस अंगुलियाँ क्षीण।
तथा नेत्र भी हो गये, राह देख छवि-हीन।। १२६१

१२६१ से १२६७ तक के दोहे नायिका का सखी से कथन है।

இலங்கிழாய் இன்று மறப்பின் என் தோள்மேல்
கலங்கழியும் காரிகை நீத்து. 1262

इलङ्गिषाय् इन्ड्रु मरप्पिन् ऍन् तोळ् मेल्
कलङ्गषियुम् कारिहै नीत्तु.

उज्ज्वल भूषण सज्जिते! यदि मैं भूलूँ आज।
गिरें बाँह से चुड़ियाँ, औ' खोऊँ छवि-साज।। १२६२

सज्जिते। यों नायिका सखी को संबोधित करती है।

உரன்நசைஇ உள்ளம் துணையாகச் சென்றார்
வரல்நசைஇ இன்னும் உளேன். 1263

उरन् नशैइ उळ्ळम् तुणैयाहच् चॆन्ड्रार्
वरल् नशैइ इन्नुम् उळेन्.

विजय-कामना से चले, साथ लिये उत्साह।
सो अब भी जीती रही, 'लौटेंगे' यों चाह।। १२६३

चले–नायक चले। यों चाह–ऐसी मेरी आशा है।

கூடிய காமம் பிரிந்தார் வரவுள்ளிக்
கோடுகொ டேறும்என் நெஞ்சு. 1264

कूडिय कामम् पिरिन्दार् वरवुळ्ळिक्
कोडुकॉ डेरुम् एन् नॆञ्जु.

प्रेम सहित हैं लौटते, बिछुड़ गये जो नाथ।
उमड़ रहा यों सोच कर, हृदय खुशी के साथ।। १२६४

காண்கமன் கொண்கனைக் கண்ணாரக் கண்டபின்
நீங்கும் என் மென்றோள் பசப்பு. 1265

काणग़मन कोॅण्ग़नैक् कण्णारक् कण्डपिन्
नीङ्गुम् ऍन् मॅन्ड्रोळ् पशप्पु.

प्रियतम को मैं देख लूँ, आँखों से भरपूर।
फिर पीलापन स्कंध का, हो जायेगा दूर।। १२६५

வருகமன் கொண்கன் ஒருநாள் பருகுவன்
பைதல் நோய் எல்லாம் கெட. 1266

वरुहमन् कोॅण्कन् ओरुनाळ् परुहुवन्
पैदल् नोय् ऍल्लाम् कॅड.

प्रिय आवें तो एक दिन, यों कर लूँ रसपान।
जिससे पूरा ही मिटे, दुःखद रोग निदान।। १२६६

புலப்பேன்கொல் புல்லுவேன் கொல்லோ கலப்பேன்கொல்
கண் அன்ன கேளிர் வரின். 1267

पुलप्पेन् कोॅल् पुल्लुवेन् कोॅल्लो कलप्पेन् कोॅल्
कण अन्न केळिर् वरिन्.

नेत्र सदृश प्रिय आ मिलें, तो कर बैठूँ मान?
या आलिंगन ही करूँ, या दोनों, हे प्राण।। १२६७

வினைகலந்து வென்றீக வேந்தன் மனைகலந்து
மாலை அயர்கம் விருந்து. 1268

विनै कलन्दु वॅन्ड्रीह वेन्दन् मनैकलन्दु
मालै अयरहम् विरुन्दु.

क्रियाशील हो युद्ध कर, राजा पावें जीत।
सपत्नीक हम भोज दें, संध्या हित सप्रीत।। १२६८

इस दोहे से ले कर अन्त तक (१२७०) नायक का स्वगत कथन है। सपत्नीक- पत्नी के सहित। सपत्नीक..... इसका भाव यह है कि पुनर्मिलन की खुशी हम स्त्री के साथ मनायेंगे, संध्या काल में।

ஒருநாள் எழுநாள்போல் செல்லும்சேட் சென்றார்
வருநாள்வைத்து ஏங்குபவர்க்கு. **1269**

ऑरुनाळ् ऍषुनाळ् पोल् शॆल्लुम् चेट् शॆन्ड्रार्
वरुनाळ् वैत्तु एङ्गुपवर्क्कु.

जिसे प्रवासी पुरुष के, प्रत्यागम का सोच।
एक रोज़ है सात सम, लंबा होता रोज़।। १२६९

பெறின்என்னும் பெற்றக்கால் என்னும் உறின்என்னும்
உள்ளம் உடைந்துக்கக் கால். **1270**

पॆरिन् ऍन्नाम् पॆट्रक्काल् एन्नाम् उरिन् ऍन्नाम्
उळ्ळम् उडैन्दुक्कक्काल्.

प्राप्य हुई या प्राप्त ही, या हो भी संयोग।
हृदय भग्न हो चल बसी, तो क्या हो उपयोग।। १२७०

इस दोहे का भाव यह है कि विरह–वेदना में नायिका का दिल टूट कर उसका मरण होने के पहले शीघ्र ही उससे मिलना चाहिये।

குறிப்பறிவுறுத்தல் इंगित से बोध कुऱिप्पऱिवुरुत्तल्

கரப்பினுங் கையிகந் தொல்லாநின் உண்கண்
உரைக்க லுறுவதொன்று உண்டு. 1271

करप्पिनुङ् कैयिहन्दोॅल्ला निन् उण्कण्
उरैक्कलुरुवदोॅन्ड्रु उण्डु.

रखने पर भी कर छिपा, मर्यादा को पार।
हैं तेरे ही नेत्र कुछ, कहने को तैयार।। १२७१

यह नायक का नायिका से कथन है।

கண்நிறைந்த காரிகைக் காம்பேர்தோட் பேதைக்குப்
பெண்நிறைந்த நீர்மை பெரிது. 1272

कण् निऱैन्द कारिहैक् कामबेर् तोट् पेदैक्कुप्
पॆण् निऱैन्द नीर्मै पॆरिदु.

छवि भरती है आँख भर, बाँस सदृश हैं स्कंध।
मुग्धा में है मूढता, नारी-सुलभ अमंद।। १२७२

दोंहा १२७२ से १२७५ तक नायक का सखी से कथन है।

மணியில் திகழ்தரு நூல்போல் மடந்தை
அணியில் திகழ்வதொன்று உண்டு. 1273

मणियिल् तिहऴ्तरु नूल्पोल् मडन्दै
अणियिल् तिहऴ्वदोॅन्ड्रु उण्डु.

अन्दर से ज्यों दीखता, माला-मणि में सूत।
बाला छवि में दीखता, कुछ संकेत प्रसूत।। १२७३

माला–मणि – स्फटिक माला की मणि। प्रसूत – उत्पन्न।

முகைமொக்குள் உள்ளது நாற்றம்போல் பேதை
நகைமொக்குள் உள்ளதொன்று உண்டு. 1274

मुहै मॉक्कुळ् उळ्ळदु नाट्रम् पोल् पेदै
नहै मॉक्कुळ् उळ्ळदॉन्ड्रु उण्डु.

बद कली में गंध ज्यों, रहती है हो बंद।
त्यों इंगित इक बंद है, मुग्धा-स्मिति में मंद।। १२७४

इंगित–इक–एक इशारा। मुग्धा–स्मिति–नायिका की मुस्कराहट।

செறிதொடி செய்திறந்த கள்ளம் உறுதுயர்
தீர்க்கு மருந்தொன்று உடைத்து. 1275

शॅरितॉडि शॅय्दिरन्द कळ्ळम् उरुतुयर्
तीर्क्कु मरुन्दॉन्ड्रु उडैत्तु.

बाला ने, चूड़ी-सजी, मुझसे किया दुराव।
दुःख निवारक इक दवा, रखता है वह हाव।। १२७५

பெரிதாற்றிப் பெட்பக் கலத்தல் அரிதாற்றி
அன்பின்மை சூழ்வது உடைத்து. 1276

पॅरिदाट्रिप् पॅट्पक् कलत्तल् अरिदाट्रि
अन्बिन्मै शूष्वदु उडैत्तु.

दे कर अतिशय मिलन सुख, देना दुःख निवार।
स्मारक भावी विरह का, औ' निष्प्रिय व्यवहार।। १२७६

इस दोहे से १२७८ तक नायिका का सखी से कथन है।

தண்ணந் துறைவன் தணந்தமை நம்மினும்
முன்னம் உணர்ந்த வளை. 1277

तण्णन् तुरैवन् तणन्दमै नम्मिनुम्
मुन्नम् उणर्न्द वळै.

नायक शीतल घाट का, बिछुड़ जाय यह बात।
मेरे पहले हो गयी, इन वलयों को ज्ञात।। १२७७

நெருநற்றுச் சென்றார்எம் காதலர் யாமும்
எழுநாளேம் மேனி பசந்து. 1278

नॅरु नट्रुच् चॅन्ड्रार् ऍम् काद़लर् यामुम्
ऍषु नाळेम् मेनि पशन्दु.

कल ही गये वियुक्त कर, मेरे प्यारे नाथ।
पीलापन तन को लिये, बीत गये दिन सात।। १२७८

தொடிநோக்கி மென்றோளும் நோக்கி அடிநோக்கி
அஃதாண்டு அவள்செய்தது. 1279

तॊडि नोक्कि मॅन्ड्रोळुम् नोक्कि अडिनोक्कि
अह्दाण्डु अवळ् शॅय्ददु.

वलय देख फिर स्कंध भी, तथा देख निज पाँव।
यों उसने इंगित किया, साथ गमन का भाव।। १२७९

यह सखी का नायक से कथन है। इंगित किया–इशारा किया।

பெண்ணினால் பெண்மை உடைத்தென்ப கண்ணினால்
காமநோய் சொல்லி இரவு. 1280

पॅण्णिनाल् पॅण्मै उडैत्तॅन्ब कण्णिनाल्
काम नोय् शॊल्लि इरवु.

काम-रोग को प्रगट कर, नयनों से कर सैन।
याचन करना तो रहा, स्त्रीत्व-लब्ध गुण स्त्रैण।। १२८०

यह नायक का सखी से कथन है। स्त्रीत्व.....स्त्रैण–स्त्री होने के नाते प्राप्त स्त्रियोचित गुण है।

புணர்ச்சி விதும்பல் मिलन-उत्कंठा पुणर्च्चि विदुम्बल्

உள்ளக் களித்தலும் காண மகிழ்தலும்
கள்ளுக்கில் காமத்திற்கு உண்டு. 1281

उळ्ळक् कळितूतलुम् काण महिष्दलुम्
कळ्ळुक्किल् कामत्तिर्कु उण्डु.

मुद होना स्मृति मात्र से, दर्शन से उल्लास।
ये गुण नहीं शराब में, रहे काम के पास।। १२८१

इस दोहे से १२८७ दोहा तक नायिका का सखी से कथन है।

தினைத்துணையும் ஊடாமை வேண்டும் பனைத்துணையும்
காமம் நிறைய வரின். 1282

तिनैत्तुणैयुम् ऊडामै वेण्डुम् पनैत्तुणैयुम्
कामम् निऱैय वरिन्.

यदि आवेगा काम तो, बढ़ कर ताड़ समान।
तिल भर भी नहिं चाहिये, करना प्रिय से मान।। १२८२

करना–मान–रूठना।

பேணாது பெட்பவே செய்யினும் கொண்கனைக்
காணாது அமையல கண். 1283

पेणादु पॅट्पवे शॅय्यिनुम् कॉण्कनैक्
काणादु अमैयल कण्.

यद्यपि मनमानी करें, बिन आदर की सैन।
प्रियतम को देखे बिना, नयनों को नहिं चैन।। १२८३

सैन–निशान, संकेत। मनमानी करें (नायक)।

ஊடற்கண் சென்றேன்மன் தோழி அதுமறந்து
கூடற்கண் சென்றதுஎன் நெஞ்சு. 1284

ऊडऱ्कण् शॅन्ड्रेऩ्मन् तोषि अदु मऱन्दु
कूडऱ् कण् शॅन्ड्रदु एऩ् नॅञ्जु.

गयी रूठने री सखी, करके मान-विचार।
मेरा दिल वह भूल कर, मिलने को तैयार।। १२८४

देखिये दोहे १२५९ और १२६०.

எழுதுங்கால் கோல்காணாக் கண்ணேபோல் கொண்கன்
பழிகாணேன் கண்ட விடத்து. 1285

ऍषुदुङ्काल् कोल् काणाक् कण्णे पोल् कॉण्कऩ्
पषि काणेन् कण्डविडतुतु.

कूँची को नहिं देखते, यथा आंजते अक्ष।
उनकी भूल न देखती, जब हैं नाथ समक्ष।। १२८५

आंजते अक्ष–अंजन लगाते समय नेत्र।

காணுங்கால் காணேன் தவறாய காணாக்கால்
காணேன் தவறல்லவை. 1286

काणुङ्गाल् काणेन् तवराय काणाक्काल्
काणेन् तवरल्लवै.

जब प्रिय को मैं देखती, नहीं देखती दोष।
ना देखूँ तो देखती, कुछ न छोड़ कर दोष।। १२८६

உய்த்தல் அறிந்து புனல்பாய் பவரேபோல்
பொய்த்தல் அறிந்தென் புலந்து. 1287

उय्त्तल् अरिन्दु पुनल्पाय् पवरे पोल्
पॉय्त्तल् अरिन्दॆन् पुलन्दु.

कूदे यथा प्रवाह में, बाढ़ बहाती जान।
निष्फलता को जान कर, क्या हो करते मान।। १२८७

जान—जान कर। क्या हो—क्या होगा।

இளித்தக்க இன்னா செயினும் களித்தார்க்குக்
கள்ளற்றே கள்வநின் மார்பு. 1288

इळित्तक्क इन्ना शॅयिनुम् कळित्ताक्कुक्
कळ्ळट्रे कळ्व निन् मारपु.

निन्दाप्रद दुख क्यों न दे, मद्यप को ज्यों पान।
त्यों है, वंचक रे, हमें, तेरी छाती जान।। १२८८

यह सखी का नायक से कथन है। पान—मधुपान।

மலரினும் மெல்லிது காமம் சிலர்அதன்
செவ்வி தலைப்படு வார். 1289

मलरिनुम् मॅल्लिदु कामम् शिलर् अदन्
शॅव्वि तलैप्पडुवार्.

मृदुतर हो कर सुमन से, जो रहता है काम।
बिरले जन को प्राप्त है, उसका शुभ परिणाम।। १२८९

यह और आगे का दोहा नायक का स्वगत कथन है।

கண்ணின் துனித்தே கலங்கினள் புல்லுதல்
என்னினும் தான் விதுப்புற்று. 1290

कण्णिन् तुनित्ते कलङ्गिनाळ् पुल्लुदल्
ऍन्निनुम् तान् विदुप्पुट्रु.

उत्कंठित मुझसे अधिक, रही मिलन हित बाल।
मान दिखा कर नयन से, गले लगी तत्काल।। १२९०

बाल–बाला, नायिका।

நெஞ்சொடு புலத்தல் — हृदय से रूठना — नेञ्ज़ोँडु पुलत्तल्

அவர்நெஞ்சு அவர்க்காதல் கண்டும் எவன்நெஞ்சே
நீஎமக்கு ஆகா தது. **1291**

अवर् नेँञ्जु अवरुक्कादल् कण्डुम् ऍवन् नेँञ्जे
नी ऍमक्कु आहादद्.

उनका दिल उनका रहा, देते उनका साथ।
उसे देख भी, हृदय तू, क्यों नहिं मेरे साथ।। १२९१

इस दोहे से १२९४–दोहा तक नायिका का दिल से कथन है।

உறாஅ தவர்க்கண்ட கண்ணும் அவரைச்
செறாஅரெனச் சேறிஎன் நெஞ்சு. **1292**

उरा अ दवरुक्कण्ड कण्णुम् अवरैच्
चेंरॅाअरॅनच् चेरि ऍन् नेँञ्जु.

प्रिय को निर्मम देख भी, 'वे नहिं हों नाराज़'।
यों विचार कर तू चला, रे दिल, उनके पास।। १२९२

கெட்டார்க்கு நட்டார்இல் என்பதோ நெஞ்சேநீ
பெட்டாங்கு அவர்பின் செலல். **1293**

कॅट्टार्क्कु नट्टार् इल् ऍन्बदो नेँञ्जु नी
पॅट्टाङ्गु अवर् पिन् शॅलल्.

रे दिल, जो हैं कष्ट में, उनके हैं नहिं इष्ट।
सो क्या उनका पिछलगा, बना यथा निज इष्ट।। १२९३

नहिं इष्ट–इष्ट मित्र नहीं। निज इष्ट–अपने इच्छानुसार।

இனிஅன்ன நின்னொடு சூழ்வார்யார் நெஞ்சே
துனிசெய்து துவ்வாய்காண் மற்று. 1294

इनि अन्न निन्नोंड्डु शूष्वार यार् नैंञ्जे
तुनि शैंय्दु तुव्वाय् काण् मट्रु.

रे दिल तू तो रूठ कर, बाद न ले सुख-स्वाद।
तुझसे कौन करे अभी, तत्सम्बन्धी बात।। १२९४

बाद न ले – (पहले रूठने के बाद) फिर सुख का अनुभव न करेगा। अर्थात् तुम तो तुरन्त प्रियतम से मिलने के लिये आतुर हो।

பெறாஅமை அஞ்சும் பெறின்பிரிவு அஞ்சும்
அறாஅ இடும்பைத்தென் நெஞ்சு. 1295

पैऱाअमै अञ्ज़ुम् पैऱिन् पिरिवु अञ्ज़ुम्
अराअ इड्डुम्बैत्तैंन् नैंञ्ज़ु.

न मिल तो भय, या मिले, तो भेतव्य वियोग।
मेरा दिल है चिर दुखी, वियोग या संयोग।। १२९५

इस दोहे से १२९८ तक नायिका का सखी से कथन है।
भेतव्य–डरने की बात।

தனியே இருந்து நினைத்தக்கால் என்னைத்
தினிய இருந்ததுஎன் நெஞ்சு. 1296

तनिये इरुन्दु निनैत्तक्काल् ऍननैत्
तिनिय इरुन्ददु ऍन् नैंञ्ज़ु.

विरह दशा में अलग रह, जब करती थी याद।
मानों मेरा दिल मुझे, खाता था रह साथ।। १२९६

நாணும் மறந்தேன் அவர்மறக் கல்லா என்
மாணா மடநெஞ்சிற் பட்டு. 1297

नाणुम् मऱन्देन् अवर् मऱक्कल्ला ऍन्
माणा मड नॆञ्जिऱ् पट्टु.

मूढ हृदय बहुमति रहित, नहीं भूलता नाथ।
मैं भूली निज लाज भी, पड़ कर इसके साथ।। १२९७

எள்ளின் இளிவாம்என்று எண்ணி அவர்திறம்
உள்ளும் உயிர்க்காதல் நெஞ்சு. 1298

ऍळ्ळिन् इळिवाम् ऍन्ड्रु ऍण्णि अवर् तिऱम्
उळ्ळुम् उयिर्क्कादल् नॆञ्जु.

नाथ-उपेक्षा निंद्य है, यों करके सुविचार।
करता उनका गुण-स्मरण, यह दिल जीवन-प्यार।। १२९८

துன்பத்திற்கு யாரே துணையாவார் தாமுடைய
நெஞ்சம் துணையல் வழி. 1299

तुन्बत्तिऱ्कु यारे तुणैयावार् तामुडैय
नॆञ्जम् तुणैयल् वऴि.

संकट होने पर मदद, कौन करेगा हाय।
जब कि निजी दिल आपना, करता नहीं सहाय।। १२९९

यह और आगेका दोहा नायक का स्वगत कथन है। आपना-अपना

தஞ்சம் தமரல்லர் ஏதிலார் தாமுடைய
நெஞ்சம் தமரல் வழி. 1300

तञ्जम् तमरल्लर् एदिलार् तामुडैय
नॆञ्जम् तमरल् वषि.

बन्धु बनें नहिं अन्य जन, है यह सहज, विचार।
जब अपना दिल ही नहीं, बनता नातेदार।। १३००

विचार–तू विचार कर (कि यह सहज है)

அதிகாரம்–131 अध्याय - १३१ கற்பியல் पातिव्रत्य

புலவி मान पुलवि

புல்லா திராஅப் புலத்தை அவர்உறும்
அல்லல்நோய் காண்கம் சிறிது. 1301

पुल्लादिरा अप् पुलत्तै अवर् उरुम्
अल्लल् नोय् काण्गम् शिरिदु.

आलिंगन करना नहीं, ठहरो करके मान।
देखें हम उनको ज़रा, सहते ताप अमान।। १३०१

यह और आगे का दोहा सखी का नायिका से कथन है। अमान–असीम.

உப்பமைந்தற்றால் புலவி அதுசிறிது
மிக்கற்றால் நீள விடல். **1302**

उप्पमैन्दट्राल् पुलवि अदु शिरिदु
मिक्कट्राल् नीळ विडल्.

ज्यों भोजन में नमक हो, प्रणय-कलह त्यों जान।
ज़रा बढ़ाओ तो उसे, ज्यादा नमक समान।। १३०२

'तिरुवल्लुवर् और हिन्दी के कवि' अध्याय में मैथिलीशरण गुप्तजी की कविता से इसकी तुलना की गई है।

அலந்தாரை அல்லல்நோய் செய்தற்றால் தம்மைப்
புலந்தாரைப் புல்லா விடல். **1303**

अलन्दारै अल्लल् नोय् शॅय्दट्राल् तम्मैप्
पुलन्दारैप् पुल्ला विडल.

अगर मना कर ना मिलो, जो करती है मान।
तो वह, दुखिया को यथा, देना दुःख महान।। १३०३

यह और आगे का दोहा नायिका का नायक से कथन है।

ஊடியவரை உணராமை வாடிய
வள்ளி முதலரிந்தற்று. **1304**

ऊडियवरै उणरामै वाडिय
वळ्ळि मुदलरिन्दट्रु.

उसे मनाया यदि नहीं, जो कर बैठी मान।
सूखी वल्ली का यथा, मूल काटना जान।। १३०४

நலத்தகை நல்லவர்க்கு ஏஎர் புலத்தகை
பூஅன்ன கண்ணா ரகத்து. 1305

नलत्तहै नल्लवर्क्कु एएॅर् पुलत्तहै
पू अन्न कण्णारहत्तु.

कुसुम-नेत्रयुत प्रियतमा, रूठे अगर यथेष्ट।
शोभा देती सुजन को, जिनके गुण हैं श्रेष्ठ।। १३०५

इस दोहे से १३०७ – दोहा तक नायक का स्वगत कथन है। कुसुम–फूल, यहाँ इसका अर्थ कमल है।

துனியும் புலவியும் இல்லாயின் காமம்
கனியும் கருக்காயும் அற்று. 1306

तुनियुम् पुलवियुम् इल्लायिन् कामम्
कनियुम् करुक्कायुम् अट्रु.

प्रणय-कलह यदि नहिं हुआ, और न थोड़ा मान।
कच्चा या अति पक्व सम, काम-भोग-फल जान।। १३०६

मान–रूठना। पक्व–पक्का।

ஊடலின் உண்டாங்கோர் துன்பம் புணர்வது
நீடுவ தன்றுகொல் என்று. 1307

ऊडलिन् उण्डाङ्गोर् तुन्बम् पुणर्वदु
नीडुवदन्ड्रु कॉल् ऍन्ड्रु.

'क्या न बढ़ेगा मिलन-सुख', यों है शंका-भाव।
प्रणय-कलह में इसलिये, रहता दुखद स्वभाव।। १३०७

நோதல் எவன்மற்று நொந்தாரென்று அஃதறியும்
காதலர் இல்லா வழி. 1308

नोदल् ऍवन् मट्रु नॉन्दारॅन्ड्रु अहूदरियुम्
कादलर् इल्ला वषि.

' पीड़ित है ' यों समझती, प्रिया नहीं रह जाय।
तो सहने से वेदना, क्या ही फल हो जाय।। १३०८

इस दोहे से १३१० तक नायक का नायिका से कथन है।

நீரும் நிழலது இனிதே புலவியும்
வீழுநர் கண்ணே இனிது. 1309

नीरुम् निषलदु इनिदे पुलवियुम्
वीषुनर् कण्णे इनिदु.

छाया के नीचे रहा, तो है सुमधुर नीर।
प्रिय से हो तो मधुर है, प्रणय कलह-तासीर।। १३०९

तासीर—प्रभाव।

ஊடல் உணங்க விடுவாரோடு என்நெஞ்சம்
கூடுவேம் என்பது அவா. 1310

ऊडल उणङ्ग विडुवारोडु ऍन् नैञ्ञ्जम्
कूडुवेम् ऍन्बदु अवा.

सूख गयी ज़ो मान से, और रही बिन छोह।
मिलनेच्छा उससे रहा, मेरे दिल का मोह।। १३१०

छोह-प्रेम। मिलनेच्छा..... मोह—नायक यों अपनी निराशा को प्रकट करता है।

புலவி நுணுக்கம் मान की सूक्ष्मता पुलवि नुणुक्कम्

பெண்ணியலார் எல்லாரும் கண்ணின் பொதுஉண்பர்
நண்ணேன் பரத்த நின் மார்பு. 1311

पॆण्णियलार् ऍल्लारुम् कण्णिन् पॊदु उण्बर्
नण्णेन् परत्त निन् मार्पु.

सभी स्त्रियाँ सम भाव से, करतीं दृग से भोग।
रे विट् तेरे वक्ष से, मैं न करूँ संयोग।। १३११

यह नायिका का नायक से कथन है। विट-लंपट, कामुक।

ஊடியிருந்தேமாத் தும்மினார் யாம்தம்மை
நீடு வாழ்கென்பாக்கு அறிந்து. 1312

ऊडियिरुन्देमात् तुम्मिनार् याम् तम्मै
नीडु वाष्कॆन्बाक्कु अऱिन्दु.

हम बैठी थीं मान कर, छींक गये तब नाथ।
यों विचार 'चिर जीव' कह, हम कर लेंगी बात।। १३१२

यह नायिका का सखी से कथन है। छींक गये-किसी के छींकने पर पास रहनेवाले 'चिर जीव' कहने की प्रथा है।

கோட்டுப்பூச் சூடினும் காயும் ஒருத்தியைக்
காட்டிய சூடினீர் என்று. 1313

कोट्टुप्पूच् चूडिनुम् कायुम् ऑरुत्तियैक्
काट्टिय शूडिनीर् ऍन्ड्रु.

धरूँ डाल का फूल तो, यों होती नाराज़ ।
दर्शनार्थ औ ' नारि से, करते हैं यह साज ।। १३१३

इस दोहे से लेकर अध्याय के अन्त तक नायक का सखी से कथन है। डाल का फूल—पेड़ की डाल से तोड़ा हुआ, जैसे चंपक। पानी या लता पर उगनेवाला नहीं। नायिका यह कह कर रूठती है कि नायक का उसको फूल से सजाना किसी और प्रेमिका को दिखाने के लिये ही है।

யாரினும் காதலம் என்றேனா ஊடினாள்
யாரினும் யாரினும் என்று. *1314*

यारिनुम् कादलम् ऍन्ड्रेना ऊडिनाळ्
यारिनुम् यारिनुम् ऍन्ड्रू.

' सब से बढ़ ', मैंने कहा, ' हम करते हैं प्यार ' ।
' किस किस से ' कहती हुई, लगी रुठने यार ।। १३१४

'अनुवाद के संबंध में' अध्याय में इस दोहे का उल्लेख हुआ है।

இம்மைப் பிறப்பில் பிரியலம் என்றேனாக்
கண்ணிறை நீர்கொண் டனள். *1315*

इम्मैप् पिऱप्पिल् पिरियलम् ऍन्ड्रेनाक्
कणणिरै नीरू कॉण्डनळ्.

यों कहने पर — हम नहीं, ' बिछुड़ेंगे इस जन्म ' ।
भर लायी दृग, सोच यह, क्या हो अगले जन्म ।। १३१५

உள்ளினேன் என்றேன்மற்று என்மறந்தீர் என்றென்னைப்
புல்லாள் புலத்தக் கனள். 1316

उळ्ळिनेन् ऍन्ड्रेन् मट्रु ऍन् मरन्दीर् ऍन्ड्रॅन्नैप्
पुल्लाळ् पुलत्तक्कनळ्.

'स्मरण किया' मैंने कहा, तो क्यों बैठे भूल।
यों कह मिले बिना रही, पकड़ मान का तूल।। १३१६

வழுத்தினாள் தும்மினேனாக அழித்தழுதாள்
யாருள்ளித் தும்மினீர் என்று. 1317

वषुत्तिनाळ् तुम्मिनेनाह अषित्तषुदाळ्
यारुळ्ळित् तुम्मिनीर् ऍन्ड्रु.

छींका तो, कह शुभ वचन, तभी बदल दी बात।
'कौन स्मरण कर छींक दी', कह रोयी सविषाद।। १३१७

शुभ–वचन–'चिरजीव'। नायक के छींकने पर नायिका ने प्रथानुसार 'चिरजीव' कहा फिर तुरन्त रूठने लगी कि किसने तुम्हारा स्मरण किया जिसके फलस्वरूप तुमने छींक दी।

தும்முச் செறுப்ப அழுதாள் நுமர்உள்ளல்
எம்மை மறைத்திரோ என்று. 1318

तुम्मच् चॅरुप्प अषुदाळ् नुमर् उळ्ळल्
ऍम्मै मरैत्तिरो ऍन्ड्रु.

छींक दबाता मैं रहा, रोयी कह यह बैन।
अपनी जो करती स्मरण, उसे छिपाते हैं न।। १३१८

छींक दबाता..... नायक ने नायिका के रूठने के डर से छींकना दबाया पर उसका विपरीत फल हुआ।

தன்னை உணர்த்தினும் காயும் பிறர்க்குநீர்
இந்நீரர் ஆகுதிர் என்று. 1319

तन्नै उणर्त्तिनुम् कायुम् पिर्कु नीर्
इन्नीरर् आहुदिर् ऍन्ड्रु.

अगर मनाऊँ तो सही, यों कह होती रुष्ट।
करते होंगे अन्य को, इसी तरह से तुष्ट।। १३१९

நினைத்திருந்து நோக்கினும் காயும் அனைத்துநீர்
யாருள்ளி நோக்கினீர் என்று. 1320

निनैत्तिरुन्दु नोक्किनुम् कायुम् अनैत्तु नीर्
यारुळ्ळि नोक्किनीर् ऍन्ड्रु.

देखूँ यदि मैं मुग्ध हो, यों कह करती रार।
देख रहे हैं आप सब, दिल में किसे विचार।। १३२०

सब—सब अंगों को। रार्—झगड़ा, यहाँ रूठना। 'किसी अन्य स्त्री के अंगों की तुलना करके देख रहे हो' यों कह कर नायिका रूठने लगी।

ஊடலுவகை मान का आनन्द ऊडलुवहै

இல்லை தவறவர்க்கு ஆயினும் ஊடுதல்
வல்லது அவர்அளிக்கு மாறு. **1321**

इल्लै तवरवक्कु आयिनुम् ऊडुदल्
वल्लदु अवर् अळिक्कुमारु.

यद्यपि उनकी भूल नहिं, उनका प्रणय-विधान।
प्रेरित करता है मुझे, करने के हित मान।। १३२१

इस दोहे से १३२४ दोहा तक नायिका का सखी से कथन है।

ஊடலில் தோன்றும் சிறுதுனி நல்லளி
வாடினும் பாடு பெறும். **1322**

ऊडलिल् तोन्ड्रुम् शिरु तुनि नल्लळि
वाडिनुम् पाडु पॆरुम्.

मान जनित लघु दुःख से, यद्यपि प्रिय का प्रेम।
मुरझा जाता है ज़रा, फिर भी पाता क्षेम।। १३२२

புலத்தலின் புத்தேள்நாடு உண்டோ நிலத்தொடு
நீரியைந் தன்னா ரகத்து. **1323**

पुलत्तलिन् पुत्तेळ् नाडु उण्डो निलत्तोँडु
नीरियैन्दन्नारहत्तु.

मिट्टी-पानी मिलन सम, जिस प्रिय का संपर्क।
उनसे होते कलह से, बढ़ कर है क्या स्वर्ग।। १३२३

புல்லி விடாஅப் புலவியுள் தோன்றுமென்
உள்ளம் உடைக்கும் படை. 1324

पुल्लि विडा अप्पुलवियुळ् तोन्ड्रुमॅन्
उळ्ळम् उडैक्कुम् पडै.

मिलन साध्य कर, बिछुड़ने, देता नहिं जो मान।
उससे आविर्भूत हो, हृत्स्फोटक सामान।। १३२४

आविर्भूत होना-उत्पन्न होना। हृत्स्फोटक सामान—हृदय को तोड़नेवाला हथियार। इस दोहे का भाव यह है कि मान करने के लिये प्रेरित करनेवाला हृदय आखिर हार जायगा।

தவறில ராயினும் தாம்வீழ்வார் மென்றோள்
அகறலி னாங்கொன்று உடைத்து. 1325

तवरिलरायिनुम् ताम् वीष्वार् मॅन्ड्रोळ्
अहरलिनाङ्गॉन्ड्रु उडैत्तु.

यद्यपि प्रिय निर्दोष है, मृदुल प्रिया का स्कंध।
छूट रहे जब मिलन से, तब है इक आनन्द।। १३२५

इस दोहे से अन्त तक नायक का स्वगत कथन है।
प्रिय-स्वयं नायक। इस दोहे का भाव यह है कि निर्दोष होने पर भी झूठा दोषारापोण मान का कारण बनता है जिसके फलस्वरूप नायिका का कुछ समय अलग रहना आनन्ददायक ही है।

உணலினும் உண்டது அறல்இனிது காமம்
புணர்தலின் ஊடல் இனிது. 1326

उणलिनुम् उण्डदु अरल् इनिदु कामम्
पुणर्दलिन् ऊडल् इनिदु.

खाने से, खाया हुआ, पचना सुखकर जान।
काम-भोग हित मिलन से, अधिक सुखद है मान।।   १३२६

ஊடலில் தோற்றவர் வென்றார் அதுமன்னும்
கூடலில் காணப் படும்.   1327

ऊडलिल् तोट्रवर् वॅन्ड्रार् अदु मन्नुम्
कूडलिल् काणप्पडुम्.

प्रणय-कलह में जो विजित, उसे रहा जय योग।
वह तो जाना जायगा, जब होगा संयोग।।   १३२७

'तिरुवल्लुवर और हिन्दी के कवि' अध्याय में इस दोहे की तुलना
मैथिलीशरण गुप्तजी की कविता से की गई है।

ஊடிப் பெறுகுவங் கொல்லோ நுதல்வெயர்ப்பக்
கூடலில் தோன்றிய உப்பு.   1328

ऊडिप् पॅर्हुवङ् कॉल्लो नुदल्वॅयर्प्पक्
कूडलिल् तोन्ड्रिय उप्पु.

स्वेद-जनक सुललाट पर, मिलन जन्य आनन्द।
प्रणय-कलह कर क्या मिले, फिर वह हमें अमन्द।।   १३२८

स्वेद–जनक–पसीना उत्पन्न करनेवाला।

ஊடுக மன்னோ ஒளியிழை யாம்இரப்ப
நீடுக மன்னோ இரா. **1329**

ऊडुह मन्नो ऑळियिषै याम् इरप्प
नीडुह मन्नो इरा.

रत्नाभरण सजी प्रिया, करे और भी मान।
करें मनौती हम यथा, बढ़े रात्रि का मान।। १३२९

और भी मान-और भी रूठना। (रात्रि का) मान-समय का प्रमाण।

ஊடுதல் காமத்திற்கு இன்பம் அதற்கின்பம்
கூடி முயங்கப் பெறின். **1330**

ऊडुदल् कामत्तिर्कु इन्बम् अदर्किन्बम्
कूडि मुयङ्गप् पॅरिन्.

रहा काम का मधुर रस, प्रणय-कलह अवगाह।
फिर उसका है मधुर रस, मधुर मिलन सोत्साह।। १३३०

इति शम्

तिरुवळ्ळुवर का जीवन - वृत्तान्त

तिरुक्कुरळ - माहात्म्य में तिरुवळ्ळुवर की जीवनी के सम्बन्ध में इस कारण से कुछ न कहा गया कि वह सब वृत्तान्त केवल जनश्रुति के आधार पर है। जनश्रुति होने पर भी इस संस्करण में जो चित्र प्रस्तुत हैं वह सब उसके आधार पर होने के कारण मैंने यह आवश्यक समझा कि तिरुवळ्ळुवर के उस जीवनचरित की झांकी पाठकों को मिलनी चाहिये।

यह कहा जाता है कि तिरुवळ्ळुवर अगस्त्य मुनि के वंशज थे और उनका जन्म लगभग दो हज़ार वर्षों के पहले हुआ था। उनकी माता का नाम था आदि, पिता भगवन थे।

उनकी सात संतानों में चार लड़कियाँ थीं। उनका नाम था औवै, उप्पै, उरुवै और वळ्ळि। तिरुवळ्ळुवर को छोड़ कर दो लड़के थे, अतिकमान और कपिलर। तिरुवळ्ळुवर सबसे छोटे थे। सबसे बड़ी बहन औवै थीं जो बड़ी ज्ञानी थीं और जिनको सरस्वती देवी का अंशावतार माना जाता है।

तिरुवळ्ळुवर के पिता के आज्ञानुसार जन्म होते ही माता आदि ने अपनी संतानों को तत्काल ही उसी स्थान में त्याग कर चली जाती थीं। इस घटना का चित्र ही अन्यत्र दिया गया है जिसमें भगवन की आज्ञा के अनुसार माता पुत्र का त्याग करती हुई दिखाई पड़ती है। ये मूर्त्तियाँ मदरास के मैलापुर में स्थित तिरुवळ्ळुवर के मंदिर में है।

माता-पिता से त्यक्त शिशु तिरुवळ्ळुवर को एक दयालु सज्जन ने अपनी पत्नी के संरक्षण में सौंप दिया। तिरुवळ्ळुवर का विवाह वासुकी से हुआ था। यह प्रसिद्ध है कि वासुकी ने अपने पातिव्रत्य की महिमा से बालू को अन्नरूप में पचा कर अतिथि-सत्कार किया। तिरुवळ्ळुवर का मंदिर जो मैलापुर में स्थापित है यह अनुमान करने का कारण बनता है कि उनके जीवन का अंतिम काल मैलापुर में बीत गया।

तिरुवळ्ळुवर के पेशे के संबंध में यह कहा जाता है कि वे कपड़ा बुन कर जीवन-निर्वाह करते थे। यह निश्चित रूप से कहना बहुत कठिन है कि वे किस धर्म को माननेवाले थे। इसका कारण यह है कि तिरुक्कुरळ में ईश्वर संबंधो वर्णन सर्वमान्य रूप से हुआ है।

इस गंथ के मुख-पृष्ठ में रथ का सुन्दर चित्र जो दिया गया है वह तिरुवळ्ळुवर का स्मारक चिन्ह 'वळ्ळुवर कोट्टम्' का मुख्य अंग है। सन् 1976 में 'वळ्ळुवर कोट्टम्' का निर्माण तमिल नाडु के राज्य-सरकार के द्वारा हुआ। तंजावूर जिले के तिरुवारूर के मंदिर में जो प्रसिद्ध रथ है उसी के अनुरूप इस रथ का निर्माण पत्थरों से हुआ है। रथ के अंदर तिरुवळ्ळुवर की मूर्त्ति स्थापित है। उसी का चित्र आवरण के आखिरी पृष्ठ में है।

चौथे और पांचवें पृष्ठों में मैलापुर के मंदिर की उत्सव की मूर्त्तियाँ हैं जो पांच धातुओं की बनी है। आगे के पृष्ठों में जो गोपुर के चित्र हैं वे भी उसी मंदिर के हैं।

मु. गो. वेंकटकृष्णन

वासुकी देवी

அணுவைத் துளைத்தேழ் கடலைப் புகட்டிக்
குறுகத் தரித்த குறள்.
—ஔவையார்

कुरेद कर परमाणु को, उसके अन्दर सात
समुन्दरों को कर समा, रहा कुरळ विख्
— औवै

तिरुवळ्ळुवर